UNIVERSAL
LIBRARY
OU_178759
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83·1/S94C Accession No G.H.2388

Author सुदर्शन।

Title चार कहानियां। 1938

This book should be returned on or before the date last marked below.

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकरका ९९ वाँ ग्रन्थ

चार कहानियाँ

लेखक

श्री सुदर्शन

प्रकाशक

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई

प्रकाशक—
नाथूराम प्रेमी
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय
हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई

Copyright 1938
BY SHREE SUDARSHAN
All Right Reserved.

प्रथम बार
दिसम्बर, १९३८

मूल्य पौने दो रुपया

मुद्रक—
रघुनाथ दिपाजी देसाई,
न्यू भारत प्रिंटिंग प्रेस,
६ केळेवाडी, गिरगाँव, बम्बई नं. ४

भूमिका

दुनिया एक कहानी है, जिसे भगवानने कहा है। कहानी एक दुनिया है, जिसे आदमीने बनाया है। और दुनियाकी कहानी और कहानीकी दुनिया दोनों मनोहर और मधुर हैं, और आदमीका मन दोनोंकी ओर दौड़ता है, और दोनोंसे बिछुड़ते समय उसकी आँखोंमें दुःख और संतापके आँसू भर आते हैं।

दुनिया कब बनी और कब इसका अंत हो जायगा? यह कोई नहीं जानता। कहानीका जन्म कब हुआ, और कब इसका अंत होगा? यह भी कोई नहीं कह सकता। हम केवल यह कह सकते हैं कि जबसे दुनिया है, तबसे कहानी है; जब तक दुनिया रहेगी तब तक कहानी रहेगी।

दुनिया भगवानकी कहानी है: उसके पात्र असुर भी हैं। कहानी आदमीकी दुनिया है: उसके पात्र देवता भी हैं। भगवान अपनी कहानीके पात्रोंको बुराई-भलाईकी स्वतंत्रता देता है, और उन्हें देखकर कहानी-लेखककी दुनिया बनती है। कहानी-लेखक अपनी दुनियाके जीवोंको वचन और कर्मकी स्वतंत्रता देता है, और उन्हें देखकर भगवानकी दुनिया शिक्षा ग्रहण करती है, और अपने लिए जीवनके रास्ते ढूँढ़ती है।

जब भगवान दुनियाकी रचना करता है, तो इस इरादेसे करता है, कि उसके जीव अमन-अमान, प्यार-महब्बत और पवित्रताके राज-मार्गपर चलेंगे, और चार दिनके नश्वर जीवनमें अपने दिलोंको और दिलोंकी कामनाओंको आवारा न होने देंगे। मगर कई लोग अपने प्रभुकी इच्छाको भूल जाते हैं, और अपने लिए अँधेरे रास्ते पसन्द कर

यह दुनिया एक कहानी है।

परमेश्वर दुख-सुख चुनता है,
दुनियाकी कहानी बुनता है
नर सुनता है, सर धुनता है
ऐसी इसमें दिलचस्पी है, ऐसी रंगीन बयानी है
यह दुनिया एक कहानी है।

पत्थरोंका सौदागर

१

दसहरेके दिन थे। सिकन्धीरकी अंधकारमय भूमि चन्द्रलोक बनी हुई थी। मकान और दूकानें सज रही थीं, सड़कें शीशेकी तरह साफ़ थीं। क्या मजाल जो कहीं तिनका भी पड़ा मिल जाए। महाराजके आदमी रोज़ देखने आते थे। शहरसे बाहर सुन्दर खेमोंकी दो कतारें दूर तक चली गई थीं। इनमें हिन्दुस्तानकी मशहूर गायिकाएँ ठहरी हुई थीं। कोई लखनऊसे आई थी, कोई इलाहाबादसे; कोई बम्बईसे आई थी, कोई कलकत्तेसे। यह सब अपनी अपनी कलामें उस्ताद थीं। किसीकी फ़ीस पाँच सौ रुपया दैनिक थी, किसीकी एक हज़ार। दो-तीन ऐसी भी थीं जो तीन हज़ार रुपया रोज़ानापर आई थीं। खेमोंके इस शहरमें हर समय रौनक रहती थी। ऐसा मालूम होता था जैसे एक छोटा-सा शहर बस गया है। यहाँ यौवन मुस्कराता था, सौन्दर्य खेलता था, संगीत चुहल करता था। जीवनकी ऐसी जीती जागती, ऐसी रोशन, ऐसी बाँकी नगरी किसने देखी होगी?

शहरके दूसरी तरफ़ एक और शहर बसा हुआ था। यहाँ ब्राह्मण और पंडित विराजमान थे। उनमेंसे कोई भी ऐसा न था जो पचास रुपए रोज़ानासे अधिक पाता हो, मगर उनके लिए यही बहुत था। यहाँ हर समय शांति रहती थी। न कोई बोलता था, न कोई चिल्लाता था। सब अपने अपने खेमेमें मस्त पड़े रहते थे। उनका समय या तो भाँग रगड़नेमें गुज़रता था या रियासतके गुदगुदे पलंगोंपर टाँगें फैलाकर सोनेमें। इसके अतिरिक्त उन्हें और कोई काम न था। हवनके लिए सामग्री मिल जाती थी तो हवन कर लेते थे, न मिलती थी तो न करते थे। मानो वह इस दुनियाके लोभी जीव नहीं, शांति और संतोषकी मूर्तियाँ थीं। मगर खानेके समय उनमें ऐसी हलचल पैदा हो जाती थी कि देखकर आश्चर्य होता था। बढ़ बढ़ कर हाथ मारते थे। एक दूसरेसे शर्त बद बद कर खाते थे। दिन-रातके चौबीस घंटोंमें एक यही समय था जब वह एक दूसरेको ललकारते थे।

महाराज पृथ्वीचन्द्र बहादुर हँसमुख और उदार आदमी थे। यों उनकी वार्षिक आय चार-पाँच लाखसे अधिक न थी। रियासतकी दशा भी संतोषजनक न थी। उसमें न पाठशालाएँ थीं, न अस्पताल, न धर्मशालाएँ। सड़कोंने दाँत निकाल दिए थे। कर्मचारियोंको कई कई महीने वेतन न मिलता था। हर साल सैकड़ों आदमी मौसमी बुख़ारका शिकार हो जाते थे। जिस साल वर्षा न होती, उस साल तो किसानोंकी दशा देखी न जाती थी। महाराज यह सब-कुछ सह सकते थे, लेकिन दशहरेके दिनोंमें यह उत्सव न हो, यह न सह सकते थे। यह उनके जीवन-सिद्धांतके विरुद्ध था। रियासतमें यह उत्सव सदासे मनाया जाता रहा है, अब कैसे न मनाया जाए?

महाराजकी नाक न कट जाएगी ?—किसानोंपर विशेष कर लगे, रियासतपर कर्ज़ चढ़ जाए, राज-घरानेके गहने बेचने पड़ें, मगर यह वार्षिक उत्सव ज़रूर हो। सारे हिन्दुस्तानकी प्रसिद्ध वेश्याएँ बुलाई जातीं, राजों-महाराजोंको निमन्त्रण भेजा जाता,—दस दिन तक रुपया पानीकी तरह बहाया जाता। महाराजकी इसी दरया-दिलीने सिकंदीरका नाम दूर दूर तक मशहूर कर दिया था। कोई साल ऐसा न जाता था जब उनके उत्सवके चित्र 'टाइम्स' और 'स्टेट्समैन'में न छपते हों। महाराज उन्हें देखकर किसी दूसरी दुनियामें पहुँच जाते थे।

२

मगर कुँवर सूर्यप्रकाशचंद्र महाराजका विरुद्ध प्रतिरूप थे। उन्हें महाराजकी यह रंगरेलियाँ ज़रा भी पसन्द न थीं। वे कहते थे, यह उत्सव नहीं रियासतका नैतिक पतन है। इन दिनों हम गाना नहीं सुनते, दुःखी प्रजाके प्राणोंकी चीत्कार सुनते हैं। हमारे पास प्रजाके बच्चोंको शिक्षा देनेके लिए रुपया नहीं, मगर आचार और सभ्यताका लहू चूसलेनेवाली वेश्याओंके लिए रुपया है। यह अंधेर नहीं तो और क्या है ? वह इस उत्सवका सदा विरोध किया करते थे। उनकी युक्तियोंके सामने महाराजका मुँह न खुलता था। मगर वह बड़े थे और कुँवर छोटे थे। बड़ा आदमी हारकर भी जीत जाता है, छोटा आदमी जीतकर भी हार जाता है। महाराज कुँवरकी युक्तियोंका जवाब न दे सकते थे, मगर उनके लिए यह उत्सव बन्द करना असम्भव था। उनके ख़यालमें यह उत्सव उनके कुल-गौरव और मान-मर्यादाका विज्ञापन था।

रातका समय था, महाराज अपने विलास-महलमें बैठे शराब पीते थे और लखनऊकी प्रसिद्ध वेश्याओंकी ग़ज़लें सुनते थे। कुँवर सूर्य-प्रकाशचंद अजमेरके चीफ्स कालेजमें पढ़ते थे। इन दिनों कालेज बन्द हो जाता है। हर साल कुँवर साहब घर आ जाते थे; इस साल उन्होंने लिख भेजा था, मेरा इरादा इन छुट्टियोंमें पंजाबकी तरफ़ जानेका है, इसलिए घर न आ सकूँगा। महाराज साहब निश्चिन्त थे। स्त्री, सुरा और संगीतः तीन चीज़ें थीं जिन्हें महाराज इस संसारका स्वर्ग कहा करते थे। इस समय तीनों मौजूद थीं। महाराजका मिज़ाज आसमानपर था; मदिरा पीते थे, मोहिनी मूरतें देखते थे और मदभरी तानें सुनते थे। सहसा एक दरबारीने आकर धीरेसे कहा—कुँवर साहब आ गए!

महाराज चौंक पड़े। हाथका गिलास हाथहीमें रह गया। मन मसोसकर बोले—वे तो कहते थे, हम पंजाब जा रहे हैं। सारा मज़ा किरकिरा हो गया। अब फिर वही उपदेश सुनना पड़ेंगे।—कहाँ हैं?

दरबारीने कानके पास मुँह ले जाकर कहा—इधर ही आ रहे थे। खाँ साहब करमदीनने रोक लिया और उनसे बातें करने लगे। मुझे इशारेसे इधर भेज दिया है। (वेश्याओंकी तरफ़ इशारा करके) —इनसे कहूँ, चली जाएँ?

महाराजने कुछ देर सोचा, और तब कहा—कोई ज़रूरत नहीं। वह मेरा बेटा है, मैं उसका बेटा नहीं हूँ। मैं आज उसे बता देना चाहता हूँ कि वह सिकंधीरमें हो या अजमेरमें, इससे दसहरेके उत्सवपर कोई असर नहीं पड़ सकता। आने दो।

दरबारीने सिर झुकाया और चुप-चाप बाहर चला गया। थोड़ी देर बाद कुँवर साहब आकर महाराजके सामने खड़े हो गए।

अखाड़ेकी परियोंपर सहमती छा गई। वे कुँवर साहबका स्वभाव जानती थीं, उनके आते ही बाहर चली गईं। देखते देखते सारा हॉल खाली हो गया। अब प्रत्यक्षमें वहाँ बाप-बेटेके सिवाय कोई भी न था। मगर वहाँ मदिराकी मस्ती थी, पवित्रताका क्रोध था; शासनकी सत्ता थी, जवानीका जोश था। और उनके बीचमें एक बाप और एक बेटा एक दूसरेके सामने खड़े थे, और इस बातपर तुले हुए थे कि आज कुछ निश्चय करके रहेंगे।

कुँवरने क्रोधकी उठती हुई लहरको दबाकर धीरेसे कहा—आपको याद है, आपने पिछले साल मुझे एक वचन दिया था?

महाराज—(बेपरवाहीसे) मुझे कुछ याद नहीं है।

कुंवर—अबके फिर यह वेश्याएँ बुलाई गई हैं। इनपर कितना ख़र्च होगा?

महाराज—मुझसे ये बातें पूछनेवाले तुम कौन होते हो? जितना भी ख़र्च हो जाए, मुझे परवाह नहीं।

कुंवर—दो लाखसे कम क्या होगा?

महाराज—दो लाख क्या, शायद चार लाख हो जाए। बल्कि मेरा ख्याल है, इस साल पाँच लाखसे कम न होगा, ज़्यादा ही होगा।

कुंवर—(और भी विनम्रतासे) मगर इसका परिणाम क्या होगा? रियासतपर ऋण चढ़ जाएगा।

महाराज—मुझे इसकी ज़रा परवाह नहीं। जब तक मैं जीता हूँ, यह उत्सव हर साल धूम-धामसे मनाऊँगा। इसके बाद तुम इन दिनों सोग मनाया करना, मैं तुम्हें रोकने न आऊँगा। अब मेरा राज्य है, उस समय तुम्हारा राज्य होगा।

कुँवर साहब सोचने लगे, अब इस बातका कुछ जवाब दूँ या न दूँ।

महाराज—आख़िर तुम क्या चाहते हो? यह त्योहार बन्द कर दूँ तो तुम खुश हो जाओगे?

कुँवर—बिलकुल नहीं। दसहरा हमारी बहादुरीकी यादगार है। इन दिनों हमें अपना भूला हुआ ज़माना याद आता है। इन दिनों हमारे सोए हुए भाव जागते हैं। इन दिनों हमारी रगोंमें पुराना लहू दौड़ने लगता है। मैं इन वेश्याओंको बुलानेका विरोधी हूँ। इस पवित्र उत्सवमें ये क्यों पाँव रख जाएँ? ये समाजका लहू चूसने-वाली जोंकें हैं। ये हमारे नौनिहालोंका कलेजा खा जाने वाली डायनें हैं। ये हमारे घरोंकी शान और शान्ति मिटा देनेवाली बीमारियाँ हैं। ये हैज़े और प्लेगसे भी भयानक हैं, तपे-दिकसे भी भयानक हैं, काले साँपोंसे भी भयानक हैं। हम अपना धन ग़रीबोंसे छीनकर इनको क्यों दें? जितना धन दस दिनोंमें ये ले जाती हैं, उससे साल-भर दो कालेज चल सकते हैं।

महाराजके पास इसका कोई जवाब न था, निरुत्तर होकर बोले—तो क्या करें?

कुँवर—जो ब्राह्मण हैं उनके ख़ेमोंमें दिया भी नहीं जल रहा है, यहाँ बिजलियाँ जल रही हैं। मैं ऐसी अंधेरनगरीमें पानी भी नहीं पीना चाहता। इससे तो बाहर जाकर भीख माँग खाना कहीं अच्छा है। वहाँ और कुछ न होगा, चित्तका संतोष तो होगा।

यह कहकर कुँवर साहब डर गए कि मुँहसे क्या निकल गया। वे चाहते थे, सम्भव हो तो ये शब्द लौटा लें। लेकिन मुँहसे निकले

हुए शब्द वापिस नहीं आते। अब महाराजको भी क्रोध आ गया। कुरसीपर बैठे थे, जोशसे उठकर खड़े हो गए और निश्चयात्मक स्वरमें बोले—तुम आज चले जाओ। मेरी रियासत सूनी न हो जाएगी।

कुँवर—मैं भी यहाँसे जाकर भूखा न मर जाऊँगा, यह विश्वास रखिए।

यह कहकर कुँवरने उपेक्षा-भावसे महाराजकी ओर देखा और वे बाहर निकल गए।

थोड़ी देर बाद विलास-महलमें फिर नर-पिशाच जमा थे। फिर तबलेपर थाप पड़ी, फिर सुरीली तानें गूँज उठीं।

३

इधर राग-रंगके ये उत्सव हो रहे थे, उधर कुँवर सूर्य-प्रकाशचन्द्र गाड़ीमें बैठे दिल्ली जा रहे थे। क्या करेंगे, कहाँ रहेंगे, उनका प्रोग्राम क्या होगा, इन सब बातोंका उन्हें कुछ भी ज्ञान न था, न उन्हें इस बातकी कुछ चिन्ता थी। वे केवल यह चाहते थे कि रियासतसे निकल जाएँ। वहाँ उनका कोई मुँह न देख ले। वे अगर चाहें तो किसी भी नरेशसे दस-बीस हज़ार रुपया मँगवा सकते हैं। यह उनके लिए जरा भी मुश्किल नहीं। जिसे एक पत्र लिख दें, वही भेज देगा। मगर उन्होंने निश्चय किया कि किसीसे भी रुपया न माँगूँगा। राजों-महाराजोंके साथ उनका कुछ सम्बन्ध नहीं। वे अगर उन्हें रुपया भेजेंगे तो उनके बापकी खातिर भेजेंगे, उनकी खातिर नहीं। और यह वे किसी तरह भी न सह सकते थे। बापसे लड़कर बापके मित्रोंसे सहायता लेना उनके सिद्धान्तके विरुद्ध

था। इस समय उनके पास कोई तीन हज़ारके नोट थे। यह केवल एक महीनेका ख़र्च था। मगर अब वे कुँवर नहीं, मामूली आदमी हैं। अब उन्हें एक एक पैसेपर मुहर लगानी होगी, तभी गुज़ारा होगा। कुँवर साहबको ख्याल आया कि उनके कालिजमें एक क्लर्क था। उसकी तनख्वाह केवल एक सौ रुपया मासिक थी; और वह विवाहित था और उसके कई बच्चे थे। आख़िर वह भी तो किसी तरह गुज़ारा करता ही होगा? मैं तो अकेला हूँ, क्या मेरे लिए एक सौ रुपया मासिक काफ़ी नहीं? कुँवर साहबने कुछ देर सोचा और तब निश्चय किया कि एक सौ रुपया मासिकसे एक पाई भी अधिक ख़र्च न करूँगा। तीन हज़ार रुपया है, अढ़ाई साल मज़ेसे कट जाएँगे। इस बीचमें कोई न कोई वसीला निकल आएगा।

अब रातका एक बज गया था। कुँवर साहबकी आँखें बन्द होने लगीं। उन्होंने पाँवसे बूट निकाल दिया, मोज़े उतार दिए, कोट उतारकर खूँटीके साथ लटका दिया और सोनेका निश्चय किया। एकाएक वे चौंक पड़े,—बिस्तरा कहाँ था? ज़िन्दा-दिल कुँवरने अपनी भूलपर पूरे ज़ोरसे कहकहा लगाया और वे कमरेकी चिटखनीको अन्दरसे बन्द करके खाली सीटपर लेट गए। यह पहला अवसर था जब वे बिना सामानके यात्रा कर रह रहे थे। इस समय तक उन्होंने बहुतसे सामान और कई कई नौकरोंके साथ सफ़र किया था। आज उनके साथ कोई सामान, कोई नौकर न था।

जब उनकी आँख खुली, उस समय दिन निकल चुका था, और गाड़ी गाज़ियाबादके स्टेशनपर खड़ी थी। कुँवरको पहले तो संदेह हुआ कि रातकी घटनाएँ घटनाएँ न थीं,—थके हुए मनके

सुपने थे। मगर फिर देखा कि मैं वास्तवमें गाड़ीमें हूँ और गाड़ी दिल्ली जा रही है, तो निश्चय हो गया कि रातकी घटना सुपना नहीं सत्य है, और वे सचमुच घरसे निकल आए हैं। कुँवर साहब उठते ही चाय पीनेके आदी थे। सामने चाय देखते ही उनके जीमें आया, आवाज़ देकर बुला लें। लेकिन फिर रातका फ़ैसला याद आ गया। सोचा, ऐसी फ़जूल-ख़र्चीसे सौ रुपएमें गुज़ारा हो चुका!

कुँवर साहबने चाय पीनेका विचार छोड़ दिया और वे 'स्टेट्स-मैन'का नया अंक ख़रीदकर पढ़ने लगे।

पहले उन्होंने 'वाण्टेड' के कालम देखे, इसके बाद वे ताज़ी ख़बरें पढ़ने लगे। सहसा उनके हाथोंमें अख़बार काँपने लगा। आठवें पृष्ठके तीसरे कालममें यह सूचना छपी थी—

पचास हज़ार रुपया इनाम

पहाड़ोंके महाराज काश्मीर-नरेशने घोषणा की है कि जो आदमी काश्मीरके पहाड़ी लोगोंके रस्म-रिवाजपर सर्व-श्रेष्ठ ग्रंथ लिखेगा, उसे पचास हज़ार रुपया इनाम दिया जायगा। यह ग्रंथ अँगरेज़ी, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी, किसी भी भाषामें हो लेकिन दो सौ पृष्ठसे कमका न होना चाहिए। इनामके लिए सब ग्रंथ २२ दिसम्बरसे पहले चीफ़ सेक्रेटरीके पास पहुँच जाएँ। काश्मीर-नरेशका निर्णय अंतिम होगा।

कुंवरको आँखें मिल गईं। कई मिनट तक अख़बारको जंघापर रखे सोचते रहे। यह मामूली ख़बर न थी, उनके दुर्भाग्यके अँधेरेमें जगमगाती हुई रोशनी थी,—जैसे काले अक्षरोंमें उज्ज्वल उपमा छिपी हो। इस उपमाने उनका मन मोह लिया।

उन्होंने खिड़कीसे बाहर झाँककर देखा; वृक्ष, खेत, पानीके जौहड़, उड़े चले जा रहे थे। पता नहीं किधर, किस देशको ? यही दशा कुँवरकी भी थी। वे भी गाड़ीमें बैठे उड़े चले जा रहे थे। उनकी तरह वे भी अकेले थे। उन्हें भी यह पता न था कि वे किधर जा रहे हैं ? लेकिन अख़बारके समाचारने उनकी मुश्किलको दूर कर दिया। अब उनके सामने एक कर्तव्य,—एक उद्देश्य था। कितनी दूर, मगर कितना साफ़; कितना कठिन, मगर कितना मनोहर ! कुँवरने आँखें बन्द कर लीं और सफलताके सुन्दर सुपनोंमें लीन हो गए।

४

तीसरे दिन वे एक हैंड-बैग लिये रावलपिन्डीसे पचास मील परे पहाड़पर चढ़ रहे थे। एक ओर गगन-भेदी पहाड़ खड़े थे, दूसरी ओर नीचे जेहलमका सफ़ेद पानी पारेके साँपकी तरह लहरा रहा था, और बीचमें रस्सेकी-सी सड़क पहाड़के चारों ओर चक्कर खाती हुई धीरे धीरे ऊँची होती जाती थी, और उस सड़क और नदीके बीचकी तराईमें छोटे छोटे खेत थे, और छोटे छोटे झोंपड़े थे। कुँवर सूर्यप्रकाशको यह दृश्य ऐसा मनोहर मालूम हुआ कि उनके पाँव रुक गए। यह आदमियोंकी कारीगरी न थी, प्रकृतिका सौन्दर्य्य था। यहाँ वसन्त खेलता था, यहाँ लालित्य नाचता था, यहाँ आह्लाद ग़ाता था। यहाँकी वायुमें मद मिला था। आकाशको उन्होंने इतना विस्तृत, इतनी दूर तक फैला हुआ, कभी न पाया था। पहाड़पर हर साल जाते थे, मगर मोटरमें बन्द होकर। और मोटरकी सवारीमें इतना अवकाश कहाँ कि कोई प्रकृतिके सौन्दर्यपूर्ण दृश्योंको काव्यकी आँखोंसे

देख सके। राग और रंगका यह देश उन्होंने पहली बार देखा, और देखकर मोहित हो गए। वह इस दृश्यावलीमें खोए-से गए। तंग शहरोंमें यह बात कहाँ? इस स्थानके सामने शहर उन्हें जेलखानेसे मालूम होने लगे।

इतनेमें हार्न बजा और इसके साथ ही एक मोटर पाससे निकल गया। कुँवर सूर्यप्रकाशने उसकी तरफ़ देखा और आगे बढ़े। कुछ ही मिनटमें मोटर पहाड़के चक्करदार रास्तेमें आँखोंसे ओझल हो गया। कुँवर इधर उधर देखते हुए फिर चलने लगे। सामनेसे एक लड़की आ रही थी जिसकी पीठपर उसका छोटा भाई था। कुँवरने उसे देखा और मुस्करा कर कहा—यह तुम्हारा भाई है क्या? कैसा प्यारा बच्चा है! क्या नाम है इसका?

लेकिन लड़की डरकर पीछे हट गई। उसने भाईको पीठसे उतार दिया और दोनों हाथ बाँधकर खड़ी हो गई।

कुँवरको आश्चर्य हुआ। लेकिन यह आश्चर्य ज़्यादा देर न रहा। एकाएक उनकी दृष्टि अपनी पोशाकपर पड़ी,—बन्द गलेका रेशमी लम्बा कोट, सफेद चूड़ीदार पायजामा, चमकदार पेटेण्ट लैदरका बूट, सिर-पर रियासती पगड़ी। कौन है जो देखते ही न पहचान ले कि यह कोई राजा-महाराजा है?—वे लोगोंके रीति-रिवाज जाननेके लिए आए हैं, लोग उनके पास भी न फटकेंगे। कुँवरने निश्चय किया, यह कपड़े, जितनी जल्दी हो सके, उतार देने चाहिएँ।

कुछ आगे बढ़े तो एक पहाड़ी आता दिखाई दिया। बाइस-चौबीस सालकी उम्र होगी; चौड़ा सीना, लम्बा कद। शायद कहीं जा रहा था, इसीलिए धुले हुए कपड़े पहने था। कुँवरके मनकी

मुराद पूरी हो गई। वह नज़दीक आया तो उससे बोले—इधर आओ।

पहाड़ीपर जैसे बिजली गिर पड़ी। हाथ बाँधकर बोला—क्या है सरकार! महारा क्या दोस है?

कुँवर—अपने कपड़े उतार दो।

पहाड़ी—अरे सरकार! यह लीड़े आपके किस काम आएँगे? आपके खिदमतगार भी तो न पहन सकेंगे।

कुँवर—(सुनी अनसुनी करके) तुम कपड़े उतार दो, वरना पुलिसके हवाले कर दूँगा। सुना तुमने! जल्दी करो।

पहाड़ी हैरान था। वह बेचारा समझता न था कि ये मेरे इन मैले कपड़ोंका क्या करेंगे? वह कुँवरकी ओर देखकर मिन्नत-भरे स्वरमें बोला—सरकार! मैं नंगा कैसे घर जाऊँगा?

कुँवरने देखा, सख्तीके बिना काम न चलेगा। उन्होंने उसको गरदनसे पकड़कर झिंझोड़ते हुए कहा—कपड़े देते हो या नहीं? अगर तुमने अब भी आना-कानी की तो उठाकर नदीमें फेंक दूँगा।

यह कहकर उन्होंने अपना बैग खोला ओर उसमेंसे एक धोती निकालकर पहाड़ीके हवाले की। पहाड़ीने चारों ओर देखा कि शायद कोई आता हो। लेकिन वहाँ दूर दूर तक कोई न था,—न कोई यात्री, न कोई मोटरकार। हताश होकर वह कपड़े उतारने लगा। और पाँच मिनट बाद कुँवर साहब पहाड़ी नौजवानकी पोशाकमें खड़े थे और पहाड़ीसे कह रहे थे—मेरे कपड़े तुम ले जाओ।

पहाड़ी डरता था। उस बेचारेमें इतना साहस कहाँ कि ऐसे बहुमूल्य कपड़े पहन ले! उसने ऐसे कपड़े आज तक न देखे थे,

उसे उनको हाथ लगाते भी डर लगता था। वह समझता था, यह कपड़े मेरे छूते ही मैले हो जाएँगे। डरते डरते बोला—न सरकार! यह महारे जोग नहीं।

कुँवरने अपने उतारे हुए कपड़े और बूट लपेटकर एक रूमालमें बाँध दिए और उसे देते हुए बोले—ले जाओ। मैं आप दे रहा हूँ। कोई हर्ज नहीं। ब्याह-शादीमें पहन लेना।

मगर उसमें अब भी साहस न था। लाशको चाहे कम्बलमें लपेटो चाहे अंगीठीके पास रखो, मगर वह गरम नहीं होती।

आख़िर कुँवरने बैग उठाया और चलनेको मुड़े। सहसा उन्हें कोई बात याद आ गई। पहाड़ीकी ओर घूमकर बोले—तुम्हारा नाम क्या है?

पहाड़ी—बेली।

कुँवर—(हँसकर) यह नाम पहले तुम्हारा था, अब हमारा है।

यह कहकर उन्होंने बैगको पहाड़ियोंकी तरह पीठपर रख लिया और वे कुलियोंकी तरह नंगे पाँव काश्मीरकी ओर चले। पहाड़ी उनको पहले तो देखता रहा कि कहीं लौट न आएँ, मगर जब वे पहाड़के चक्करदार रास्तोंमें गुम हो गए, तो कपड़ोंकी गठड़ी उठाकर चोरोंकी तरह भाग गया। इतनेमें ठंडी हवा चलने लगी। आसमानपर बादल छा गए और बिजली चमकने लगी।

६

थोड़ी देर बाद चारों तरफ़ अँधेरा छा गया और वर्षा होने लगी। ऐसे ज़ोरसे जैसे आज सब-कुछ बहा ले जायगी। कुँवर सूर्यप्रकाश चारों ओर देखते थे, मगर उन्हें कोई आरामकी जगह दिखाई न देती थी। क्या करें, किधर जाएँ, कहाँ आश्रय लें? चिड़ियाँ

घोंसलोंमें छिपी हुई थीं, कीड़े बिलोंमें घुस गए थे, मगर एक रियासतके राजकुमारके लिए कोई जगह न थी। वे वर्षामें भीगते, अँधेरेमें ठोकरें खाते, गिरते-पड़ते चले जाते थे। उनके बैगमें तीन हज़ारके नोट थे, मगर उन नोटोंमें यह शक्ति नहीं थी जो उन्हें वर्षासे बचा सकती। यह काम शायद डेढ़-दो रुपएका छाता अच्छी तरह पूरा कर सकता, मगर इस समय वह भी न था। कुँवर साहब एक जगह ठहर गए और सोचने लगे, परदेसमें यह भी होता है।

एकाएक उन्हें एक रोशनी नज़र आई। वहाँसे कोई आध मीलकी दूरीपर एक झोंपड़ेमें एक दिया टिमटिमा रहा था और उसकी मध्यम रोशनीमें एक पंद्रह सालकी लड़की अपनी मरती हुई माँके सिरहाने बैठी उसकी सेवा कर रही थी। माँ हड्डियोंका पिञ्जर थी जिसमें कभी जान मालूम होती थी, कभी मालूम न होती थी। अब उसमें हाथ हिलानेकी भी शक्ति न थी। ज़ाहिर था कि अब उसके बचनेकी कोई सम्भावना नहीं। मगर लड़कीको अब भी आशा थी कि शायद बच जाए! शायद भगवानकी कृपा-दृष्टि हो जाए!

बाहर वर्षा होती थी, बिजली चमकती थी और सन्नाटेकी हवा चलती थी;—मानों ये तीनों मिलकर पहाड़को उसकी जगहसे उखाड़ कर फेंक देंगे। इस तूफ़ानमें दो दिए टिमटिमा रहे थे। दोनों जर्जर थे, दोनों पुराने थे, दोनोंका तेल धीरे धीरे समाप्त हो रहा था और दोनोंपर मृत्युके क्रूर झोंके आक्रमण कर रहे थे। आख़िर बारह बजेके करीब दोनों दिए बुझ गए। झोंपड़ेके अन्दर भी मृत्यु थी, बाहर भी मृत्यु थी। लड़की फूट फूट कर रोने लगी। अब उसका इस दुनियामें कोई भी न था। क्या करे, किधर जाए, किससे सहायता माँगे?

जीवनके तूफ़ानमें कौन उसकी बाँह पकड़ेगा ? कौन उसे सहारा देगा ? पहले बाप मरा था, आज माँ भी मर गई। आज वह अनाथ हो गई।

उसने चमड़ेकी कुप्पीसे तेल उँड़ेलकर दीपक जलाया और माँकी ओर देखा। अब उसमें जीवनका कोई भी चिह्न बाकी न था। लेकिन हम अपने प्रियजनोंकी मृत्युपर जल्दी विश्वास नहीं करते। लाश देखकर भी संदेह होता है कि शायद मरा न हो, बेहोश हो गया हो, शायद सो रहा हो। कभी कभी ख़्याल आता है, अभी उठकर बैठ जाएगा; अभी बातें करने लगेगा; अभी पानीका घूँट माँगेगा। आशा भी कितनी सख़्त-जान है। वह मरते मरते भी उठकर खड़ी हो जाती है।

यही दशा लड़कीकी थी। उसे भी सन्देह हो रहा था, शायद माँ मरी न हो। उसने अपने दोनों हाथ माँके गालोंपर रख दिए और हिलाकर कहा—माँ !

माँने कोई उत्तर न दिया।

लड़कीने उसे एक बार फिर झिंझोंड़ा और कहा—माँ !

मगर यह माँ न थी; मौन, बेजान, ठंडी लाश थी। अब लड़कीको विश्वास हो गया कि माँ इस दुनियामें नहीं। वह लाशपर गिर पड़ी और सिसक सिसक कर रोने लगी।

थोड़ी देर बाद वह फिर उठी और लाशसे कहने लगी—माँ! यह तुमने क्या किया ? मुझे अकेली छोड़कर कहाँ चली गईं ? अब दुनियामें मेरा कौन है ? सभी बेगाने हैं, अपना कोई भी नहीं।

सहसा किसीने दरवाज़ेको खटखटाया। लड़की चौकन्नी हो गई।

इस अँधेरी तूफ़ानी रातमें उसके दरवाजेपर कौन आया है ? किसी दूसरे समय वह दरवाज़ा खोलनेसे पहले बीस बार सोचती, लेकिन इस वक्त उसे ज़रा भय न था।

उसने दरवाजेके नज़दीक जाकर आँसुओंसे रुकी हुई आवाज़में पूछा—कौन है ?

एक परदेसी।

आवाज़ मीठी थी, लड़कीने दरवाज़ा खोल दिया—देखा, एक देवता-स्वरूप बाईस-तेईस वर्षका लम्बा जवान खड़ा है, सिरसे पैर तक पानीमें भीगा हुआ। हाथमें बैग है, पाँव काँप रहे हैं मानों अभी गिर पड़ेगा। लिबास साफ़ है, चेहरेपर तेज है। उसने हज़ारों पहाड़ी देखे थे मगर ऐसा पहाड़ी आजतक न देखा था। उसके बाल चिकने थे, आँखें चमकदार थीं, कद लम्बा था और पाँव,—वे भी बहुत ख़ूबसूरत थे। उस पहाड़के लोगोंके पाँव तो ऐसे न होते थे। पता नहीं, यह किस देशका रहनेवाला है।

कुँवरने कहा—जरा आज्ञा हो तो थोड़ी देरके लिए यहाँ ठहर जाऊँ। मेह बन्द होते ही चला जाऊँगा।

लड़कीने मुँहसे कुछ न कहा, लेकिन सिर हिलाकर आज्ञा दे दी।

६

झोंपड़ेके अन्दर जाकर कुँवरने जो कुछ देखा उससे उसका दिल काँप उठा। यह लड़की अनाथ, अकेली, असहाय है। दुनियामें ऐसा कोई नहीं जिसे इसका दर्द हो, जो इसके दुःखको अपना दुःख समझे, जो इसकी तकलीफ़में इसका हाथ बटाए। क्या करेगी, अकेली कैसे रहेगी, कहाँसे खाएगी ? वे उसकी सहायता

करना चाहते थे, मगर सहायता करनेका कोई उपाय न सूझता था। उनके पास तीन हजार रुपया था। वे सारेका सारा उसे देनेको तैयार थे। लेकिन रुपया एक नौजवान, खूबसूरत, कुँवारी लड़कीकी रक्षा न कर सकता था। इससे उल्टा उसके प्राण और सतीत्व विपदमें पड़ जानेका अंदेशा था। पाप कमज़ोरके रूप और धनपर इस तरह लपकता है जैसे बकरीपर चीता। कुँवर साहब सोच सोच कर परेशान हो गए। वे इस विषयपर जितना सोचते थे, अँधेरा उतना ही बढ़ा जाता था।

प्रातःकाल आसपासके लोगोंको मालूम हुआ, बुढ़िया मर गई है। सब आकर जमा हो गए। लरजाँ (लड़कीका नाम) के पास कुछ भी न था। उन्होंने चन्दा जमा किया और नदीके किनारे लाश जला दी। इस समय लरजाँकी दीन दशा देखी न जाती थी। चीख़ चीख़ कर रोती थी और सिरके बाल नोचती थी। सबकी आँखें भीगी थीं। स्त्रियाँ उसे धीरज देती थीं। कहती थीं, बेटा जो हो गया, वह हो गया। मौतसे किसीका ज़ोर नहीं चलता। बड़े बड़े बादशाह नहीं रहे, हम-तुम किस गिनतीमें हैं ? मगर लरजाँके आँसू न थमते थे। गरम पानीका एक सोता था जो बराबर बहे जाता था। उसके सामने एक अनिश्चित, भयानक और अँधेरा भविष्य फैला हुआ था। सोचती थी, अब इस दुनियामें मेरा कौन है ?

जब लाश जल चुकी तो सब आकर झोंपड़ेके बाहर बैठ गए और सोचने लगे—अब लरजाँ कहाँ रहेगी ?

एक आदमीने कुँवर साहबसे पूछा—भाऊ ! तुम कौन हो ?

लरजाँ रो रही थी। यह सवाल सुनकर उसके कान भी खड़े हो गए।

कुँवरने गंभीरतासे जवाब दिया—परदेसी हूँ। बड़ी दूरसे आया हूँ। अब इस बेचारीके लिए कुछ सोचो। कहाँ रहेगी। यहाँ अकेले रहना तो मुश्किल होगा। रो रो कर मर जाएगी।

पहाड़ियोंके चौधरीने हुक्केका कश लगाकर कुँवरकी ओर देखा और कहा—अरे नानकी मर गई है तो क्या हुआ, हम तो नहीं मर गए! लरजाँके लिए किसी चीजका टोटा नहीं। पहले यह खाएगी फिर हम खाएँगे। पहले यह पीएगी, फिर हम पीएँगे। इसे क्या फिकर है? यह मेरे घरमें रहेगी। मेरी दो छोकरियाँ पहले हैं, एक और सही। गुजर हो जाएगी। देनेवाला संकर भगवान है। कोई साला क्या दे सकता है?

दूसरेने कहा—सच कहते हो भाऊ, लरजाँको क्या फिकर है। फिकर करनेको हम बैठे हैं। इसकी माँ नहीं मरी, हमारा एक बाजू टूट गया है।

चौधरीकी दोनों लड़कियाँ चन्दी और मल्की लरजाँके पास आ बैठीं। चन्दीने कहा—वहाँ तुझे जरा तकलीफ न होगी। चल तेरे कपड़े-बरतन उठा लूँ।

लरजाँने रोते हुए कहा—मं यह जगह छोड़कर कहीं न जाऊँगी। यह मेरे माँ-बापका घर है।

यह कहते कहते उसकी चीखें निकल गईं। उससे और कुछ न कहा गया। अड़ोसी-पड़ोसी भी रोने लगे।

चौधरी बोला—यह तो पगली है, यहाँ कैसे रहेगी? यहाँ रातको इसकी माँका भूत आएगा। अकेली होगी तो डरके मारे मर जाएगी। चल चन्दी! इसका लीड़ा-लत्ता उठा ले। जहाँ हम, वहाँ यह।

लरजाँके आँसू थम गए। उसने दृढ़तासे कहा—बेसक ले, जाओ। पर मैं यहीं रहूँगी।

एक आदमीने गुस्से होकर कहा—यहाँ रहेगी तो चार रोजमें मर जाएगी। तुझे यहाँ कौन खिलाएगा, बोल?

लरजाँने ईंटका जवाब पत्थरसे दिया, बोली—जो तुझे देता है, वह मुझे भी देगा। मेरी माँ मरी है, परमेसर नहीं मरा। उसे सभोंका फिकर है।

चौधरीने सोचा, इस समय चुप रहो, अपने आप मान जाएगी। चोट ताज़ी हो तो दर्दका अनुभव नहीं होता। पूरा अनुभव बादमें होता है। थोड़ी देर सब मिलकर सलाह करते रहे, इसके बाद अपने अपने घरको चले गए। कुँवरसे कहते गए—इसे समझा देना।

अब वहाँ सिवाए लरजाँ और कुँवरके कोई न था।

कुँवरने नरमीसे फटकार कर कहा—तुमने यह क्या किया? चौधरीके घर चली जातीं, तो तुम्हें ज़रा तकलीफ़ न होती। लड़कियोंके साथ दिल बहला रहता। यहाँ इस झोंपड़ेमें तुम्हारा कौन है?

लरजाँने कुँवरकी ओर अजीब दृष्टिसे देखा। वह दृष्टि कहती थी, तुम्हें क्या मालूम, मैं क्यों नहीं गई?

कुँवर साहब कुछ कुछ समझ गए। थोड़ी देर पहाड़की ऊँची चोटियोंकी तरफ़ देखते रहे। इसके बाद ठंडी साँस भर कर बोले—तो अब क्या करोगी?

लरजाँके पास कोई जवाब न था।

कुँवर साहब जरा आगे खिसक कर मीठी आवाजमें बोले—मुझे एक उपाय सूझा है।

लरजाँकी मौन आँखोंने पूछा—क्या ?

कुँवर—यहाँ कोई ग़रीब बूढ़ी स्त्री नहीं जो बिल्कुल अकेली हो ?

लरजाँ—(कुछ सोचकर) एक बुढ़िया किरपी है। बेचारी अपने छोकरेके हाथों बहुत परेसान है। वह बेईमान उसे रोज रोज मारता है। यहाँ आया करती थी, पर अब क्या करने आएगी। माँ उसे कभी कभी धान-चावल दे दिया करती थी।

कुँवर—उसे बुला लो। तुम्हारे खाने-पीनेका प्रबन्ध मैं कर दूँगा। कितने रुपएमें काम चल जाएगा ?

लरजाँकी आँखें खुलीकी खुली रह गईं। उसने एक ऐसी बात सुनी थी जिसका उसे ख़्याल भी न था। उसे अपने दिलमें एक लहर-सी उठती हुई मालूम हुई। धीरेसे बोली—मद्दा तुम कब तक देते रहोगे ?

कुँवर—(मुस्कराकर) जब तक मैं जीता हूँ। बोलो, तुम्हें कितने रुपए महीना मिल जाएँ तो दोनोंका गुज़ारा हो जाए ?

लरजाँ—(डरते डरते) पाँच छः रुपए।

कुँवर—(लरजाँकी आँखोंमें आँखें डालकर) बस, इतनेमें गुज़ारा हो जायगा ? तो उस बुढ़ियाको बुला लो और मज़ेसे रहो। और हाँ, इस समय तुम्हारे घरमें खाने-पीनेका सामान है या नहीं ?

लरज़ाने शर्मसे गरदन झुका ली और जवाब दिया—नहीं। सब कुछ खतम हो गया। पर आज तो भात-वात कुछ बनेगा नहीं। कोई न कोई भेज देगा। सायद चौधरी ही भेज दे।

इतनेमें एक औरत आ निकली। वह यह कहने आई थी कि चौधरी कहता है, चली आओ। वहाँ रातको अकेली कैसे रहोगी। कुँवरने उसे एक आना दिया और कहा—जा, जाकर किरपीको बुला ला।

थोड़ी देर बाद किरपी आ गई। कुँवरने उससे कहा—बुढ़िया, तू इसके साथ रहे तो तुझे ज़रा तकलीफ़ न हो। तुम दोनोंका ख़र्च मैं दूँगा। वहाँ बेटेकी धौंस क्यों सहती है?

अन्धा क्या चाहे, दो आँखें। बुढ़िया मान गई। लरजाँको अँधेरी रातमें रोशनी मिल गई। अब उसे अपना घर न छोड़ना पड़ेगा, अब उसे पड़ोसियोंमें हीन होकर न रहना पड़ेगा। उसके दिलसे मुसाफिरके लिए रह रहकर दुआएँ निकलती थीं। उसके लिए वह आदमी न था, कोई देवता था, जिसे भगवानने उसकी सहायताके लिए भेजा था। बार बार उसकी तरफ़ श्रद्धासे देखती थी।

जब रात हो गई तो कुँवर साहबने पाँच पाँच रुपएके कई नोट निकाले और लरजाँको देकर कहा—ये अपने पास सँभालकर रक्खो। जब ख़र्च हो जाएँगे तो और दूँगा।

यह कहकर कुँवर साहबने अपना बैग उठाया और झोंपड़ेसे बाहर निकल आए। किरपी हुक्का पीनेके लिए चिलमपर आग रख रही थी। लरजाँने कुँवर साहबसे पूछा—इस बखत कहाँ जाओगे?

कुँवर साहबने उँगलीके इशारेसे दिखाकर कहा—वह सामनेका झोंपड़ा खाली पड़ा है। मैं वहीं रहूँगा।

लरजाँ चाहती थी, उन्हें जाने न दे, कहे, यहीं पड़ रहो। मगर शर्मने ज़बान पकड़ ली। एक भी शब्द न बोल सकी।

कुछ ही देरमें कुँवर साहब बाहरके अँधेरेमें ग़ायब हो गए। लरजाँने ठंडी आह भरी और कहा—भगवान इस देवताको सलामत रखे।

७

दूसरे दिन यह घटना बच्चे बच्चेकी ज़बानपर थी। दोपहरके समय एक दूकानपर बैठे हुए एक आदमीने कहा—भाऊ, लरजाँकी तो परारबध खुल गई। मा मरी थी, अम्बीर परदेसी मिल गया। अब उसे क्या टोटा है? रानी बनकर बैठेगी और पकी पकाई खाएगी।

जग्गू बोला—सुना है, खूब मालदार है। पाँच पाँच रुपएके कई लोट दे गया, और कहता है, और भी दूँगा।

खुशियाने आँखें नचाकर कहा—बदमास डाकू मालूम होता है। देख लेना, किसी दिन गिरफ्तार हो जायगा।

चौधरी हुक्का पी रहा था। खाँसते हुए, रौनकीकी तरफ़ चिलम बढ़ाकर बोला—यह तुम्हारी खाम-ख्याली है। आदमी बुरा नहीं मालूम होता। जरूर कोई भागवान है। अपने कामसे इधर आ निकला। चार दिन रहकर चला जायगा।

रौनकीने चिलमपर कोयला ठीक करते हुए कहा—बदमास न होता, तो आते ही उस छोरीका महीना क्यों बाँध देता? हमारा महीना तो किसी भड़ुएने न बाँध दिया। चिकना चेहरा देखकर फिसल पड़ा।

खुशियाने मुस्कराकर कहा—उसका जमाना है भाऊ! तुम क्या करोगे, मैं क्या करूँगा?

सब हँसने लगे। चौधरी बोला—यह तुम्हारा भरम है। मेरा हिरदा कहता है, उसके मनमें खोट नहीं। न लरजाँकी आँखमें खराबी है। खराबी है तो तुम्हारे हिरदेमें है। अगर खराब होता तो अलग झोंपड़ेमें क्यों चला जाता? चार रुपया महीना किराया देगा।

जग्गूने चौधरीकी 'हाँमें हाँ' मिलाते हुए कहा—बोलो भाऊ, क्या कहते हो? चौधरीने लाख रुपएकी बात कह दी। अब इसका जवाब कोई क्या देगा।

रौनकीने नाराज़गीसे कहा—इसका जवाब हम क्या देंगे, इसका जवाब समय देगा। मगर कोई यह तो पूछे कि वह यहाँ आया काहेको है? कोई देखने लैक सहर तो है ही नहीं। अमीर है तो दिल्ली-कराँची जाए, यहाँ क्या करने आया है?

यह कहकर रौनकीने चारों ओर देखा, जैसे आँखों ही आँखोंमें कहा—अब कहो, हमारा ख़्याल ठीक है या नहीं।

चौधरी जा रहा था। जाते जाते रुक गया और पीछे मुड़कर बोला—वह यहाँ सैर करने और हवा-पानी बदलने नहीं आया, काम करने आया है। कोई पत्थरोंका बहुत बड़ा सौदागर है, यह उसका गुमासता है। यहाँसे पहाड़के पत्थर ढूँढ़ ढूँढ़कर भेजेगा और इनाम-बखसीस लेगा। जब काम हो जायगा, चलता बनेगा।

चौधरीको जाते देखकर बाकी लोग भी खड़े हो गए। पल-भरमें वहाँ कोई भी न था।

उधर कुँवर साहब अपने झोंपड़ेमें एक तख्त-पोशपर बैठे किताब लिखनेकी तैयारियाँ कर रहे थे। इतनेमें किरपी खाना लेकर पहुँच गई। कुँवरने कलम हाथसे रख दिया और मुस्कराकर कहा—तुमने बहुत तकलीफ़ की। मैं इन्तज़ाम कर लेता।

किरपी थक गई थी। तख्त-पोशपर थाल रखकर परे बैठ गई और हाँपते हुए बोली—तकलीफ कोई नहीं है बेटा, रोज दे जाया करूँगी। और तुम इल्तजाम क्या करोगे? परदेसमें खाना अच्छा

मिल जाए तो जरा तकलीफ नहीं होती। तुम्हारे लिए तो सरीरकी जान भी हाजिर है।

कुँवर—रोज आया करोगी ? बहुत फ़ासिला है, तुमसे चला न जाएगा।

किरपी—खूब चला जायगा बेटा, लो हाथ धो लो, खाना ठंडा हो जायगा।

कुँवरने हाथ धोए और खाने बैठ गए। किरपी जाकर एक घड़ा भर लाई और एक कोनेमें रखकर बोली—जब प्यास लगे, पी लेना।

कुँवर खाते खाते मुस्कराकर बोले—तुमने तो मेरे लिए गिरस्तीका सामान जमा करना शुरू कर दिया।

किरपी—अरे बाबा, जहाँ पसु-पंछीका बच्चा बैठता है, चार तिनके जमा कर लेता है। तुम तो फिर भी मानुस हो।

कुँवर खाना खाकर उठ बैठे। किरपीने हाथ धुलाए और कहा—तुमने तो सब-कुछ छोड़ दिया। मजा न आया होगा।

कुँवर—(कुल्ली करके मुँह पोंछते हुए) मज़ा न आता तो इतना क्योंकर खा जाता ? पेट भरकर खा लिया।

किरपी बाहर जाकर मिट्टी ले आई और गिलास साफ़ करके घड़ेके पास रख दिया।

कुँवरने डकार लेकर कहा—इसकी क्या ज़रूरत है, ले जाओ।

किरपी—प्यास लगेगी तो पानी कैसे पियोगे ?

कुँवरने कोई जवाब न दिया। किरपीने कहा—लरजाँको तुमने बचा लिया, वरना रो रोकर मर जाती, चौधरीका बेटा खडकू दारू पीता है। लरजाँ वहाँ कभी न जाती।

कुँवर—अब क्या हाल है ? अभी तो बहुत उदास होगी।

किरपी—रो रही है, पर रपता रपता सँभल जाएगी। बड़ी सीधी साधी छोरी है।

यह कहकर उसने जूठे बरतन उठाए और चली गई।

कुँवर साहब तख्त-पोशपर लेट गए।

शामके समय किरपी खाना लेकर आई तो एक दिया भी ले आई। कुँवर साहब कल अँधेरेमें सोए थे। आज दिया पाकर उन्हें बहुत खुशी हुई, बोले—यह तुमने ख़ूब सोचा। दिएकी बहुत ज़रूरत थी।

किरपीने हाथ धुलाकर थाल सामने रख दिया। कुँवर साहब खाना खाने लगे।

किरपीने कहा—लरजाँने याद दिलाया, मुझे तो ख्याल ही न था।

कुँवर साहबके चेहरेपर मुस्कराहट आ गई।

किरपी—कहती थी, पूछ आना, कल क्या बनाएँ ?

कुँवर साहबने एक हाथसे रोटी तोड़ते हुए कहा—जो मरजी हो, बना लो। मैं क्या बताऊँ ? जो बनेगा, खा लूँगा।

किरपी—तुम न बताओगे तो और कौन बताएगा ? हम तो मिरच-प्याजके साथ भी मजेसे खा लें। तुम्हारा ही फिकर है।

कुँवर—मैं भी प्याज़के साथ खाऊँगा।

एक दिन खाना खाते समय कुँवरने कहा—आज खाना बहुत अच्छा पका है। जी चाहता है खाता ही जाऊँ। किसने पकाया है ?

किरपीका चेहरा उदास हो गया, बोली—लरजाँने।

कुँवर—खूब पकाती है। मेरी तरफसे शाबाश कह देना।

किरपी कुछ न बोली। कुँवर साहबने उसके चेहरेकी ओर देखा तो सब कुछ समझ गए। बिगड़ी बात बनानेके लिए बोले—कल भात किसने पकाया था? ऐसा भात मैंने कभी नहीं खाया।

किरपीका सूखा हुआ चेहरा हरा हो गया। खुश होकर बोली—कल मैंने पकाया था।

घर जाते ही लरजाँने पूछा—क्यों चाची, दिनभर क्या करते हैं?

किरपी—बेटी, कागदपर लिखते रहते हैं। कई कागद लिख लिखकर काले कर दिए।

लरजाँ—आज कुछ कहते थे?

किरपी—कहते थे खाना बहुत स्वादु बना है, तुम्हें साबासी दी है। लाओ पीठ ठोंक दूँ।

लरजाँ—(मुस्कराकर) कूड़ क्यों तोलती हो? उन्होंने यह कभी न कहा होगा।

किरपी—मुझे कूड़ तोलनेकी क्या गरज है। जो कहा था, मैंने तुमसे कह दिया।

लरजाँने जब यह सुना कि कुँवरने मेरे हाथका बना खाना पसन्द किया है, तो उसका चेहरा खिल उठा। सारा दिन खुश रही, दोपहरके समय किरपीसे बोली—यह परदेसी न आता तो मेरा क्या बनता! कोई मुट्ठी-भर चावलकी भी मदत न देता। क्यों किरपी?

किरपी किसी विचारमें मग्न थी। चौंककर बोली—और क्या?

लरजाँ—इस पराए संसारमें किसीका कौन बनता है। संकटमें अपने भी अलग हो जाते हैं। कोई किसीकी मदत नहीं करता। यह आदमी नहीं देओता है।

किरपी—जरूर देओता है। नहीं तो इस तरह मदत न करता। मेरा बड़ा ख्याल रखता है। 'माँ' कहकर बुलाता है। मैं तो उसे देखकर खुसी हो जाती हूँ। रोयाँ रोयाँ असीरबाद देता है।

लरजाँ—परमेसर जाने, कहाँका रहनेवाला है। कहीं दूरका ही रहनेवाला होगा। ऐसे महापुरस इस नरकमें तो होते नहीं।

किरपी—एक मेरा छोरा है, एक यह है। दोनोंमें कितना फरक है। वह अपना होकर भी रोज मारता था, यह पराया होकर भी इज्जत करता है। इसमें सरधा-धरम बहुत है।

दूसरे दिन लरजाँने और भी मेहनतसे खाना पकाया और किरपीसे कहा—आज पूछना, खाना कैसा पका है। जरूर पसन्द करेंगे।

जब कुँवर साहब खाने बैठे तो किरपीने पूछा—आज खाना कैसा बना है?

कुँवर साहबका मुँह भरा हुआ था। खाते खाते बोले—वाह वा! आज कलसे भी अच्छा पका है। किसने पकाया है,—तुमने या लरजाँने?

किरपी—लरजाँने।

कुँवर—(पानीका घूँट पीकर) खूब पकाती है। मेरा ख्याल था, इधरके लोग केवल चावल ही पकाना जानते होंगे। मगर इस लड़कीने मेरी राय बदल दी। सारा दिन क्या करती रहती है? बेकार बैठी रहती होगी।

किरपी—नहीं बेटा, बड़ा काम करती है। कभी दीवालें लेपती है, कभी सीना-परोना ले बैठती है, कभी नदीके किनारे कपड़े धोने चली जाती है। सुबह-साम खाना तैयार करती है। मुझे तो कोई

काम करने नहीं देती। मैं तुम्हारा खाना ही यहाँ लेकर आती हूँ, सेस सारा काम अपने हाथसे करती है, और खुसी रहती है।

कुँवर साहबने दिलचस्पी लेते हुए पूछा—कुछ पढ़ी-लिखी भी है या नहीं ?

किरपी—(सिर हिलाकर) नहीं।

कुँवरको शोक हुआ, सिर झुकाकर खाना खाने लगे।

उधर लरजाँके लिए प्रतीक्षाका एक एक पल एक एक सालसे कम न था। दरवाज़ेपर खड़ी सोचती थी—देखूँ, आज क्या कहते है ? दिल बेचैन था, चाहती थी, किरपी झट-पट लौट आए। कभी अन्दर जाती, कभी फिर बाहर चली आती, मगर किरपी आती दिखाई न देती थी। जाने आज कहाँ बैठ रही है ? पहले तो इतनी देर कभी न होती थी, आज ही धीरे धीरे चलने लगी। आख़िर अन्दर जाकर और मुँह फुलाकर चूल्हेके पास बैठ गई, कि अब न उठूँगी। मगर दो ही मिनट बाद ख़्याल आया, शायद आ रही हो, चलकर देखूँ। लेकिन, बाहर आकर देखा तो उसका अभी पता न था। लरजाँ हताश होकर फिर अन्दर चली गई और बैठ गई। लेकिन अन्दर बैठना आसान न था; दो ही मिनटमें फिर दरवाज़े पर थी। इतनेमें किरपी सामने आती दिखाई दी। लरजाँका कलेजा धड़कने लगा। किरपीने आकर जूठे बरतन झोंपड़ेमें रख दिए और सुस्ताने लगी। लेकिन, लरजाँके दिलको चैन न था। उधर किरपी कुछ बोलती न थी। लरजाँ सोचती थी, कैसे पूछूँ। आखिर बहाना बनाकर बोली—क्यों किरपी, आजका खाना कैसा था ? मुझे अंदेसा है, आज पसन्द न किया होगा, जरा आँच तेज हो गई थी, क्यों ?

किरपीका दम चढ़ गया था। हाँपते हाँपते बोली— बहुत पसन्द किया बेटी ! कहते थे—मुझे मालूम न था पहाड़ी लड़कियाँ भी ऐसा स्वादु खाना पका सकती हैं। बहुत परसंसा की, बड़े खुसी हुए। सारा खाना खा गए, जरा भी बाकी नहीं छोड़ा। बरतन खाली हैं।

लरजाँकी आँखें चमकने लगीं। चेहरेका रंग निखर आया, बोली—कुछ और भी कहते थे क्या ?

किरपी—पूछते थे, क्या पढ़ना भी जानती है या नहीं। मैने कह दिया ' नहीं '।

लरजाँ उदास हो गई। कई दिन सोचती रही। आखिर एक दिन उसने पड़ोसके एक लड़के रामभजनूको बुला भेजा। यह लड़का चौदह-पन्द्रह सालका था और यहाँसे चार मीलकी दूरीपर एक मिडिल स्कूलमें पढ़ता था। सवेरे जाता था, साँझको लौट आता था। लरजाँने सोचा, उससे क्यों न पढ़ूँ। गरीब है, चार पैसेके लोभमें पढ़ा दिया करेगा। बोली—क्यों रामभजनू, मेरा एक काम करोगे ?

रामभजनूने समझा, बाज़ारसे कुछ मँगवाना है। उसने फ़ौरन जवाब दिया—लाओ, ला दूँ।

लरजाँ—नहीं, मैं पढ़ना सुरू करूँगी। तुम मुझे रातके बकत हिन्दगी पढ़ा दिया करो। एक रुपया महीना मिलेगा, पढ़ा जाया करोगे ?

रामभजनूने एक रुपया महीनाका नाम सुना तो उसे दुनियाका राज्य मिल गया। बोला—पढ़ा दिया करूँगा। कबसे पढ़ोगी ? कलसे ?

लरजाँ—हाँ कलसे। पहली किताबकी क्या किम्मत है? पैसे ले जाओ, कल आते बकत ख़रीद लाना।

रामभजनू—पहले वर्ण-माला पढ़नी होगी। एक आना दे दो, कल ले आऊँगा।

लरजाँने एक आना दे दिया और उसे अच्छी तरह सहेज दिया कि वर्ण-माला लाना न भूल जाना। रामभजनू घर पहुँचा तो उसके पाँव ज़मीनपर न पड़ते थे। चारों ओर नाचता फिरता था। उसके होंठोंसे मुस्कराहट फूट फूटकर निकल रही थी। कहता था, अब क्या परवाह है, एक रुपया महीना मिलेगा। उसके माँ-बाप भी उसकी खुशीमें शामिल थे। ग़रीबोंके लिए बेटेकी यह नौकरी तहसीलदारीसे कम न थी। उसकी ओर देखते थे और फूले न समाते थे, आज उनका बेटा नौकर हो गया था। आज उसने कमाना शुरू कर दिया था। हर महीने एक रुपया कमा लिया करेगा। इतनी छोटी उम्रमें मास्टर बन गया! कितने भाग्यशाली थे वे!

दूसरे दिन लरजाँने पढ़ना शुरू कर दिया।

८

उधर कुँवर साहब अपनी किताब लिखनेमें लीन थे। सारा दिन लिखते रहते थे। कभी कभी रातको भी लिखते थे। पहाड़ी लोग किस तरह रहते हैं, जीवन किस प्रकार व्यतीत करते हैं, क्या खाते हैं, क्या पीते हैं, उनके रीति-रिवाज क्या हैं, त्योहार क्यों कर मनाते हैं, इन सब बातोंका विस्तार-पूर्वक वर्णन करते थे। दोपहरको खाना खाकर निकल जाते और जंगलमें नीचे उतरकर

नदीके किनारे बैठ जाते। वहाँ पानीके किनारे एक बहुत बड़ा पत्थर था, वही उनकी कुरसी थी। उसपर बैठकर पानीका शोर सुनते, ऊपर चारों ओर हरे-भरे जंगलकी तरफ़ देखते और फिर लिखनेमें मग्न हो जाते थे। प्रकृतिके कलह-पूर्ण मगर मनोहर एकांतमें बैठकर उनके मनको जो एकाग्रता मिलती थी, वह अपने राज-महलोंके भीतर कमरोंमें भी न मिलती थी। और फिर, यहाँ अपने आप लिखनेको जी चाहता था। कलम एक बार चलना शुरू होता, तो फिर रुकता ही न था, यहाँ तक कि शामका अँधेरा छा जाता और शब्द दिखाई देना बन्द हो जाते। तब कुँवर साहब उठकर ऊपर चले आते और अपने झोंपड़ेमें पहुँच जाते, जिसमें अब उनकी ज़रूरतकी सब चीज़ें,—लैम्प, तौलिए, खूँटी, कम्बल, चादरें मौजूद थीं। इतनेमें किरपी खाना ले आती। कुँवर साहब खाते खाते उससे बातें भी करते जाते थे। कभी पूछते—तुम्हारे यहाँ ब्याह कैसे होता है, कभी पूछते बाल-बच्चा पैदा होनेपर तुम लोग क्या करते हो। कभी भूतोंकी कहानियाँ सुनते, कभी खेतोंमें घूमते, कभी मन्दिरमें चले जाते और पूजा करनेके पहाड़ी तरीके देखते। कभी कभी पहाड़ी लोग उनके पास आ बैठते और इधर-उधरकी बातें करते। इसी तरह कई महीने बीत गए और किताबका लिखना जारी रहा।

एक दिन किरपी बीमार हो गई। लरजाँने सोचा, किसी दूसरे आदमीके हाथ खाना भेज दूँ। मगर सब लोग अपने अपने कामपर चले गए थे। विवश होकर खुद थाल उठाकर चली, लेकिन पाँव उठते न थे। सोचती थी, उनके सामने कैसे जाऊँगी? उसे उनके सामने जाते शर्म आती थी, मगर फिर भी चली जा रही थी।

उधर कुँवर साहब सोचते थे, आज किरपीको क्या हो गया, अभी तक नहीं आई ! आज उनको अपनी किताबका सबसे दिलचस्प और रंगीन भाग, 'पहाड़पर प्रेम' लिखना था। वे चाहते थे, जितनी जल्दी हो सके, घरसे खाना खाकर निकल जाएँ, और उस अध्यायको पूरा कर लें। यह अध्याय उनकी किताबकी जान था। आज ही वे जल्दी चले जाना चाहते थे, आज ही किरपीके आनेमें देर हो गई। कुँवर साहब झोंपड़ेके दरवाज़ेपर खड़े उसकी राह देख रहे थे। इतनेमें वह दूर फ़ासलेपर आती दिखाई दी। मगर यह वह तो न थी। न वह चाल, न वह कद। कुँवर साहबने ध्यानसे देखा। सहसा उनके शरीरमें बिजली-सी दौड़ गई—यह किरपी न थी, लरजाँ थी।

कुँवर साहबका कलेजा धड़कने लगा। अन्दर जाकर चुपचाप तख़्त-पोशपर बैठ गए और मीठे विचारोंकी मीठी दुनियामें गुम हो गए।

लरजाँ बाहर आकर दरवाज़ेपर खड़ी हो गई। उसका साया देखकर कुँवर साहबने कहा—क्यों किरपी, आज क्या हो गया ? बहुत देरमें आई। चली आओ।

कुँवरने यह झूठ क्यों बोला, यह वे न समझते थे।

लरजाँने जवाबमें बोलना चाहा मगर उसकी ज़बान न खुली। क्यों, वह भी न समझती थी।

कुँवर साहब—(ऊँची आवाज़से) चली आओ। बाहर क्यों रुक गई ? आज मुझे बड़ा काम है, खाना खाते ही भाग जाऊँगा। जरा जल्दी करो।

मगर कुँवर साहबकी आवाज़में कँपकँपी थी।

बाहरसे एक मीठी और महीन आवाज़ आई—आज किरपी बीमार है, मैं आई हूँ।

कुँवर साहबने ऐसा प्रकट किया कि उनको मालूम ही नहीं कि यह कोई दूसरी स्त्री है। आश्चर्यपूर्ण स्वरमें बोले—कौन है?

यह कहते कहते कुँवर साहब बाहर निकल आए और चौंककर बोले—कौन लरजाँ! अरे तुमने क्यों तकलीफ़ की? मुझे कहलवा भेजतीं, मैं वहाँ आ जाता। यह तुमने बहुत ज़बरदस्ती की।

लरजाँने शरमसे ज़मीनकी ओर देखते देखते जवाब दिया—इसमें जबरजस्ती काहेकी है? जरा-सा तो फासला है।

कुँवर साहबने उसके शरमसे तपते हुए लाल चेहरेकी ओर देखा और कहा—लाओ, थाल मुझे दे दो। तुम थक गई होगी।

यह कहकर कुँवर साहबने हाथ आगे बढ़ा दिए। मगर लरजाँ दो कदम पीछे हट गई और थालको छातीसे लगाकर बोली—थक क्यों जाऊँगी? कोई बीमार तो नहीं हूँ।

कुँवर साहब मुस्कराकर एक ओर हट गए और लरजाँको जानेका रास्ता देते हुए बोले—अच्छा भई, माफ़ कर दो, भूल हो गई।

लरजाँ अन्दर जाकर खड़ी हो गई और चारों ओर देखने लगी कि थाल कहाँ रक्खूँ। कुँवर साहबने अन्दर आकर यह देखा और कहा—तख्त-पोशपर रख दो।

मगर तख्त-पोशपर कपड़ा बिछा था। लरजाँने वह कपड़ा ज़रा-सा हटाकर तह कर दिया और उस खाली जगहपर थाल रख दिया। इसके बाद धीरेसे पूछा—पानी कहाँ है? हाथ धुला दूँ।

कुँवर साहबने उङ्गलीसे कोनेकी तरफ़ इशारा किया।

लरजाँने घड़ेसे पानी उँड़ेला और कुँवर साहबके हाथ धुलाए। तब कुँवर साहब खाना खाने लगे। लरजाँ बाहर जाकर धूपमें खड़ी हो गई और झोंपड़ेको बड़े ध्यानसे देखने लगी। कुँवर साहबने पुकार कर कहा—ज़रा पानी तो दे जाना।

लरजाँ लोटेसे पानी देकर फिर बाहर जाने लगी। कुँवर साहबने पानीका गिलास हाथमें लिया और मुस्कराकर कहा—बाहर भागी जाती हो। क्या तुम्हें मुझसे डर लगता है?

यह कहकर वे पानी पीते पीते कनखियोंसे लरजाँकी ओर देखने लगे। लरजाँ सिर झुकाए हुए वहीं रुक गई। इस समय वह बड़े असमंजसमें पड़ी हुई थी। न बाहर जा सकती थी, न वहाँ ठहर सकती थी। थोड़ी देर बाद बोली—डर तो नहीं लगता। आपसे डर काहेका?

इस समय उसकी आवाज़ ऐसे काँप रही थी जैसे कोई सितारके तारोंको उङ्गलीसे छेड़ दे और वे हिलने लगें। कुछ इसी तरहका कंपन लरजाँकी आवाज़में था।

कुँवर साहबने भातसे मुँह भर लिया और कहा—डर नहीं लगता तो काँपती क्यों हो?

लरजाँ—जाड़ा लगता है।

कुँवर—तो वह कम्बल पड़ा है, ओढ़कर बैठ जाओ। क्या मजाल जो फिर जाड़ा लग जाए। बड़ा गरम है।

लरजाँने जमीनकी तरफ देखते हुए चोर-दृष्टिसे कम्बलकी ओर ताका और चुपकी खड़ी रही। कुँवर साहब बोले—कम्बल ले लो।

मगर जब लरजाँ अपनी जगहसे न हिली तो बोले—यह अजीब शरम है। सरदीसे काँपती रहोगी मगर कम्बल न ओढ़ोगी।

लरजाँका मुँह शरमसे लाल हो गया। क्या कहती, क्या न कहती। कुँवर साहब प्रति क्षण आगे बढ़े चले आ रहे थे। लरजाँ सोचती थी कि औसर मिले तो भाग खड़ी हूँ। लेकिन कुँवर साहबने अभी अपना आधा खाना भी ख़त्म न किया था। मुँहका भात निगलकर बोले—भई, तुम कम्बल न ओढ़ोगी तो मैं खाना न खाऊँगा।

यह कहकर उन्होंने खानेका थाल परे सरका दिया और कहा—मैं आदमी हूँ, राक्षस नहीं हूँ कि तुम सरदीसे काँपो और मैं मज़ेसे खाना खाता रहूँ। या तो कम्बल ओढ़ो या थाल उठा लो। बोलो, दोनोंमें से क्या मंज़ूर है?

लरजाँ पछताती थी कि नाहक जाड़ेका नाम लिया। अब क्या करूँ? उन्होंने एक बात पकड़ ली, अब उसे छोड़ते ही नहीं हैं। निचला होठ दाँतों तले दबाकर बोली—आप खाना खाइए। मैं जाड़ेसे मर न जाऊँगी।

कुँवर—तुम थाल उठा लो। मैं भी भूखा मर न जाऊँगा।

लरजाँको हँसी आ गई, बोली—यह आपकी जबरजस्ती है। कोई देख लेगा, तो क्या कहेगा?

कुँवर—क्या कहेगा? कम्बल ओढ़कर बैठना कोई पाप नहीं है। और अगर यह पाप है तो यह पाप सारी दुनिया करती है। बोलो, मैं सच कहता हूँ या झूठ? मैं भी हर रोज़ ओढ़ता हूँ।

लरजाँके पास इसका जवाब न था, चुपचाप ज़मीनकी तरफ़ देखती रही।

कुँवर साहबने कृत्रिम रुखाईसे कहा—तो अब उठ बैठूँ ? लो हाथ धुला दो और जाओ। किरपी अकेली होगी।

लरजाँने सहमकर कहा—आप खाना तो खा लें। क्या भूखा रहनेका विचार है ?

कुँवरसाहब— न भई, हमें मालूम हो गया, तुम हमें खाना खिलाना नहीं चाहतीं। वरना ज़रा-सी बात है, मान लेतीं।

यह कहकर कुँवरसाहब उठकर खड़े हो गए और तख्त-पोशसे नीचे उतरने लगे। यह देखकर लरजाँने जल्दीसे कम्बल उठा लिया और बोली—लो भई! अब तो खा लो।

कुँवरसाहबने देखा कि मैदान मार लिया, बोले—पहले ओढ़ लो, फिर मैं खाऊँगा।

लरजाँने कम्बल ओढ़ लिया, मगर शरमसे मरी जाती थी। उधर कुँवर साहब खुशीसे किसी दूसरी ही दुनियामें थे। कितनी देर तक शौककी दृष्टिसे लरजाँकी ओर देखते रहे। मगर उसने सिर न उठाया, न उनकी ओर देखा, न हिली-डुली। ऐसा मालूम होता था जैसे वह जीती जागती स्त्री नहीं, चीनीकी निर्जीव मूर्ति है; जैसे किसी दूकानदारने किसी गुड़ियाको कम्बल उढ़ाकर दूकानमें रख दिया है।

९

उस दिन कुँवरका दिल किताबमें न लगा। पहले तो बारबार कुछ सोचते थे और मुस्कराते थे, बादमें ख्याल आया कि मैंने भूल की। मुझे यह करना उचित न था। लरजाँ दिलमें क्या कहती होगी ? यही कि कितना ओछा है, चार पैसेसे मदद क्या की सिरपर चढ़ बैठा। कभी कभी ख्याल आता, कहीं नाराज़ न हो गई

हो। जाने मुझे क्या हो गया था, मेरे सिरपर क्या सनक सवार हो गई थी। ज़रूर नाराज़ हो गई होगी। अगर नाराज़ हो गई है तो कैसे मनाऊँगा ?—इसके आगे कुँवर साहबको कोई रास्ता दिखाई न देता था। सारा दिन असमंजसमें पड़े रहे। एक शब्द भी न लिखा गया। सुबह जैसे गए थे, शामको वैसे ही लौट आए। उनको भय था कि अब लरजाँ आप खाना न लाएगी, किसी दूसरेके हाथ भेज देगी।

लेकिन उनके सारे अंदेशे ग़लत निकले। इधर दिएमें बत्ती पड़ी उधर लरजाँ खाना लेकर आ गई। कुँवर साहबने देखा उसके मुँहपर ज़रा क्रोध, ज़रा नाराज़गी न थी। यह देखकर उनकी छातीसे बोझ-सा उतर गया, मुस्कराकर बोले—मेरा ख्याल था, तुम इस समय आप न आओगी, किसी दूसरेको भेजोगी।

लरजाँने थालको तख्त-पोशपर रख दिया और सीधे खड़े होकर जवाब दिया—क्यों ?

कुँवर—अब इस 'क्यों' का जवाब क्या दूँ ? मेरा ख़्याल था, तुम न आओगी। ज़रा पानी ले आओ, हाथ धो लूँ।

लरजाँने कुँवर साहबके हाथोंपर पानी डालते हुए कहा—अगर आप आज्ञा दें, तो कलसे न आऊँ। किसी दूसरेको भेज दूँ।

कुँवरने तौलिएसे हाथ पोंछते हुए जवाब दिया—मेरा यह मतलब न था। मैं डर रहा था, कि कहीं तुम मुझसे नाराज़ न हो गई हो। लरजाँ, सुबह मुझसे बड़ी मूर्खता हुई। मैं चाहता हूँ तुम मुझे क्षमा कर दो, अब ऐसी भूल न होगी।

लरजाँने जाकर घड़ा उठा लिया और सुनी-अनसुनी करके बोली—आप खाइए, मैं पानी भर लाऊँ।

कुँवर—रातका समय है, अकेली कैसे जाओगी? तुम रहने दो, मैं आप भर लाऊँगा। इस समयके लिए तो काफ़ी होगा। है या नहीं?

लरजाँ—कलका बासी है, यह न पीजिए। अभी ताज़ा भर लाती हूँ। रात है तो क्या हुआ, कोई मुझे उठा न ले जाएगा। आप खाइए, मैं अभी आई।

कुँवर साहब रोकते ही रह गए, मगर लरजाँने मुस्कराकर उनकी ओर देखा और चली गई। कुँवर साहब खाना खाते जाते थे और वर्तमान स्थितिपर सोचते जाते थे। कहाँ सिकंधीर और कहाँ यह पहाड़ी जगह! कहाँ मैं और कहाँ यह लड़की! कुदरतके खेल निराले हैं। ऐसी सुन्दर लड़की मैंने आज तक नहीं देखी, और फिर कितनी भोली है। ज़रा-सी धमकी दी, जाकर चुपचाप कम्बल ओढ़ लिया। अब पानी भरने चली गई है। किरपीने तो कभी न कहा था कि यह पानी बासी है, न पियो। इसे ज़रूर मेरा ख्याल है। न होता तो इस समय कभी न जाती। आती तो मुँह फुलाए होती। सादा पोशाकमें भी कैसी भली मालूम होती है! इतनेमें लरजाँ घड़ा उठाए हुए अन्दर आ गई और बोली—लो देख लो, कितनी सीघर ले आई।

यह कहकर उसने घड़ा कोनेमें रख दिया और ओढ़नीसे मुँह पोंछकर लोटा पानीसे भरने लगी।

कुँवरने खाते खाते कहा—दौड़ती हुई आई हो?

लरजाँ—बिल्कुल नहीं। इस तरह हौले हौले आई हूँ।

लरजाँने चलकर दिखाया। कुँवर साहब कहकहा लगाकर हँस पड़े। अचानक उनकी दृष्टि लरजाँकी ओढ़नीपर पड़ी, बोले—यह तो भीग गई है। कहीं बीमार न हो जाना।

लरजाँने पानीसे गिलास भर कर लोटा तख्त-पोशपर रख दिया और ओढ़नीका भीगा हुआ कोना निचोड़ते हुए कहा—लो, अब बीमार न हूँगी। तुम्हारे हुकमोंने तो तंग कर दिया बाबा!

कुँवरने एक ही घूँटमें गिलासका सारा पानी ख़त्म कर दिया और और पानी लेनेके लिए गिलास बढ़ाते हुए शरारती स्वरमें कहा—अभी तक सारा पानी नहीं निचुड़ा।

लरजाँ—(तुनककर) निचुड़ गया है।

कुँवर—मैं निचोड़ दूँ? जरा इधर आओ।

लरजाँ—(मुस्कराकर) तुम किरपा करो मुझपर!

लरजाँने गिलास पानीसे भर दिया और कुँवर साहब खाना खाने लगे। कुछ देर सन्नाटा रहा। वह सन्नाटा जिसमें कोई भी नहीं बोलता, —जब हमारी बोलनेकी शक्ति जाती रहती है। सहसा कुँवरने चौंककर पूछा—अरे, किरपीका क्या हाल है?

लरजाँ—जूड़ीसे बेहोस पड़ी है।

कुँवर—कुछ दवा भी दी है या नहीं?

लरजाँ—अभी तो नहीं दी।

कुँवर—वह मेरा बैग उठा लाओ।

लरजाँने हाथ धुलाए। कुँवरने रूमालसे हाथ-मुँह साफ़ करते हुए कहा—दो गोलियाँ देता हूँ। जाकर अभी गरम पानीके साथ खिला देना।

लरजाँने आश्चर्यसे कुँवरकी ओर देखा, और आँखों ही आँखोंमें पूछा, क्या तुम डाकदर भी हो? और बैग लाकर सामने रख दिया। कुँवर बैग खोलकर वेजीटेबल पिल्सकी शीशी देखने लगे और जो

कुछ हाथ आता उसे उठाकर बाहर रखने लगे। इतनेमें लरजाँने एक लम्बी-सी लोहेकी चमकदार चीज़ हाथमें पकड़ ली और उसे उलट-पुलट कर देखते हुए पूछा—यह क्या है ?

कुँवर साहबने एक हाथसे बैगके अन्दर टटोलते हुए जवाब दिया—यह टार्च है।

लरजाँ—टार्च क्या ?

कुँवरने उसकी उँगली एक बटनपर रखकर कहा—ज़रा दबाओ।

और आप फिर बैगकी चीज़ें उलटने-पुलटनेमें व्यस्त हो गए।

लरजाँने दबाया। एकाएक वह जल उठा। लरजाँने डरकर उसे ज़मीनपर रख दिया और आप दो कदम पीछे हट गई। टार्च बुझ गया। कुँवरने मुस्करा कर कहा—देखा, यह भूत-विद्या है। ख़बरदार, फिर हाथ न लगाना।

लरजाँने टार्चको उठाकर फिर बटन दबाया और उसकी तेज़ रोशनी देख देखकर बच्चोंकी तरह खुश होने लगी। कभी जलाती थी, कभी बुझाती थी, कभी कुँवरकी ओर देखकर मुस्कराती थी और कहती थी—यह भूत-विद्या मुझे भी आ गई। यह देखो रोशनी हो गई, यह देखो बुझ गई।

इतनेमें कुँवरने वेजीटेबलकी दो गोलियाँ कागज़में लपेटकर लरजाँको दे दीं और कहा—गरम पानीके साथ आज रातको। समझ गई ?

लरजाँने पहले गोलियाँ खोल कर देखीं, फिर ओढ़नीके कोनेमें बाँध लीं।

कुँवर साहब बैगकी सब चीजें उसमें ठूँस ठूँस कर रखने लगे।

लरजाँने टार्चकी रोशनी बाहरके पेड़ोंपर फेंकते हुए और दिलचस्पी लेते हुए पूछा—इसमें तेल कहाँ है ?

कुँवर—इसमें तेल नहीं डालते । तेलके बिना जलता है ।

लरजाँ—वाह ! तेलके बिना कैसे जलता है ? भला तेलके बिना भी रोशनी हो सकती है ?

कुँवर—हो सकती है या नहीं, इसका पता नहीं । हो रही है । तुम न मानो तो कोई क्या करे ? इसके अन्दर बैटरी है, उससे....

लरजाँने गला छुड़ानेके लिए कहा—चलो भई ! मान लिया, हो जाती होगी । अब तुमसे झगड़ा कौन करे ?

यह कहकर उसने टार्च हाथसे रख दिया, लेकिन उसकी आँखें उसीपर जमीं थीं । कुँवर साहब भाँप गए कि टार्च लरजाँको पसन्द आ गया है, बोले—ले जाओ । कभी अँधेरेमें बाहर जाना पड़ता होगा । बड़े कामकी चीज़ है । मैं और मँगा लूँगा ।

मगर लरजाँने टार्च न लिया और जूठे बर्तन उठाकर चलनेको तैयार हो गई । कुँवरने एक हाथसे उसे रुकनेका इशारा किया, दूसरे हाथसे लैम्प बुझाते हुए बोले—चलो, मैं भी चलता हूँ । किरपी कहेगी मुझे देखने भी नहीं आया ।

थोड़ी देर बाद रातके अँधेरेमें टार्चकी सहायतासे दोनों पत्थरोंसे बचते हुए जा रहे थे । अचानक कुँवर साहबका पाँव फिसल गया, गिरते गिरते बचे । लरजाँने बचपन और सादगीसे अपना हाथ बढ़ाकर कहा—तुम तो गिर ही गए थे । लो, मेरा हाथ पकड़ लो ।

कुँवरने लरजाँका हाथ पकड़ लिया और पाँव जमा जमाकर चलने लगे । ठीक उसी तरह जिस तरह आशा निराश लोगोंका हाथ थाम कर चलती है ।

१०

कुछ तो इसलिए कि पहाड़पर चोरी नहीं होती, कुछ इसलिए कि कुँवर साहब बेपरवाह आदमी थे, जब वे साहब बाहर जाते तो किवाड़ बन्द कर जाते थे, ताला न लगाते थे।

एक दिन शामको किताब लिख कर लौटे तो झोंपड़ा शीशेकी तरह चमक रहा था। हरएक चीज़ करीनेसे रक्खी थी, फ़र्श साफ़ था, दीवारें मिट्टीसे लेपी हुई थीं, छतपर जालेका नाम न था। कल यही झोंपड़ा मैला था, आज साफ़-सुथरा बन गया था। कल ऐसा मालूम होता था कि रो रहा है, आज ऐसा मालूम होता है कि मुस्करा रहा है। आकाश-पातालका अन्तर पड़ गया था।

कुँवर साहब देखते ही समझ गए कि यह लरजाँका काम है। किरपीसे यह आशा न थी, न उसे सफ़ाईका इतना ख्याल था, न वह अभी इतनी दूर चल सकती थी। ज़रूर मेरी अनुपस्थितिमें लरजाँ यहाँ आकर सफ़ाई कर गई है। कुँवर साहबके सामने नया संसार खुल गया। पहले समझते थे, लरजाँ रूपवती है, भोली-भाली है, अब मालूम हुआ सुघड़ और घर-गृहस्थीके कामोंमें कुशल भी है। बिना कहे काम करती है और शौकसे करती है। कुछ ही घंटोंमें मिट्टीके झोंपड़ेको शीशा बना दिया।

प्रायः एक सप्ताह इसी प्रकार रंगीन स्वप्नोंमें बीता। इसके बाद किरपीका ज्वर उतर गया और लरजाँका आना-जाना बन्द हो गया। अब फिर किरपी खाना लेकर आती थी। कुँवर साहबको खानेमें वह पहले-सा स्वाद ही नहीं आता था। पहले उनका भोजन घंटे-भरसे कममें समाप्त न होता था, धीरे धीरे खाते थे और शौकसे

खाते थे। अब दस ही मिनटमें हाथ धोकर उठ बैठते थे। पहले थालकी प्रत्येक चीज़ समाप्त कर देते थे, अब कुछ खाते, कुछ छोड़ देते। एक दिन लरजाँने पूछा—ये खाना क्यों छोड़ देते हैं। पहले तो खूब मजेसे खाते थे।

किरपी—अब भी मजेसे खाते हैं।

लरजाँ—मज़ेसे ख़ाक खाते हैं, आधा थाल वापिस आ जाता है। कुछ बीमार तो नहीं हैं?

किरपी—बीमार तो नहीं हैं। हाँ, काम ज्यादा करते हैं, हर बखत कुछ सोचते रहते हैं।

लरजाँ—काम करनेसे भूख तो नहीं कम हो जाती, उलटा बढ़ जाती है। जरूर कुछ बीमार होंगे। आज खाना लेकर मैं जाऊँगी। देखूँ, क्या बात है।

किरपीने मुस्कराकर कहा—सायद तुम्हें कुछ बता दें, मुझसे तो कुछ कहा नहीं।

उस दिन फिर लरजाँ खाना लेकर गई। कुँवर साहब लिखे हुए काग़ज़ नम्बरवार लगाकर बम्बईके किसी प्रेसको भेजनेकी तैयारियाँ कर रहे थे। उनकी आधी पुस्तक समाप्त हो चुकी थी। लरजाँको आते देखकर चौंक पड़े और मुस्कराकर बोले—अरे! आज फिर किरपी बीमार हो गई क्या? यह बुढ़िया अब बहुत तंग करने लगी। इसे कहो, बार बार बीमार न हो। इस तरह काम न चलेगा।

लरजाँने थाल रखनेके लिए तख्त-पोशपर जगह बनाते हुए कहा—क्यों गरीबको फिर बीमार करते हो, अभी तो तपस्या करके उठी है।

कुँवर—मेरे कहनेसे क्या होता है ? तुम खाना लेकर आईं, तो मैंने समझा, शायद फिर बीमार हो गई। आज तुम कैसे आ गईं। —हमारा तो जलसा हो गया।

लरजाँ—(शरमाकर) चलो, हमें न छेड़ो। अपना खाना खाओ।

कुँवरने अपने काग़ज़ोंको चारपाईपर रख दिया और तख्तपोशपर थालके सामने बैठकर कहा—लाओ, हाथ धुला दो।

लरजाँने हाथपर पानी डालते डालते कहा—यह आप आजकल खाना क्यों कम खाते हैं, भूख आधी भी नहीं रही।

कुँवरने तौलिएसे हाथ पोंछे और लरजाँकी आँखोंमें आँखें डाल कर उत्तर दिया—वाह, कम कौन खाता है, खूब डटकर खाता हूँ! यहाँ पहाड़पर आकर तो मेरी भूख बढ़ गई। जब आया था, तब दुबला-पतला था। अब मोटा-ताज़ा हो गया हूँ।

कुँवर साहब सचमुच मोटे-ताज़े हो गए थे, मुँह भी चिकना चिकना निकल आया था, शरीर भी भर गया था। मगर लरजाँ यह बात ज़बानपर न लाना चाहती थी; बोली—यह तुम्हारा भरम है। जैसे आए थे, वैसे ही हो।

कुँवरने परांठेसे एक टुकड़ा तोड़ा ही था कि लरजाँने कहा—यह नहीं, पहले कढ़ी और भात खाओ। आज कढ़ी बहुत अच्छी बनी है।

कुँवरने मुस्कराकर परांठा छोड़ दिया और चावलोंमें कढ़ी डालकर बोले—अगर किरपी भी इसी तरह खिलाती तो सारा खाना खा जाता। वह चुपचाप बैठी रहती है। अब खाना तुम ही लाया करो। वह केवल लाती है, तुम खिलाती भी हो।

यह कहकर वे भात खाने लगे।

लरजाँने कुछ सोच उत्तर दिया—अगर मैं खाना लाने लगी तो किरपी अपने दिलमें क्या कहेगी ? इतना सोच लो ।

कुँवरने चावल गलेसे नीचे उतारते हुए कहा—क्या कहेगी ? वह खाना लाए या तुम लाओ । इससे क्या अन्तर पड़ जाएगा ? मैं न तुमको इनाम देता हूँ न उसको । आज कढ़ी सचमुच बहुत अच्छी पकी है,—शाबाश !

लरजाँ—बड़ी बदनामी होगी । लोग तो अब भी भाँत भाँतकी बातें बना रहे हैं ।

कुँवर—मेरे सामने आकर तो कोई चूँ भी नहीं करता, पीठपर जो चाहें कहें । लेकिन लरजाँ, इससे हमारा क्या बिगड़ता है ? जो बकते हैं, बकने दो ।

लरजाँकी आँखोंमें आँसू आ गए । उसने कहा—बड़ी बेसरमीकी बातें करते हैं । तुमसे डरते हैं, तुम्हारे सामने कोई नहीं बोलता । मगर मेरा किसे भौ' है ।

कुँवरका हाथका ग्रास हाथमें ही रह गया । क्रोधपूर्ण स्वरमें बोले—क्या कहते हैं ?

लरजाँ—(कुँवरके ओर दर्द-भरी आँखोंसे देखकर) अब क्या बताऊँ, क्या कहते हैं ? बस इतना काफी है कि सुनकर बदनमें आग लग जाती है, देख लेना किसी दिन खून हो जायगा । मैंने एक छोकरेसे पढ़ना सुरू किया है, यह भी पाप हो गया । सौ सौ दोस निकालते हैं ।—तुम खाना खाओ । मैं भी कहाँका बखेड़ा ले बैठी !

कुँवरने परांठेका टुकड़ा थालमें रख दिया और कहा—लरजाँ !

अब मैं कुछ न खा सकूँगा। तुमने पहले क्यों न बताया। बोलो, तुम्हें कौन तंग करता है, मैं खून पी जाऊँगा। लो, तुम नाम बताओ।

लरजाँने कुँवरके बदले हुए तेवर देखे तो घबरा गई। समझ गई, ये कुछ कर डालेंगे। बोली—अभी मुझे कहते थे, बकते हैं तो बकने दो। अब आप मरने-मारनेको तैयार हो गए। भई, मरदोंका कोई विसवास नहीं, इधर भी चलते हैं, उधर भी।

कुँवर पागलोंकी तरह देर तक हवामें देखते रहे, इसके बात शांत होकर बोले—तुम रोज़ आया करो। मैं सबसे समझ लूँगा।

लरजाँने कहा—आप खाना खाइए, मैं रोज़ आया करूँगी।

कुँवर साहब फिर खाना खाने लगे। फिर हँसी-दिल्लगीकी बातें छिड़ गईं। फिर लरजाँकी पकाई हुई एक एक चीज़की प्रशंसा होने लगी।

११

अब ज़रा भी सन्देह न था। वे ही लरजाँको चाहते हों, यह बात न थी। लरजाँ भी उन्हें चाहती थी,—उनके लिए बदनामीसे भी न डरती थी। उनके संकेतपर उसने पढ़ना भी शुरू कर दिया है। उनके झोंपड़ेको रोज़ साफ़ कर जाती है। जो चाहते हैं वही पकाती है। उन्हें अपना पाठ भी सुना जाती है। अब कुँवर साहब भी कभी कभी उसके झोंपड़ेमें चले जाते हैं और घंटों बैठे बातें करते हैं। किताबका मसौदा (=हस्तलिखित कापी) रजिस्ट्री करके बम्बई भेजनेके लिए आस-पासके शहरमें जाते हैं तो लरजाँके लिए कोई न कोई उपहार ख़रीद लाते हैं। कभी साड़ी, कभी स्लीपर, कभी मोज़े। एक बार एक सुन्दर कम्बल ले आए, दूसरी बार टार्च ले आए। यह

दोनों चीजें पाकर लरजाँ निहाल हो गई। अब वह आप कह देती है, मेरे लिए यह चीज़ ले आना। कुँवर साहब उसके हरएक हुक्मका पालन करते हैं। लेकिन कभी कभी सोचते हैं,—रुपया ख़त्म न हो जाए। ख़र्च पानीकी तरह होता है, आमदनी पैसेकी भी नहीं होती।—लेकिन, इस ख़र्चसे एक लाभ यह भी हुआ कि पहाड़ी लोगोंपर रोब बैठ गया।—जाने यह कौन है? ज़रूर कोई बड़ा अमीर है, जो इस तरह दिलेरीसे रुपया ख़र्च करता है। संभव है, कोई राजा हो।—सब उसकी ख़ुशामद करने लगे। अब लरजाँ और उनके विरुद्ध ज़बान खोल जाए, इतना दम किसीमें न था। चौधरी तो उनका बिना खरीदा हुआ गुलाम था,—हरदम उनका बखान करता रहता। उसे निश्चय हो गया था कि मेरा भाग्य उनसे ही जागेगा। यह आदमी कोई बड़ा आदमी है। कुँवर साहब अब और भी परिश्रमसे किताब लिखते थे। उन्हें अब इसी पुस्तकपर आशा थी। सोचते थे, अगर पुरस्कार न मिला तो क्या होगा? महाराजसे लड़कर निकला हूँ, अब किस मुँहसे उनके सामने जाऊँगा? लरजाँ उन्हें अभीतक पत्थरोंका सौदागर समझती है। न कुँवर साहबने यह रहस्य उसपर खोला है, न खोलना चाहते हैं। पत्थरोंका सौदागर बननेमें जो आनन्द है वह युवराज बननेमें कहाँ? उसकी शान ही कुछ निराली है।

उधर महाराज पृथ्वीचन्द्र बहादुर कुँवरके चले जानेसे बेहाल हो रहे हैं। उस समय नशे और क्रोधमें आकर आगा-पीछा न सोचा था, अब पछता रहे हैं कि क्या कर बैठे। महारानी हर समय शोकाकुल रहती हैं। चारों ओर स्वर्गकी बहारें हैं, बीचमें उनका

दिल जलता है। उन्हें किसीने मुस्कराते नहीं देखा। ज़रा-ज़रा-सी बातपर रोने लगती हैं। कोई अच्छी चीज़ नहीं खातीं, कहती हैं, जाने कुँवरको पेटभर खाना भी मिलता है या नहीं। पलंगपर लेटती हैं तो ठंडी आहें भरती हैं,—शायद कुँवरको चारपाई भी न मिलती हो। किसी उत्सवमें शामिल नहीं होतीं। सोचती हैं, जिसका जवान बेटा घरसे निकल गया हो, उसके भाग्यमें हँसना-खेलना कहाँ! मुझे पता लग जाता तो कभी न जाने देती। मेरी आँखोंके दो आँसू उसके पाँवोंकी ज़ंजीर बन जाते। राज-महलोंमें पला है, भगवान जाने कहाँ मारा मारा फिरता होगा!—उन्हें क्या? उनको गाना चाहिए। लोग वाह वाह कह दें, बस काफी है। घर चाहे नष्ट हो जाए। महाराज महारानीके सामने दम नहीं मारते। जानते हैं, मैं बोला और यह गरजी। कभी कभी आप भी आँखें भर लेते हैं। सारे देशमें आदमी छोड़ रक्खे हैं कि ढूँढ़कर पता लाओ। लेकिन, अभी तक कुछ पता नहीं लगा। कुँवर भी माता-पिताको याद करके रो पड़ते हैं। फिर सोचते हैं, यह पुरस्कार मिल जाए तो घर जाऊँ। महाराज भी कहें, कि हाँ, घरसे निकला था, तो कुछ करके लौटा। हिन्दुस्तान-भरमें नाम हो जाए।

एक दिन कुँवर किताबकी हस्तलिखित कापी भेजनेके लिए डाक-घर गए थे और लरजाँ अपने झोंपड़ेसे कुछ दूर एक पत्थरपर बैठी अपना पाठ याद कर रही थी। उसका झोंपड़ा सड़क और नदीके मध्य चावलोंके छोटे छोटे खेतोंके किनारे तराईमें था। ऊपर सड़क थी जो ऊँचे पहाड़के इर्द-गिर्द रस्सेकी तरह लिपटी हुई थी। दूर नीचे नदी बहती थी जैसे पारेका साँप बल खाता हुआ कहीं

छिपनेके लिए दौड़ा जाता हो। इतनेमें सड़कपर एक मोटर दिखाई दिया। लरजाँ मोटर देखकर हमेशा खुश होती थी। उसके दिलमें न जाने क्या क्या विचार पैदा होते थे। वह उसकी ओर टकटकी बाँधकर देखने लगी।—अभी पहाड़के चक्करदार रस्तेमें गुम हो जायगा। मैं यहीं बैठी रहूँगी, यह कहींका कहीं जा पहुँचेगा।—उसने सोचा, इसपर कोइ भाग्यवान ही सवार होगा। ग़रीबोंके पास इतने पैसे कहाँ?—अचानक मोटर सड़कसे नीचे गिर पड़ा। लरजाँके मुँहसे चीख़ निकल गई। वह चाहती थी, किसी तरह मोटरको रोक ले, लेकिन यह मानवी-शक्तिसे बाहर था। मोटर बड़ी तेज़ीसे लुढ़कता हुआ नीचे आ रहा था। देखते देखते वह उससे कुछ गज़की दूरी पर आ गया। वहाँ एक बड़ी-सी चट्टान आगेको बढ़ी हुई थी। उस-पर मोटरसे एक स्त्री गिरकर रुक गई। मगर मोटर नीचे लुढ़कता हुआ चला गया। कुछ सामान भी मोटरसे निकल आया था। उसमेंसे कुछ चीज़ें मोटरके पीछे पीछे लुढ़कती हुई कई पत्थरोंको भी साथ लिये जाती थीं। जो हल्की थीं वे राहमें रुक गई थीं। लरजाँने अपनी किताब वहीं फेंक दी और पत्थरोंपर मज़बूतीसे पाँव जमाती हुई उस चट्टानपर पहुँची जहाँ औरत गिरी थी। लरजाँने झुककर देखा, उसके शरीरपर कोई घाव न लगा था, केवल बेहोश हो गई थी। उसका पहनावा और शक्ल देखकर लरजाँको विश्वास हो गया कि यह किसी बड़े अमीर घरकी लड़की है। वह भागती हुई अपने झोंपड़ेमें गई और किरपीसे बोली—जल्दी मेरे साथ आओ। एक मोटर लुढ़क गया है। मगर उसपर जो स्त्री सवार थी वह बच गई है, उसे उठा लाएँ,—जल्दी—

किरपी चूल्हेके पास बैठी हुक्का पी रही थी। उसने हुक्का दीवारके साथ लगाकर रख दिया और खाँसकर पूछा—कहाँ है? बहुत दूर तो नहीं?

यह कहकर फिर खाँसने लगी, और खाँसते खाँसते घुटनोंपर दोनों हाथ रखकर खड़ी हो गई।

लरजाँ दौड़नेके कारण हाँप रही थी, रुक रुककर बोली—पास ही है,—जल्दी करो,—बेहोश हो गई है।

दोनों मिलकर उसे अपने झोंपड़ेमें उठा लाईं और कम्बलसे लपेटकर हाथ-पाँवपर गरम घीकी मालिश करने लगीं। थोड़ी देर बाद उसने एक लम्बा साँस लेकर आँखें खोल दीं और चारों ओर देखा। इसके बाद माथेपर हाथ फेरकर बहुत धीरेसे कहा—मैं कहाँ हूँ?

लरजाँ उसे होशमें देखकर बहुत ख़ुश हुई और बोली—तुम्हारा मोटर पहाड़से गिर पड़ा था। अब तुम्हारा क्या हाल है?

किरपी—कहीं चोट तो नहीं आई?

युवतीने लेटे लेटे अपना शरीर हिलाकर देखा और जवाब दिया—नहीं। मैं सिर्फ़ बेहोश हो गई थी। ड्राइवरका क्या हाल है? बचा या मर गया?

लरजाँने किरपीके मुँहकी ओर देखकर कहा—जाओ, पता लाओ। लोग नीचे गए थे, वापस आ गए होंगे।

किरपी उठकर बाहर चली गई। जब लौटी तो दोनों लड़कियाँ पुरानी सखियोंके समान घुल-मिल कर बातें कर रही थीं। कोई बेगानगी नज़र न आती थी।

किरपीने कहा—तेरा नौकर बच गया है, मगर गाड़ी टूट गई है।

युवती—और सामानका क्या हाल है ? मिल गया या नहीं ? बैग, चमड़ेका बकस, बिस्तर—

किरपी—सब कुछ मिल गया । तेरे आदमीने सब सँभाल लिया है ।

युवती—चलो कोई बात नहीं । आज हम मरते मरते बचे यही शुक्र है ।

अचानक उसकी दृष्टि अपनी साड़ीपर पड़ी जो लुढ़कनेके कारण एक दो जगहसे फट गई थी । लरजाँसे बोली—मेरा बकस आ जाता तो साड़ी बदल लेती, यह तो फट गई है ।

किरपी—ले आऊँ ?

युवती—नहीं, मैं आप ही जाती हूँ । ड्राइवरको भी देख आऊँ, कहीं हाथ-पैर न टूट गया हो ।

फिर लरजाँसे मुस्कराकर कहा—मैं अभी आई, (चुटकी बजाकर) एक मिनटमें ।

जब वह चली गई तो किरपीने कहा—जानती हो, यह कौन है ?

लरजाँ—किसी बहुत बड़े अमीरकी लड़की होगी । पहनावा कैसा बढ़िया है ! हाथ कैसे नरम हैं जैसे माखनके पेड़े और सुभाओ भी बड़ा मीठा है ।

किरपी—किसी अमीरकी छोरी नहीं, राजेकी छोरी है, राजेकी !

लरजाँ चौंक पड़ी—राजेकी छोरी ! तुमने किससे सुना ?

किरपी—उसके नौकरसे । बिचारा डरसे मरा जाता है । कहता है, राजा मेरी गरदन उड़ा देगा, मुझे सूली चढ़ा देगा ।

लरजाँ कई मिनट तक सोचती रही, इसके बाद बोली—तो यह राजेकी बेटी है ! किरपी, तुमने देखा इसके कपड़े कैसे बढ़िया हैं ?

किरपी—वाह, इसके कपड़े बढ़िया न होंगे तो और किसके होंगे ? राजेकी बेटी है !

लरजाँ—उसके बापके पास कई सौ रुपया होगा ?

किरपी—कई सौ क्या, कई हज़ार होगा ।

लरजाँ—बेलीसे अमीर होगी ? (कुँवरने अपना नाम उन्हें बेली बताया था ।)

किरपी—तुम भी क्या बातें करती हो ! बेली उनके नौकरोंकी भी बराबरी नहीं कर सकता । वह पत्थरोंका सौदागर है, यह राजेकी बेटी है । बाहर जाकर उसके नौकरके कपड़े देखे तो तू दंग रह जाए ।

किरपीके यह शब्द शब्द न थे, ज़हरसे बुझे हुए तीर थे । लरजाँने कहा—अच्छा अच्छा ! बहुत बातें न बना । उसीका खाती है, उसीको गालियाँ देती है, किरतघन कहींकी । वह सुन ले तो क्या कहे ? उसकी नेकियोंका तूने खूब बदला दिया ।

किरपीको अब मालूम हुआ कि मैं क्या कह गई । लज्जित होकर बोली—मैंने बेलीको गालियाँ दी हों तो मेरी जबान जल जाए । कोई राजा होगा अपने घरमें होगा । हमारे लिए तो बेली राजेसे भी बड़ा है । जो उसने किया है, वह कोई राजा भी क्या करेगा ।

इतनेमें राजकुमारी आ गई । उसके पीछे पीछे एक पहाड़ी उसका चमड़ेका बक्स उठाए हुए आ रहा था । लरजाँने कहा—उसे चोट तो नहीं आई ? सुना है, बड़ा डर गया है । कहता है, राजा मुझे फाँसी दे देगा ।

राजकुमारीने मुस्कराकर जवाब दिया—बेवकूफ़ है जो डरता है। अब इसमें उसका क्या दोष ? घुटनेपर ज़रा चोट आई है, और सब ठीक है।—(पहाड़ीसे) यहाँ रख दे।

पहाड़ीने बक्स रख दिया और बाहर चला गया। राजकुमारीने उसे खोला और कपड़े निकाल निकालकर बाहर रखने लगी। सोचती थी, इस समय कौनसे कपड़े पहनूँ। लरजाँ और किरपी एक एक कपड़ा देखती थीं और हैरान होती थीं। ऐसे कपड़े उन्होंने आज तक न देखे थे। देखकर दिल खुश हो जाता था।

१२

एकाएक कुँवर साहब आकर खड़े हो गए। राजकुमारीने घूमकर पीछेकी ओर देखा और दोनों चौंक पड़े। कुँवर साहब बिल्कुल ग़रीब पहाड़ियोंके पहनावेमें थे, सिरपर एक हल्की-सी टोपी थी, पाँव नंगे थे मिट्टीमें लथपथ। एक साधारण लोई ओढ़ रक्खी थी। मगर, राजकुमारीने उन्हें देखते ही पहचान लिया। उसे यह आशा न थी कि जिनकी खोजमें वह इतनी दूरसे चलकर आई है, वे यहाँ मिल जाएँगे। उधर कुँवर साहबको भी यह आशा न थी कि राजकुमारी यहाँतक उनका पीछा करेगी। यह रियासत गंजनालाकी राजकुमारी थी। इसके पिता महाराज योगेन्द्रसिंह चाहते थे, इसकी शादी कुँवर सूर्य-प्रकाशचन्द्रसे हो जाए। कुँवरसाहबके पिताको भी इसपर कोई ऐतराज़ न था। और राजकुमारी इन्द्रा तो कुँवर साहबपर लट्टू थी। उनकी सभ्यता, उनकी शराफ़त, उनकी योग्यताने उसका मन मोह लिया था। उसने दिलमें यह प्रण कर लिया था कि अगर उनसे ब्याह न हुआ तो आयुपर्यंत कँवारी रहूँगी। उधर कुँवर साहब भी

राजकुमारीको नापसन्द न करते थे। अगर वे इस तरह घरसे न निकल आते, और लरजाँकी जवानी और सुन्दरता उनकी पसन्दको बदल न देती, तो उनका ब्याह इन्द्रासे होना निश्चित था। मगर अब इसकी कोई संभावना न थी। इन्द्रा उन्हें खोजने निकली थी। उसे विश्वास हो गया था कि कुँवर किताब लिख रहे हैं, ज़रूर काश्मीरके पहाड़ोंमें होंगे। अगर मोटर-दुर्घटना न होती तो वह कहींकी कहीं जा पहुँचती, मगर अब कुँवर साहब उसके सामने थे।

हाँ कुँवरसाहब उसके सामने थे। पहनावा वह न था, न राजकीय ठाठ था, लेकिन शक्ल वही थी। दोनों चौंक पड़े। मगर अभी उनके मुँहसे आश्चर्यका कोई शब्द निकलने न पाया था, जिससे उनका रहस्य खुल जानेका भय हो, कि कुँवरने राजकुमारीको संकेतसे कह दिया, चुप! इन लोगोंके सामने कुछ न बोलना। राजकुमारी सँभल गई और फिर उसी तरह अपना बक्स उलटने-पुलटनेमें लग गई। कुँवरने ऐसा प्रकट किया कि वह इस लड़कीको देखकर घबरा गया है।

लरजाँ बैठी कपड़े देख रही थी। कुँवरको देखते ही उठकर खड़ी हो गई और उनके पास आकर धीरेसे बोली—जानते हो यह कौन है?

कुँवरने अपने दिलमें कहा, तुमसे ज्यादा जानता हूँ मगर प्रकटमें मुस्कराकर कहा—अब मुझे क्या मालूम कौन है? तुम्हारी कोई सखी सहेली होगी। बहुत अमीर मालूम होती है!

लरजाँ—(ऐसे जैसे वह कुँवरको चौंका देगी।) यह एक राजेकी बेटी है, राजेकी!

कुँवर—(चौंककर) राजेकी बेटी! यहाँ कैसे आ गई? क्या तुम्हारी सखी है?

लरजाँने उन्हें सारी घटना सुनाई और मुस्कराई, मानों कह रही हो—देखा, हमारे घरमें राजेकी बेटी आई है।

उसे क्या मालूम था कि इससे पहले उसके घरमें एक राजेका बेटा भी आ चुका है।

कुँवर साहबने कुछ सोचकर कहा—राजेकी बेटी है, तो कुछ सत्कार करो। यह भी क्या कहेगी कि किसी पहाड़िनके घरमें गई थी। कुछ खिला दो!

लरजाँ उदास हो गई। उसे अब अपनी ग़रीबीका ख़्याल आया—बोली—क्या बनाऊँ? इसके लिए मेरे पास क्या है? मेरा खाना कभी पसन्द न करेगी।

कुँवर—पहले दौड़कर किसीके यहाँसे दो सेर दूध ले आओ।

लरजाँने बरतन उठाया और धीरेसे बाहर चली गई। इसके बाद उसने किरपीसे कहा—तुम जाकर बाज़ारसे बहुत बढ़िया चावल ले आओ दो आनेके। चार आनेका पिस्ता और किशमिश भी ले आना।

अब मैदान साफ़ था। राजकुमारी और राजकुमार दोनों आमने-सामने खड़े थे। दोनों एक दूसरेकी ओर देखते थे। दोनोंके दिलोंमें भावोंकी भरमार थी। लेकिन दोनोंकी ज़बानमें बोलनेकी शक्ति न थी।

आख़िर कुँवरने मुस्करानेका यत्न करते हुए कहा—ख़ूब मिले, इन्द्रा! ऐसी दुर्घटनामें तुम्हारा बच जाना चमत्कारसे कम नहीं। जहाँसे तुम गिरी थीं, वहाँसे गिर कर कोई मुश्किलसे ही बच सकता है। परमात्माने बड़ी दया की। इधर कैसे आई थीं?

इन्द्राने सिरपर साड़ी ठीक करते हुए जवाब दिया—तुम्हें ढूँढ़ने निकली थी। मैं तो इस दुर्घटनाको दुर्घटना नहीं समझती। इसने

तुमसे मिला दिया। नहीं तो न जाने तुम्हारा पता कब मिलता। मुझे विश्वास तो हो गया था कि तुम पुरस्कार पानेके लिए किताब लिख रहे हो। मगर यह पता न था कि यहाँ मिलोगे। (सिरसे पाँव तक देखकर) क्या शक्ल बना रक्खी है! महाराज देखें तो क्या कहें?

कुँवर—मगर इस समय मैं पत्थरोंका सौदागर बेली हूँ, रियासत सिकंधीरका राजकुमार नहीं।

इन्द्रा—तुम्हारे चले आनेसे महाराज और महारानीका बुरा हाल है। अब गुस्सा थूक दो और घर चलो, तुम्हें देखकर जी जाएँगे। तुम्हारी किताब ख़त्म हुई या नहीं?

कुँवर—(सिर हिलाकर) अभी कहाँ ख़त्म हुई। कमसे कम दो महीने और लगेंगे।

इन्द्रा—मगर यह काम ऐसा नहीं कि वहाँ न हो सके। तुम्हें जो कुछ देखना था, वह तो तुम देख चुके। अब तो केवल लिखना बाकी है।

कुँवर—नहीं, नहीं, नहीं। जो वायुमंडल यहाँ है, वह वहाँ कहाँ? यहाँ हरएक चीज़ आँखोंके सामने है, वहाँ केवल मस्तिष्कमें होगी। और फिर यह संतोष, यह सादगी, यह प्राकृतिक दृश्य, यह पहाड़ी सौन्दर्य वहाँ कभी न मिलेगा। यहाँपर मुझे इलहाम होता है। विचार आपसे आप उड़े चले आते हैं। लिखनेके बाद पढ़ता हूँ तो यह मालूम होता है कि ये मेरे विचार ही नहीं हैं। यहाँ आकर मैं असाधारण लेखक बन गया, जो सदा अमर रहते हैं। वहाँ जाकर फिर वही साधारण राजकुमार रह जाऊँगा जो आज मरते हैं,

कल लोगोंको याद भी नहीं रहते। तुम देखना, लोग मेरी किताब पढ़ कर दंग रह जाएँगे, अजीब चीज़ बन रही है।

इन्द्राने कुँवरको चुभती हुई आँखोंसे देखा और साड़ीके कोनेको उँगलियोंसे मरोड़ते हुए पूछा—यह लरजाँ कौन है? तुम्हारी बड़ी प्रशंसा करती है।

कुँवरका कलेजा धड़कने लगा। समझ गए, जिस समयकी प्रतीक्षा थी, वह आ पहुँचा। सँभल कर बोले—एक पहाड़ी लड़की है। ग़रीबकी माँ मर गई है। अब इसका यहाँ कोई भी नहीं है, बिल्कुल अकेली है। मैं न होता तो इसे बहुत कष्ट होता।

इन्द्रा—जब चले जाओगे तो क्या करेगी?

यह कहकर उसने कुँवरकी तरफ़ ऐसी आँखोंसे देखा जो दिलका हाल भी पढ़ सकती हैं। कुँवरने कुछ मिनट सोचा कि इसका क्या जवाब दूँ, आख़िर बोले—इसे भी साथ ले चलूँगा, यहाँ रहकर क्या करेगी?

इन्द्रा आकाशसे गिर पड़ी। पर एक ही क्षणमें सँभलकर उसने दूसरा वार किया—लोग क्या कहेंगे?

कुँवर साहब इस वारके लिए भी तैयार थे, बोले—मैं लोगोंके कहनेकी इतनी परवाह नहीं करता। वे जो चाहें कहें। इससे मेरा क्या बनता बिगड़ता है?

इन्द्राका यह वार भी खाली गया। उसने देखा, कुँवर हाथसे निकला जाता है। उसे आश्चर्य हो रहा था कि एक साधारण ग़रीब पहाड़ी लड़की एक सुन्दर राजकुमारीसे जीत जाए और वह खड़ी खड़ी मुँह ताकती रह जाए। उसका चमकता हुआ चेहरा उदास हो गया,

आँखोंमें आँसू भर आए। उसने तिर्छी बूटकी एड़ीसे ज़मीनको कुरेदते हुए धीरेसे कहा—महाराज कभी न मानेंगे।

इन शब्दोंमें कितनी वेदना थी! कुँवर साहबको राजकुमारीपर बहुत दया आई। सोचने लगे, बेचारी मेरे लिए कितनी दूरसे दौड़ती हुई आई है! दो मीठे शब्द सुनकर उसका सारा परिश्रम सफ़ल हो जाता। लेकिन उनके पास उसके लिए मान था, सहानुभूति थी, पर प्रेम न था। इस समय जरा भी नरम हो जाते तो फिर स्थितिको सँभालना कठिन हो जाता। दृढ़तासे बोले—मैं रियासत छोड़ सकता हूँ, इस ग़रीब लड़कीको नहीं छोड़ सकता। यह मुझे रियासतसे भी प्यारी है।

कुँवरका एक एक शब्द राजकुमारीके दिलपर हथौड़ेकी चोट था। अब उसमें बोलनेकी भी शक्ति न थी। बोलती क्या, उसके जीवनका सुन्दर सुपना बिखर गया था। उसकी लहलहाती आशाओंपर पानी फिर गया था। उसने लोहेको भी चीर देनेवाली दीन आँखोंसे कुँवरकी ओर देखा और ठंडी आह भरकर गर्दन झुका ली, मानो अपनी हारको स्वीकार कर लिया।

कुँवरने बहुत धीरेसे अपना हाथ उसके कंधेपर रक्खा और कहा—इन्द्रा, मेरी एक प्रार्थना है। मैं चाहता हूँ, तुम लरजाँसे इस मामलेमें कुछ भी न कहो। शायद तुम यह सुनकर हैरान होगी कि वह कुछ भी नहीं जानती। वह यह भी नहीं जानती कि मेरे दिलमें उसके लिए क्या भाव हैं। वह मुझसे बहुत स्वतंत्रतासे मिलती है। मेरे साथ मिलकर हँसती है, खेलती है। अगर तुमने उससे

कुछ कह दिया तो मेरा सारा आनन्द मिट्टीमें मिल जाएगा । यह कहकर कुँवरने राजकुमारीके सामने घुटने टेक दिए ।

कुँवरने राजकुमारीसे मौन भाषामें कहा कि तुम हारकर भी जीत गई हो । मैं अब तुम्हारे सामने नाचीज़ हूँ । तुम चाहो तो मेरी प्रसन्नता नष्ट कर दो ।

राजकुमारीने सहमी हुई आँखोंसे दरवाज़ेकी ओर देखा और राजकुमारका हाथ पकड़कर उठाते हुए कहा—तुमने मेरा दिल तोड़ दिया है, मगर मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि मेरे मुँहसे कोई भी शब्द न निकलेगा ।

यह कहकर उसने अपना रेशमी रूमाल निकाला और आँखें पोंछने लगी । कुँवरके दिलसे धुआँ-सा निकलने लगा ।

१३

रातको खाना खानेके बाद दोनों सखियाँ कुप्पीकी मध्यम रोशनीमें पुआलपर अपने अपने कम्बल ओढ़कर लेट गईं और बातें करने लगीं ।

राजकुमारीने कहा—तुम खाना ख़ूब बनाती हो । मुझे तो मज़ा आ गया ।

लरजाँ—यह तो आपकी कृपा है, नहीं तो आपके हाँ अच्छेसे अच्छे रसोइए होंगे । मैं क्या पका सकती हूँ, जो साग-पात मिला, भूनकर रख दिया ।

राजकुमारी—मगर जो स्वाद इस साग-पातमें है, वह उन खानोंमें नहीं । मुझे तो तुमसे प्रेम हो गया है । सोचती हूँ, कल कैसे जाऊँगी ?

लरजाँ—चली जाएँगी तो याद भी न आऊँगी। अलबत्ता मैं तुमको कभी न भूलूँगी। तुम्हें मेरे जैसी हज़ारों मिल सकती हैं, मुझे तुम जैसी एक भी न मिलेगी। याद करूँगी और रोऊँगी। फिर कभी इधर आओ तो जरूर मिलना, मैं तुम्हारी राह देखती रहूँगी।

राजकुमारीने लरजाँकी ओर प्यारसे देखा और कहा—बहन, यह तुम्हारी भूल है। तुमने कुछ ही घंटोंमें मेरा मन मोह लिया है। तुम कहती हो, इधर आओ तो मिलना, मैं कहती हूँ, मैं हर साल तुम्हें मिलनेके लिए आया करूँगी और कई कई दिन ठहरा करूँगी।

लरजाँ—(प्रसन्न होकर) इकट्ठी घूमा करेंगीं। कभी ऊपर पहाड़-पर जाएँगी, कभी नीचे नालेके किनारे जाकर बैठेंगीं।

राजकुमारी—अगली बार जब आऊँगी तो तुम्हें मेरे साथ मेरी रियासतमें चलना होगा। चलोगी न ? मोटरकी खूब सैर कराऊँगी।

लरजाँ आसमानमें उड़ने लगी। बोली—जरूर चलूँगी। कब आओगी ?

राजकुमारी—यह वहाँ जाकर लिखूँगी, अभी कुछ नहीं कह सकती। तुमने बेलीको खाना भेज दिया या नहीं। कौन ले जाएगा ?

लरजाँ—किरपी ले जाएगी। तुम थक तो नहीं गईं, कहो, तो पैर दबा दूँ ?

राजकुमारी—अरे बहन, क्यों काँटोंमें घसीटती हो। पहले ही मैं तुम्हारी बहुत कृतज्ञ हूँ।

लरजाँ लेटी हुई थी, उठकर राजकुमारीके पास आ बैठी और पाँवकी ओर हाथ बढ़ाकर बोली—क्या उपकार किया है मैंने तुमपर ?

तुमको घरमें हज़ारों सुख होंगे, यहाँ एक भी नहीं। लाओ, ज़रा दबा दूँ, घिस न जाऊँगी।

राजकुमारीको लरजाँकी इस सादगीपर बे-अख़्तियार प्यार आया। उसने अपना बढ़िया कम्बल अपने शरीरके इर्द-गिर्द लपेट लिया और उठकर बैठ गई। बोली—तुमने मेरे प्राण बचाए हैं। अगर तुम वहाँसे मुझे न उठा लातीं तो मेरा बचना असंभव था। बेहोशीमें जरा भी करवट बदलती तो नीचे लुढ़क जाती। कौन बचाता?

लरजाँ—तुम्हें मैंने नहीं बचाया, भगवानने बचाया है। मनुष्य मनुष्यको क्या बचायगा?

राजकुमारी—यह तुम्हारी विनय-शीलता है। कोई और होता तो डींगें मारते न थकता?

लरजाँने कोई उत्तर न दिया, चुपचाप छतकी ओर देखने लगी। राजकुमारीने प्रसंग बदलकर कहा—यह बेली कौन है?

लरजाँके मुँहपर शर्मकी लाली दौड़ गई, बोली —पत्थरोंका एक सौदागर है।

राजकुमारी—मेरा मन कहता है कि यह आदमी तुम्हारे लिए बना हुआ है। ज़रूर यही बात है। इधरसे जाता होगा। तुम्हें देख लिया, पत्थरोंका सौदागर बन बैठा।

लरजाँ—नहीं बहन, बेली ऐसा आदमी नहीं। मुझे उसपर पूरा पूरा भरोसा है। तुम उसे जानतीं तो यह न कहतीं।

राजकुमारीने दिलमें कहा, तुमसे ज़्यादा जानती हूँ, प्रकटमें बोली —मगर तुम्हारा दोष नहीं। तुम्हारा रूप ही ऐसा है कि जो देखे

पागल हो जाए। बेलीका क्या दोष ? तुम किसी राजाकी रानी होने योग्य हो, यहाँ झोंपड़ेमें रहने योग्य नहीं।

लरजाँ—वाह, बड़ी सुन्दर हूँ न! तुम्हारी तो जूतीकी भी बराबरी नहीं कर सकती। यह कहकर उसने राजकुमारीके तिल्ई जूतेकी ओर देखा। इधर राजकुमारीको डाह हो रहा था कि मैं लरजाँ ही होती। उसने कहा—मैं भविष्यवाणी करती हूँ, तुम किसी दिन रानी बनोगी। अपने मास्टरसे जल्दी जल्दी पढ़ लो, नहीं तो पीछे तकलीफ़ होगी।

लरजाँने मुँह फुला लिया और बोली—जाओ, मैं तुमसे नहीं बोलती। तुम छेड़ती हो।

राजकुमारीने लरजाँके गालपर धीरेसे एक चपत लगाकर कहा—दिलमें तो प्रसन्न हो रही है, मुँहसे कहती है, तुम छेड़ती हो। लगाऊँ एक और।

दोनों सखियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

कुछ देर बाद लरजाँने पूछा—राजा लोगोंका महल कितना बड़ा होता है ? इस झोंपड़ेसे तो बहुत बड़ा होता होगा ?

राजकुमारी पहले तो उसकी सादगी और भोलेपनपर मुस्कराई, फिर बोली—महल देखो तो दंग रह जाओ। ऐसे ऐसे सैकड़ों झोंपड़े उसके आँगनमें समा जाएँ। और फिर कमरे ऐसे सजे होते हैं कि तुमसे क्या कहूँ ? देखकर दिल प्रसन्न हो जाता है। फ़र्शपर कालीन ऐसे सुन्दर होते हैं, दरवाज़ोंपर मोतियोंके पर्दे ऐसे कीमती होते हैं कि क्या कहना। फिर बिजलीके पंखे, बिजलीके लैम्प। अभी अँधेरा है, अभी तुमने बटन दबा दिया, कमरेमें रोशनी हो गई। बटन

जरूरी सूचना—आगेके पेजोंका नम्बर ६३–६४–६५ आदि होना चाहिए था, जो भूलसे ६५–६६–६७ आदि छप गया है परन्तु विषयका सिलसिला छूटा नहीं है।

दबाया, पंखा चलने लगा। एक एक आदमीपर कई कई नौकर होते हैं। कोई बीस आदमी तो हमारे यहाँ केवल कमरोंकी सफ़ाईके लिए हैं।

राजकुमारी बोलती जाती थी और लरजाँ आश्चर्यसे आँखें फाड़ फाड़कर सुनती जाती थी। कभी कभी उसे संदेह होता था कि राजकुमारी झूठ बोल रही है। कभी सोचती थी, इसे झूठ बोलनेकी क्या पड़ी है? जब इसके वहाँ जाऊँगी तब देख लूँगी। इतनेमें ग्यारह बज गए और लरजाँ सो गई। मगर राजकुमारीकी आँखोंमें नींद न थी। कुँवरको ढूँढ़ने निकली थी, यहाँ आकर उसे सदाको लिए गँवा बैठी!

दूसरे दिन इधर राजकुमारी चलनेको तैयार हो रही थी, उधर लरजाँ बैठी चुपके चुपके रो रही थी। सोचती थी, राजकुमारी चली जाएगी, तो मेरा दिल कैसे लगेगा? राजकुमारीको कुँवरपर क्रोध था, लरजाँपर क्रोध न था। सोचती थी, उस ग़रीबका क्या दोष? कुँवरने उसके घरमें आकर उसको घेर लिया, यह उसके पास नहीं गई।

दोपहरके समय जब मोटर आ गया और ट्रंकके सिवाय राजकुमारीका सब सामान उसमें रख दिया गया, तो उसने लरजाँको गलेसे लगा लिया और भर्राई हुई आवाज़में कहा—बहन! सच कहती हूँ, यहाँसे जानेको जी नहीं चाहता। लेकिन क्या करूँ, इस समय रुक नहीं सकती। फिर आऊँगी तो कई दिन रहूँगी।

लरजाँने चुपचाप राजकुमारीकी ओर देखा और गरदन झुका ली। उसके मुँहसे एक शब्द भी न निकला।

राजकुमारीने कहा—तुमने मेरी जो खातिर-तवाजो की है, वह सदा याद रहेगी।

लरजाँने फिर भी कोई जवाब न दिया; अपनी बड़ी बड़ी चकित आँखोंसे राजकुमारीकी ओर देखती रही।

इतनेमें ड्राइवरने आकर कहा—सरकार चलिए, मोटर आ गया है।

राजकुमारीने किरपीको बुलाकर दस रुपएका नोट दिया। गाँवके दूसरे आदमियोंमें रुपए बाँटे; किसीको एक किसीको दो। कई बच्चे आकर झोंपड़ेके सामने खड़े हो गए थे, उन सबको पैसे दिए। इसके बाद लरजाँको घसीटकर झोंपड़ेके अन्दर ले गई। वहाँ जाकर उसने अपना बक्स खोलकर उसमेंसे गहनोंका डिब्बा निकाला और उसे खोलकर लरजाँके सामने रख दिया। लरजाँ उसके मुँहकी ओर देखने लगी। मानो मूक भाषामें पूछने लगी—तुम्हारा क्या मतलब है?

राजकुमारीने मुस्कराकर कहा—ले लो। यह तुम्हारे लिए हैं।

लरजाँ चौंक पड़ी। वह गरीब थी, उसे ठीक ठीक मालूम न था कि इन गहनोंका क्या मूल्य होगा, लेकिन इतना समझती थी कि उनका मूल्य कम न होगा। उसने यह भी समझ लिया कि इतना रुपया सारे गाँवमें किसीके पास न होगा। यह गहने अत्यंत सुन्दर हैं। उन्हें पहनकर वह परी मालूम होने लगेगी। सारे गाँवकी स्त्रियाँ उससे डाह करेंगीं। बेलीको भी आश्चर्य होगा। कहेगा, तू तो सच-मुच राजकुमारी बन गई। इसके उत्तरमें वह क्या कहेगी? कुछ भी नहीं, केवल मुस्करा देगी, और उसकी ओर कनखियोंसे देखेगी।

लेकिन दूसरे ही क्षणमें उसके विचार बदल गए। उसने डिब्बेको बन्द करके टूंकमें रख दिया और राजकुमारीकी ओर सजल आँखोंसे देखकर कहा—बहन! यह चीजें तुम्हारे जैसे धनियोंके लिए हैं, हम गरीबोंको इनकी जरूरत नहीं। तुम्हारा प्रेम बना रहे, मेरे लिए यही सब कुछ है।

राजकुमारीने डिब्बा निकालकर लरजाँके बिछौनेके नीचे रख दिया

और ट्रंक बन्द करके कहा—देखो ! अगर तुमने अब लौटाया तो मैं समझूँगी, तुम्हें मुझसे ज़रा भी प्यार नहीं ।

लरजाँकी आँखोंमें कृतज्ञताके आँसू आ गए। वह राजकुमारीके गलेसे लिपट गई और रोने लगी। मगर उसके दिलमें जो खुशी थी, उसे कौन बयान कर सकता है ? राजकुमारीके होठोंपर मुस्कराहट थी। मगर उसके दिलमें जो अँधेरा छाया हुआ था, उसे कौन जान सकता है ?

राजकुमारीने ड्राइवरसे कहा—यह ट्रंक ले जाकर मोटरमें रख दो।

ड्राइवरने ट्रंक उठा लिया और बाहरकी तरफ चला। एकाएक कुँवर साहब आकर राजकुमारीके सामने खड़े हो गए और बोले—सारा गाँव आपको दुआएँ दे रहा है। आपने तो सबको मोह लिया। —क्या तैयार हो गईं सरकार ?

राजकुमारीने कुँवरकी ओर ऐसी आँखोंसे देखा जिनमें शिकायतोंके दफ़्तर भरे हुए थे और कहा—हाँ भई ! अब और क्या करें ? तुमने तो हमारी बात भी न पूछी, अपने झोंपड़ेमें जाकर सो रहे, अब आए हो !

इस वाक्यमें जो ताने छिपे हुए थे, उनसे कुँवरका दिल छिद गया। धीरेसे बोले—सरकार ! हमें तो कुछ न मिला ।

राजकुमारीने हृदयसे रोकर लेकिन होठोंसे मुस्कराकर कहा—सब्र करो। तुम्हें ऐसी बढ़िया चीज़ मिलेगी कि खुश हो जाओगे, निहाल हो जाओगे, अपना भाग्य सराहोगे।

मगर जब वह मोटरपर सवार हो गई और मोटर कुछ दूर निकल गया तो उसकी आँखें सजल हो गईं थीं और उसे पहाड़के हरे-भरे दृश्योंमें कोई हरियाली दिखाई न देती थी। पहले उसका दिल रोता

था, अब आँखें भी रो रहीं थीं। आशा लेकर आई थी, निराशा लेकर जा रही थी।

उधर कुँवर और लरजाँ झोंपड़ेमें खड़े बातें कर रहे थे। किरपी पानी भरने गई थी।

लरजाँ—उसका सुभाव बड़ा मीठा है। मेरा जी चाहता था, उसे जाने न दूँ।

कुँवर—क्या कहना! राजेकी बेटी है। गाँवके लोग उसका यश गा रहे हैं। जिससे पूछो वही प्रशंसा करता है।

लरजाँ—तुमने भी इनाम माँगा था, तुम्हारी यह बात मुझे अच्छी नहीं लगी। क्या ले लिया! साफ़ टाल गई। बिन माँगे मोती मिल जाते हैं, माँगनेसे भीख भी नहीं मिलती। और फिर तुम्हें ज़रूरत ही क्या है? तुम्हारे पास सब-कुछ है। भगवानने सब कुछ दे रक्खा है। तुम्हें माँगना न चाहिए था।

कुँवर—अच्छा! मैंने तो माँगकर कुछ न पाया, तुमने तो कुछ न माँगा था। तुम्हें क्या मिला, बताओ?

लरजाँ—(तुनककर) मुझे ऐसी चीज़ मिली है कि तुम देखकर दंग रह जाओगे।

कुँवर—(मुस्कराकर) तो मुझे भी ऐसी चीज मिली है कि तुम्हें सुनकर आश्चर्य होगा।

लरजाँ—बिलकुल झूठ बोलते हो। दिखाओ क्या मिला?

कुँवर—पहले तुम दिखाओ, तुम्हें क्या मिला?

लरजाँ—मुझे ऐसी चीज़ मिली है जो सारे गाँवमें किसीके पास न होगी।

कुँवर—मुझे ऐसी चीज़ मिली है जो उसकी रियासत-भरमें किसीके पास न होगी।

लरजाँ—बिल्कुल झूठ।

कुँवर—बिल्कुल सच।

लरजाँ—तो दिखा क्यों नहीं देते? हमें भी मालूम हो कि तुम्हें कौन-से हीरे-मोती दे गई है।

कुँवर—पहले तुम दिखाओ।

लरजाँ—फिर तुम्हें भी दिखाना होगा, यह कहे देती हूँ।

कुँवर—जरूर दिखाएँगे। दिखाएँगे क्यों नहीं?

लरजाँने बच्चोंकी तरह शोख़ीसे कहा—तो आँखें बन्द कर लो। जब कहूँ तब खोलना।

कुँवरने आँखें बन्द कर लीं।

लरजाँने अन्दर जाकर डिब्बा निकाला, फिर ज़मीनपर कपड़ा बिछाकर सारे गहने उसपर फैला दिए। इसके बाद कुँवरके कंधेपर हाथ मार कर कहा—लो, अब आँखें खोल दो और देखो।

कुँवरने आँखें खोलकर देखा तो सन्नाटेमें आ गए। यह क्या! राजकुमारी लरजाँको इतना कुछ दे गई होगी, उन्हें यह गुमान भी न था! वे समझते थे, शायद सौ-पचास रुपए दे गई हो। लेकिन सारे गहनोंका डिब्बा दे गई होगी इसका उन्हें ख़्याल भी न था। आश्चर्यसे बोले—लरजाँ! तुमने तो राजकुमारीको लूट लिया, हज़ारोंका माल है।

लरजाँने गहनोंको शौकसे देखा और फिर कुँवरसे कहा—अब तुम बताओ, तुम्हें क्या दिया?

कुँवर—तो अब तुम भी आँखें बन्द कर लो। जब कहूँ तब खोलना। जिस प्रकार तुमने अपनी चीज़ दिखाई है, उसी प्रकार हम भी दिखाएँगे, और क्या ?

लरजाँने आँखें बन्द कर लीं।

कुँवर साहब दबे पाँव अन्दर जाकर शीशा उठा लाए और उसे डिब्बेके सहारे ऐसी जगह रख दिया, जहाँसे उसमें लरजाँका मुँह साफ़ दिखाई देता था। इसके बाद उसके पीछे जाकर खड़े हो गए और उसके कंधेपर उसी प्रकार हाथ मारकर बोले—बस! अब आँखें खोल दो और देखो।

लरजाँने आँखें खोलकर देखा तो सामने केवल एक शीशा था। मुस्कराकर बोली—कहाँ है वह तुम्हारी रियासत-भरमें कीमती चीज़ ? दिखाओ।

कुँवरने शीशेमें उसके सुन्दर चेहरेकी तरफ इशारा करके उत्तर दिया—वह।

लरजाँ शरमा गई। बोली—चलो, हटो, तुम तो हँसी करते हो।

मगर कुँवर साहब जानते थे कि यह हँसी नहीं सच है। राजकुमारी उन्हें वह चीज़ दे गई थी जिसका कोई मूल्य न था।

इतनेमें किरपी पानीका घड़ा सिरपर उठाए हुए झोंपड़ेके अन्दर आ गई और प्रेम और पवित्रताका यह वसन्तपूर्ण नाटक अधूरा रह गया।

१४

डेढ़ महीना बीत गया, कुँवर साहब अब भी किताब लिखे रहे थे। उसी तरह नालेके किनारे जा बैठते और सारा दिन लिखते रहते।

राजकुमारी इन्द्राने उनके माता-पिताको यह तो बता दिया था कि कुँवर साहब अच्छी तरहसे हैं और पुरस्कारके लिए किताब लिख रहे हैं, लेकिन कुँवर साहबके कहनेके अनुसार यह न बताया था कि कहाँ हैं। वे चाहते थे, उनके काममें कोई विघ्न न डाले, ताकि जिस शानसे किताब शुरू हुई है उसी शानसे समाप्त हो जाए। घर चले जाते तो यह बात न रहती। यहाँ तक कि किताबका अन्तिम भाग भी समाप्त हो गया और कुँवर साहबने छपनेके लिए बम्बई भेज दिया। अब उनका समय खाली था। जो चाहें करें, जहाँ चाहें रहें। पुरस्कारका निर्णय होनेमें अभी तीन महीने बाकी थे। कुँवर साहबने सोचा, अभी घर लौटना ठीक नहीं। सब कहेंगे, बड़े अकड़खाँ बनकर घरसे निकले थे, क्या कर आए? अगर पुरस्कार मिल जाए तो भाग्य खुल जाए। सारे भारतवर्षमें धूम मच जाए। फिर वे भी कह सकेंगे कि वे अपने पाँवपर खड़े हो सकते हैं। उन्हें केवल बाप-दादोंके धनका भरोसा नहीं है। इस समय तक लरजाँ हिन्दी पढ़ने-लिखनेमें काफ़ी निपुण हो गई थी। अब छोटे मास्टरको छोड़कर कुँवर साहबसे अँगरेज़ी पढ़ने लगी। उनको कोई काम न था, जी लगाकर पढ़ाने लगे। उसे पढ़नेका शौक था, जी लगाकर पढ़ने लगी। दो-अढ़ाई महीनेमें उसे अँगरेज़ीके कई छोटे छोटे वाक्य याद हो गए।—खाना खाओ। पानी पिओ। आज बहुत सरदी है। नालेमें बाढ़ आ गई। मैं तुमसे न बोलूँगी। किरपी बड़ी सुस्त है, बहुत धीरे धीरे काम करती है। ये लो! बेलीने चूहा पकड़ लिया—इस प्रकारके कई वाक्य फ़रफ़र बोलने लगी। उसकी मस्तिष्क-शक्ति देखकर कुँवर साहब दंग रह जाते थे। जो पाठ एक बार पढ़ लेती फिर कभी न भूलती।

तीसरे पहरका समय था। लरजाँ नालेके किनारे एक बड़े पत्थर-पर बैठी अँगरेज़ी लिखनेका अभ्यास कर रही थी और कुछ दूर कुँवर दूसरे पत्थरपर बैठे किसी गहरे विचारमें लीन थे। इतनेमें लरजाँने थककर कापी पत्थरपर रख दी और कुँवरके पास आकर कहा—मैं कहती हूँ, यह राजा लोग तो बड़े सुखी होंगे ?

कुँवर साहब चौंक पड़े, बोले—क्या कहा तुमने ?

लरजाँ—(हँसकर) मैंने कहा, यह राजा लोग तो बड़े सुखी होंगे !

कुँवर—क्यों, केवल इसलिए कि उनके पास धन होता है ?

लरजाँ—आख़िर धन-दौलत ही तो दुनियामें सबसे बड़ी चीज़ है! जिसके पास धन-दौलत हो, वह क्यों सुखी न होगा ? मैं चाहती हूँ, मैं किसी राजाके घर पैदा होती !

कुँवर—(गंभीरतासे) यह तुम्हारी भूल है। धनमें सुख नहीं है, न संतोष है। कई मनुष्य ऐसे हैं जिनके पास लाखों रुपए हैं, मगर फिर भी उनके दिलको चैन नहीं। कई ऐसे हैं जिनके पास पैसा भी नहीं, फिर भी प्रसन्न हैं। और फिर राजों-महाराजोंके सिरपर तो कई ज़िम्मेदरियाँ होती हैं। बेचारे प्रायः परेशान रहते हैं। उनको सुखी समझना दुनियाकी सबसे बड़ी मूर्खता है।

लरजाँ—(आश्चर्यसे) अच्छा ! मेरा ख्याल था, यह लोग बड़े आनंद-मज़ेमें होंगे !

कुँवर—दूसरे लोगोंकी तरह कई राजे भी ऐसे हैं जिनका जीवन आहों और गुनाहोंमें कटता है, जिन्हें दया और धर्मका विचार ही नहीं है, जिन्हें नेकीकी चिन्ता ही नहीं है। कई ऐसे हैं जो

अपने कर्त्तव्यको पूरा नहीं करते। बताओ, उनके दिलको चैन मिल सकता है ?

लरजाँ—जो ऐसे हैं, उनको चैन क्या मिलेगा ? उन्हें तो शायद रातको नींद भी न आती होगी।

कुँवर—कई राजे ऐसे हैं जिनके पास जाकर तुम डर जाओ। उन्हें केवल अपना ख़्याल है, और किसीका नहीं।

लरजाँ—तो मैं आज तक भूलमें थी ?

कुँवर—तुम उनके मुक़ाबिलेमें देवी हो। अच्छा ! एक बात बताओ। तुम राजकुमारी इन्द्राको तो न भूली होगी ?

लरजाँ—(सिर हिलाकर) उसे भूल जाऊँ तो मैं समझूँगी मैं औरत नहीं शैतान हूँ।

कुँवर—वह भी सुखी नहीं है। उस दिन तुम्हारे नाम जो पत्र आया था, वह आँसुओंसे भीगा हुआ था। अब सोचो ! उसके पास किस चीज़की कमी है ? पिता राजा है। नौकर-चाकर सेवा करनेको हैं। महल रहनेको है। अच्छेसे अच्छे कपड़े पहननेको हैं। जो चाहे मँगवा ले, जो चाहे ख़रीद ले। लेकिन, यह सब होते हुए भी उसका जीवन आनन्दमय नहीं है। इससे क्या यह सिद्ध नहीं होता कि आनन्द और शान्ति धनमें नहीं, किसी दूसरी चीज़में है ?

लरजाँ—मगर राजकुमारीको क्या दुःख है ? मेरा जी चाहता ह, उड़कर उसके पास चली जाऊँ और उसे देख आऊँ। उसने मुझे एक ही दिनमें मोह लिया। उसे घमंड तो छू भी नहीं गया। उसकी रियासत यहाँसे कितनी दूर है ? चलो चलें, मुझे देखकर खुश हो जाएगी।

कुँवर—अभी नहीं। कुछ दिन और ठहर जाओ।

इतनेमें ऊपरसे कोई उतरता दिखाई दिया। दोनों सिर उठाकर देखने लगे। यह तार-घरका चपरासी था। कुँवरका कलेजा धड़कने लगा। उन्होंने अपने एक काश्मीरी मित्रसे कह रखा था, कि पुरस्कारके नतीजेका समाचार उन्हें भेज दे। जहाँ कुँवर रहते थे, वहाँ तार-घर न था। तारघर वहाँसे दस मीलकी दूरीपर था। कुँवर साहब डाकबाबूके पास तार ले जानेवालेकी फीस जमा करा आए थे जिससे जो भी तार आए उनके पास पहुँचा दिया जाए। इसी क्षणके लिए उन्होंने इतना कठिन परिश्रम किया था। इसी क्षणके लिए वे उतावले थे और अब—तारघरका आदमी तार लेकर आ रहा था। यह पुरस्कारका निर्णय न था, उनके भाग्यका निर्णय था। वे उठकर खड़े हो गए। लरजाँने घबराकर पूछा—यह कौन है?

उसने समझा यह आदमी कुँवर साहबको गिरफ़्तार करने आया है।

कुँवरने लरजाँको चुप रहनेका इशारा किया और तार-घरके चपरासीसे पूछा—मेरा तार है क्या? लाओ।

चपरासीने कुँवरके पास पहुँचते हुए झुककर सलाम किया और तारका लिफ़ाफ़ा और हस्ताक्षरोंके लिए काग़ज़ उनके हाथमें दे दिया।

कुँवरने काँपते हुए हाथोंसे लिफ़ाफ़ा लिया, फिर चपरासीसे पेंसिल ली और हस्ताक्षर करके काग़ज़ लौटा दिया। चपरासी वहीं खड़ा रहा। कुँवरने कहा—जाओ।

चपरासी उनके राज-पदको जानता था। उसने फिर झुककर सलाम किया और वापिस चला गया। लरजाँ दौड़ती हुई कुँवरके पास आई और उनके कंधेपर हाथ रखकर बोली—क्या है?

कुँवरने इसका उत्तर न दिया। लिफ़ाफ़ा खोलकर तार पढ़ने लगे। पढ़ते पढ़ते उनका चेहरा खिल उठा और आँखें चमकने लगीं। उनका परिश्रम अकारथ न गया था। उन्हें इनाम मिल गया था। इस समय उनकी प्रसन्नताका ठिकाना न था, झूमते थे।

लरजाँने उनकी छातीपर प्यारसे मुक्का मारकर उत्सुकतासे पूछा—क्या खबर है? बताते क्यों नहीं?

कुँवरने मुस्कराकर उसकी ओर देखा और उसके सिरपर हाथ फेरकर उत्तर दिया—काश्मीरमें मेरा एक अमीर दोस्त रहता है। उसके घर बेटा पैदा हुआ है। इस खुशीमें श्रीमानजी जलसा करने जा रहे हैं। मुझे भी बुलाया है। जाना पड़ेगा।

लरजाँके दिलमें गुदगुदी-सी हुई। कुँवरकी ओर देखकर बोली—मुझे भी ले चलो। काश्मीर देख आऊँगी।

कुँवर साहब अस्वीकार न कर सके, बोले—चलो! क्या हर्ज है, ले चलेंगे।

थोड़ी देर बाद इधर लरजाँ अपने झोंपड़ेमें हँस हँसकर किरपीसे काश्मीर जानेकी बातें कर रही थी, उधर कुँवर साहब अपने मकानमें बैठे अपने भविष्यकी बातें सोच रहे थे।

इसके पन्द्रह दिन बाद २५ सितम्बरको श्रीनगरमें बड़ा भारी जलसा था जिसमें कुँवरको पुरस्कार दिया जानेवाला था। इस अवसरपर महाराज काश्मीरने वायसरायको भी निमंत्रण दिया कि वे कुँवरको पुरस्कार अपने हाथसे दें। वायसराय बहादुरने यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया। इसके अतिरिक्त भारत-भरके राज-मंडलको भी निमंत्रित किया गया था। नगरमें बड़े जोरोंकी तैयारियाँ हो रही थीं।

कुँवरके पिता महाराज पृथ्वीचंद्र बहादुर और उनकी महारानी तो फूले न समाते थे। उनका खोया हुआ लाल ही न मिला था, उसने उनका नाम भी उज्ज्वल कर दिया था। राजों-महाराजोंने उनको वधाईके तार भेजे, समाचार-पत्रोंने कुँवरके चित्र छापे, कई समाचार-पत्रोंने जलसेकी खुशीमें विशेषांक निकाले। महाराज यह सब कुछ देखते थे और प्रसन्न होते थे। वे चाहते थे २५ सितम्बर जल्दसे जल्द आ जाए और वे अपने रूठे हुए बेटेको मना लें। महारानीने इस खुशीमें हजारों रुपएका दान किया और एक मन्दिर बनवाना शुरू करवा दिया।

२३ सितम्बरको कुँवरने किरपासे कहा—तुम भी चली चलो। फिर जाने ऐसा अवसर हाथ आए न आए।

लेकिन किरपी तैयार न हुई, बोली—सब लोग चले गए तो घरको कौन देखेगा? न बाबा, मैं न जाऊँगी। तुम जाओ।

लरजाँने कहा—गहने ले चलूँ?

कुँवरने कहा—क्या ज़रूरत है, यहीं रहने दो। अगर चोरीका भय है तो किरपीसे छिपाकर ज़मीनमें गाड़ दो। आकर निकाल लेना।

लरजाँने ऐसा ही किया और निश्चिन्त हो गई। कुँवरने भी एक आदमीसे कह दिया—मेरे मकानमें तुम सो रहना।

१८

दूसरे दिन संध्या समय दोनों श्रीनगरकी एक आलीशान कोठीमें थे और महाराज काश्मीरका एक दरबारी कुँवरके सामने खड़ा उनके हुक्मकी प्रतीक्षा कर रहा था। कुँवर साहबने कहा—देखिए! मेरे साथ जो पहाड़ी लड़की है उसके लिए लिबास और गहनोंका प्रबन्ध हो जाए। कल वह भी दरबारमें जाएगी।

दरबारीने सिर झुकाकर उत्तर दिया—बहुत अच्छा।

कुँवर—(मुस्कराकर) वह लिबास पहनना नहीं जानती। किसी समझदार स्त्रीको भेज दीजिए जो उसे लिबास इत्यादि पहना दे, और अपने साथ दरबारमें ले जाए।

दरबारी—बहुत अच्छा।

कुँवर—मेरे पास भी कोई लिबास नहीं है। इसका भी प्रबन्ध कर दें।

दरबारी—बहुत अच्छा सरकार! हो जायगा।

कुँवर—एक बात और। मैं इस समय किसीसे नहीं मिलना चाहता। दरबानसे कह दो, चाहे कोई आए, कह दे, इस समय नहीं मिल सकते।

दरबारी—बहुत अच्छा।

कुँवर—सब महाराजा लोग आ गए, या अभी आनेवाले हैं?

दरबारी—हजूर! कई आ गए हैं, कई आनेवाले हैं।

कुँवर—महाराजा साहब सिकंधीर अभी आए या नहीं?

दरबारी—महाराज! वे कल पहुँचेंगे।

कुँवर—और वायसराय बहादुर?

दरबारी—वे कल नौ बजे यहाँ पहुँचेंगे हजूर!

कुँवरने छतके लैम्पकी ओर देखकर कुछ सोचा और फिर दरबारीसे कहा—आप जा सकते हैं। सुबह आइए। और मेरी ओरसे महाराज साहबको धन्यवाद कह दीजिएगा।

दरबारी सिर झुकाकर चला गया।

सुबह आठ बजेके लगभग जब लरजाँ नहा-धोकर निकली तो

उसके सामने कपड़ोंका ढेर पड़ा था। एक एक कपड़ा देखती थी और हैरान होती थी। किसे पहने, किसे न पहने। एकसे एक बढ़-कर था। उसका जी चाहता था, सभी रख ले, एक भी वापस न करे। लरजाँ देरतक उलट-पुलट कर देखती रही, लेकिन किसी निश्चयपर न पहुँची। आखिर मिस फ़िलिपने, जिसको उसकी Companion नियत किया गया था, कहा—क्या आपको कोई भी कपड़ा पसन्द नहीं?

लरजाँ चौंककर बोली—मुझे तो सभी पसन्द हैं, कोई भी नापसन्द नहीं। यह कहकर फिर उन्हें उलटने-पुलटने लगीं। फिर एक एकको ध्यानसे देखने लगी। मिस फ़िलिप समझ गई कि इससे साड़ी न चुनी जाएगी। एक साड़ी उठाकर बोली—मेरे ख्यालमें यह पहन लीजिए। बहुत अच्छी चीज़ है। क्यों?

लरजाँको चुननेके कष्टसे छुटकारा मिल गया, बोली—बहुत अच्छा।

मिस फ़िलिपने उसी कपड़ेका जम्पर निकाल दिया। लरजाँने वह भी ले लिया।

अब कपड़े पहननेका प्रश्न था। लरजाँ मिस फ़िलिपका मुँह देखने लगी। मतलब यह था, इन्हें कैसे पहनूँ? मिस फ़िलिपने दिलमें कहा, कुँवरसाहब भी पता नहीं किस जंगली लड़कीको पकड़ लाए हैं। प्रकटमें बोली—आइए! दूसरे कमरेमें चलकर पहना दूँ।

लरजाँ सिर झुकाकर उसके साथ चली गई।

आध घँटे बाद उसकी शक्ल ही और थी। कहाँ वह पहाड़ी लड़की, कहाँ यह सुन्दरी, जिसे देखकर आँखें रोशन हो जाएँ।

लरजाँ शीशेके सामने खड़ी हुई तो उसे सन्देह होने लगा कि

शायद यह मेरा प्रतिबिम्ब नहीं, शायद कोई दूसरी सुन्दरी खड़ी है। मगर नहीं, यह वही थी। राजकीय पोशाक और गहनोंने उसकी सूरत ही बदल दी थी। वह आनन्दसे झूमने लगी। वह चाहती थी, शीशेके सामने खड़ी अपनी सूरत देखती रहे। इस समय तक वह इन्द्राको बहुत सुन्दर समझती थी। उसकी शक्ल उसके मनमें समा गई थी। लेकिन, आज उसे शीशेके इस चित्रके सामने इन्द्रा भी हेच मालूम होने लगी। आज उसे पहली बार मालूम हुआ कि वह भी खूबसूरत है, उसमें भी लुभानेकी शक्ति है। कभी अपनी ओर देखती थी, कभी प्रतिबिम्बकी ओर,—और मुस्कराती थी।

अचानक उसे शीशेमें कोई अपने पीछे आता दिखाई दिया। लरजाँ चौंककर पीछे मुड़ी और आनेवालेके सामने डरकर खड़ी हो गई। सोचती थी, यह कौन है, और यहाँ क्या करने आया है। बेलीने तो कहा था, यहाँ कोई दूसरा आदमी पाँव भी नहीं रख सकता। जरूर यह आदमी बेलीका अमीर दोस्त है जिसके यहाँ जलसा है। शानदार पोशाक थी, हाथोंमें मोटी मोटी अँगूठियाँ। लरजाँके पाँव काँपने लगे। न भाग सकती थी, न खड़ी रह सकती थी। क्या करे, जाने वह स्त्री कहाँ चली गई?

उस सरदारने लरजाँके कंधेपर हाथ रख दिया और उसकी शक्ल शीशेमें देखने लगा।

लरजाँ जँगली हिरनीकी तरह चौंक पड़ी। उसने सरदारका हाथ अपने कंधेसे हटाकर सख्तीसे परे झटक दिया और चिल्लाकर कहा—बेली!

सरदारने उसकी ठोड़ीके नीचे उँगली रखकर उसका मुँह ऊपर उठाया और मुस्कराकर कहा---लरजाँ !

लरजाँ हैरान हो गई। तो यह कोई और न था उसका वही अपना बेली था। लेकिन उस बेली और इस बेलीमें कितना अन्तर था। प्रत्यक्षमें उन दोनोंमें कोई समानता न थी। कहाँ वह एक कम्बल ओढ़नेवाला, नंगे सिर, नंगे पाँव रहनेवाला पत्थरोंका सौदागर, कहाँ यह राजोंकी-सी पोशाकमें सजा हुआ सजीला जवान !

दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े और देर तक हँसते रहे।

लरजाँ बोली—तुम तो पहचाने ही नहीं जाते। मैं धोखा खा गई।

यह कहकर उसने कुँवरको सिरसे पाँव तक देखा और आँखें नचाकर मुस्कराई।

कुँवर—क्या करें, मेरे दोस्तने ज़बरदस्ती यह कपड़े पहना दिए। कहता है, आज तुम्हारा भी जलसा हो जाए। लाख बार नाहीं की, लेकिन सुनता ही नहीं।

लरजाँ—मुझे तो तुमने देखते ही पहचान लिया होगा।

कुँवर—बिल्कुल नहीं। मैं समझा, कोई रानी है। ध्यानसे देखा तो तुम थीं। क्या कहने ! कल तक लरजाँ थी, आज लरजाँ रानी बन गई। बस, ऐसे कपड़े पहना करो और मैं बाज़ी लगाता हूँ कि किरपी तुम्हें कभी न पहचाने।

लरजाँ---(शरमाकर) तुम किरपीकी कहते हो, मैं कहती हूँ, मुझे गाँव-भरमें कोई न पहचान सके।

कुँवर—(मुस्कराकर) मुझे तो अब तुमसे बात करते भी डर लगता है।

लरजाँ—वाह ! आए हैं बड़े डरनेवाले। अभी तो तुमने मुझे डरा दिया था। यह तुम्हारा मित्र क्या बहुत अमीर है? इतने कपड़े मँगवाकर मेरे सामने रख दिए कि मैं तो हैरान रह गई।

कुँवर—(रिस्ट-वाचमें समय देखकर) लेकिन तुमने साड़ी बहुत बढ़िया पसन्द की। ऐसी साड़ी और किसीके पास न होगी। सब आदमी तुम्हारी तरफ़ देखेंगे। रानी मालूम होती हो।

लरजाँने अपने तिलई बूटकी ओर देखा और कहा—मेरा ख्याल है, तुम्हारे कपड़े बहुत बढ़िया है। सब स्त्रियाँ तुम्हारी तरफ़ देखेंगी। (मुस्कराकर) राजा मालूम होते हो।

कुँवर—ईश्वरसे क्या दूर है। सम्भव है, तुम रानी बन जाओ, मैं राजा बन जाऊँ। ईश्वर जो चाहे कर दे।

लरजाँने कहा—कल जब फिर वही कपड़े पहनोगे फिर पूछूँगी। चले हैं, राजा साहब बनने। जलसा कब शुरू होगा?

कुँवर—एक बजे। अभी ग्यारह बजे हैं। दो घंटे और हैं। खाना खालें तो चलें। जिस स्त्रीने तुम्हें कपड़े पहनाए हैं, वही तुम्हारे साथ रहेगी। मगर उससे कोई बात-चीत न करना। जो कुछ हो रहा हो, चुप-चाप देखते जाना। और उसके साथ ही लौट आना। मैं तुमसे यहीं मिलूँगा।

लरजाँ—बहुत अच्छा। मगर बात-चीत करनेमें क्या हर्ज है?

कुँवर—यह तुम नहीं जानतीं, मैं जानता हूँ।

इसके बाद कुँवर जरा बाहर चले गए। लरजाँ फिर शीशेके सामने थी। बार बार अपनी शक्ल देखती थी और झूमती थी। वह अपनी ही शक्लपर मोहित हो गई थी। वह अपने आपको देखनेमें ऐसी

लीन हुई कि एक घंटा बीत गया और उसे मालूम भी न हुआ। इतनेमें कुँवरने आकर उसकी यह दशा देखी और अर्थ-पूर्ण भावसे मुस्कराकर कहा—शीशा देखनेके लिए सारी रात पड़ी है। जी भरकर देख लेना। कोई इसे उठाकर थोड़ा ले जायगा!

लरजाँ शरमसे पानी पानी हो गई।

१६

एक बजे जलसा शुरू हुआ। दरबार महाराजों, अमीरों और वज़ीरोंसे खचाखच भरा हुआ था। एक ओर महिलाएँ बैठी थीं। सभापति वायसराय बहादुर थे। महाराजा काश्मीरने अपने भाषणमें कुँवर सूर्यप्रकाशसिंहकी दिल खोलकर प्रशंसा की। कहा—इस पुरस्कारके लिए कोई ग्यारह सौ पुस्तकें आईं। कुछ पुस्तकें ऐसे लेखकोंकी लिखी हुई हैं, जिनके कलमका दबदबा भारतके कोने कोनेमें है। पुस्तकें सब अच्छी हैं, लेकिन जो चीज़ युवराजकी पुस्तकमें है, वह दूसरी किसी पुस्तकमें नहीं। दूसरी पुस्तकोंसे केवल परिचय प्राप्त होता है, कुँवर साहबकी पुस्तक पढ़कर आँखों तले चित्र खिंच जाता है। ऐसा ज़ोरदार बयान जज साहबानको और किसी पुस्तकमें नहीं मिला। और इसका कारण यह है कि जहाँ दूसरे लेखकोंने काश्मीरकी सैर की, चित्र खींचे, जरूरी बातें नोट कीं और फिर पुस्तक लिखनेके लिए घर चले गए; वहाँ कुँवर सूर्यप्रकाशसिंहने अपने राजकीय जीवनका पूरा एक वर्ष इसी देशमें व्यतीत किया। और डाक-बंगलेमें रहकर नहीं, ग़रीब पहाड़ी बनकर। यह वीर नवयुवक पूरे एक वर्ष तक ग़रीबोंकी तरह नंगे सिर, नंगे पाँव, एक लम्बा कुर्ता पहिनकर, एक साधारण कम्बल ओढ़कर काश्मीरके गरीब लोगोंका-सा जीवन

गुज़ारता रहा। यह एक वर्षके तीन सौ पैंसठ दिनोंका अध्ययन है जिसने इस पुस्तकमें जान डाल दी है। (तालियाँ)

सभापति महोदय और सज्जनो! कल तक यह नवयुवक वीर उन्हीं ग़रीबाना कपड़ोंमें था। जब वह इस जलसेमें शामिल होनेके लिए श्रीनगर आ रहा था, उस समय भी उसके शरीरपर एक लम्बा कुरता और कंधेपर एक साधारण कम्बल था। कल तक उसके पाँवमें कोई जूता न था, कल तक उसके सिरपर कोई पगड़ी न थी। मैंने उसे इस पोशाकमें देखा तो मुझे गर्व हुआ। (तालियाँ)

सभापति महोदय और सज्जनो! मुझे गर्व हुआ कि नरेन्द्र-मंडलमें ऐसा सादा, ऐसा मेहनत-पसन्द आदमी भी है। मैं महाराजा साहब सिकंधीरको बधाई देता हूँ कि उनके बेटेको यह श्रेय मिला। (तालियाँ) मैं महाराजोंको बधाई देता हूँ कि उनकी बिरादरीके एक नवयुवकने साहित्य-क्षेत्रमें यह ऊँचा स्थान प्राप्त किया (तालियाँ)। मैं वायसराय बहादुरके ज़रिए ब्रिटिश एम्पायरको बधाई देता हूँ जिसके एक राजाने अपनी लेखनीसे पुरस्कार जीता। (तालियाँ)

सभापति महोदय और सज्जनो! आप यह सुनकर खुश होंगे कि मैंने अपने आदमीसे कहकर कुँवर सूर्यप्रकाशसिंहका उन्हीं कपड़ोंमें फ़ोटो उतरवा लिया है और वह फ़ोटो हमारे दरबारकी शोभा होगा। (कहकहा) और मुझे आशा है कि कुँवर साहब मुझे इस गुस्ताख़ीके लिए क्षमा करेंगे। (कहकहा)

सज्जनो! मैं इससे भी दो कदम आगे जाता हूँ और चाहता हूँ कि ईश्वर करे, कुँवर साहबके जीवनमें उनकी इस तरह कमसे कम

एक बार फिर गुस्ताख़ी हो और इस गुस्ताख़ीपर हम सब मिलकर एक बार फिर उनको बधाई दें। (कहकहा और तालियाँ)

महाराजा साहब भाषण दे कर बैठ गए; लेकिन, लरजाँ कुछ न समझ सकी। उसने धीरेसे मिस फ़िलिपसे पूछा—इन्होंने क्या कहा है?

मिस फ़िलिप—(लरजाँके कानमें बहुत धीरेसे) इन्होंने एक पुस्तक लिखनेपर पचास हज़ार रुपया देनेकी घोषणा की थी। यह पुरस्कार राजकुमारने जीत लिया है, उसकी प्रशंसा करते हैं।

यह कहकर मिस फ़िलिप प्लैटफ़ार्मकी ओर देखने लगी। लेकिन लरजाँने फिर उसके कंधेको हिलाकर कहा—कौन राजकुमार है वह?

मिस फ़िलिप—(मुस्कराकर धीरेसे) कुँवर सूर्यप्रकाशसिंह। मेरा ख़्याल है, तुम उन्हें जानती हो।

लरजाँ—(बेपरवाहीसे) नहीं, मैं नहीं जानती। कहाँ बैठे हैं?

मिस फ़िलिपने उँगलीसे प्लैटफ़ार्मकी ओर इशारा किया। लरजाँने कुरसीसे उठकर देखनेकी कोशिश की, मगर मिस फ़िलिपका इशारा किस आदमीकी ओर है, यह न समझ सकी। इधर मिस फ़िलिपने भी ज़्यादा परवाह न की। उसका ख़्याल था, यह सब कुछ जानती है।

अब वायसराय बहादुर खड़े हुए। उन्होंने भी कुँवर साहबकी योग्यता, और परिश्रमकी प्रशंसा की और पचास हज़ारका चेक आगे बढ़ाकर कहा—यह कुँवर साहबकी भेंट है। और मुझे गर्व है कि यह काम मुझे सौंपा गया है। आजकी यह घटना मेरे जीवनमें सदा जीती रहेगी।

मिस फ़िलिपने लरजाँके कानमें कहा—अब कुँवर सूर्यप्रकाश-सिंह खड़े होंगे। और लरजाँ बड़े ध्यानसे देखने लगी। एक लम्बा

नवयुवक आगे बढ़ा। उसने पहले चेक लिया, फिर वायसराय बहादुरको फौजी सलाम किया।

दरबार तालियोंसे गूँज उठा, लरजाँ भी तालियाँ पीट रही थी।

अब वह नवयुवक प्लैट-फार्मपर खड़ा था और कुछ बोलना चाहता था। लरजाँने उसे देखा और सन्नाटेमें आ गई—यह तो उसका बेली था।

लरजाँकी आँखोंमें दीवारें चक्कर खाने लगीं। क्या समझा था, क्या हो गया? उसे राजकुमारी इन्द्राके शब्द याद आ गए कि यह आदमी तुम्हें धोखा दे रहा है। तो उसका संदेह ग़लत न था? यह सचमुच राजेका बेटा है! फिर ख़्याल आया, मैं ग़रीब, यह राजेका बेटा, इसका मन मुझसे न मिलेगा। संभव है, चार ही दिनके बाद निकालकर बाहर फेंक दे। उस समय मैं उसका क्या बिगाड़ लूँगी? लरजाँकी आँखोंमें आँसू आ गए। सोचती थी, इसने बड़ा धोखा दिया। पहले मालूम होता कि यह आदमी ऐसा झूठा है तो इससे बात भी न करती। कहता था, पत्थरोंका सौदागर हूँ। जो शुरूहीमें धोखा दे रहा है, वह आगे चलकर क्या क्या गुल न खिलाएगा।

कुँवर साहब भाषण दे रहे थे। लोग चुपशाप ध्यानसे सुन रहे थे। उनके अनुभव ऐसे दिलचस्प थे कि लोगोंको उपन्यासका-सा मजा आ रहा था। मगर लरजाँको इसमें ज़रा भी दिलचस्पी न थी। वह अपने ही विचारोंमें डूबी हुई थी। उसे अब यह भी मालूम न था कि उसके इर्द-गिर्द क्या हो रहा है। यहाँ तक कि जलसा समाप्त हो गया और लोग उठ खड़े हुए। जब वायसराय बहादुर और उनके स्टाफ़के आदमी जा चुके तो दूसरे लोग भी चले। लरजाँ मिस

फ़िलिपके साथ बाहर आई। बाहर सैकड़ों मोटर और गाड़ियाँ खड़ी थीं। लरजाँ भी मिस फ़िलिपके साथ अपने मोटरमें बैठ गई और कोठीपर जा पहुँची।

थोड़ी देर बाद उसने अपने यह कपड़े उतारकर कुरसीपर रख दिए और फिर अपने वही पुराने कपड़े पहन लिए। शीशेमें मुँह देखा तो वह बात ही न थी। अभी कुछ देर पहले यह कपड़े पहनकर कितनी खुश हुई थी! लरजाँकी आँखोंमें आँसू आ गए, मगर उसके संकल्पमें फरक न आया। दरबान सदर फाटकपर बैठा ही रह गया और लरजाँ चुपचाप पिछले दरवाज़ेसे बाहर निकल आई। इस समय उसका दिल इतना भारी हो रहा था जैसे उसपर किसीने पत्थर रख दिया हो।

तीन बजे वह एक लारीमें बैठी अपने गाँवको जा रही थी।

१७

दरबार समाप्त हो चुकनेपर कुँवर साहबको दोस्तोंने घेर लिया और बधाइयाँ देने लगे। इनमेंसे कई उनके साथ कालिजमें पढ़े थे। कई उनकी रियासतमें उनके अतिथि रह चुके थे। कुछ ऐसे भी थे जिनकी रियासतमें वे गए थे। सब एक ही आयुके थे। हँस हँसकर बातें करते थे और एक दूसरेको छेड़ते थे। मगर कुँवर साहबका दिल यहाँ न था। वे चाहते थे, जितनी जल्दी हो सके लरजाँके पास पहुँच जाएँ। आज उसे सब कुछ मालूम हो गया है। जाने क्या सोच रही होगी। सम्भव है, नाराज़ हो कि मुझे अँधेरेमें क्यों रक्खा? सम्भव है, खुश हो रही हो कि यह तो राजकुमार निकल

आया। आज वे जाकर उसके सामने अपना दिल खोलकर रख देंगे। आज उससे साफ़ साफ़ कह देंगे कि मैं तो तुमसे ब्याह करना चाहता हूँ, बोलो कोई आपत्ति तो नहीं? लेकिन दोस्त उनको छोड़ते ही न थे।

कोई पूछता, यार तुमने सालभर झोंपड़ेमें गुज़ारा कैसे कर लिया? हमसे तो एक दिन भी न रहा जाए। कोई कहता, पचास हज़ारका पुरस्कार मिलनकी आशा हो तो सब कुछ हो जाता है। मुझे दो, मैं दो साल पड़ा रहूँ। साधारण बात है।

कोई कहता, सुना है, एक परीने इनपर जादू कर दिया था। वरना यह ऐसे कहाँके भक्त थे।

एक राजकुमारने कहा—भाई, वह चित्र उठाओ जो काश्मीर-महाराजने बनवाया है। देखें, यह भला आदमी लम्बा कुरता पहनकर कैसा मालूम होता है?

(मुँह बनाकर) अजीब सूरत बनी होगी। क्यों भाई?

इसपर सबने कहकहा लगाया।

फिर एक बोला—मगर वह लड़की कौन है, जिसके लिए आपने जोग लिया था?

दूसरा—घबराते क्यों हो? किसी दिन दिखा देंगे। एक जोगिन है।

तीसरा—तो यह पुरस्कार उसीको मिलना चाहिए, इसपर इनका कोई अधिकार नहीं। पुस्तककी लेखिका वह है, इनाम इन्हें मिल गया।

राजकुमारने मुस्कराकर उसकी ओर देखा, लेकिन मुँहसे कुछ न कहा।

पहला—तो चलो, उसको भड़का दें, कि इनाम तुम्हारा ह। ये

मुँह देखते ही रह जाएँ। (कुछ देर चुप रहनेके बाद) यार ! मज़ा आ जाए, अगर समाचारपत्रोंमें यह निकल जाए कि किताब लिखनेवाली एक औरत है।

कुँवर—(मुस्कराकर) लेकिन तुम्हें तो फिर भी कुछ न मिलेगा ! कोई ऐसा उपाय सोचो, जिससे यह पुरस्कार तुम्हें मिल जाए।

दूसरा—इन्हें पुरस्कार मिलेगा ! दो लाइनें लिखते हैं, चार ग़लतियाँ करते हैं !

पहला—हम तो चाहते हैं, इनसे छिन जाए। लेनेवाला चाहे काला चोर हो, हमसे उससे कोई सरोकार नहीं।

तीसरा—काला चोर बननेको मैं मौजूद हूँ। (कुँवर सूर्यप्रकाश-सिंहके कंधेपर हाथ रखकर) क्यों भाई ?

कुंवर—(मुस्कराकर) बड़ी दया आपकी, जो आप इतनी कुर-बानी कर रहे हैं। लेकिन अब यहाँ कब तक खड़े रहोगे ? सारी दुनिया तो चली गई। हम अभी यहीं डटे हैं। चलो चलें !

पहला—दिलमें कुछ हो रहा होगा। कहाँ जाओगे, वहीं ?

कुँवर—महाराजके पास जाऊँगा और कहाँ जाऊँगा ? अभी तक नहीं मिला, राह देख रहे होंगे।

दूसरा—अरे मेरे यार ! अभी तक नहीं मिले ! तुमने तो कमाल कर दिया। भागके जाओ, एक मिनट न ठहरो। (दूसरोंसे) चलो भाई, अब न रुको, नहीं तो—

तीसरा—आज कोई इनके माँ-बापसे पूछे। खुशीसे फूले न समाते होंगे। क्यों भाई ! जलसा कब दोगे ? और सबको एक एक पुस्तक भी मिलनी चाहिए।

चौथा—अब इस समय जाने दो। यह बातें फिर हो लेंगी। (कुंवरसे) कहाँ ठहरे हो? वहाँ आ पकड़ेंगे।

कुँवर—निशातबागकी सड़कपर जो हरे रंगकी कोठी है, वहीं।

यह कहते कहते वे बाहर चले आए और अपने मोटरमें बैठ गए। इसके साथ ही दूसरे राजकुमार भी अपनी अपनी गाड़ीमें बैठकर चले गए।

कुँवरके पिता महाराज पृथ्वीचन्द्रसिंह और उनकी रानी कुँवरकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इतनेमें कुँवरने आकर महाराजके चरणोंमें सिर रख दिया। महाराजकी खुशीका ठिकाना न था। उन्होंने बेटेको ज़मीनसे उठाकर गलेसे लगा लिया और रोने लगे। खुशी इतनी थी कि दिलमें समाती न थी। हँसते भी थे, रोते भी थे। पिताके बाद कुँवरने माके पाँव पकड़े। मा बेटेके दुःखमें रो रोकर आधी रह गई थी। इस समय यह वह महारानी मालूम ही न होती थी। मुँहकी हड्डियाँ निकल आई थीं, आँखें अन्दरको धँस गई थीं। कभी उनके दर्शन करके कुँवरका दिल खिल उठता था, लेकिन आज उसे देखकर कुँवर साहब डर गए। बेसमझ बच्चेने पेड़को हरा-भरा देखा था, पत-झड़का ठूँठ देखकर पहचानना भी मुश्किल हो गया। न वह चिकनाई थी, न वह गदरापन। कुँवर साहबको आश्चर्य हुआ, बोले—आपकी तो शक्ल ही बदल गई। क्या बीमार थीं?

महारानीने रोते रोते हँसकर कुँवरको अपने पास सोफ़ेपर बिठा लिया और कहा—बेटा! तुम्हारी ही बीमारी थी। अब बच जाऊँगी।

महाराज बोले—अरे भई! यह जिन्दा हैं यही ग़नीमत समझो। तुम्हारे बाद इन्होंने खाना-पीना तक बन्द कर दिया। दिनको जब

देखो, रो रही हैं। रातको जब देखो, जाग रही हैं और तुम्हारे बारेमें सोच रही हैं। अब मैं क्या कहूँ तुमसे, मैंने इन्हें किस किस तरह समझाया है। लेकिन इनपर ज़रा असर न होता था। (महारानीकी ओर देखकर) अब मुस्करा रहीं हैं। जाने यह मुस्कराहट पहले कहाँ थी ?

महारानी—(मुस्कराकर) यहाँ चली आई थी।

कुँवर—मं इन्हें अकेला देखता तो पहचानना कठिन हो जाता। हड्डियाँ निकल आई हैं।

महाराज—तुम मुझसे नाराज़ थे, इनसे तो नाराज़ न थे। अगर इनको कभी कभी पत्र लिख दिया करते तो इनकी यह दशा न होती।

महारानी—इतना तो धीरज हो जाता कि तुम अच्छी तरहसे हो, चार दिनमें आ जाओगे। मगर तुम तो ऐसे गए कि एक पत्र तक न लिखा। मेरे दिलमें बुरे बुरे विचार आते थे। सोचती थी, जाने उसे खानेको भी मिलता है या नहीं।

कुँवर—देख लो, मैं परदेसमें फाके करते करते मोटा हो गया ! आप घरमें खा-पीकर भी कमज़ोर हो गईं।

महारानी—चल झूठा कहींका ! कहता है मोटा हो गया हूँ। ज़रा शीशेमें अपना मुँह तो देख, वह बात ही नहीं रही।

कुँवर—अब आपके लिए तो सदा ही कमज़ोर रहूँगा। यह आपका दोष नहीं, माकी आँखका दोष है।

महारानी—जिस दिन इन्द्रासे मालूम हुआ कि तू पुस्तक लिख रहा है, उस दिन संतोष हुआ। मैं चाहती थी, उड़कर तेरे पास

पहुँच जाऊँ और तुझे गलेसे लगा लूँ। लेकिन तूने, भगवान जाने, उसे क्या सिखा दिया था कि वह सब कुछ बताती थी, यह न बताती थी कि तू कहाँ है ? बस मन मारकर रह गई। तू इतना सङ्गदिल है कि तुझे मा-बापका ख्याल भी न आया।

महाराज—महल काटनेको दौड़ता था।

कुँवर—देख लीजिए, इनाम जीत लिया।

यह कहकर उन्होंने जेबसे चेक निकाला और महाराजके चरणोंमें रख दिया।

महाराजने चेकको उठाकर चूम लिया और कहा—यह चेक नहीं, हमारी रियासतका गौरव है। ऐसा अनमोल हीरा मेरे ख़ज़ानेमें दूसरा नहीं है।

कुँवर—(सिर झुकाकर) मेरी पहली कमाई आपकी भेंट है।

महाराजने मुस्कराकर चेक कुँवरको लौटा दिया और कहा—सिकंधीर चलो। वहाँ तुम्हारे लिए एक और इनाम तैयार है।

कुँवरने चौंककर महारानीकी ओर देखा और आँखों ही आँखोंमें पूछा,—यह क्या कह रहे हैं ?

महारानीने कहा—इन्होंने दसहरेपर नाच-गाना बन्द कर दिया है। इस बार वह सारा रुपया ग़रीबोंपर खर्च होगा। कथा होगी, जलसे होंगे, लेकिन नाच न होगा। (मुस्कराकर) पूरे भक्त बन गए हैं। और, भक्त क्या, भक्त-राज समझो।

कुँवरकी आँखोंमें आँसू आ गए। महाराजकी ओर श्रद्धापूर्ण आँखोंसे देखकर बोले—मुझे यह इनाम पानेका जो आनन्द था वह इस ख़ुशख़बरीको सुनकर दूना हो गया है। मेरा

इनाम पचास हज़ारका चेक नहीं—ऐसे कितने ही पचास हजार आपसे ले चुका और कितने ही और लूँगा। मेरा सच्चा इनाम यह है कि आपने जातीय उत्सवकी महत्ता समझ ली और रियासतके निर्धनोंकी पुकार सुन ली। संभव है, उस दिन मेरे मुँहसे कोई अपशब्द निकल गया हो। मैं उसके लिए क्षमा चाहता हूँ। यह मेरी उद्दंडता थी।

यह कहते कहते कुँवर साहब फिर महाराजके पाँवसे लिपट गए। महाराजने उन्हें उठाकर गलेसे लगा लिया और कहा—मुझे तेरी उद्दंडतापर गर्व है। मैं चाहता हूँ तू सारी आयु वैसा ही उद्दंड बना रहे।

महारानी सामने खड़ी पिताके प्यार और पुत्रकी श्रद्धाका यह स्वर्गीय दृश्य देखती थीं और खुश होती थीं। इस समय उनका रोम रोम मुस्करा रहा था। वह निहाल हो रही थीं। आज उन्हें खोया हुआ बेटा ही न मिला था, उनके बेटेको पिताका प्यार भी मिल गया था;—वह चीज़ जिसे स्त्री दुनियामें सबसे अधिक चाहती है। आज उसकी-सी भाग्यवती दुनियामें कौन होगी? आज उसकी उदास आँखें अबोध बालककी तरह हँस रहीं थीं। आज उसका पीला चेहरा गुलाबके फूलकी तरह खिला हुआ था, चाँदकी तरह चमकता था।

महारानीने बेटेके सिरपर अशर्फियाँ वार कर गरीबोंमें बाँटीं। कोठीके बाहर सैकड़ों फ़कीर जमा हो गए थे। कोई खाली हाथ न गया। कुँवर साहबने अपने नौकरोंको इनाम दिया, सबसे हँस हँसकर बातें कीं, उनका कुशल-क्षेम पूछा। चारों ओर आनन्दकी लहर दौड़ गई।

१८

कुँवर साहब यहाँसे चले तो रातके ग्यारह बज चुके थे। दिलमें डरते थे कि लरजाँ भरी बैठी होगी। कहेगी, तुमने अभीसे बेपरवाही शुरू कर दी, आगे चलकर क्या हाल होगा? सोचते थे, कैसे समझाऊँगा। मगर वहाँ जाकर देखा तो कमरा खाली पड़ा था। कुँवर साहबका कलेजा सन-से हो गया। एक एक करके सब कमरे देखे, मगर लरजाँ कहीं भी न थी। दरबानसे पूछा तो उसने कहा—सरकार! इधरसे तो गईं नहीं, शायद पिछले दरवाज़ेसे निकल गईं हों। फिर ड्रेसिंग-रूममें आए। वहाँ एक कोनेमें कुरसीपर लरजाँके वे गहने और कपड़े रक्खे थे जो पहनकर वह फूली न समाती थी। पास ही उसका तिलई जूता पड़ा था। कुँवर साहब एक एक वस्तुको देखते थे और ठंडी आहें भरते थे। पेड़ उसी तरह खड़ा था, मगर उसपर चहकनेवाला पंछी कहीं दिखाई न देता था। कुँवर साहब सोचते थे, कहाँ गई होगी? अपने झोंपड़ेके सिवाय उसे और कौन-सी जगह पसँद है? ज़रूर वहीं गई है। उन्हें यह ख़्याल तो था कि लरजाँ नाराज़ होगी और लड़े झगड़ेगी। लेकिन यह ख़्याल न था, कि वह उन्हें छोड़कर चली जाएगी। इतना संतोष था कि उसके पास कुछ रुपए हैं, अगर ज़रूरत पड़ी तो किसीके मुँहकी तरफ़ न देखेगी। इतनेमें घड़ीने चार बजा दिए, कुँवर साहब चौंककर खड़े हो गए। दूसरे कमरेमें आकर उन्होंने अपने पिता और महाराजा काश्मीरके नाम पत्र लिखे और उन्हें मेज़पर रख दिया। इसके बाद दरबानको बुलाकर कहा—एक चिट्ठी महाराजा सिकंधीरके नाम है, दूसरी महाराजा कशमीरके नाम। प्रातःकाल उनके पास पहुँच जाएँ। और ड्राइवरको बुलाओ, मुझे इसी समय जाना है।

कुछ देर बाद वे मोटरमें बैठे लरजाँके गाँवको जा रहे थे। इस समय उनके चेहरेपर खुशी भी थी, चिन्ता भी। खुशी इस लिए कि अभी लरजाँके पास जा पहुँचेंगे। चिन्ता इस लिए कि अगर वह वहाँ भी न मिली तो कहाँ ढूँढूँगा। कभी आशासे दिलका कमल खिल उठता था, कभी निराशासे दिलका कमल मुर्झा जाता था। यहाँ तक कि नौ बजते बजते, वे लरजाँके झोपड़ेके सामने जा पहुँचे।

मगर दरवाज़ा अन्दरसे बन्द था। कुँवरने दरवाज़ा खटखटाया।

अन्दरसे आवाज़ आई—कौन है ?

कुँवर साहबकी आँखें चमकने लगीं—यह लरजाँकी आवाज थी। उनकी जानमें जान आ गई। घमंडसे बोले—हम हैं—राजकुमार सूर्यप्रकाशसिंह रियासत सिकंधीरके उत्तराधिकारी। दरवाज़ा खोल दो।

लरजाँ दरवाज़ेके पास आ गई, मगर उसने दरवाज़ा नहीं खोला। रुखाईसे बोली—आप क्या चाहते हैं ?

कुँवर साहबने दरवाज़ेपर तबला बजाते हुए हँसकर कहा—हमारी लरजाँ रानी खो गई है। सुना है, वह यहाँ इस जगह छिपी बैठी है। हम तलाशी लेने आए हैं।

लरजाँ—यहाँ कोई रानी-वानी नहीं। ग़रीबका झोंपड़ा है। आप कहीं और देखिए।

यह कहकर लरजाँ अन्दर चली गई। कुँवर साहबको आश्चर्य हुआ। दरवाज़ेपर ज़ोरसे हाथ मारकर बोले—लरजाँ! यह मैं हूँ। क्या आवाज़ नहीं पहचानती ? दरवाज़ा खोल दे।

लरजाँ दरवाज़ेके पास आ गई और धीरेसे बोली—भगवान जाने,

आप कौन हैं। मैं बेलीको छोड़कर और किसी दूसरे पुरुषको नहीं जानती।

कुँवर—अरे! मैं अब इतना पराया हो गया! लरजाँ, मैं वही बेली हूँ।

अब कुँवर साहबकी आवाज़ काँप रही थी।

लरजाँ—आप वह नहीं। वह ग़रीब पत्थरोंका सौदागर है, आप राजकुमार हैं। वह नंगे सिर, नंगे पाँव रहता है, आपका शरीर बढ़िया कपड़ोंमें लिपटा हुआ है। वह अपने मित्रसे मिलने गया है, आप पचास हज़ार रुपया इनाम लेकर आए है। आप वह नहीं हैं।

यह कहते कहते उसके शब्द होठोंपर जम गए और आवाज़ गलेमें फँस गई। कुँवर साहबने भर्राई हुई आवाज़में कहा—लरजाँ!

लरजाँ—अगर वे आते, तो यह दरवाज़ा एक मिनटमें खुल जाता। मैं उनको जानती हूँ। (ठंडी आह भरकर) भगवान जाने, वे कहाँ चले गए। यह दरवाज़ा उनके लिए सदा खुला है, मगर और किसीके लिए नहीं। यहाँ तक कि किसी राजकुमारके लिए भी नहीं!

यह कहकर वह अन्दर चली गई। कुँवर साहब हैरान रह गए। जो जो उमंगें लेकर आए थे, उन सबपर पानी फिर गया। कुछ देर उसी तरह वहाँ खड़े रहे और कुछ सोचते रहे, इसके बाद लौट कर मोटरमें बैठ गए। जैसे कोई जुएमें अपनी सारी पूँजी हारकर घर लौट रहा हो और सोचता हो कि अगर और कुछ मिल जाए तो उसे भी लाकर दावमें लगा दे।

लरजाँने उनको इस तरह जाते देखा तो झट दरवाज़ा खोल दिया और उनके पीछे दौड़ी। मगर जब तक वह गाड़ीके पास पहुँचे, गाड़ी रवाना हो चुकी थी। लरजाँ एक पत्थरपर बैठ गई और फूट फूट-कर रोने लगी। वह चाहती थी, गया हुआ समय लौट आए, और उसके साथ ही एक बार कुँवर भी लौट आएँ। मगर कुँवर और समय दोनों जा चुके थे। वह सामने खड़ी देखती थी और कुछ कर न सकती थी। केवल रोती थी और गाड़ीकी ओर देखती थी। थोड़ी देर बाद वह भी आँखोंसे ओझल हो गई। अब लरजाँके लिए संसार अँधेरा था, रोशनी कहीं भी न थी। उस गाड़ीके साथ ही उसके जीवनकी सारी खुशियाँ भी चली गईं थीं।

रातके दस बजे उसके दरवाज़ेपर फिर किसीने दस्तक दी। किरपी सो गई थी, मगर लरजाँकी आँखोंमें नींद न थी। पुआल-पर बैठी सोचती थी मैंने क्या कर दिया। चौंक कर बोली—कौन है?

"तुम्हारा बेली।"

लरजाँकी रग रगमें प्रसन्नताकी लहर दौड़ गई—यह वही थे। उसने उठकर दरवाज़ा खोल दिया और देखा, सामने उसका बेली खड़ा है। वही लम्बा कुरता, वही कंबल, नंगे पांव, नंगा सिर। लरजाँने एक क्षण तक अपनी काली बड़ी बड़ी, आश्चर्ययुक्त आँखोंसे उनकी ओर देखा और इसके बाद दौड़कर उनसे लिपट गई। आशा और प्रेम गले लगकर रोने लगे।

कुछ देर तक प्रेमी और प्रेमिका इसी तरह खड़े रहे। इसके बाद

अन्दर जाकर पुआलपर बैठ गए और बातें करने लगे । कुँवरने पूछा—तुम अभी तक सोई क्यों न थीं ?

लरजाँने कुँवरके ठंडे पाँवोंको कम्बलमें लपेटते हुए उत्तर दिया—नींद न आती थी महाराज !

कुँवर—(मुस्कराकर) देवीजीकी नींद आज कहाँ चली गई थी ?

लरजाँने भी मुस्कराकर कुँवरकी ओर देखा और शरमाकर उत्तर दिया— देवीजीकी नींद एक देवताजीको ढूँढ़ने गई थी।

कुँवर—उस समय तो कहती थीं, मैं नहीं जानती तुम कौन हो ? भाग जाओ यहाँसे !

लरजाँ—वह कोई राजकुमार था, तुम न थे । तुम आए, तो एक मिनटमें दरवाज़ा खुल गया ।

कुँवर—मगर वह राजकुमार तो तुम्हारी पूजा करता है । मेरा ख़्याल है, तुम्हारे बिना उसका जीवन नष्ट हो जायगा ।

लरजाँने कुँवरको तिरछी चितवनसे देखा और मुस्कराकर कहा—तो यह कहिए, आप उसकी सिफ़ारिश लेकर आए हैं, क्यों ?

कुँवर—अब जो चाहो, समझ लो । बेचारा सारा दिन रोता रहा है ! आशा दिलाओ, तो जी जाए ।

लरजाँ—न बाबा ! मेरे लिए पत्थरोंका सौदागर सब कुछ है, मुझे राजकुमार नहीं चाहिए । राजकुमारोंका क्या है, आज मुझसे प्यार जता रहे हैं, कल दिलसे उतार दें और किसी औरको ढूँढ़ लें तो मैं उनका क्या कर लूँगी ? कुछ भी नहीं ।

कुँवर—यह तुम्हारा वहम है । पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं । जो महल छोड़कर यहाँ पड़ा रहा है, आख़िर उसे तुम्हारा कुछ ख़्याल था या नहीं ? बोलो !

लरजाँ—यह उससे पूछिए, मुझे क्या मालूम ?

कुँवर—उससे सब कुछ पूछ चुका । कहता है, अगर न मानेगी तो रियासत छोड़ दूँगा ।—कम्बल ओढ़ लो, सरदी लग जाएगी ।

लरजाँने कम्बल ओढ़ लिया और कहा—यह तो आपने बुरी सुनाई । मगर मुझे राजकुमारोंसे डर लगता है । आपहीने तो उस दिन कहा था कि राजे बेपरवाह होते हैं ।

कुँवर—बड़ी भोली हो ! मैंने यह कब कहा था कि सारे राजे बेपरवाह होते हैं ? वह ऐसा आदमी नहीं ।

लरजाँ—(मुस्कराकर) बड़ा महात्मा है क्या ?

कुँवरको हँसी आ गई, बोले—यह तुम आप देख लोगी, मैं और क्या कहूँ ! इतना कह सकता हूँ कि तुम उसके दिलमें रहोगी। क्या मजाल जो तुम्हें ज़रा भी कष्ट हो ।

लरजाँ—मगर उसके मा-बाप मान लेंगे ?

कुँवर—उनसे सब कुछ तय हो चुका । वे कहते हैं, हमें कोई उज्र नहीं ।

अब दोनों चुप हो गए और कुप्पीकी रोशनीमें एक दूसरेकी ओर देखने लगे । इसी तरह लगभग पन्द्रह मिनट बीत गए । इसके बाद लरजाँने कुँवरकी ओर करुणामय आँखोंसे देखा और कहा—मैं सीधी-सादी गरीब लड़की हूँ, मुझे धोखा न देना !

इस समय उसकी आँखोंमें आँसू लहरा रहे थे।

कुँवरने आगे बढ़कर उसके दोनों हाथ अपने हाथोंमें ले लिए और प्यारसे कहा—क्या तुमने मुझे अभी तक नहीं पहचाना?

लरजाँने सिर झुकाकर धीरेसे उत्तर दिया—पहचाना न होता तो यह नौबत न आती। अब देखती हूँ, आप राजकुमार होकर भी वही पत्थरोंके सौदागर हैं।

कुँवर—और मुझे ऐसा नज़र आता है कि तुम राज-रानी होकर भी मेरी वही लरजाँ हो।

लरजाँ मुस्कराई।

कुँवर—जब तुमने दरवाज़ा न खोला, तो मैं बड़ा चकराया।

लरजाँ—और जब आप चले गए, तो मेरी जान ही निकल गई। सोचती थी, अगर न लौटे तो क्या करूँगी?

कुँवर साहब मुस्काए।

लरजाँ—कैसे चालाक हैं! कल कहते थे, बहुत संभव है, परमात्मा मुझे राजा तुम्हें रानी बना दे। मुझे क्या मालूम था कि यह सब नाटककी-सी बातें हैं: पहले सोची हुई, पहले बनाई हुई।

कुँवर—देख लो! परमात्माने हमारी सुन ली। किसी अच्छी घड़ीमें प्रार्थना की थी।

लरजाँ—झूठ बोलना कोई आपसे सीख ले। मुझे कैसे कैसे धोखे दिए! कहते थे, हम पत्थरोंके सौदागर हैं! अब बोलिए!

कुँवर—पत्थरोंकी सौदागरी करने निकला था, यहाँ आकर एक हीरा मिल गया। अब पत्थरोंका व्यापार मेरी बला करे!

लरजाँने मुस्कराकर उनकी ओर देखा और कहा—बातें बनानेमें आप किसीसे न हारेंगें। इन्हीं बातोंके ज़ोरसे ही तो आपने पचास हज़ार रुपया जीत लिया।

कुँवर—और तुम्हें भी!

लरजाँ—आपकी यह बात झूठ है। आपने मुझे नहीं जीता, मैंने आपको जीता है।

दोनों हँसने लगे। अब उनके सामने दूर दूर तक प्रकाश-पूर्ण भविष्य फैला हुआ था। अँधेरा कहीं दिखाई भी न देता था।

दूसरे दिन रातके समय दो प्रेमियोंका यह झोंपड़ा ख़ाली पड़ा था और कुँवर, लरजाँ और किरपी रावलपिंडीके स्टेशनपर गाड़ीकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

और सिकंधीरमें उनके स्वागत और ब्याहकी तैयारियाँ हो रही थीं।

दो मित्र थे

१

ताजबहादुर :

जब मैं स्कूलमें पढ़ता था, उन दिनों मुझे सबसे ज़्यादा प्यार महताबरायसे था। ऐसा नेक, ऐसा होनहार, ऐसा मेहनती विद्यार्थी हमारी श्रेणीमें दूसरा न था। वह कभी किसीसे लड़ता-झगड़ता न था, न किसीकी शिकायत करता था, न कभी देरमें स्कूल पहुँचता था। झूठ बोलना तो जानता ही न था। शरारतसे कोसों दूर भागता था। अपनी श्रेणीमें सदा अव्वल रहता था। उसके इन गुणोंके कारण सब अध्यापक उसकी प्रशंसा करते थे। उनको विश्वास था कि यह लड़का जरूर किसी दिन बड़ा आदमी बनेगा। बड़ा आदमी बननेके लिए जिन गुणोंकी आवश्यकता है, उसमें वे सभी थे।—वह गरीब भी था। बेचारेका बाप मर चुका था, मा लोगोंके कपड़े सीं सीं कर गुज़ारा करती थी और उसे पढ़ाती थी। वैधव्य और गरीबीकी भयानक रातमें महताबराय ही उसके लिए आशाका दिया था जो उसे बहुत दूर टिमटिमाता हुआ नज़र आता था। यह दिया प्रकटमें

बिलकुल साधारण था, लेकिन माकी आँखोंमें उसका मूल्य कोहनूर हीरेसे भी ज़्यादा था।

मगर महताबरायमें एक दोष भी था। वह अपनी श्रेणीके दूसरे लड़कोंसे ज़्यादा मिलता-जुलता न था। प्रायः उनसे परे परे भागता था। शायद इसका कारण उसके मनकी स्वाभाविक निर्बलता हो। लड़के समझते थे, यह अपनी योग्यताके घमंडमें हमें कुछ समझता ही नहीं है। इसलिए वे उससे घृणा करते थे। परिणाम यह था कि वह सब उस्तादोंका प्यारा होते हुए भी अपनी श्रेणीके विद्यार्थियोंमें अछूत बना हुआ था। गरीबको कोई पास भी न बैठने देता था! जिसके पास जा बैठता, वही मुँह दूसरी तरफ़ फेर लेता था।

योग्यता और सज्जनताके अपमानका यह दृश्य मुझसे न देखा गया। मैंने उसकी ओर मित्रताका हाथ बढ़ाया और उसकी कभी कभी रुपये पैसेसे भी सहायता करने लगा। कुछ ही महीनोंमें हम एक दूसरेके मित्र बन गए। स्कूलके सबसे धनी और सबसे गरीब लड़केमें भी ऐसा प्यार हो सकता है, यह लड़कोंके लिए अन-होनी बात थी। वे हमारे दिनोंदिन बढ़ते हुए प्यारको देखते थे और हैरान होते थे। अब मेरी कोई चीज़ मेरी न थी। महताबरायको जिस चीज़की जरूरत होती, ले लेता, मैं कभी उसका हाथ न पकड़ता था। न अब महताबरायका समय उसका अपना समय था, मैं जिस विषयमें कमजोर होता वह उसमें मुझे पढ़ाया करता था। यह भी न सोचता था कि इसे पास कराते कराते कहीं आप फ़ेल न हो जाऊँ!

उसका मकान हमारे ही मुहल्लेमें था। और मकान क्या था, एक टूटी फूटी झोंपड़ी थी। उसीमें उसकी मा खाना पकाती थी, उसीमें वह लिखता-पढ़ता था। मेरे कहनेसे वह मेरे मकानमें आकर पढ़ने

लगा। मगर खाना अपने यहाँ ही खाता था, और रातको सोनेके लिए भी वहीं चला जाता था। मेरे मा-बाप इतने धनी हैं कि महताबरायको खाना खिलाना उनपर ज़रा भी बोझ न था। उन्होंने कई बार उससे कहा, 'तुम खाना खाने घर क्यों जाते हो? यहीं खा लिया करो, हमारे लिए ताजबहादुर और तुस दोनों बराबर हो।' मगर महताबरायके आत्म-सम्मानने यह बात स्वीकार न की। उसके उस इन्कारसे उसका सम्मान हमारी आँखोंमें कई गुना बढ़ गया।—वह रुपये-पैसेका ग़रीब था, दिलका ग़रीब न था।

२

इसी तरह विद्यार्थी-जीवनके दस साल गुज़र गए और हमने मैट्रिककी परीक्षा पास कर ली। महताबरायने वज़ीफ़ा लिया और यूनीवर्सिटी-भरमें प्रथम रहा। मुझे वज़ीफ़ा तो न मिला, मगर मैं पहले दरजेमें आ गया। इस सफलतापर हम दोनों ख़ुश थे। मैं इसलिए ख़ुश था कि महताबराय यूनीवर्सिटीमें अव्वल रहा है। महताबराय इसलिए ख़ुश था कि मैं पहले दरजेमें आ गया। और यह सब उसके परिश्रमका फल था, नहीं तो मेरे जैसे विद्यार्थीके लिए तो पास होना भी आसान न था। अब हमारा प्यार और भी बढ़ गया। मेरे माता-पिता भी उसे अपने बेटेकी तरह चाहते थे। जब मैं नैनीताल जाने लगा तो मेरा दिल उदास हो गया। विचार आया, महताबरायके बिना कैसे रहूँगा? और फिर एक दो दिनकी बात न थी, तीन महीनेकी बात थी। मेरी आँखोंमें आँसू आ गए। पिताजीने यह देखा तो कहा—महताबरायको भी साथ ले जाओ। गर्मियोंमें यहाँ रह कर क्या करेगा?

जिस तरह बिजलीका बटन दबानेसे देखते देखते अंधकारमें रोशनी हो जाती है, उसी तरह मेरे अंधकारमय दिलमें भी रोशनी हो गई। कुम्हलाया हुआ कमल खिल गया। दौड़ा दौड़ा उसके घर गया और बोला—सामान बाँध लो, कल नैनीताल चलना होगा।

महताबरायने मेरी तरफ़ प्यारसे देखा और मुस्कराकर जवाब दिया—तुम चले जाओ। हमारे भाग्यमें लखनऊकी गर्मियाँ लिखी हैं। हम कहाँ जा सकते हैं?

मैंने बनावटी क्रोधसे कहा—वाह! चलोगे क्यों नहीं? तुम्हें बाँधकर भी ले चलूँगा।

महताबराय—हमें वहाँसे दो-चार सेर ठंडी हवा भेज देना। हमारा काम इसीसे चल जाएगा।

मैं—दो-चार सेर ठंडी हवासे क्या बनेगा? चलो ठंडी हवा और ठंडे पानियोंके देशमें ले चलें। मोटे ताजे हो कर लौटोगे।

महताबराय—तुम मोटे हो जाओगे तो मैं समझूँगा, मैं ही मोटा हो गया।

मैं—ऐसे रंगीन दृश्य हैं कि देखकर तुम्हारा जी खुश हो जायगा। तुम्हारा आत्माराम नाचने लगेगा।

महताबराय—एक एक चीज़का हाल लिखना। तुम जो कुछ वहाँ जाकर देखोगे, हम तुम्हारी आँखोंसे यहाँ घर बैठे ही देख लेंगे।

मैं—हमारी श्रेणीके कई और लड़के भी जा रहे हैं। खूब मज़ा रहेगा।

महताबराय—हमें किसीसे क्या लेना है? हमें तो यह खुशी है कि तुम जा रहे हो।

मैं—अरे! तो क्या तुम सचमुच न जाओगे? साफ़ साफ़ कहो?

महताबरायने शांत भावसे उत्तर दिया—नैनीताल अमीरोंकी सैरगाह है, ग़रीबोंकी नहीं। और हम दुर्भाग्यसे उन लोगोंमें हैं जिन्हें प्रायः गरीब कहा जाता है। नैनीताल वह जाए जिसके पास पैसा हो।

मैं—इस तरफ़से तुम निश्चिन्त रहो। तुम्हारा एक पैसा भी ख़र्च न होगा। तुम अपना सामान बाँधकर गाड़ीमें बैठ जाओ। इसके बाद हम जानें और हमारा काम।

महताबरायकी आँखोंमें आँसू भर आए। बोला—भैया, तुम्हारे उपकारोंसे पहले ही बहुत दबा हुआ हूँ, और न दबाओ!

मैं—मालूम होता है, तुम हमें अभी तक पराया ही समझ रहे हो?

महताबराय—यह तो अपने दिलसे पूछो। हमसे क्या पूछते हो?

मैं—बहुत अच्छा! तुम न जाओगे तो हम भी न जाएँगे।

महताबराय—अरे मेरे यार! तुम तो नाराज़ हो गए। मगर तुमने तो वहाँ मकान भी ठीक कर लिया है।

मैं—इससे तुम्हें क्या? हम बड़ी आशा लेकर आए थे, तुमने हमारा दिल तोड़ दिया!

यह कहकर मैं बाहर निकल आया। महताबरायने पीछेसे आवाज़ दी—अरे भई! ज़रा एक बात तो सुनते जाओ।

मैंने गरदन पीछे मोड़कर देखा और रुखाईसे कहा—कहो, क्या कहते हो?

महताबराय—तुम हमारे लिए न रुको, बीमार हो जाओगे।

मैंने उसे जलानेके लिए जवाब दिया—बीमार हो जाएँगे, तो तुम्हारी बलासे।

यह तीर निशानेपर बैठा। महताबरायने आकर मेरे गलेमें बाहें डाल दीं और मुझे मनाने लगा। मगर मैंने साफ़ कह दिया कि तुम न जाओगे तो मैं भी न जाऊँगा।

आख़िर महताबरायको मानना पड़ा। दूसरे दिन हम दोनों लखनऊसे चल पड़े। गर्मियोंके यह तीन महीने ऐसे दिलचस्प, ऐसे रंगीन, ऐसे मज़ेके थे कि आज भी याद आते हैं तो कलेजेमें हूक-सी उठती है। हाय शोक! वे सुनहरे दिन कहाँ चले गए?—प्यारके रसमें समोए हुए, आनंदमें डूबे हुए! ऐसे दलचस्प जैसे परियोंकी कहानियाँ, ऐसे मीठे जैसे स्वप्न-संगीत, ऐसे पवित्र जैसे बहन-भाइयोंका प्यार!

३

मगर शोक! ये तीन महीने हमारी खुशीके अन्तिम महीने थे जिनके बाद हम दोनोंको चैनका एक दिन भी न मिला।

मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है जब हम दोनों दोस्त 'जुबली कालेज'में भरती हुए। उस दिन मेरा दिल यौवनकी उमंगों और प्रसन्नताके प्रकाशसे भरा था। और मेरे सामने भविष्यका वह मार्ग खुला था जिसपर सफलताके फूल खिलते हैं और प्यारकी धूप खेलती है। मगर जब मैं घर लौटा तो मेरे दिलमें आशाकी जगह ईर्ष्याका विष भरा था, और मेरा भविष्य बादलोंसे घिरी हुई साँझके समान धुँधला और अनिश्चित था।

और इसका कारण एक लड़की थी रूपरानी जो उसी दिन कालेजमें भरती हुई थी। कदाचित् यह लड़की उस कालेजमें भरती न होती!—उसने एक ही क्षणमें मेरे दिलका चैन छीन लिया। मैं

चाहता था, मैं उसे देखता ही रहूँ। वह मेरी आँखोंसे ओझल न हो। —मेरा पालन-पोषण धनी घरानेमें हुआ है। मैं सदासे सुंदर स्त्रियोंसे मिला हूँ। मैंने अच्छेसे अच्छे सिनेमा देखे हैं। मगर उस लड़कीका-सा रूप और रूपका जादू मैंने कहीं नहीं देखा। उसने जब पहले पहल मेरी ओर अपनी बड़ी बड़ी आँखोंसे देखा, तो मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मैंने एक क्षणमें हज़ारों ब्रह्माण्ड देख लिए हैं। उन ब्रह्माण्डोंके सामने मेरा और मेरे धन दोनोंका कोई मूल्य न था।

मगर रूपरानीने मेरा ज़रा भी ख्याल न किया और उसके बाद एक बार भी मेरी ओर न देखा। उसका सारा ध्यान महताबकी तरफ था। वह और दूसरी लड़कियाँ सबसे पिछले बेंचपर बैठीं थीं। मैं और महताबराय सबसे आगे साथ साथ बैठे थे। मैंने कई बार बहाने बहानेसे पीछे मुड़कर उसकी ओर देखा और उसे हर बार महताबरायकी पीठकी ओर देखते पाया। एक बार वह अपने साथवाली लड़कीसे महताबरायकी तरफ इशारा करके कुछ बात-चीत भी कर रही थी। सम्भव है वह कह रही हो कि यह लड़का यूनीवर्सिटीमें अव्वल रहा है। जरूर यही कहती होगी। और कुछ कहनेकी संभावना ही न थी। एक बार महताबरायने पिछली सीटवाले लड़केसे कुछ कहनेके लिए गरदन मोड़ी तो रूपरानी और उसकी आँखें मिल गईं।

रूपरानीने सिर झुका लिया, महताबरायका चेहरा लाल हो गया, और मेरे दिलमें आग लग गई। उस समय मैं और महताबराय एक दूसरेसे सटकर बिल्कुल पास पास बैठे थे। यों हम दोनोंके बीचमें कोई तीसरी चीज़ न थी, लेकिन फिर भी हमारे बीचमें वैरका पार न किया जाने वाला सागर गरज रहा था!

आज मुझे पहली बार यह अनुभव हुआ कि जब दो मित्रोंके बीच कोई सुन्दर स्त्री आकर खड़ी हो जाती है तो वे दोनों कितनी जल्दी पराए बन जाते हैं! उस दिन यदि कोई मुझसे आकर कहता कि महताबराय किसी दूसरे कालिजमें जाना चाहता है तो मैं खुशीसे पागल हो जाता। उस दिन अगर कोई मुझसे आकर कहता कि तुम अपने मा-बापकी सारी सम्पत्ति देकर यूनीवर्सिटीमें अव्वल रह सकते हो, तो मैं यह प्रस्ताव आँखें बन्द करके स्वीकार कर लेता और रूपरानीका प्रेमपात्र बननेके लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर देता। मगर शोक! यह मेरे बसकी बात न थी। मैं किसी तरह महताबराय न बन सकता था।

४

महताबराय :

मैं कैसा नीच हूँ जो अपने दोस्तको तकलीफ़ दे रहा हूँ! अगर मैं कालिजमें भरती न हुआ होता तो यह नौबत काहेको आती! वह मुझे कितना चाहता था, मुझे देखकर किस तरह खिल जाता था, गर्मियोंमें मुझे किस चाव और शौकसे नैनीताल ले गया था! जब मैंने जानेसे इनकार कर दिया तो कैसा उदास हो गया था! और आज मेरी शक्लसे भी बेजार मालूम होता है! मुझे देखकर घृणासे मुँह फेर लेता है! पहले एक एक दिनमें कई कई बार मेरे घर आया करता था, अब महीनों बीत जाते हैं, कभी दर्शन ही नहीं होते।

उस दिन माजीने पूछा था, 'क्या तुमसे और ताजसे झगड़ा हो गया है; न तुम उसके घर जाते हो न वह तुम्हारे घर आता है?' यह सवाल न था, मेरे हृदयपर हथौड़ेकी चोट थी। क्या जवाब

देता? सिर झुकाकर चुपका हो रहा। और इसका कारण रूपरानी है। न वह मुझे चाहती, न ताज मुझसे ख़फ़ा होता।

मगर इसमें मेरा क्या दोष है? उससे कई बार कहा है, मेरा ख्याल छोड़ दो। लेकिन, वह कहती है, मेरे लिए मरना आसान है तुम्हारा ख्याल छोड़ना आसान नहीं। मैं कहता हूँ, मैं निर्धन माका बेटा हूँ, वह कहती है मुझे निर्धन ही चाहिए। क्या करूँ? कोई उपाय नज़र नहीं आता, कोई रास्ता नहीं सूझता। रूपरानी कहती है, ब्याह करूँगी तो तुम्हींसे करूँगी, नहीं तो सारी आयु कुमारी रहूँगी।

ताज समझता है मैंने उससे रूप छीन ली है; लेकिन, सच्ची बात यह है कि रूपरानीने मुझसे ताज छीन लिया है। कभी कभी विचार आता है, रूपरानीसे कह दूँ मेरा-तुम्हारा ब्याह होना असम्भव है। कभी कभी यह भी सोचता हूँ, कह दूँ, मेरे ब्याहका तो बहुत दिन हुए फैसला भी हो चुका है। मगर भगवान जाने, जब वह मेरे सामने आती है तो मुझे क्या हो जाता है! सारे इरादे धरे धराए रह जाते हैं। मुँहसे बात ही नहीं निकलती!

कभी कभी ऐसा मालूम होता है कि यदि मैंने उससे कोई ऐसी वैसी बात कह दी तो वह आत्म-हत्या कर लेगी। इस विचारसे ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

मैं मानता हूँ, मैं उसके लायक़ नहीं, उसे किसी अमीरसे ब्याह करना चाहिए। क्या उसकी शक्ल-सूरत, उसका रँग-रूप, उसकी विद्या इस योग्य है कि वह अपना जीवन और जीवनकी आशाएँ मेरे जैसे दरिद्र-नारायणके साथ बाँध दे? मेरे पास तो उसके लिए मकान भी नहीं है। हाँ, ताजबहादुर वास्तवमें उसके योग्य है।

उससे ब्याह करके उसके नसीब जाग उठेंगे, वह राज-सिंहासनपर जा चढ़ेगी, उसे किसी चीज़की कमी न रहेगी। महलोंमें रहेगी, फूलोंपर सोएगी, सुगंधमें बसेगी। मेरे जैसे आदमी उसका पानी भरेंगे। मगर समझदार होते हुए भी, पता नहीं, यह सीधी-सी बात भी उसकी समझमें क्यों नहीं आती! आँखें हैं, देखती नहीं। कान हैं, सुनती नहीं। मैं जन्मका ग़रीब हूँ। मुझसे ऐसा अहोभाग्य न ठुकराया जाय तो मैं क्षमापात्र हूँ। मगर वह तो मुझे ठुकरा सकती है। फिर ठुकराती क्यों नहीं? हाय भाई ताजबहादुर! तू भाग्यवान होते हुए भी कितना अभागा है! तू धनवान होते हुए भी कितना निर्धन है!

६

एक दिन हम दोनों सिनेमा देखने गए। उस दिन रूपरानी बहुत खुश थी। उसके पाँव भूमिपर न पड़ते थे। बात-बातपर मुस्कराती थी। चारों ओर विजयी भावसे देखती थी। सिनेमा-हालमें पहुँचे तो खेल शुरू होनेमें पन्द्रह मिनट बाकी थे। हम दो कुरासियोंपर बैठ गए और बातें करने लगे। मैंने छूटते ही पूछा—आज तो बड़ी ख़ुश मालूम होती हो, क्या बात है?

रूपरानीने मुँहको रूमालसे पोंछते हुए जवाब दिया—सिनेमा देखनेका चाव है।

मैं—नहीं, सच सच बताओ।

रूपरानीने दरवाज़ेमें अन्दर आते हुए एक लड़केकी ओर इशारा करके कहा—अरे! आज ज़रूर वर्षा होगी!—शिवनारायण सिनेमा देखने आया है, हमें इकट्ठे देखकर कोयला ही हो जायगा।

मैंने एक सरसरी दृष्टिसे शिवनारायणकी ओर देखा और फिर

रूपरानीसे कहा—तुम इधर-उधरकी बातें क्यों बनाती हो ? बताओ, क्या बात है ? मेरे दिलमें हलचल मची हुई है।

रूपरानी—(दरवाज़ेकी ओर देखकर) अरे लो ! श्रीवास्तव भी आ गया ! इसको तो खेल देखे बिना खाना हज़म नहीं होता। मगर सक्सेना कहाँ है ? सक्सेनाके बिना इसे खेलका मज़ा क्या ख़ाक आएगा ?

इतनेमें श्रीवास्तवने हम दोनोंको देखकर हाथ उठाया और 'गुड ईवनिंग' कहा। हमने भी मुस्कराकर जवाब दिया। रूपरानी उसकी ओर देखती हुई बोली—आज अकेला ही है।

मैंने रूपरानीके पाँवपर अपना पाँव रखकर उसे दबाया और कहा—बताओ, क्या बात है ?

रूपरानीने मुझे धकेलकर अपना पाँव छुड़ा लिया और उसे हाथसे मलते हुए बोली—चलो परे हटो ! मेरा पाँव ज़ख्मी कर दिया। मर्द पढ़-लिखकर भी जंगली ही रहते हैं।

मैं—और न बताओ, अबके दूसरा पाँव ज़ख़मी करूँगा।

रूपरानी—अच्छा, बड़े आए हैं पाँव ज़ख़मी करनेवाले ! शोर मचा दूँगी तो अभी मैनेजर पकड़कर पुलिसके हवाले कर देगा। सारी चौकड़ियाँ भूल जाओगे।

मैं—मैं कह दूँगा, पहले इसीने चुटकी ली थी।

रूपरानी—झूठ बोलते शर्म न आएगी ?

मैं—(मुस्कराकर) शर्ममें यह हिम्मत कहाँ कि किसी सूरमाके सामने आ जाए।

रूपरानी खिलखिलाकर हँस पड़ी और अपनी कलाईकी घड़ी

देखकर बोली—लो, अब खेल देखनेके लिए तैयार हो जाओ। नहीं तो फिर पूछोगे, यह क्या हो रहा है?

मैंने इस बातका उत्तर न देकर फिर सवाल छेड़ा—बताओ, आज क्या बात है?

रूपरानीने छतके पंखेकी ओर देखकर कहा—खेलके बाद बताऊँगी।

मैं—कोई खास बात मालूम होती है।

रूपरानी—सुनकर खुश हो जाओगे।

मैं—ऐसी बात है?

रूपरानी—जमीनसे उछल पड़ोगे!

मैं—अभी क्यों नहीं बतातीं?

रूपरानी—अभी बता दूँ तो खेलका सारा मज़ा किरकिरा हो जाएगा।

मैं—खेलका मज़ा तो अब भी किरकिरा हो गया। लोग खेल देखेंगे, हम मनके घोड़े दौड़ाएँगे। और क्या?

रूपरानीने मेरे और भी नज़दीक खिसककर धीरेसे कहा—आज ताजबहादुरका बाप आया था। पिताजीने साफ इन्कार कर दिया।

शब्द साफ न थे, मगर मतलब बिल्कुल साफ था। मेरा दिल ज़ोर ज़ोरसे धड़कने लगा। लेकिन मैंने फिर भी अनजान बनकर पूछा—काहेसे इन्कार कर दिया?

रूपरानीने लजाकर गरदन झुका ली और दाएँ हाथसे अपने रेशमी रूमालको बाएँ हाथपर लपेटते हुए रुक रुक कर कहा—ताज-बहादुरके लिए कहते थे। पिताजीने जवाब दिया, मैं गरीब आदमी हूँ, आपसे टक्कर नहीं ले सकता। निराश होकर लौट गए।—चलो, यह चिन्ता भी दूर हुई। रुपयेकी मार बुरी होती है।

मैं चुपचाप बैठा रह गया। उस समय मुझमें हिलने-डुलनेकी शक्ति ही न थी।

रूपरानीने अपनी बातको जारी रखते हुए कहा—जब ताज-बहादुरका फादर चला गया, तो पिताजीने माजीसे कहा—रूप तो महताबरायको चाहती है, ताजबहादुरसे ब्याह दूँ तो उसका सारा जीवन ही बरबाद हो जाए। न बाबा! मैं पैसा न देखूँगा। लड़का शरीफ़ और समझदार है, अपने लिए और रूपके लिए बहुत कमा लेगा।

इतना कहकर रूपरानी चुप हो गई। थोड़ी देर बाद उसने मेरी ओर विजयी ढँगसे देखा और फिर कहा—कैसी खबर है, बोलो?

लम्प बुझ गए और खेल शुरू हो गया। मगर मेरा ध्यान खेलकी ओर न था, मैं कुछ और ही सोच रहा था।

दूसरे दिन कालिजमें ताजबहादुरको देखा तो मेरे दिलमें भाला-सा चुभ गया। निराशा और विवशताका ऐसा मुँह बोलता चित्र मैंने इससे पहले कभी न देखा था। न वे खिले हुए होंठ थे, न वे हँसती हुई आँखें। फूल कुम्हला गए थे, दिये बुझ गए थे। जब तक कालिजमें रहा, उसने सिर नहीं उठाया। निराशाने साहसका गला घोंट दिया था। अब उसमें जीवनका ज़रा-सा भी चिह्न दिखाई न देता था। मुझे उसकी दशापर दया आ गई। विजयीके हजारों दुश्मन हैं। मगर हारे हुएसे कौन कठोर-हृदय दुश्मनी करेगा? मैंने निश्चय कर लिया कि रूपरानीका ख्याल छोड़ दूँगा। उससे साफ़ कहूँगा, मुझे तुमसे प्यार नहीं। उससे अनमना हो जाऊँगा, बात ही न करूँगा। देखूँगा तो मुँह दूसरी तरफ फेर लूँगा। आख़िर अपने आप पीछे हट जाएगी। जो खुशी जीतकर हारनेमें है, वह खुशी जीतकर जीतनेमें कहाँ?

६

रूपरानी :

सचमुच दोनोंमें बहुत अन्तर है। ताजबहादुर मेरी ओर देखता है, तो ऐसा मालूम होता है कि मेरी ओर कोई आग बढ़ी आ रही है जो आप भी जलती है, दूसरेको भी जलाती है। महताबराय मेरी ओर देखता है तो ऐसा अनुभव होता है कि वह आँखें नहीं प्रेम-रसके दो कटोरे हैं, जिन्हें देखकर दिल ठंडा हो जाता है। एकमें पशुता है, दूसरेमें मनुष्यता। एकमें प्रेम है, दूसरेमें स्वार्थ।

मगर एक बातमें ताजबहादुर महताबरायसे बढ़ा हुआ है : उसे रुपए-पैसेकी कमी नहीं। उधर महताबराय पूरा पूरा दरिद्रनारायण है। बेचारेकी मा मेहनत-मज़दूरी करके पढ़ा रही है। मगर पढ़ने-लिखनेमें ताजबहादुर महताबरायका पासंग भी नहीं। महताबराय न पढ़ाता तो ताजबहादुर मैट्रिकमें पास भी न हो सकता। इधर महताबराय यूनीवर्सिटी-भरमें अव्वल रहा है। उस दिन उसका 'ऐस्से' देखकर प्रोफ़ेसर साहब दंग रह गए थे; पिछले महीनेके 'ग्रेटर इण्डिया'में उसकी एक कविता प्रकाशित हुई थी जिसे पढ़कर आदमी किसी दूसरी दुनियामें पहुँच जाए। कविता क्या थी, मोतियोंकी माला थी। और यह अँग्रेज़ीहीका हाल नहीं, दूसरे विषयोंका भी यही हाल है। बी० ए० में फिर अव्वल रहेगा। अजब नहीं रिकार्ड तोड़ दे। ऐसे आदमीको जो हाथसे खो दे, उससे अभागा कौन होगा ? पिताजीने बहुत अच्छा किया जो ताजबहादुरके बापकी बात नामंज़ूर कर दी, नहीं तो मेरा जीवन ही नष्ट हो जाता। धनका क्या है : योग्य है, कमा लेगा। और फिर शरीफ़ कैसा है ! सारा कालिज उसकी सौगंध खाता है।

सारा शहर उसकी प्रशंसा करता है। आदमी नहीं हीरा है जो गरीबीके दलदलमें फँसा हुआ भी चमक रहा है। मगर वह हमेशा वहाँ थोड़े ही फँसा रहेगा !

सुना है, पहले दोनोंमें बड़ा प्यार था। दूध-पानीकी तरह रहते थे। मगर जबसे कालिजमें आए हैं, तबसे फट गए हैं। यह तो कुछ नहीं कहते, मगर ताजबहादुर हर समय उनका अपमान करना चाहता है। उस दिन कई लड़कोंसे कह रहा था, "मैं सहायता न करता तो श्रीमानजी एण्ट्रेंसकी परीक्षामें भी न बैठ सकते। दाख़िला मैंने दिया, पुस्तकें मैंने दीं, कपड़े मैंने दिए। अब मुझीसे अकड़ने चले हैं ! इतना भी नहीं सोचते कि मा घर-घरमें पानी भरती है।' उधरसे मैं गुज़र रही थी। मेरे कानोंमें इन शब्दोंकी भनक पड़ी तो मुँह लाल हो गया। जीमें आया, ऐसी गत बनाऊँ कि अट्ठी-सट्ठी भूल जाए। मगर फिर कुछ सोचकर क्रोध पी गई। पर इतना कह ही दिया कि उनका उपकार भी कम नहीं है, वह आपपर मेहनत न करते तो आप बारह साल भी एण्ट्रेंसमें पास न होते। सारी पुस्तकें धरी धराई रह जातीं। जो उपकार आपपर उन्होंने किया है वह आपसे क्या उतरेगा ? उसके सामने रुपया कोई चीज़ ही नहीं है।

यह सुनकर उसका मुँह ज़रा-सा निकल आया। अभी परसोंका ज़िक्र है, ताजबहादुरने सारी क्लासको टी-पार्टी दी, केवल उनको निमंत्रण न भेजा। और कारण यह बताया कि उनमें यह हिम्मत कहाँ कि किसीको कोई पार्टी दे सकें। जो दूसरोंको खिला नहीं सकता, वह दूसरोंका खाए क्यों ? और मज़ा यह कि यह शब्द मुझे सुनाकर कहे। शायद उसे वहम होगा कि इस ओछेपनसे वह उन्हें मेरी

निगाहोंमें गिरा देगा। मगर असर उल्टा हुआ। मेरी दृष्टिमें वह और भी ऊँचे उठ गए। ताजबहादुरकी अगर कुछ इज्ज़त मेरी निगाहोंमें थी, तो वह भी जाती रही। जो धनपर इतना अभिमान करे वह मनुष्य नहीं। मेरे पास आया तो मैंने साफ़ कह दिया कि मैं तुम्हारी पार्टीमें शामिल नहीं हो सकती। तुम्हें इतना भी पता नहीं कि अपने किसी क्लास-फ़ेलोका इस तरह खुल्लम-खुल्ला अपमान नहीं करना चाहिए। दूसरे विद्यार्थियोंने भी मेरा समर्थन किया। श्रीमानजीको जवाब तक न सूझा। उनका अपमान करने चले थे, अपना अपमान करा बैठे।

७

मगर कुछ दिनोंसे देखती हूँ, उनके तेवर कुछ बदले हुए हैं। न वह नेहकी निगाहें हैं, न वह चाहकी चितवन। जैसे एकदम बदल गए हैं। लाख कहती हूँ, मेरी समझका दोष है, मगर दिल नहीं मानता। उस दिन कहा था, ज़रा फ़िलासोफ़ीकी एक-दो बातें समझा दो। कहने लगे प्रोफ़ेसर साहबसे क्यों नहीं पूछ लेतीं? इसपर मुझे ज़हर चढ़ गया। लेकिन उनके लिए जैसे कुछ हुआ ही नहीं। फिर एक दिन मैंने कहा, आज बहुत अच्छी फ़िल्म आई है, चलोगे? बोले, शोक है, मैं न जा सकूँगा; अकेली चली जाओ। मैंने कहा, मुझसे अकेले तो न जाया जायगा। जवाब दिया, ताज-बहादुरको ले जाओ। अब इसका क्या जवाब देती? मेरी आँखोंमें आँसू आ गए। लेकिन उस ज़ालिमको ज़रा भी दया न आई। मगर इससे भी अधिक शोक मुझे उस दिन हुआ जब उनको बुख़ार हो गया और वे कालिज न आ सके। मैं दिन-भर हैरान रही, शामको उनके घर पहुँच गई। देखा तो चारपाईपर लेटे कराह रहे हैं। मैं

कुछ देर खड़ी देखती रही। इसके बाद बैठ गई। उन्होंने मुझे देखा, मगर ज़बानसे कुछ न कहा। यह भी नहीं कि तुमने बड़ा कष्ट किया। मैं ही बेशरमोंकी तरह बैठी रही। थोड़ी देर बाद बोली—अब क्या हाल है? जी कैसा है?

उन्होंने आँखें खोल दीं, और धीरेसे कहा—अच्छा है।

मैंने अपना हाथ उनके माथेपर रख दिया—क्या दवा पी है, और किस डाक्टरका इलाज है?

वे—कुनीन खाई है। कल तक उतर जाएगा।

मैं—दूध पिया है या नहीं?

वे—नहीं।

मैं—क्यों, इस तरह तो कमज़ोरी हो जाएगी?

वे—मुझे डर है, यदि मैं ज्यादा बोला तो बुख़ार बढ़ जायगा।

मेरी छातीमें अगर कोई छुरी भी उतार देता तो मुझे इतना दुःख न होता जितना इस बातसे हुआ। क्रोधसे बोली—मुझसे बड़ी भूल हुई जो तुम्हें देखने चली आई।

उन्होंने बेपरवाहीसे मुँह दीवारकी तरफ फेर लिया और कहा—मैं तुम्हें बुलाने नहीं गया था। अब चली जाओ।

नहलेपर दहला पड़ा। मैं जोशसे खड़ी हो गई। आँखोंकी पलकें भी जलती हुई मालूम हुईं। बोली—अब क्या तुम्हारे पास आनेके लिए भी मुझे तुमसे आज्ञा लेनी होगी?

उन्होंने दीवारहीकी तरफ मुँह किये हुए उत्तर दिया—अब इसका जवाब मैं क्या दूँ? अपने दिलसे पूछो।

मैं जाते जाते रुक गई—मेरा दिल बिल्कुल साफ़ है। तुम्हारा ही दिल बदल गया है।

वे—मैं ग़रीब हूँ। गरीबोंके दिल होता ही कहाँ है?

मैं—तुम तो आज लड़ते हो।

वे—बुरे आदमियोंसे और क्या आशा की जा सकती है?

मैं कहर और क्रोधसे तनकर खड़ी हो गई और चलनेको तैयार हुई।

सहसा मेरे दिलमें विचार आया: बीमारीमें आदमी चिड़चिड़ा हो जाता है। यह इनका दोष नहीं, बुखारका दोष है। सारा क्रोध पानी होकर बह गया। मैं फिर चारपाईपर बैठ गई और उनका मुँह जबरदस्ती अपनी ओर कहते हुए प्यारके गुस्सेसे बोली—जरा आँखें तो मिलाओ। आज तुम्हें क्या हो गया है, लड़ाई मोल लेते हो?

मैंने उनकी आँखोंमें आँसू देखे। अब वह रो रहे थे और पछता रहे थे, और उनमें मुझसे आँखें मिलानेका साहस न था। क्रोधका सामना सभी कर सकते हैं, प्रेमका सामना कोई नहीं कर सकता। यह आँसू न थे, मेरी जीतके जीते जागते प्रमाण थे। मैं उन्हें देखकर बाग़ बाग़ हो गई।

अब उन्होंने मेरा हाथ लेकर अपने सीनेपर रख लिया और रोने लगे। मगर मुँहसे कुछ न कहा।

थोड़ी देर बाद फिर रुखाईसे बोले—अब तुम जाओ। कोई देख लेगा तो सौ सौ बातें करेगा।

मैं—मुझे किसीकी बातोंकी परवाह नहीं।

वे—(करवट बदलकर) तुम्हें न होगी, मुझे तो है।

मेरे दिलमें रह रहकर ख़्याल आता था, उन्हें क्या हो गया है? इस ख़्यालने मेरे दिलको व्याकुल कर दिया। हरे भरे चमनमें आग लग गई थी।

८

ताजबहादुर :

मेरा ख्याल ग़लत निकला। मैं महताबरायको शैतान समझता था, मगर वह देवता है। मैंने उसके बारेमें झूठी अफ़वाहें उड़ाईं, मैंने उसका अपमान किया, उसे गालियाँ दीं, उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचे। वह मुझसे मिलनेके लिए मकानपर आया तो मैंने उससे बात-चीत न की। मगर वह फिर भी मेरा वही पुराना मित्र महताबराय बना रहा जो मेरी ग़लतियाँ देखता था और मुस्कराता था। मैंने उसकी आँखोंमें घृणाके भाव कभी नहीं देखे, न किसीसे यह सुना कि उसने मेरे बारेमें कोई अपमान-सूचक शब्द कहे हों। उसने ज़रूर यह निश्चय कर लिया था कि मेरे हर एक अपराधको हँसकर क्षमा कर देगा। मगर मुझे उसकी भलाई भी बुराई नज़र आती थी। पीलियाके रोगीको हर एक चीज़ पीली मालूम होती है, बीमार आँखोंको रोशनी भी चुभती है।

रूपरानीकी तरफ़से निराश होकर मैं और भी झुँझला गया। मैं चाहता था, बस चले तो महताबरायकी गरदन मरोड़ डालूँ। एक वह दिन था कि उसके चेहरेपर ज़रा-सी उदासीनता देखकर मेरा दिल डूब जाता था। या अब यह दशा थी कि अगर खोई उसकी मृत्युकी खबर सुना देता तो मैं जी जाता। लेकिन, उसके भाग्यमें मृत्यु न थी। मेरी छातीपर मूँग दलता था।

साँझका समय था। मैं गोमतीके किनारे बैठा अपने भाग्यके अँधेरेमें रोशनीकी खोज कर रहा था। बिलकुल उसी तरह जिस तरह वह रोगी, जिसे सारे डाक्टरोंने जबाब दे दिया हो, कभी

कभी सोचता है, शायद मैं अब भी बच जाऊँ। आशा सख्त-जान साँपकी तरह है जो कुचला जानेपर भी तड़पता रहता है। जरा-सी गरमी पहुँची और वह हिलने लगा, ज़रा-सा उसे किसीने छेड़ा और उसने फिर सिर उठा लिया। सहसा किसीने मेरे कंधेपर हाथ रख दिया।

मैंने चौंककर सिर उठाया और मुड़कर देखा : महताबराय सामने खड़ा था!

मुझे आश्चर्य हुआ। मैं नहीं समझता था वह कभी मुझसे बोलनेका साहस भी करेगा। मैं उसे अपने जीवन और जगतका सबसे बड़ा शत्रु समझता था, और मेरा ख्याल था, वह भी मुझे ऐसा ही समझता होगा। लेकिन, इस समय वह मेरे सामने खड़ा था और उसके मुँहपर ज़रा क्रोध, ज़रा रोष, जरा संकोच न था। उलटा मुस्करा रहा था।

मैं घबरा गया। मेरे मुँहसे बात न निकलती थी। मुस्कराना चाहता था, मुस्करा न सकता था। बोलना चाहता था, बोल न सकता था। लेकिन महताबरायने मेरी मुश्किलको आसान कर दिया। बोला—क्यों भाई, क्या रूठे ही रहोगे? तुममें यह बूता होगा, मुझमें तो यह बूता नहीं।

मैंने झूठी हँसी हँसकर उत्तर दिया—तुमको मेरी परवा क्या है? रूपरानी सलामत रहे। जब तक वह न थी, तब तक हम सब कुछ थे, अब हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं है!

महताबरायने कहा—यह तुम्हारा वहम है। मैं रूपरानीके लिए तुम्हें कुर्बान करनेको कभी तैयार नहीं। ज़रूरत हो तो उसको छोड़ दूँ।

मैं—अरे भाई, ऐसी बातोंसे क्या लाभ? यह बातें कहनेकी हैं, करनेकी नहीं।

महताबराय—(मेरी ओर करुणामय आँखोंसे देखकर) तुम मुझे इतना नीच समझ रहे हो ?

मैं—यह तो तुम अपने मुँहसे कहो, मैं नहीं कहता। न मुझे ऐसा कहनेका अधिकार है।

महताबराय—आखिर तुम मुझसे क्या चाहते हो ? मैं क्या करूँ कि तुम खुश हो जाओ ? इतना बता दो।

मैं—मैं तो अब भी नाराज़ नहीं हूँ।

महताबराय—(मुस्कराकर) सच कहते हो क्या ?

मैं—(चिढ़कर) जी नहीं, झूठ बोल रहा हूँ ! हरिश्चन्द्र तो सारे शहरमें केवल आप हैं, बाकी सब झूठे हैं !

महताबराय—लो, देख लो ! यह नाराज़गी नहीं तो और क्या है ?

मैं—(बेपरवाहीसे) चलो नाराज़गी ही सही, अपने जीकी बात है : जी चाहा खुश हो गए, जी चाहा नाराज़ हो गए। इससे किसीको क्या ?

महताबराय—यह तुम कह सकते हो, मैं नहीं कह सकता। मुझसे तो तुम्हारा नाराज़ चेहरा नहीं देखा जाता। तुम्हें उदास देखता हूँ तो मेरा दिल रोने लगता है।

मैं—बड़ी कृपा आपकी !

महताबराय—जहाँ तक मैंने सोचा है, तुम्हारी नाराज़गीका कारण केवल रूपरानी है। क्या मेरा ख्याल ठीक है ?

मैं—फ़र्ज किया ठीक है, फिर ?

महताबराय—भाई मेरे, मैंने उससे साफ़ साफ़ कह दिया है कि

मुझे तुमसे प्रेम नहीं है। और मेरे विचारमें इससे ज़्यादा मैं और कुछ न कर सकता था। कहो, अब भी तुम ख़ुश हुए या नहीं ?

मैं हैरान रह गया। महताबराय यहाँ तक जानेको तैयार हो जायगा, इसकी मुझे आशा न थी। दुर्भाग्य और साँझके अँधेरेमें दूर आशाका टिमटिमाता हुआ दीपक नज़र आने लगा। क्या यह सचमुच दिया था, या मुझे अब भी किस्मत सब्ज़ बाग़ दिखा रही थी ?

महताबरायने फिर कहा—अगर तुम साफ़ कह देते कि तुम्हें उससे प्रेम है, तो मामला यहाँ तक न बढ़ता। मैं पहले ही ऐसा बर्ताव करता कि उसको मेरी तरफ़ झुकनेका साहस ही न होता। मगर तुमने मुझसे कुछ न कहा, दिलमें गिरह बाँध बैठे। यह तुम्हारी भूल थी।

मेरी आँखोंमें आँसू आ गए। मैंने वह सुना जो मैं सुनना चाहता था मगर जो सुननेकी मुझे आशा न थी। ख़्याल आया, यह आदमी वास्तवमें वीरात्मा है जो मेरे लिए रूपरानीको त्याग रहा है। क्या मुझमें भी यह हिम्मत है ? नहीं, मैं महताबरायके सामने बहुत छोटा, बहुत तुच्छ, बहुत निकृष्ट था। मगर मैं फिर भी ख़ुश था। डूबते हुए को किनारा मिल गया था यद्यपि उसे बचानेवाला आप भँवरमें गोते खा रहा था।

थोड़ी देर बाद हम एक दूसरेके गलेसे लिपटे हुए हँस हँसकर रो रहे थे। हमारे चारों तरफ़ साँझका अँधेरा और सन्नाटा फैला हुआ था और हमारे पाँव-तले गोमतीकी मस्त लहरें उछलती, कूदती, नाचती गाती हुई अपने प्रीतमसे मिलनेके लिए भागी चली जातीं थीं।

९

महताबरायने जो कुछ कहा था, करके दिखा दिया । अब वह रूपरानीकी तरफ़ कभी देखता भी न था । कई बार मेरे सामने रूपरानी उससे बातचीत करनेके लिए उसके पास गई, मगर उसने मुँह फेर लिया । एक बार मैंने अपने कानोंसे सुना, महताबराय कह रहा था, 'तुम मुझे बदनाम कर दोगी ।' रूपरानीने घृणा और तिरस्कारके ये शब्द सुने तो उसका मुँह अंगारेके समान लाल हो गया । उधर महताबरायका चेहरा लाशकी तरह पीला था । मैं सब कुछ समझ गया : वह केवल मेरे लिए अपने मनको मार रहा था । एक बार महताबरायने एक लड़केसे चाकू माँगा । उसके पास ही रूपरानी बैठी थी । लड़केके पास चाकू न था । रूपरानी अपना चाकू निकालकर महताबरायकी ओर बढ़ा दिया । मानो सुलहकी प्रार्थना की । महताबरायने ऐसा प्रकट किया कि उसने देखा ही नहीं और एक दूसरे लड़केकी तरफ़ चला गया । सुलहकी प्रार्थना नामंजूर हो गई, रूपरानीने सिर झुका लिया । शायद सोचती होगी : अब मैं इतनी बुरी हो गई ! इसके बाद सारा दिन दोनों उदास रहे । मैं यह देखता था और कुढ़ता था । एक आध बार दिलमें यह भी ख्याल आया कि यह पाप है । सोचता था, दोनों एक दूसरेको चाहते हैं, मुझे उनके बीचमें खड़ा होनेका क्या अधिकार है ? कभी कभी जीमें आता था, महताबराय कितना उदार-हृदय है ! क्या मैं उसका अनुकरण नहीं कर सकता ?—मेरे बलिदानसे दो उजड़े हुए दिल बस जाएँगे । मगर बहादुरी और बलिदानके यह विचार इधर पैदा होते थे, उधर मर जाते थे । अँधेरी

काली रातमें जुगनू चमकता है और छुप जाता है, और इसके बाद रात पहलेसे भी अँधेरी और भयानक हो जाती है।

आख़िर एक दिन मुझे अवसर मिल गया। रातका समय था, मैं और रूपरानी दोनों कानपुरसे लखनऊ लौट रहे थे। स्टेशनपर मुलाकात हो गई। मेरे दिलकी जो दशा थी, वह मैं ही जानता हूँ। खुशीसे बावला हो गया। रूपरानीके पास जाकर बोला—हेलो मिस सक्सेना, किधर जा रही हो?

रूपरानीने मेरी तरफ मुस्करा कर देखा और 'लीडर'का नया अंक तह करके अपने फरके कोटमें रखते हुए बोली—निगम बाबू, खूब मिले। मैं यहाँ एक सहेलीसे मिलने आई थी, अब लखनऊ लौट रही हूँ। आप कहाँ जाएँगे?

मैं—हम भी लखनऊ जा रहे हैं। आपके साथ सफर खूब कटेगा।

रूपरानी—(अपनी रिस्टवाचकी तरफ देखकर) इसमें क्या संदेह है। आप न मिलते तो मुझे अनपढ़ औरतों के साथ बैठना पड़ता। अब आपके साथ बैठूँगी तो कुछ साहित्यकी बातें होंगीं, कुछ राजनीतिकी। मगर आप तो सेकेंड क्लासमें होंगे, मेरा टिकट इण्टर क्लासका है।

मेरा दिल बाग़ बाग़ हो गया। इस थोड़ेसे स्वर्गीय समयके लिए मैं अपना सर्वस्व निछावर कर सकता था, बोला—आपके साथ इण्टर क्लास भी सेकेंड क्लास बन जाएगी।

रूपरानीने मेरी तरफ दिलको टटोल लेनेवाली आँखोंसे देखा। वह जानना चाहती थी कि मेरे इन शब्दोंका क्या मतलब है? इतनेमें एंजिनने सीटी दी और हम दोनों उचककर इण्टर क्लासके एक डिब्बेमें

चढ़ गए। भाग्यवश डिब्बा बिल्कुल खाली था। गाड़ी चलने लगी। मैं दरवाज़ेमें खड़ा स्टेशनके लेम्पोंकी ओर देख रहा था। जब गाड़ी प्लेटफार्मसे निकल गई तो मैंने दरवाजेको बन्द कर दिया और रूपरानीके सामनेवाली सीटपर आकर बैठ गया। इस समय मेरा दिल धक् धक् कर रहा था और मेरे कान इस आवाज़को सुन रहे थे।

रूपरानी अख़बार देख रही थी। मुझे सीटपर बैठते देखकर बोली—असेम्ब्लीकी बैठक शुरू हो गई।

मेरा ध्यान असेम्ब्लीकी बैठककी तरफ न था। मैं चाहता था, भगवानने अवसर दिया है तो लाभ उठाऊँ और रूपरानीके सामने अपना दिल और दिलके भाव खोलकर रख दूँ। इससे अच्छा अवसर और कहाँ मिलेगा? लोगोंमें बातूनी मशहूर हूँ। देखूँ इस समय मेरी वाक्-चातुरी काम देती है या नहीं? तलवार वह जो युद्ध-भूमिमें काम आए; नहीं तो देखने और दिखानेके लिए तो लकड़ी और लोहेकी तलवारें दोनों बराबर हैं।

मगर रूपरानी अख़बार देख रही थी और गाड़ी, किसी अभागेके हाथमें आकर निकल जानेवाले अवसरकी तरह, उड़ी चली जा रही थी। सोचता था: ऐसा अवसर फिर न मिलेगा। रातका समय है, एकान्त है, गाड़ीका सफर है, जो चाहूँ कह डूँ, उसे सुनना पड़ेगा। न आप कहीं जा सकती हैं न मुझे बोलनेसे रोक सकती है। लखनऊमें ऐसा सुनहरा अवसर कहाँ? यह मेरा सौभाग्य है जो यह अवसर मिल गया। लेकिन, वह अब भी अख़बार देख रही थी! मैं तिलमिला उठा। जी चाहता था, अख़बार छीनकर खिड़कीसे बाहर फेंक दूँ और अपने मनकी व्यथा सुना डूँ। कैसी कठोर-हृदया है! हमारे जीवन और मृत्युका सवाल है, यह अख़बार पढ़ रही है!

आख़िर मैंने उसकी ओर झुककर ऊँची आवाज़से कहा—हमने सोचा था, आपसे ग़पशप लड़ेगी मगर आप तो अख़बार ले बैठीं।

रूपरानीने उसी तरह अख़बार पढ़ते पढ़ते बिना मेरी ओर देखे जवाब दिया—आजका लीडिंग आर्टिकल बड़ा ज़ोरदार है, जरा इसे ख़त्म कर लूँ।

मैं—वाह! हम गूँगेका गुड़ खाए बैठे हैं, आपको लीडिंग आर्टिकलकी पड़ी है। छोड़िए!

यह कहकर मैंने रूपरानीके हाथसे अख़बार छीनकर अपनी सीटपर रख लिया और उसके मुँहकी ओर देखा कि मेरे इस साहससे नाराज़ तो नहीं हो गई।

रूपरानीने अख़बार लेनेके लिए अपना छोटा-सा गोरा हाथ बढ़ाया, और दूसरे हाथसे साड़ीको ठीक करते हुए बोली—बस, एक ही पैराग्राफ़ बाक़ी है, दो-चार मिनटमें ख़त्म हो जायगा।

मैं—भइ, चलती गाड़ीमें पढ़नेसे आँखें ख़राब हो जाती हैं।

रूपरानी—नहीं ख़राब होतीं। मुझे आदत है।

मैंने अख़बारपर अपना दाहिना हाथ रख लिया और लेम्पकी ओर देखकर बोला—रोशनी भी बहुत कम है। मैं आपका शुभ-चिंतक हूँ, दुश्मन नहीं हूँ। इस समय आपको अख़बार वह दे जो आपका दुश्मन हो।

रूपरानी—यह आपकी ज़्यादती है।

मैं—चलो, ज़्यादती ही सही। मगर इस समय अख़बार न मिलेगा।

रूपरानीने अपना हाथ पीछे हटा लिया और अपना सिर गाड़ीकी

दीवारके साथ लगाकर बोली—बहुत अच्छा साहब, न दीजिए। अब आपसे झगड़ा कौन करे ?

अब मेरे लिए मैदान साफ़ था। कुछ मिनट चुप रहा और सोचता रहा कि बातचीत कहाँसे शुरू करूँ। आख़िर मुझे रास्ता मिल गया। बोला—यह महताबरायको क्या हो गया ? हर किसीसे लड़ता है, सीधी बात करो तो भी काटनेको दौड़ता है !

रूपरानीने दिलको छेद डालनेवाली आँखोंसे मेरी ओर देखा, फिर ठंडी आह भरकर बोली—मालूम होता है, वह महताबराय ही नहीं रहा, पहले कैसा मौजी जीव था,—बात-बातपर मुस्कराता था, बात-बातपर हँसता था।

मैं—अब चौबीस घंटे उदास रहता है। न किसीसे हँसता है, न बोलता है।

रूपरानी—बिल्कुल बदल गया।

मैं—(दुःख प्रकट करते हुए) कुछ बीमार तो नहीं है ? ज़रूर बीमार होगा; नहीं तो, आदमी इतनी जल्दी कैसे बदल जाए। उसकी इस काया-पलटपर सारा कालिज हैरान है। आपसे बोल-चाल है, या आपसे भी बन्द हो गई ?

रूपरानीके गोरे मुँहपर दुःखके काले बादल-से छा गए ! कुछ देर चुपचाप गाड़ीके बाहर अँधेरेकी तरफ़ देखती रही। इसके बाद उसने ऐसी आह भरी जो छातीसे नहीं, पेटसे उठती मालूम होती थी और कहा—मुझसे भी नहीं बोलते !

अब बात-चीत ऐसी जगह पहुँच चुकी थी जो बहुत नाजुक थी। मैंने एक एक शब्दको तोल कर कहा—हमने तो सुना था, कि आपके पिताजीने.....

इसके आगे मेरी ज़बान न बोल सकी। वाक्य अधूरा रह गया, मगर मतलब अधूरा न था।

रूपरानीके मुँहपर दुःखकी छाया छा गई। फ़र्शकी तरफ देखते हुए बोली—मिस्टर निगम, मेरा ख़्याल है, इस प्रकरणको यहीं समाप्त कर दिया जाए।

मैं—मुझे खेद है कि आपको इससे कष्ट हुआ। लेकिन....मैं यह कहना चाहता हूँ....कि....अगर आपको....मेरा मतलब है, आपत्ति न हो, तो मैं....यानी अपने बारेमें....कुछ....दो-चार शब्द कहूँ?

रूपरानीने अपनी रिस्ट-वाचको कलाईपर ठीक किया और कहा—कहिए।

मैं—(रुक-रुककर) आप बुरा तो न मानेंगीं?

रूपरानी—अब इसके बारेमें मैं क्या कहूँ,—अगर बात बुरा माननेवाली न होगी तो बुरा न मानूँगी। मगर मालूम होता है, कोई खास बात है!

मैं—खास बात न होती तो इतनी भूमिकाकी क्या आवश्यकता थी?

रूपरानीने उत्तर न दिया।

मैं—मेरे जीवन और मृत्युका सवाल है।

रूपरानीने अबके भी उत्तर न दिया।

मैं—तो आज्ञा है, कहूँ?

रूपरानीका मुँह लज्जाकी लालीसे तमतमा रहा था। काँपते हुए होठोंसे उकताए हुए स्वरमें बोली—अब एक बार तो कह दिया कि कहिए, और कितनी बार कहूँ?

मैंने अपने दिलमें लम्बा-चौड़ा वक्तव्य तैयार कर रक्खा था। सोचता था, यहाँसे शुरू करूँगा, फिर यह कहूँगा, फिर यहाँपर पहलू बदलूँगा, इसके बाद अपनी बेचैनीका हाल वर्णन करूँगा और उसके बाद उसके पाँवपर सिर रख दूँगा। लेकिन भगवान जाने, उस समय मुझे क्या हो गया! मेरे मुँहसे केवल यही चार शब्द निकले, 'मैं आपको चाहता हूँ।' विद्यार्थी जानता सब कुछ था, मगर परीक्षाके समय उसकी ज़बानसे एक ही वाक्य निकल सका, 'मैं आपको चाहता हूँ।'

यह कहते कहते मेरी आँखें नीचे झुक गईं।

थोड़ी देर बाद मैंने सिर उठाकर रूपरानीकी तरफ़ देखा—वह मेरे सिरके ऊपर लकड़ीकी दीवारकी ओर ऐसे ही बिना किसी मतलबके देख रही थी। मगर उसके विचार जाने कहाँ थे।

अब मैंने अपने शरीर और आत्माकी सारी शक्तियोंको इकट्ठा किया और जो कुछ पहले एक वाक्यमें कह चुका था, अब उसकी व्याख्या करने लगा—मैं सोता हूँ तो तुम्हारे सुपने देखता हूँ, जागता हूँ तो तुम्हारे बारेमें सोचता हूँ! कालिजमें तुम दिखाई दे जाती हो तो कोई खजाना मिल जाता है.....

सहसा रूपरानी खड़ी हो गई और बोली—मुझे शोक है, मेरे मनमें आपके लिए इस तरहके भाव नहीं हैं।

मेरे दिलपर किसीने हथौड़ा मार दिया। बल्कि अगर कोई हथौड़ा मार देता तब भी मुझे इतना कष्ट न होता जितना रूपरानीके उत्तरसे हुआ। देखते देखते मेरी आँखोंमें आँसू भर आए। निराशाके क्रोधसे बोला—क्या मैं महताबरायसे भी बुरा हूँ। आख़िर उसमें क्या बात है जो मुझमें नहीं?

उस समय जोशमें यह शब्द बक गया था। मगर आज सोचता हूँ तो मुझे आप आश्चर्य होता है कि उस समय मुझे क्या हो गया था! कहाँ मैं, कहाँ महताबराय? जमीन-आसमानका फर्क था। वह सज्जनता, वह योग्यता, वह नेकदिली मुझे छू भी नहीं गई। मैं उसके सामने एकदम नगण्य हूँ। मगर उस समय मैंने कह दिया—आखिर उसमें क्या बात है जो मुझमें नहीं?

रूपरानी मेरी अदूरदर्शितापर मुस्कराकर बोली—उनमें एक बात तो यह है कि वे इस बार भी यूनिवर्सिटी-भरमें अव्वल रहेंगे। आप शायद पास भी न हो सकें।

मैं—यूनिवर्सिटी-भरमें अव्वल रहना खेल-मज़ाक नहीं है। यों कोई गप्पें मारता फिरे तो उसे कौन रोक सकता है? अपने मुँहसे जो कुछ चाहे कह ले।

रूपरानी—कहते हैं अव्वल न रहा तो नाम बदल देना।

मैं—उस समय बग़लें झाँकने लगेंगे, आँखें न मिलाएँगे।

रूपरानी—यह आपका वहम है। उनके लिए ज़रा भी मुश्किल नहीं। आपमें यह आत्म-विश्वास है? कहिए 'मैं अव्वल रहूँगा?'

मैं—अगर आप आशा दिलाएँ, तो मैं भी जान लड़ा दूँ। अव्वल रहना क्या मुश्किल है?

रूपरानीने कुछ देर सोचकर कहा—चलो, अगर आप यूनिवर्सिटी-भरमें अव्वल रह जाएँ, तो मुझे इन्कार न होगा।

आशाका हरा-भरा मैदान बिल्कुल मेरे सामने आ गया। बोला—आपके पिताजी तो आनाकानी न करेंगे?

रूपरानी मुस्कराई और बोली—अब मैं उनकी तरफ़से क्या कह सकती हूँ ? मगर ख़ैर, उनको भी मना लूँगी ।

मैं—तो लिख रखिए मैं यूनिवर्सिटीमें अव्वल रहूँगा ।

डेढ़ घंटेके बाद जब गाड़ी लखनऊ पहुँची, तो मेरी दुनिया ही बदल चुकी थी । अब हरएक चीज़ हँसती, मुस्कराती, नाचती हुई दिखाई देती थी ।

१०

मगर थोड़े दिनों बाद यह हँसने, मुस्कराने और नाचनेवाली दुनिया दूर भागने लगी । किताबें लेकर बैठता तो एक सागर सामने आ जाता जो मेरे और मेरी आशाओंके बीच गरजता था । जहाँ तक नज़र जाती थी पानी ही पानी था । आशाकी हरी-भरी भूमि कभी बहुत दूर,—बहुत फ़ासलेपर दिखाई देती थी, कभी निराशाके उस अथाह समुद्रमें डूब जाती थी । कुछ महीनोंके बाद मुझे निश्चय हो गया कि मेरा यूनिवर्सिटीमें अव्वल रहना ख़ामख़्याली है । बल्कि कभी कभी तो मुझे सन्देह होता था कि मैं पास भी न हो सकूँगा । रूपरानी जानती थी कि यह नालायक है, बातें कर सकता है, मेहनत नहीं कर सकता । इसीलिए मेरे सामने ऐसी कड़ी शर्त रख दी । मैं पागल था जो उसकी चालको न समझा । समझदार लड़की है, कैसी सफ़ाईसे टाल गई !

इसपर भी मैंने हिम्मत न हारी और मेहनत करता रहा । किनारा दूर था, पानी गहरा था, दम फूल गया था, मगर तैराक फिर भी हाथ-पाँव मार रहा था । सोचता था कि शायद बच जाए, शायद कोई लहर किनारेकी तरफ़ धकेल दे, शायद कोई सहारा मिल जाए ।

जीवन आशाके कच्चे धागेके साथ बँधा रहता है, इसका मुझे इसी समय अनुभव हुआ। कुछ ही दिनों बाद मेरी दशा बदल गई। अब मुझे खाने-पीनेकी सुध न थी, खेलने-कूदनेकी सुध न थी, नहाने-धोनेकी सुध न थी, और इतना ही क्यों, मुझे कपड़े बदलनेकी भी सुध न थी। दिन-रात पढ़ता रहता था। असम्भव था कि इतने परिश्रमका असर मेरे स्वास्थ्यपर न पड़ता। आँखें अन्दरको धँस गई, चेहरा पीला पड़ गया। माता-पिताने यह देखा तो डर गए। वे कहते थे, तुझे पढ़नेकी ज़रूरत ही क्या है? तेरे खानेको बहुत है। कालिज छोड़ दे और पहाड़पर चला जा। लेकिन मेरे सिरपर तो दूसरी धुन सवार थी। अपने स्वास्थ्यको दिनोंदिन ख़राब होते देखता था और फिर भी उसका ख़्याल न करता था। यहाँ तक कि मुझे हल्का हल्का बुख़ार रहने लगा। मगर मैंने फिर भी परवाह न की। अपनी मृत्युको धीरे धीरे अपनी तरफ़ बढ़ते देखता था और घबराता न था, बल्कि उल्टा मुस्कराता था। जो आदमी आप मरनेको तैयार हो जाए, उसे मौतका क्या डर?

आख़िर एक दिन महताबरायने मुझे एक बाग़में आ पकड़ा और पूछा—यह तुमने मरनेपर क्यों कमर बाँधी है? अगर इसी तरह पढ़ते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब तुम अपने आपको तपेदिक़के पंजेमें पाओगे।

जब हमारा शरीर कमज़ोर होता है तो हममें किसीसे आँखें मिलानेकी हिम्मत नहीं रहती। दूसरोंकी ओर देखते भी हैं तो संकोच और शर्मसे। उन दिनों मेरी भी यही दशा थी। मैंने झेंपकर महताबरायकी तरफ़ देखा और किताब बन्द करके कहा—तपेदिक़ क्यों हो जाएगा?

महताबराय—ज़रा अपना मुँह तो शीशेमें देखो। हड्डियाँ निकल आई हैं।

मैं—वाह! मैं तो समझता हूँ, मोटा हो गया हूँ। कहते हैं, हड्डियाँ निकल आई हैं!

महताबराय—रंग भी पीला पड़ गया है। वह पहली बात कहाँ? सेबकी तरह लाल था।

यह कहते कहते वह मेरे पास घासपर बैठ गया और मेरी किताबोंको उलट-पुलटकर देखने लगा।

मैं—अब भी मेहनत न करूँ तो और कब करूँगा? परीक्षा तो सिरपर आ गई। स्वास्थ्यका क्या है, आज ख़राब है कल ठीक हो जायगा।

महताबरायने मेरी किताबें उठाकर एक ओर रख दीं और मेरे पास खिसककर कहा—मेहनत करो, इससे तुम्हें कोई नहीं रोकता। मगर भाई, अपने स्वास्थ्यका भी तो ध्यान रक्खो। जितनी मेहनत तुम कर रहे हो उतनी मेहनत सारे कालिजमें कोई नहीं कर रहा है।

मैं—यह परीक्षाकी बाज़ी नहीं, प्यारकी बाज़ी है। अव्वल न रहा तो जीवन-भर रोता रहूँगा।

महताबराय—अरे तो क्या यह सच है? सुना मैंने भी था, लेकिन विश्वास न आता था। मैं समझता था, किसीने गप उड़ा दी है।

मैं—गप नहीं, सच बात है भाई! अब तो बाज़ी लग गई।

महताबराय—यह लड़की तुम्हारी जान लेकर रहेगी। आज जाकर उसकी ऐसी ख़बर लेता हूँ कि याद ही करेगी।

मैं—क्या कहोगे?

महताबराय—अब तुम्हें क्या बताऊँ क्या कहूँगा? ऐसा फटकारूँगा कि इतनासा मुँह निकल आएगा। रोने लगेगी। तुम्हारे पास आकर क्षमा माँगेगी! अपने आप कह देगी कि तुम इतनी मेहनत न करो। यूनिवर्सिटीमें अव्वल रहकर क्या बनाओगे, छोड़ो!

मैंने कुछ देर सोचा। ख्याल आया: अगर यह हो जाए तो क्या कहना! जान छूट जाएगी! लेकिन फिर ख्याल आया: अब क्या बार बार इसीसे सहायता लेता रहूँगा। सोया हुआ आत्म-सम्मान उठकर बैठ गया। धीरेसे बोला—तुम्हारी सहानुभूतिके लिए धन्यवाद! मगर यह बात मुझे पसन्द नहीं। अब तो जो बाज़ी लग गई, लग गई।

महताबरायने ठंडी आह भर कर मेरी ओर देखा और फिर कहा—यह काम जितना आसान तुमने समझ रक्खा है, उतना आसान नहीं है।

मैं—मगर आख़िर जो अव्वल रहेगा, वह भी तो आदमी ही होगा। कोई देवता तो न होगा।

महताबराय किसी गहरे विचारमें मग्न हो गया। सोचता था, क्या हो सकता है। थोड़ी देर बाद उसके मुँहपर चमकसी दिखाई दी। मुस्कराकर बोला—मैं भी कैसा मूर्ख था जो इतनीसी बात भी न सूझी! लो तुम इतनी मेहनत करना छोड़ दो और अपने स्वास्थ्यका ख्याल करो। और मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि फिर भी तुम यूनिवर्सिटी-भरमें अव्वल रह जाओगे।

मेरा मुँह आश्चर्यसे खुला रह गया—वह कैसे?

महताबराय—अब यह न पूछो। (व्यंगसे) कोई अनहोनी बात होगी, कोई देवता आकर तुम्हें सब कुछ बता जायगा, या तुम्हारा

परचा अपने आप लिखता जाएगा। तुम्हें मालूम भी न होगा कि क्या हो गया, और तुम अव्वल रह जाओगे।

मैं—हँसी कर रहे हो मुझसे!

महताबराय—तुम्हारे सिरकी कसम, हँसी नहीं करता। तुम आजसे निश्चिन्त हो जाओ।

मैं—और अगर परीक्षामें फ़ेल हो गया तो—

महताबराय—मुझे गोली मार देना।

मैं—मं यूनिवर्सिटी-भरमें अव्वल रहना चाहता हूँ, इतना सोच लो। यह मेरे जीवनकी सबसे बड़ी अभिलाषा है।

महताबराय—भगवानकी राहें न्यारी हैं। उसीपर भरोसा रक्खो।

मैं—यह नहीं। साफ साफ कहो, क्या करोगे?

महताबरायने मेरे कानमें कुछ कहा और फिर हँसा। मगर मैं सन्नाटेमें आ गया। वह सज्जन है, यह मैं जानता था, मगर मेरे लिए यहाँ तक जानेको तैयार हो जाएगा, इसका मुझे गुमान भी न था। आत्म-सम्माननने उठकर आँखें मलीं, अंगड़ाइयाँ लीं और फिर सो गया।

मैंने पढ़ना-लिखना छोड़ दिया और निश्चिन्त हो गया। शामके आठ बजे सोता था, सुबहके नौ बजे उठता था। रूपरानी मेरी ओर देख देख कर मुस्कराती थी, मानो कहती थी कि तुम ज़रूर अव्वल रह जाओगे? कभी कभी सन्देह होता था कि फ़ेल हो जाऊँगा। हो सकता है, महताबराय ठीक समयपर धोखा दे जाए। लेकिन फिर ख़्याल आता: महताबराय ऐसा आदमी नहीं। उसके बारेमें ऐसा सोचना भी उसपर अन्याय करना है। जो कहता है, करता है।

प्रोफ़ेसर कहते थे : बस बड़ी मेहनत करने चले थे, चार ही दिनमें जोश ठंडा पड़ गया ! अजी जनाब, हम तो पहले ही जानते थे, कि यह रोग अमीरोंके बसका नहीं ! जिनके बापदादा खानेको छोड़ जाएँ उन्हें तकलीफ़ें उठानेकी क्या ज़रूरत है ? लड़के कहते थे : तुमने बहुत अच्छा किया जो समयपर सँभल गए, नहीं कोई रोग सहेड़ लेते । रूपरानी तो तुम्हें कत्ल करनेपर तुली हुई थी । तुम्हारे लिए सुन्दर लड़कियोंकी क्या कमी है, चाहो तो दर्जनभर ब्याह कर लो ।

लेकिन जब परीक्षा-फल निकला तो सब हैरान रह गए,—मैं यूनिवर्सिटीमें अव्वल था !

सारे शहरमें शोर मच गया । प्रोफ़ेसर और विद्यार्थी सुनते थे और आश्चर्य करते थे । कहते थे : यह तो चमत्कार हो गया । कोई आकर हमसे कहता कि ताजबहादुर यूनिवर्सिटीमें अव्वल रहा है, तो हम उसपर विश्वास ही न करते । समझते उसने पढ़नेमें भूल की है । कुछ लोग कहते : साहब, यह तो छिपे रुस्तम निकले । हमारा ख्याल था, पास भी न होंगे, यह अव्वल रह गए । महताब रायपर सबको आशा थी, मगर वह साधारण नम्बर लेकर पास हुआ । बल्कि कुछ नम्बर और कम होते तो पास भी न होता । लोग कहते : उसे घमंड खा गया । कुछ कहते : पहले योग्य होगा, लेकिन अब तो रूपरानीके रूपका शिकार था । एक काम हो सकता है : पढ़ाई या प्रेम । दोनों काम एक साथ कभी नहीं होते ।

मैं यह सुनता था और कुढ़ता था । मुझे रहरहकर उसपर दया आ रही थी । कभी कभी यह भी ख़्याल आता था कि सारा भेद खोलकर

रख दूँ और उसका सम्मान बचा लूँ। लेकिन फिर साहस छूट जाता था। सारा दिन बधाइयाँ देनेवालोंका ताँता बँधा रहा। कालिजके सभी विद्यार्थी और प्रोफ़ेसर आए, लेकिन रूपरानी और महताबराय न आए, यद्यपि मैं उन्हींके लिए व्यग्र था। आख़िर रातके नौ बजे मेरा गला छूटा और मैं महताबरायसे मिलनेके लिए उसके घरकी ओर चला,—गिरता हुआ, लड़खड़ाता हुआ, पग-पगपर हिच-किचाता हुआ।

लेकिन वह मकानपर न था। उसकी माँ रो रही थी और रूपरानी उसे चुप करा रही थी। मैं अवाक् होकर उलटे पाँव लौट आया और अपने पलंगपर गिरकर सोचने लगा : यह क्या हो गया?

११

रूपरानी :

मेरा ब्याह हो गया, लेकिन मैं खुश न थी। वह मुझे चाहते थे, मेरे पाँवतले आँखें बिछाते थे, मुझसे पूछे बिना कोई काम न करते थे। उनके घर जाकर मुझे किसी चीज़की कमी न रही। असम्भव था कि मैं कोई चीज़ माँगू और वह मुझे न मिले। सास-ससुर दोनों मेरी बलाएँ लेते थे। कहते थे : यह बहू नहीं साक्षात् लक्ष्मी है। ऐसा आराम रानियोंको राजमहलमें भी न मिलता होगा। उन्होंने मोटरोंकी दूकान खोल ली थी। हजारोंकी आमदनी थी। मगर मैं फिर भी खुश न थी। मुझे अब भी रह रहकर महताबरायकी याद सताती थी। भगवान जाने कहाँ है? किस हालतमें है? क्या करता है?

परीक्षा-फल निकलनेके बाद उसने किसीको मुँह नहीं दिखाया। सोचता होगा : लोग क्या कहेंगे? उसकी बूढ़ी माँ हर समय रोती रहती थी। जिस बेटेपर इतना आशा थी वही छोड़ गया।

उन्होंने उसके बीस रुपए महीना बाँध दिए थे। मुझसे कहते : यह मेरे मित्रकी माँ है। अब उसकी प्रशंसा करते न थकते थे। कहते थे, मैंने उसे बहुत देरमें पहचाना। एक दिन कहने लगे, मिल जाए तो उसे अपनी दूकानका मैनेजर बना दूँ। हज़ार रुपया महीना माँगे, तब भी इनकार न करूँ। वह आदमी नहीं, हीरा है। मरता मर जाएगा, एक पैसेकी बेईमानी न करेगा। ऐसे आदमी इस दुनियामें कहाँ? मैं यह सुनती थी और मेरी छातीमें एक धुआँ-सा उठता था—हाय महताबराय, तुम कहाँ चले गए? मुझे इतना चाहते थे, जाते समय एक बात भी न की! केवल इसलिए कि परीक्षामें अच्छे नम्बर न लिए। कभी ख़्याल आता कि अब तो भगवान् कभी उन्हें मेरे सामने न लाए वरना मेरा दिल डाँवाडोल हो जाएगा। इसी तरह कई वर्ष बीत गए, और मैं एक लड़कीकी मा बन गई।

प्रातःकाल था। वे मेज़पर बैठे चाय पी रहे थे। मैं लड़कीको गोदमें लिये उनके पास गई और बोली—अब इसका कुछ नाम भी रक्खा जायगा या नहीं?

उन्होंने टोस्टका टुकड़ा मुँहमें डालते हुए जवाब दिया—कोई ख़ूबसूरतसा नाम सोचो।

मैं—अब क्या बताऊँ? मेरा बताया हुआ नाम तो आपको पसन्द ही नहीं आता। कितने नाम बता चुकी—प्रभा, कमलिनी, शान्ति, फूलवती, प्रेमा, चाँदरानी, कुसुम, गीता।

वे—(चायका घूँट पीकर) यह सब साधारण नाम हैं, कोई और सोचो, कोई नयासा नाम !

मैंने लड़कीके सिरपर रूमाल बाँधते हुए जवाब दिया—अब तुम्हारी बेटीके लिए कोई नाम आसमानसे उतरेगा। और क्या ?

यह कहकर मैंने बेटीके फूले हुए गालको थपथपाया और कहा—क्यों बेटा, तेरा नाम बिल्ली रख दें ? बिल्लीकी तरह देखती है ना ?

वह चाय पीकर उठ बैठे और टाईकी गिरह बाँधते हुए बोले—अच्छा नाम पसन्द किया तुमने !—बिल्ली ! कोई प्यारासा नाम सोचो।

मैं—(बनावटी क्रोधसे) मुझे माफ़ करो बाबा ! अब मैं कोई नाम रखनेकी सलाह न दूँगी। तुम ही बताओ। आँखें बन्द करके मँजूर कर लूँगी।

वे—अगर तुम हमारी मान लो, तो हम बता दें।

मैं—हाँ बताइए ! देखूँ कैसा नाम है, जिसके सामने कोई नाम पसन्द ही नहीं आता श्रीमानजीको।

उन्होंने कुछ क्षण मेरी ओर देखा और रुक रुक कर, जैसे वे इस नामके असरको दुगुना करना चाहते हों, कहा—इसका..... नाम महताबकुमारी रख दो।

मेरे दिलपर किसीने घूँसा मार दिया। बोली—इस नाममें क्या ख़ूबी है ? मुझे तो यह नाम मर्दाना-सा मालूम होता है,—न लोच, न मिठास, न मोहिनी।

वह टाईकी गिरह बाँधकर मेरे समीप आ गए और अपना हाथ मेरे कंधेपर रखकर मिन्नतभरे स्वरमें बोले—मं महताबरायके नामपर इसका नाम रखना चाहता हूँ। वह मेरा सबसे बड़ा हितैषी है।

मैंने उन्हें पकड़कर मेज़के पास एक कुरसीपर बैठा दिया, आप उनके सामने दूसरी कुरसीपर बैठ गई और लड़कीको कंधेसे लगाकर बोली—उन्होंने आपका क्या उपकार किया ?—कोई भी नहीं। उलटा आपने उनका उपकार किया है। अब भी उनकी माकी पालना कर रहे हैं।

वे—नहीं रूप, उसने मुझे जीवन दिया, उसने मुझे तेरा प्यार दिया, उसने मुझे सम्मान दिया। मुझमें यह ताकत नहीं कि उसका उपकार उतार सकूँ।

मेरे दिलमें एक अजीब-सा ख़्याल पैदा हुआ। मैंने उनकी आँखोंमें आँखें डाल दीं और कहा—जीवन ! मेरा प्यार ! सम्मान ! यह क्यों कर, ज़रा खोलकर कहिए।

मगर अब वे पछताते थे कि मुँहसे क्या निकल गया। वे चाहते थे, किसी प्रकार मैं उनसे इसके बारेमें प्रश्न न करूँ, ताकि जिस बातको वे छिपा छिपाकर रखना चाहते थे और जो जोशकी दशामें उनके मुँहसे बाहर निकलनेको आकुल-व्याकुल हो गई थी, वह उनके दिलहीमें छिपी रहे। मगर मैं मानती न थी। कहती थी बताओ, नहीं आज दूकानपर न जाने दूँगी। मैंने तुमसे कभी कोई बात नहीं छिपाई, तुम क्यों छिपाते हो ? या कहो, तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं, या जो बात है साफ़ साफ़ कह दो। और क्या ? एक तरफ़ चलो, यह नहीं कि इधर भी और उधर भी।

वे बोले—अब तुम तो हाथ धोकर पीछे पड़ गईं।

मैं—मैं तुम्हारी स्त्री हूँ। अगर उसने तुमपर उपकार किया है, तुम्हें जीवन दिया है, तुम्हारी इज्जत बचाई है, तो मुझे भी ऐसे

महात्माका कृतज्ञ होना चाहिए या नहीं। आप न बताएँगे तो संभव है, कभी मिल जाएँ और मैं उनका धन्यवाद भी न करूँ; तो वह अपने दिलमें क्या कहेंगे? यही कि कैसी कृतघ्न है, मैंने इसके पतिके प्राण बचाए हैं, इसे इसकी परवाह ही नहीं। लो अब झटसे बता दो, तुम्हें भी देर हो रही है।

वे—मैं बतानेको तो तैयार हूँ, मगर मुझे डर है कि तुम मुझसे घृणा करने लगोगी।

मैं—यह तुम्हारा वहम है।

वे—मेरा ख़्याल है, मैं तुम्हारी आँखोंमें सदाके लिए गिर जाऊँगा।

मैं—दुनियामें ऐसी कोई बात नहीं जो अब तुम्हें मेरी आँखोंमें गिरा सके।

वे—मैं चाहता तो न था कि तुमको अपने जीवनकी यह रहस्यमयी घटना सुनाता। मगर जब तुम नहीं मानतीं, तो क्या करूँ? लो सुनो—

१२

मैंने नौकरको बुलाकर लड़कीको बाहर भेज दिया और आप दत्तचित्त होकर सुनने लगी।

उन्होंने कुरसीके साथ पीठ लगा ली और सिगार सुलगाया। इसके बाद कश लगाकर धीरे धीरे कहने लगे—रूप! तुम्हें याद है, तुमने कहा था, यूनिवर्सिटीमें अव्वल रहो तो मैं तुमसे ब्याह करूँगी, अन्यथा नहीं। तुम्हें यह भी याद है, मैंने तुम्हें पानेके लिए अठारह अठारह घंटे पढ़ना शुरू कर दिया था। मैं अमीर था, मेरा मिज़ाज अमीराना था; थोड़े ही दिनोंमें बीमार पड़ गया। डाक्टर कहते थे,

इसे तपेदिक़ हो जानेका भय है। मा-बाप कहते थे, पढ़ना छोड़ दो। मगर मुझे यह मंजूर न था। मैं जानता था, मेरी मौतका दिन निकट आ रहा है। मुझे मरना मंज़ूर था, मगर अपमानित होकर और तुमसे हाथ धोकर जीता रहना मंज़ूर न था। और यूनिवर्सिटीमें अव्वल रहना मेरे लिए इतना ही कठिन था जितना गौरीशंकरकी चोटीपर जा चढ़ना। उस समय मौत या निराशा मुझे सामने खड़ी दिखाई देती थी। बचावका कोई रास्ता न था। चारों ओर अँधेरा था।

ऐसे समयमें महताबराय आगे बढ़ा। छः सालका सुदीर्घ समय बीत गया है। मगर मुझे वह दिन अभी कलका दिन मालूम होता है। मैं कालिजके साथ जो बाग़ है, उसमें घासपर बैठा किताबोंके साथ सिर फोड़ रहा था। महताबराय आकर मेरे पास बैठ गया और बोला, यह तुम आत्म-हत्या क्यों कर रहे हो? मैंने उससे अपनी कठिनाइयाँ कहीं। मैंने कहा, मैं या तो अव्वल रहूँगा या इसी कोशिशमें जान दे दूँगा। मेरा संकल्प सुनकर उसे दुख हुआ। मैंने कालिजमें उसका तिरस्कार किया था, मैंने उसे गालियाँ दी थीं, हानि पहुँचानेकी चेष्टाएँ की थीं; मगर फिर भी वह चाहता था, किसी तरह मेरी जान बच जाए। आखिर उसने कहा, तुम पढ़ना छोड़ दो, तुम फिर भी अव्वल रहोगे। मुझे हैरानी हुई। मैं समझ न सकता था कि यह कैसे हो जायगा? महताबरायने कहा, परीक्षाके अपने परचोंपर मैं तुम्हारा नम्बर लिख दूँगा, तुम मेरा नम्बर लिख देना। मेरा मन इस प्रस्तावका विरोध करता था। मेरा अंतःकरण मुझे धिक्कारता था, मगर मैंने तुम्हारे लोभमें फँसकर इस उपायको भी मंज़ूर कर लिया। और यह है वह भेद जिसे आज

तक मेरे और महताबरायके सिवाय दुनियाका कोई तीसरा आदमी नहीं जानता था। आज इस घटनाकोयाद करता हूँ तो मेरा सिर लज्जासे झुक जाता है। अगर वह यह बलिदान न करता, तो उसके लिए प्रेम, प्रतिष्ठा, शान-शौकत सब कुछ था। मगर मेरे लिए उसने अपना सब कुछ निछावर कर दिया। सचमुच वह आदमी न था कोई देवता था। और मैं उसके सामने पशु था, बल्कि पशुसे भी बुरा। भगवान जाने आज वह कहाँ है? अगर मुझे मिल जाए तो सिर आँखोंपर बिठा लूँ।

यह कहते कहते उनकी आँखोंमें आँसू आ गए। बलिदान और बहादुरीकी यह अलौकिक कहानी सुनकर मेरे शरीरके रोंगटे खड़े हो गए। मैं महताबरायको योग्य और श्रेष्ठ समझती थी, मगर वह इतना वीर और महान् होगा, यह ख्याल न था। मेरे मनमें उसका प्रेम सो गया था, मित्रताकी यह अमर घटना सुनकर फिर जाग उठा। मैं उसके प्रेमके लिए छटपटाने लगी।

मुझे रह रहकर ख्याल आता था कि मैं ऐसे महापुरुषकी स्त्री क्यों न हुई। उनके साथ मुझे फूसके झोपड़ेमें भी महलका-सा आराम मिलता। मैं भूखी प्यासी रहकर भी खुशीसे चहचहाती, नाचती, गाती फिरती।

१३

अब मेरी दृष्टिमें अपने पतिकी ज़रा भी इज़्ज़त न थी। मैं समझती थी, यह आदमी नहीं कसाई हैं। बल्कि उससे भी बुरे। वह जानवरोंको मारता है, इन्होंने एक आदमीको क़त्ल किया है। और आदमी भी वह जो इनका मित्र था, इन्हें चाहता था, इनके लिए सब कुछ करता था। वे मेरे समीप आते तो मेरा शरीर काँप जाता था।

मैं चाहती थी, मैं उनसे कहीं दूर भाग जाऊँ। किसी ऐसी दुनियामें जहाँ वह न हों।—मुझे अपने धर्मका ख़्याल न रहा हो, यह बात न थी। मैं अपने दिलको समझाया करती थी, मगर दिल समझता न था। मैं कहती, ये मेरे पति हैं। दिल कहता, इससे क्या होता है? इन्होंने जो पाप किया है, वह कम नहीं है। मैं कहती, बचपनमें हर किसीसे भूल हो जाती है। दिल कहता, यह भूल न थी, मित्र-घात था।

वे मुझे यह घटना न सुनाते तो मेरे हृदयमें आग क्यों लगती? अब वे मुझसे क्षमा माँगते थे, अपने किएपर पछताते थे, मेरे जलते हुए दिलपर पानी छिड़कते थे। लेकिन इस पानीसे आग बुझती न थी उलटा और भड़कती थी। बोल-चाल भी बन्द हो गई। मेरा मुँह इधर, उनका मुँह उधर। दोनों एक ही घरमें रहते थे, एक ही कमरेमें सोते थे, मगर एक दूसरेसे बातचीत किए हफ़्तों बीत जाते थे। कभी बोलते भी तो सीधी तरह नहीं, एक दूसरेको सुनाकर। मैंने ऊँची आवाजसे कह दिया, 'खाना ठंडा हो रहा है, बादमें शिकायत होगी कि नौकर बेपरवाह हो गए हैं।' उन्होंने मुझे सुना कर कह दिया, 'यह कम्बख़्त किताब तो फिर भी पढ़ी जा सकती है, इतना तो देखना चाहिए कि सैरका समय हो गया है। शोफ़र हार्न बजा रहा है, यहाँ कोई सुनता ही नहीं।'

जब वे दूकानको चले जाते तो सोचती, आख़िर ऐसे कब तक निभ सकती है, आज आएँगे तो बुला लूँगी। मगर जब वे सामने आते तो फिर वही ज़हर चढ़ जाता। जी चाहता मुँह न देखूँ। औरोंका प्रेम मुँहपर जागता है, मेरा प्रेम पीठपर जागता था। उनके मुँहसे मालूम होता था कि वे भी बोलने-बुलानेके लिए व्याकुल हैं। कभी कभी बुलाने

भी लगते मगर फिर पता नहीं क्या सोचकर चुप रह जाते। शायद डरते हों कि मैं बोला तो यह दो-चार और सुना देगी। वे मुझसे बोलते न थे, लेकिन मेरा ख़्याल उसी तरह रखते थे। मुझे फल मिले या नहीं, मैं सैर करने गई हूँ या नहीं: इसकी पूरी पूरी ख़बर रखते थे।

एक दिन दो सखियोंके साथ सिनेमा देखने गई। जब खेल समाप्त हुआ और मैं बाहर निकली, तो शोफ़र मोटरमें न था। हमें चार-पाँच मिनट प्रतीक्षा करनी पड़ी, वह ज़रा चाय पीने चला गया था। पता नहीं उन्हें किसने बता दिया। बात साधारण थी, लेकिन दूसरे दिन उन्होंने शोफ़रको इतना डाँटा कि याद ही करेगा। वह मिन्नतें करता था, माफ़ियाँ माँगता था, कहता था, फिर ऐसी भूल कभी न होगी। मगर वे उसकी सुनते ही न थे। कहते थे—तू मोटर छोड़कर चला क्यों गया? अब वह तेरी इन्तज़ार किया करेंगी! उनकी दो सहेलियाँ साथ थीं, वह क्या कहती होंगीं? यही कि इनके नौकर भी खूब हैं; ये हार्न बजाती हैं, वह कहीं सैर-सपाटे करता फिरता है! तेरा क्या गया? नाक हमारी कट गई। नहीं बाबा! मुझे तेरे जैसे आदमियोंकी ज़रूरत नहीं। हिसाब चुकता करो और चलते बनो। तुम्हें नौकरियाँ बहुत, हमें नौकर बहुत।

मैं कमरेमें बैठी सुन रही थी। जब वे यहाँ तक पहुँच गए, तो मुझसे न रहा गया। आँगनमें आकर बोली—चलो! बेचारा माफ़ी माँग रहा है। अबके छोड़ दो।—(शोफ़रसे) फिर तो ऐसी भूल न करेगा? कानोंको हाथ लगा।

शोफ़रने कानोंको हाथ लगाकर कहा—बीबीजी, फिर ऐसी भूल हो जाए तो खाल उतरवा लेना!

मैंने दूसरी बार फिर सिफ़ारिश की—लो अब तुम भी माफ कर दो। आदमी है, गधा नहीं है। अब भूल न करेगा।

उन्होंने मेरी ओर देखा मगर आँखें न मिला सके। आग बुझ गई थी, लेकिन अभी तक राख गरम थी। बोले—अब भूल करेगा तो एक मिनटमें जवाब दे दूँगा। चलो, जाओ!

मैं कमरेमें लौट आई। शोफ़र बाहर चला गया तो वे भी कमरेमें आ गए और बोले—मेरा जी चाहता है, इसको कुछ इनाम दे दिया जाए। क्यों, तुम्हारा क्या ख्याल है, बोलो?

मैंने आश्चर्यसे उनकी ओर देखा। एक दूसरेसे बोलनेमें जो संकोच था, वह धीरे धीरे दूर हो रहा था।

वे फिर बोले—वह भूल न करता तो हमारी रूठी रानी क्योंकर मानतीं? उसने भूल की, हमारा काम बन गया।

मैंने बनावटी क्रोधसे कहा—चलो भागो यहाँसे! दूकानका समय हो गया है।

मगर वे मेरे पास आ गए।

पहले आग बुझी थी, अब राख भी ठंडी हो गई।

१४

ताजबहादुर :

संध्या समय हम मोटरमें सैरको निकले तो हमारी खुशीका ठिकाना न था। यह खुशी हमें आज कई दिनोंके बाद मिली थी।

रूपरानीका चेहरा भी चमक रहा था, बात-बातपर मुस्कराती थी। कल तक इसी चाँदपर कहर और क्रोधके बादल छाए हुए थे। कल तक

दुनियामें हवा ही नहीं थी, आज मैं पहाड़की चोटीपर चढ़ आया था। कलतक सिरपर एक तरहका बोझ-सा था, आज मैं हवामें तैर रहा था। कल बीमार था, आज स्वस्थ होकर चहकता फिरता था।

गोमतीके पास पहुँचकर हम मोटरसे उतर आए और धीरे धीरे टहलने लगे। यह वही स्थान था जहाँ पाँच-छः साल पहले महताबरायने आकर मेरी ओर सुलहकी बाँह बढ़ाई थी। मैं यहाँ प्रायः आया करता था। यहाँ आकर मेरी स्मृति हरी हो जाती थी। यहाँ मुझे महताबरायका गौरव जीता-जागता दिखाई देता था। यहाँ उसने मेरी ओर प्रेमके हाथ फैलाए थे! यहाँ उसने अपने आपको मित्रताकी वेदीपर कुरबान किया था!

एकाएक मैं चौंक पड़ा। आज वहाँ उसकी ख्याली नहीं असली तस्वीर मौजूद थी। वही चेहरा, वही आँखें, देखनेका वही देवताओंका-सा प्यारा तरीका। मैंने क्षण-भर उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा, और दूसरे क्षण मैं दौड़कर उससे लिपट गया और तीसरे क्षणमें हम दोनों हँस हँसकर रो रहे थे, रो रोकर हँस रहे थे, और रूपरानी पत्थरके बुतकी तरह हमारे सामने खड़ी हमें देखती थी, मगर मुँहसे बोलती न थी।

थोड़ी देर बाद जब दिलोंका गुबार निकल चुका, तो हम उसी जगह बैठ गए और बातें करने लगे।

सबसे पहले मैंने शिकायत की। कहा—बड़े कठोर हो। हमें कुछ कहा भी नहीं और ग़ायब हो गए! कहाँ थे, कैसे थे, क्या करते थे? सब कुछ बताओ।

महताबराय—(मुस्कराकर) पहाड़ोंकी ओर चला गया था। बड़े मज़ेमें था, सैर-सपाटे करता था।

रूपरानी—पहाड़ोंपर जाकर आदमी मोटे-ताज़े होते हैं या दुबले

पतले ? (इशारा करके) ज़रा मुँह देखो, ये पहाड़ोंसे आ रहे हैं ! अन्दर धँसी हुई आँखें, पिचके हुए गाल । जवानीमें बूढ़े हो रहे हैं, और फिर कहते हैं, पहाड़की सैर करता था !

मैं—रंग-रूप ही बदल गया है । क्या बीमार रहे हो ?

महताबराय—बिल्कुल नहीं । जो पहाड़ोंमें रहते हैं वे बीमार नहीं होते । तुम अपनी कहो, तुम्हारा क्या हाल है ?

मैं—हम खूब मज़ेमें हैं । देख लो, लाल हो रहे हैं । मगर भाई, तुमने तो हमें बिल्कुल ही भुला दिया !

रूपरानीने शिकायत-भरी निगाहोंसे महताबरायकी ओर देखा और कहा—हम तो हैरान थे कि भला आदमी ग़ायब कहाँ हो गया ? क्या एक चिट्ठी भी न लिख सकते थे ?—दोनों पहुँच जाते और ज़बरदस्ती खींच लाते ?

मैंने अनुमोदन किया—कोई दिन ऐसा न जाता था जब याद न करते हों ।

महताबराय—भाई, अब तुम विश्वास करो या न करो, मैं भी तुम्हें हर रोज़ याद करता था ।

रूपरानीने बात काटकर कहा—बिल्कुल झूठ !

बात साधारण थी, मगर मुझे बहुत बुरी मालूम हुई । ख्याल आया, रूपरानीको इस तरह बढ़-बढ़कर बातें बनानेकी क्या ज़रूरत है ? हम बातचीत कर रहे हैं, सुनती जाए ।

महताबराय—अब आप अगर मेरे बारेमें यह राय बना ही बैठे हैं तो दूसरी बात है । वरना सच बात वही है जो मैंने अभी अभी कही है ।

म—अरे यार, तुमने अपनी मा का भी ख़्याल न किया, हमारा क्या ख़्याल करोगे !

रूपरानीके चेहरेपर नाराज़गीके चिह्न ज़ाहिर हुए। मगर मैं खुश था कि मैंने उसपर ऐसी चोटकी है जिसका उसके पास जवाब नहीं।

महताबराय—मुझे पता लग गया था कि आपने उनके खाने-पीनेका प्रबन्ध कर दिया है, निश्चिन्त हो गया।

मेरी चुटकीका कैसा सुन्दर जवाब था! मैं अपने दिलमें कट गया और शर्मिन्दा होकर बोला—अच्छा, अब क्या इरादा है? यहीं रहोगे ना?

रूपरानी—(मुस्कराकर) रहेंगे कैसे नहीं, अब इन्हें जाने कौन देता है?

मुझे यह बात फिर चुभी।

महताबराय—मुझे आपके पास रहनेमें प्रसन्नता होती। लेकिन क्या करूँ, कलकत्तेमें एक सेठ साहबके लड़केको पढ़ानेकी नौकरी मिल गई है।

रूपरानीने मेरी ओर देखा, और मूक वाणीमें कहा, ये हमारे लिए वतन छोड़े जाते हैं!

मैं—तुम्हें नौकरीकी ज़रूरत ही क्या है? मेरे पास चले आओ। एक हज़ार रुपया महीना दूँगा।

महताबराय—अरे भाई, इस तरह कब तक गुज़ारा होगा! तुम्हारे दर्शन हो गए, यही बहुत है। अब जाने दो।

मैंने उसके कंधेपर हाथ रखकर कहा—मेरी मोटरोंकी ऐजेंसी है, उसका प्रबंध तुम संभाल लो। मुझसे अकेले सारा काम नहीं होता।

महताबराय कुछ देर गोमतीके पानीकी तरफ़ देखता रहा कि क्या जवाब दूँ। आख़िर बोला—नहीं भाईसाहब, मुझसे मोटरोंका काम नहीं हो सकेगा। एक लड़का है, उसे पढ़ाया और मज़ेसे घर चले गए।

रूपरानीने ठंडी आह भरी। उसके चेहरेका रंग देखकर मुझपर सारा भेद खुल गया।

अगर यह भेद मुझपर न खुलता तो मैं महताबरायको बाँधकर भी रख लेता। लेकिन अब मेरे दिलमें उसे रोकनेकी ज़रा इच्छा न थी। अपने घरके आँगनमें विषका बीज कौन बोए?

मैंने कहा—अच्छा, कोई अपना काम शुरू कर दो : कलकत्ता, बम्बई या मद्रासमें।

महताबरायने मेरी तरफ़ देखा और फिर मुस्कराकर जवाब दिया—रुपया कहाँ है?

मैंने जेबसे फौण्टेनपेन निकाला और बीस हज़ारका चेक काटकर उसको देते हुए कहा—रुपया यह है।

रूपरानीको मेरी उदारता देखकर आश्चर्य हुआ। लेकिन, वह यह न जानती थी कि मैं उसे लखनऊसे निकालनेके लिए इससे भी अधिक रुपया ख़र्च करनेको तैयार हूँ।

मगर महताबरायने यह चेक भी लौटा दिया और कहा—भाई, तुम्हारा धन्यवाद किस तरह करूँ! मगर मेरा दिमाग़ कारोबारमें नहीं चलता। सारा रुपया ख़राब हो जाएगा।

मेरा सिर लज्जासे झुक गया। मैं समझता था, महताबराय योग्यता और सज्जनताहीमें मुझसे आगे है, मगर अब मालूम हुआ कि वह अमीरीमें भी मुझसे बढ़ा हुआ है। उसे धनकी परवाह ही न थी, उसके लिए धनमें कोई आकर्षण ही न था, उसके ख़्यालमें धनकी कोई कीमत ही न थी! बीस हज़ार रुपया कम नहीं होता। इतनी रक़मके लिए दुनिया बड़ीसे बड़ी कुरबानी करनेको तैयार हो जाती है। मैंने दस दस रुपयोंके लिए सगे भाइयोंको खून-ख़राबा करते देखा है। मगर महताबरायको ग़रीब होनेपर भी बीस हज़ारकी रक़म

न हिला सकी। उसने हर क्षेत्रमें मुझपर विजय पाई थी, इस क्षेत्रमें क्योंकर हार जाता? मैंने उसकी महत्ताके सामने सिर झुका दिया। अब मेरे मनमें ज़रा भी संकोच न था। ख़्याल आया, यह आदमी मरता मर जाएगा, मगर किसीकी इज्ज़तपर हाथ न डालेगा। यह इसके लिए असंभव है। यह इतना नीचे जा ही नहीं सकता। यह आदमी नहीं, देवता है। बल्कि देवताओंसे भी बढ़कर। रूपका जादू उन्हें डगमगा सकता है, इसे नहीं डगमगा सकता। इसने अपने मनको जीत लिया है, इसने अपनी वृत्तियाँ बाँध ली हैं।

मैंने कहा—मालूम होता है, तुम मुझे अभी तक पराया ही समझ रहे हो?

महताबराय—(मुस्कराकर) इसका एक प्रमाण तो यही है कि कलकत्तेसे चलकर तुम्हें मिलने आया हूँ।

मैं—अगर अपना समझते तो इतना संकोच कभी न करते। आदमी संकोच ग़ैरोंसे करता है, अपनोंके मुँहसे तो ग्रास भी छीन-कर खा जाता है। मैंने दो बातें कहीं, तुमने दोनों नामंज़ूर कर दीं। इसका क्या मतलब है, क्यों रूपरानी, तुम ही बताओ?

रूपरानीके सिरसे साड़ी खिसक गई थी, उसे ठीक करते हुए बोली—इसका मतलब यह है कि इन्हें अब हमारे पास ही रहना होगा, और हम इनका कोई बहाना न सुनेंगे। कल इन्हें बाँधकर मोटरमें डालिए और दुकानपर ले जाकर दफ़्तरमें बैठा दीजिए। जो आदमी सीधी तरह न माने, उसका यही इलाज है।

मैं—लाख रुपयेकी बात कही तुमने! यही ठीक है।

रूपरानी—और कलकत्तेके उस सेठको लिख दीजिए कि अब

यह न आएँगे, अपने लड़केके लिए कोई और घरसे भागा हुआ बाबू ढूँढ़ लें।

महताबराय—अरे भाई, कहीं यह ग़ज़ब न कर देना! यहाँसे भी जाऊँगा, वहाँसे भी जाऊँगा।

रूप०—उनको ऐसा बेवकूफ़ कहाँ मिलेगा? दो रोटियाँ खिलाते होंगे, सारा दिन सिर खाते होंगे।

मैं—तभी तो यह चपाती-सा मुँह निकल आया है!

रूप०—परदेसके धक्के बुरे होते हैं। इसीसे बड़ोंने कहा है कि परदेसकी सारी रोटीसे देसकी आधी भली।

महताबराय—(मुस्कराकर) तो इसका यह मतलब है कि अगर वहाँ दो रोटियाँ मिलती थीं तो अब यहाँ एक ही मिलेगी! न भाई, एकमें तो मेरा पेट न भरेगा! इससे तो परदेसके धक्के ही भले!

मैं—मगर परदेसके धक्के वह खाए जिसे देसमें जगह न मिले। तुम्हारे लिए तो जान भी हाज़िर है।

महताबरायकी आँखोंमें आँसू भर आए। भर्राए हुए स्वरमें बोला—कलकत्तेमें ऐसी बात कहनेवाला कोई न था। यह प्यार, यह चाह, यह अपनापन परदेसमें कहाँ?

रूप०—इसीलिए ही न आप फिर वहाँ जाना चाहते हैं?

मैं—इसके चाहनेसे क्या होता है, अब यह हमारा कैदी है!

१९

महताबराय :

बल और शक्तिकी आज्ञा टालना आसान है, मगर प्यारकी आज्ञा टालना आसान नहीं। मुझे मानना पड़ा और ताजबहादुरकी नौकरी

करनी पड़ी। मुझे भय था कि चार ही दिनोंमें ताजबहादुरकी आँखें बदल जायँगीं। मालिक लाख दोस्त हो, फिर भी मालिक है। कौन जाने किस समय धौंस जमानेपर उतारू हो जाए? उसे मालिक बननेमें लाभ ही लाभ है, मित्र बननेमें हानि ही हानि, और व्यापारी कभी हानि नहीं चाहता। मगर ताजबहादुर पहले मित्र था, पीछे व्यापारी। बल्कि जहाँतक मेरा उसका संबंध था, वह सोलह आने मित्र था। मेरे मुकाबिलेमें उसे कारोबारकी ज़रा भी परवाह न थी। मैं दूकान लुटा देता, वह तब भी न बोलता। कब आता हूँ, कब जाता हूँ, क्या करता हूँ, इन बातोंसे उसे ज़रा भी सरोकार न था। वह चाहता था, मेरा मन मैला न हो, मुझे यह संदेह न हो कि मैं किसीकी नौकरी कर रहा हूँ। उसकी इन बातोंने मेरा मन मोह लिया। मैं नौकर होकर भी नौकर न था, वह मालिक होकर भी मालिक न था। दूकानका स्याह-सफ़ेद सब मेरे हाथमें था। वह आप दूकानपर आता ही न था।

मैं और मेरी माँ एक साफ़-सुथरे मकानमें रहते थे और खुश थे। मगर कभी कभी ऐसा मालूम होता था कि मेरे मनमें चोर है। यह चोर कभी दिलेर हो जाता था और मेरी आँखोंमें आ बैठता था। —कभी डर जाता था और दिलकी तहमें जा छुपता था। और यही चोर रूपरानीके पीछे भी लगा हुआ था। मैं सोचता था, क्या यह चोर हमारा संतोष न चुरा लेंगे? मैं हर समय होशियार रहता था, लेकिन जानता था कि अगर किसी समय ज़रा भी गाफ़िल हो गया तो चोर चोरीसे न रुकेगा।

मगर ताजबहादुर कुछ नहीं समझता था, न मेरी और रूपरानीकी

आँखें पहचानता था। हमपर उसे ज़रा भी संदेह न था। इतना भी न समझता था कि कभी इन्हें एक दूसरेसे प्यार था, और वह प्यार हवाके एक झोंकेसे फिर भी जाग सकता है। मैं अपनी ओरसे पूरा पूरा यत्न करता था कि रूपरानीके पास ज़्यादा न बैठूँ, मगर ताजबहादुरको इसका भी ख़्याल न था। समझता होगा, जो कुछ होना था हो चुका। अब क्या हो सकता है? स्त्री-पुरुष दोनों सुबहकी सैर करने जाते तो मुझे ज़बरदसती बसीट ले जाते। सिनेमाका प्रोग्राम बनता तो मैं साथ जाता। कहीं घूमने निकलते तो मुझे साथ लिए बिना न जाते। मुझे उनके साथ जानेमें संकोच होता था, उनको मुझे साथ ले जानेमें संकोच न था: जैसे मैं उनके घरका आदमी था, जैसे उनकी हरएक खुशी मेरे बिना अधूरी रहती थी। इसी तरह दिन गुज़रते गए, मैं दूकानपर काम करता गया, रुपया कमाता गया, उनके अंदर धँसता गया। मगर मेरा दिल अशांत था और यह अशांति दिनोंदिन बढ़ती जाती थी।

एक दिन मैं ताजबहादुरसे मिलनेके लिए उसके मकानपर गया तो ताजबहादुर घरपर न था। मैंने लौटना चाहा तो रूपरानीने रोक लिया। विवश होकर रुकना पड़ा मगर मेरा दिल धक धक कर रहा था।

रूपरानीने मुझे सोफ़ेपर बैठनेका इशारा किया और मुस्कराकर कहा—आप हमेशा उन्हींसे मिलने आते हैं। क्या मैं कोई नहीं हूँ?

मेरा दिल और भी ज़ोरसे धक धक करने लगा, सोफ़ेपर बैठ गया और बोला—यह आपकी ज़्यादती है। मैं अकेला उनसे नहीं

आप दोनोंसे मिलने आता हूँ। हाँ, जब कभी उनसे काम हो, तो दूसरी बात है।

रूपरानी—मैंने तो सदा यही देखा है कि जब आप आए, उनसे मिलने आए, मुझसे मिलने आजतक नहीं आए।

मैं—अब इसका क्या जवाब दूँ?

रूपरानी—(सामनेके सोफ़ेपर बैठकर) इसका जवाब हो ही नहीं सकता।

मैंने ज़मीनकी तरफ़ देखते देखते जवाब दिया—बात यह है कि दूकानपर काम बहुत रहता है।

रूप०—तो एक असिस्टेंट क्यों नहीं रख लेते? आदमी काम उतना करे जितना हो सके।

मैंने मुस्करानेका यत्न करते हुए कहा—अगर मैंने असिस्टेंट माँगा, तो भाई साहब मुझे भी जवाब दे देंगे। कहेंगे, चलते बनो।

रूप०—बिलकुल झूठ! वह ऐसे आदमी नहीं हैं।

मैं—आपके साथ न होंगे, हमारे साथ तो हैं।

रूप०—अच्छा! आप न कहें, मैं कहूँगी।

मैं—यह और भी बुरा! वह समझेंगे, मैंने कहलवाया है।

रूप०—मैं कह दूँगी, मुझसे किसीने नहीं कहा। मैं कहूँगी, इतना काम एक आदमीपर क्यों छोड़ रखा है? क्या उसे मार ही डालोगे? या आप साथ काम करो, या एक और आदमी दो।

मैं—यह तो उससे भी बुरा! वह सोचेंगे, आपको मेरी इतनी चिन्ता क्यों रहती है? बातसे बात निकलती है। उनके दिलमें कई बातें उठ खड़ी होंगी।—ज़रा दूर तक सोचिए।

रूप०—तो इसका यह मतलब है कि आपको अपनी आँखोंसे कामके बोझ-तले पिसते हुए देखूँ और चुप रहूँ।

मैं—और क्या? ऐसी अवस्थामें आदमीको चुप ही रहना पड़ता है।

रूप०—चुप रहनेका मतलब है कायरता।

मैंने बातको उड़ानेकी ग़रज़से कहा—कायरताका मतलब है बुद्धिमानी और समझदारी।

रूप०—(सुनी-अनसुनी करके) अगर आप मेरी जगह हों, तो आप क्या करें?

मैं—कुछ भी नहीं। जो हो रहा है, होने दूँ। और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि काम इतना नहीं है जो मुझे मार ही डाले।

रूपरानीने मेरी तरफ़ शिकायत-भरी दृष्टिसे देखा और ठंडी आह भरकर सिर झुका लिया। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि वह कहती है, तुम इतने निष्ठुर क्यों हो गए? मैं चाहता था, उसके सामने अपना दिल खोलकर रख दूँ, उससे साफ़ साफ़ कह दूँ कि तुमने मुझे अभीतक नहीं पहचाना। मगर मैंने अपने उमड़ते हुए भावोंको अन्दर ही अंदर दबाया और चलनेको उठकर खड़ा हो गया।

रूपरानीने कहा—ज़रा बैठ जाइए, मुझे आपसे एक बात पूछना है।

मैं फिर बैठ गया। रूपरानीने फ़र्शके ग़ालीचेकी ओर देखते हुए रुक रुककर पूछा—क्या अब भी आपको मेरा ख़्याल है?

यह सवाल न था, मेरे मनके चोरको पागल बना देनेवाली शराब थी। मेरा जी चाहता था, अब सब कुछ कह दूँ। मगर मैंने कहा कुछ भी नहीं। कहा—बिलकुल नहीं।

रूप०—मैं भी यही चाहती थी कि आप मेरा ख्याल छोड़ दें।

यह कहते कहते उसकी आँखोंमें पानी आ गया और आवाज़ गलेमें अटक गई। मैंने अपनी हाथ-घड़ीकी तरफ़ देखा और कहा—अब मुझे आज्ञा है?

रूपरानीने सिर हिलाकर जवाब दिया—हाँ।

मैं खड़ा हो गया और अपने शरीरका सारा बल जमा करके बोला—अगर आप बुरा न मानें तो एक बात मैं भी पूछ लूँ।

रूपरानीने उसी तरह ज़मीनकी तरफ देखते हुए सिरके इशारेसे कहा—पूछिए।

मैं—आपको यहाँ कोई तकलीफ़ तो नहीं है?

रूपरानीने उसी तरह सिरके इशारेसे कहा—नहीं।

मैं—अर्थात् आप इस जीवनमें खुश हैं?

रूप०—(धीरेसे) हाँ।

मैं—आपने मेरे दिलसे बोझ उतार दिया है।

१६

मगर यह झूठ था। मेरे दिलका बोझ उतरा न था, उलटा बढ़ गया था। बार बार सोचता था, रूपरानीको ज़रूर मेरा ख़्याल है। अगर न होता तो वह यह क्यों पूछती कि अब आपको मेरा ख़्याल तो नहीं है। लेकिन मैं भी कैसा गधा निकला! मुझे यह पूछनेकी क्या ज़रूरत थी कि आप इस जीवनमें खुश हैं या नहीं? इसका मतलब साफ़ था कि मैं तो इस जीवनमें खुश नहीं हूँ। दूसरा मतलब यह था कि मुझे भी आपका ख़्याल है, और ख़्याल भी इतना कि मैंने मुँह फाड़कर पूछा और कहा कि मेरे दिलसे बोझ उतर गया है। रूपरानी सब कुछ भाँप गई होगी। पढ़ी-लिखी स्त्री है, ऐसी बात तो अनपढ़ औरत भी समझ जाती। अब क्या करूँ? यहाँ रहूँ या कहीं चल दूँ? मगर कठिनाई यह है कि मैं चलनेको तैयार होता हूँ तो दिल नहीं मानता। सौ सौ बहाने बनाता है और रोक लेता है।

पहले तो मैं ऐसा निर्बल कभी न था ! जाने अब क्या हो गया है। कभी वह दिन थे कि मैं दूसरोंसे भी न डरता था, आज यह हाल था कि आपसे भी डरता हूँ।

उधर माँजी कह रही थीं, ब्याह कर लो, कब तक कँवारे बैठे रहोगे ? पासके महल्लेमें कोई लड़की देख आई थीं। कहतीं, ऐसी रूपवती लड़की मैंने आज तक नहीं देखी। लड़की क्या है, चौदहवींका चाँद है। देखकर भूख-प्यास मिटती है, हाथ लगानेसे मैली होती है। बेटा, अब सोच-विचार न करो। हाँ कर दो तो मैं भी तैयारियाँ शुरू करूँ। एक दिन महताबकुमारीको घर ले गया था, उसे देखकर और भी मचल पड़ीं कि अब जल्दीसे ब्याह कर ले तो तेरे बाल-बच्चे भी देख लूँ। बुढ़ापेमें यह भूख बुरी ! मैंने कहा, चार दिन और ठहर जाओ। यह सुनकर वह उदास-सी हो गईं, मगर मेरा क्या अपराध ? दिल ही नहीं मानता। कुछ दिन टालता रहा। आखिर एक दिन उन्होंने अलटीमेटम दे दिया कि या तो मेरी पसन्दकी लड़कीसे ब्याह कर, या अपनी पसन्दकी लड़की बता, अब कँवारा कब तक बैठा रहेगा ? फिर धीरेसे यह भी कह दिया कि अब रूपरानीका ख़्याल छोड़। उसका ब्याह भी हो गया, संतान भी हो गई। तेरी होती तो तेरे नामपर बैठी रहती। मगर उसने तो चार दिन भी तेरी प्रतीक्षा न की। तू कहीं मारा मारा फिर रहा था, वह अपना ब्याह रचा बैठी।

मेरा लहू सूख गया,—तो क्या माजीको भी ख़्याल है कि मैं रूपरानीके कारण ब्याह नहीं करता ? उस रात मेरी आँखोंमें नींद न थी। करवटें बदलता था और जीवनके अन्धकारमें आशाका मार्ग

ढूँढ़ता था, मगर कोई मार्ग सूझता न था। ब्याह करूँ तो मुश्किल, न करूँ तो मुश्किल। माजी जानतीं सब कुछ थीं, समझती कुछ भी न थीं। अगर समझतीं तो इस तरह तंग न करतीं। इसी उधेड़-बुनमें रातके दो बज गए और मुझे नींद न आई।

सहसा किसीने दरवाजा खटखटाया। मुझे आश्चर्य हुआ। उठकर दरवाज़ा खोला तो रूपरानी! मेरा आश्चर्य और भी बढ़ गया। बोला—खैर तो है? आप इस समय कैसे आईं?

रूपरानीने कुरसीपर बैठकर जवाब दिया—बताती हूँ।

इस समय वह हाँफ रही थी। मैंने पूछा—क्या आप पैदल आ रही हैं?

रूपरानी—हाँ।

मैं समझ गया, कोई खास बात है।

रूपरानी—आज मैं सारे बन्धन तोड़ आई हूँ। चलो, किसी ऐसी जगह चले चलें जहाँ हमें जाननेवाला कोई न हो।

मुझे किसीने काठ मार दिया; मरी हुई आवाज़में बोला—इसका परिणाम क्या होगा, यह भी जानती हो?

रूप०—सब जानती हूँ। मूर्खा नहीं हूँ।

मैं—बड़ी बदनामी होगी।

रूप०—बदनामीसे तो ऋषि-मुनि भी नहीं बचे। हम-आप किस गिनतीमें हैं।

मैं—मेरी मानो तो तुम अब भी लौट जाओ। बड़े आराम और इज्जतका जीवन है। इसे खोकर पछताओगी।

रूप०—पछताना होता तो घरसे न निकलती। अब आप बताइए, आपमें हिम्मत है या नहीं, क्योंकि मेरा सारा ज़ोर तो आपपर है।

मैं—मुझमें तो हिम्मत नहीं है।

रूप०—तो मुझे ज़हर खिला दीजिए ताकि सारा झगड़ा तय हो जाए। मैं अब घर जानेसे तो रही। इस जीवनका यहीं अंत हो जाए।

मैंने ठंडी आह भरी और कहा—अगर मैं जानता कि मेरे यहाँ आनेसे यह गुल खिलेगा, तो वहीं पड़ा रहता।

रूप०—तो मैं समझती, तुम आदमी नहीं हो पत्थरकी मूर्ति हो।

मैं थोड़ी देर चुप रहा, इसके बाद बोला—ताजबहादुर क्या कहेगा?

रूप०—जब उन्होंने तुम्हारी गरदनपर छुरी फेरी थी उस समय क्या उन्होंने सोचा था कि आप क्या कहेंगे? जब उन्होंने छल-कपटसे मेरे साथ ब्याह किया था, उस समय क्या उन्होंने सोचा था कि यह क्या कहेगी? आपको शायद विश्वास न आए, मगर मेरे मनमें उनके लिए ज़रा भी प्रेम और श्रद्धा नहीं है। जब उनका दाव चला उन्होंने हमें धोखा दे लिया, जब हमारा दाव चला हमने उन्हें धोखा दे लिया। लेना-देना बराबर हो गया।

मैंने शराफ़तका सहारा लिया और कहा—अगर उन्होंने भूल की तो इसका यह मतलब नहीं कि हम भी भूल करें।

रूपरानीने एक ठोकरसे रेतका घर उड़ा दिया; कहा—यह भूल नहीं है, धोखा है। और धोखा भी ऐसा जिसके ख्यालहीसे आदमी काँप उठे! आप कहेंगे, आपने अपनी कुरबानी की। मैं कहती हूँ, आप अपनी कुरबानी कर सकते थे, मगर आपको मेरी कुरबानी करनेका क्या अधिकार था? मैंने आपके भरोसे जीवनको बाज़ीपर

लगाया था, आपने धोखेसे मेरा जीवन हरा दिया। अपने लिए आप दोनों धर्मात्मा होंगे, मेरे लिए आप दोनों जालसाज़ हैं।

अब वह रो रही थी और काँप रही थी। उसके आँसू उसके गालोंपर बह रहे थे। और मेरा धीरज मेरे हाथसे निकला जाता था।

रूपरानीने मेरी ओर देखा और रोते रोते कहा—मैंने आज निश्चय कर लिया है कि उस आदमीके साथ न रहूँगी जिसने मुझे धोखेसे जीता है और जिसने मेरे नारी-जीवनपर अत्याचार किया है।

इस समय मुझे ऐसा मालूम हुआ कि वह स्त्री नहीं है, ज़मीनकी मिट्टीपर गिरा हुआ मनोहर फूल है। कल यही फूल टहनीपर झूमता था, और मुस्कराता था; आज ज़मीनपर पड़ा था, और रोता था। मैंने उसे लोभी आँखोंसे देखा और विनोद-भावसे कहा—इसमें ताजबहादुरका दोष नहीं, तुम्हारा रूप ही ऐसा है कि जो देखे, पागल हो जाए।

रूपरानीके आँसू थम गए। उठकर मेरे निकट आ गई और मेरे कंधेपर हाथ रखकर मिन्नत-भरे स्वरमें बोली—क्या आपको मेरे रोनेपर दया नहीं आती?

मेरे सामने काव्य और कल्पनाकी संगीतमय दुनिया आकर खड़ी हो गई जहाँ प्रेम मुस्कराता है, रूप खेलता है, यौवन नाचता है। जीमें आया, रूपरानीको कलेजेमें बैठा लूँ और कहीं भाग जाऊँ।

रातका समय था। चारों ओर सन्नाटा था। मेरे सामने वह थी जिसका ख़्याल मुझे रातको भी सोने न देता था। उसके सामने मैं था जिसे वह जी-जानसे चाहती थी। मनके चोरका दाव चल गया। मैंने उसके हाथ पकड़ लिए और उसे अपनी ओर खींचा।

एकाएक बाहर मोटरका हार्न बजा और हम दोनों चौंक पड़े।

मैंने रूपरानीकी आँखोंमें आँखें डालकर मूक-भाषामें पूछा, क्या यह वही है? और उसने सिरके इशारेसे कहा, हाँ यह वही है। मैं सोचने लगा,—मगर सोचनेका समय नहीं था। बाहर मोटरका दरवाज़ा बन्द होनेकी आवाज़ आई,—ताजबहादुर आ रहा था। मैंने रूपरानीको दूसरे कमरेमें धकेल दिया, और,—ताजबहादुरने दरवाज़ा खटखटाया,—मैंने सोचा,—ताजबहादुरने फिर दरवाज़ा खटखटाया,—मं क्या करूँ?—ताजबहादुरने जोरसे पुकारा, महताबराय!—मुझे रास्ता सूझ गया। मैंने खिड़कीमें जाकर बाहर झाँका—कौन है?

ताजबहादुरने कहा—मैं।

मैंने जवाब दिया—आया—

और?—मैं सोच रहा था,—और मेरे मनका चोर मेरे साथ लड़ रहा था और,—

१७

ताजबहादुर :

महताबरायने दरवाज़ा खोला और पूछा—ख़ैर तो है? इतनी रात गए....

मैंने कहा—ऊपर चलो।

हम ऊपर गए और कुरसियोंपर बैठ गए।

मैंने कहा—जानते हो, मैं इस समय क्यों आया हूँ?

महताबराय—कोई ख़ास बात मालूम होती है।

मैं—रूपरानी कहीं चली गई है।

महताबराय चौंका।

मैंने रूपरानीका पत्र उसके हाथमें रख दिया और कहा—पढ़ो।

महताबरायने पढ़ा और गहरी चिन्तामें डूब गया।

मैं—अब सवाल यह है, मुझे क्या करना चाहिए ? कल यह बात बच्चे-बच्चेकी ज़बानपर होगी; लोग मेरी तरफ़ देखेंगे और हँसेंगे; और कहेंगे, इसकी स्त्री इसे छोड़ गई है।

महताबरायने ठंडी साँस भरी।

मैं—मगर मुझे इसकी चिन्ता नहीं। मैं सोचता हूँ, महताब-कुमारीका क्या बनेगा ?

मेरी आँखोंमें आँसू थे। मगर मैंने उन्हें आँखोंसे बाहर न निकलने दिया।

महताबराय—तुमने कुछ सोचा है ?

मैं—मैंने सोचा है कि इसी समय लड़कीको लेकर किसी दूसरी जगह चला जाऊँ किसीको कुछ मालूम न होगा। चार दिनके बाद मशहूर कर दूँगा : रूपरानी मर गई है। किसीको कुछ संदेह न होगा।

महताबरायने कुछ सोचते सोचते कहा—हूँ।

मैं—भाई, मेरा तो ख़्याल है कि और कोई रास्ता नहीं।

महताबरायने मुस्कराकर गरदन उठाई और कहा—मेरा ख़्याल है, पहले एक बार यत्न किया जाए।

मैं—बेकार है। वह जाने कहाँ होगी ?

महताबराय—तुम ज़रा यहाँ बैठो और सिगरेट पियो। मैं अभी आता हूँ।

मुझे आश्चर्य हुआ। महताबरायने कपड़े पहने और बाहर निकल गया।

एक घंटेके बाद महताबरायका नौकर एक चिट्ठी लेकर आया और बोला—बाबूजीने यह चिट्ठी दी है।

मैंने चिट्ठी पढ़ी। लिखा था—

'रूपरानी साथके कमरेमें है। उसपर विश्वास करो और उसे घर ले जाओ। और मुझे भूलनेका यत्न करो। इस जीवनमें फिर मुलाकात मुश्किल है। रूपरानी अगर मेरी खुशी चाहती है तो अपने घरमें खुश रहे। मैं और मेरी मा जा रहे हैं। देस छोटा है, परदेस बड़ा है, वहाँ सभी समा जाते हैं।

'भगवान सबका कल्यान करे।'

मैं सब कुछ समझ गया। इससे पहले एक बार महताबरायने मेरी जान बचाई थी, आज इज़्ज़त बचा गया। ऐसे महान् मित्र इस स्वार्थी दुनियामें कहाँ?

मैं धीरे धीरे उठा और जाकर साथका कमरा खोल दिया। रूपरानी चुपचाप आकर मेरे पास खड़ी हो गई।

थोड़ी देर बाद हम दोनों मिलकर महताबरायकी चिट्ठी पढ़ रहे थे और रो रहे थे।—और हमारे चारों तरफ़ रातका अन्धकार और सन्नाटा छाया हुआ था।

फ़रऊनका प्रेम

९

दोपहरका समय था, सौ दरवाज़ोंके प्राचीन मिस्री शहर सीवापर सूरजकी गरमीके कारण तन्द्रा और बेसुधी-सी छाई हुई थी। बाज़ारोंमें, गलियोंमें और आबादीसे बाहर श्मशानका-सा सन्नाटा छाया हुआ था। कोई आवाज़ सुनाई न देती थी, कोई शक्ल दिखाई न देती थी; और यह वह समय था जब इस रंग-रूप और भोग-विलासकी संगीतमय नगरीपर किसीने मौतका जादू कर दिया था। दृष्टि सूरजकी तरफ़ देखती थी और चुँधियाकर भूमिपर गिर पड़ती थी। ज्वाला-सदृश आकाशसे एक सफेद प्रकाश पैदा होता था और पृथ्वीकी हर एक वस्तुको अपनी लपटमें लपेट लेता था। महलों, मन्दिरों और मीनारोंकी चोटियाँ, जो मिस्री चेहरोंकी शक्लकी थीं, मकानोंके ऊपर उठी हुई थीं, मानो आगके सागरसे शोले उठ रहे थे।

मगर इस हत्यारी गरमीमें भी तलअत, फरऊन अमनसका अर्थ-मंत्री, राज्य-कोषके नए भवनमें इधरसे उधर और उधरसे इधर फिर रहा था और हब्शी गुलामोंको काम जल्दी समाप्त करनेके तगादे

कर रहा था। आजसे एक वर्ष पहले फ़रऊन अमनसने यह शिला-भवन बनानेकी आज्ञा दी थी और इसके लिए केवल एक सालका समय स्वीकार किया था। कितनी कठिनाइयों, कितनी मेहनतों, कितने सोच-विचारसे तलअतने यह भव्य-भवन बनवाया था! और आज उस सालका अन्तिम दिन था जब साँझको बादशाह इसे देखनेको आनेवाला था।—और अभीतक इस भवनका भीतरी दरवाज़ा तैयार न था जिसमें फ़रऊन अपने और अपने पूर्वजोंके जमा किए हुए अनमोल हीरे और मोती और जवाहरात रखकर निश्चिन्त हो जाना चाहता था। तलअतको मालूम था कि अगर सीबाकी भूमिपर साँझकी छाया पड़नेसे पहले पहले दरवाज़ा तय्यार न हो गया तो फ़रऊन अपनी सोनेकी लाठीसे उसकी गरदन तोड़नेमें कभी संकोच न करेगा।

आख़िर साँझ हुई : वह साँझ जिसके पीछे पीछे तलअतके लिए आराम और विश्रामका सुप्रभात चला आ रहा था। फ़रऊनने अपने एक सौ जंगी जरनैलों, और एक हज़ार हब्शी गुलामोंके साथ कोष-भवनमें प्रवेश किया। तलअतने पग-पगपर झुककर और अपना हाथ सीनेपर रख रखकर सलाम किया और फरऊनके पाँवमें खड़ा हो गया। फ़रऊनने तलअतकी इस विनयको अवहेलनाकी आँखोंसे देखा, मानो वह खुद खुदा था और तलअत उसकी तुच्छ सृष्टि। तब उसने मुस्कराकर उसकी तरफ मुँह मोड़ा और धीरेसे कहा—हमें सारा भवन दिखा दे।

तलअत भवन दिखाने लगा। मगर इस समय वह सहमा हुआ, डरा हुआ, घबराया हुआ था, और उसके प्राण फडफड़ा रहे थे।

——क्योंकि उसका जीवन मौतकी गोदमें था, और कोई न कह सकता था कि मौत किस समय अपने ठंडे हाथोंसे उस जीवनका गला घोंट देगी !

फ़रऊनने राज्यके इस कोष-भवनका एक एक भाग देखा और उसे पसन्द किया और तलअतसे कहा——हम तुझसे खुश हैं।

तलअतको अब अपने सिरकी सलामतीका विश्वास हुआ। उसके मुँहकी चिन्ता, जिसने उसकी शोभाका स्थान ले लिया था, दूर हो गई और उसकी उदास आँखोंमें जीवनकी ज्योति एक वर्षके बाद वापस आई।

फ़रऊनने अपने प्रधान मंत्रीको अपने सामने बुलाया और कहा——तुम्हारे बादशाहकी इच्छा है कि इस भवनपर एक हज़ार हबशियोंका पहरा लगाया जाए; उन्हें रातके लिए एक एक मशाल और एक एक बिगुल दिया जाए ताकि अगर कोई आदमी इस भवनके अंदर पाँव भी रख जाए तो उसी समय सेनापतिको मालूम हो जाए और अपराधी गिरफ़्तार कर लिया जा सके।

प्रधान मंत्रीने विनयसे सिर झुका दिया, मगर अभी सिर उठाने न पाया था कि फ़रऊनने फिर कहा——और तुम्हारा बादशाह नहीं चाहता कि इस भवनके अंदर उसके ख़ास अपने आदमियोंके सिवाय कोई दूसरा व्यक्ति पाँव भी रख जाए। इसलिए मुनादी करा दो कि जो कोई इस भवनमें प्रवेश करेगा वह अपनी मौतके मुँहमें प्रवेश करेगा, और उसे कोई शक्ति बचा न सकेगी। यहाँतक कि अगर तुम्हारा शहज़ादा, मिस्रका भावी महाराज भी, इस आज्ञाका निरादर करेगा तो उसे भी यही दंड दिया जाएगा।——तलअत, तू अर्थ-मंत्री

है, तेरा पद तेरे ही पास रहेगा। हमारे सामने हर एक बातका उत्तरदाता तू होगा।

यह कहकर फ़रऊनने आग-भरी आँखोंसे चारों तरफ़ देखा। गुलाम, जंगी जरनैल, तलअत, प्रधान-मंत्री, सब ज़मीनपर झुक गए। फ़रऊनने अपना सोनेका डंडा उठाया और बाहर निकल गया। थोड़ी देर बाद उसने राजमहलकी दीवारपरसे सुना कि उसका आदेश शहरके कोने-कोनेमें सुनाया जा रहा है और लोग यह हुक्म सुनते हैं और सहम सहम कर कोष-भवनकी तरफ़ देखते हैं।

२

अगर फ़रऊनको अपने बलका गर्व था तो यह उसका दोष न था, क्योंकि सारा मिस्र और मिस्रके निवासी स्वीकार कर चुके थे कि फ़रऊन दुनियामें परमात्माका प्रतिनिधि है और चाँद, सूरज, तारों, बिजलियोंका बादशाह है। उसकी मूर्तियाँ मन्दिरोंमें रखी जाती थीं, उसकी बातोंको भगवानकी भावना समझा जाता था और उसकी पूजाके लिए शब्द-कोषके पवित्र और सुन्दर शब्द खोज खोज कर प्रयुक्त किए जाते थे। उसकी प्रजा उसे देवता मानती थी, इसलिए उसके निकट जाने, उसे छूने, उसके सामने सिर उठानेकी किसीमें हिम्मत न थी। यहाँ तक कि उसकी स्त्रियाँ भी उसके सामने अपना दिल न खोल सकती थीं। और फ़रऊन भी उन्हें अपनी उदास घड़ियोंका मनोरंजन, अपनी वासनाओंका खिलौना, अपनी शक्तिका प्रमाण समझता था और अपने दिल और दिलके प्यारको कभी उनके विश्व-विजयी सौन्दर्यके सामने झुकने न देता था। न उन स्त्रियोंको कभी ख़्याल आता था कि फ़रऊन उनसे प्यार भी कर

सकता है, क्यों कि वह उस पाँच भूतोंके नश्वर शरीरको अमर देवता समझती थीं और हर घड़ी डरती रहती थीं कि न जाने, किस समय यह महादेव रुद्ररूप धारण कर ले। इसलिए हमें, जो बिलकुल एक दूसरे युग और दूसरे देशमें पैदा हुए हैं, हैरान न होना चाहिए कि लोग अपनी बेटियोंको फ़रऊनके चरणोंमें अर्पण कर देना पुण्य समझते थे और इस पुण्य-प्राप्तिके लिए हज़ारों और लाखों यत्न करते थे। और जब वह अपनी कुँवारी कन्याओंको एक बेदिल और बेपरवाह बादशाहकी दो-चार क्षणोंकी प्रसन्नतापर (क्योंकि फ़रऊनको इन स्त्रियोंसे ज़्यादा संबंध रखनेमें अपनी निर्बलता नज़र आती थी) बलिदान कर देनेमें सफल हो जाते थे, तो उन्हें ऐसी खुशी होती थी जैसे उन्हें स्वयं भगवान मिल गया हो।

मगर अभी फ़रऊनके रनवासमें मलिका-महारानीकी जगह खाली थी। और देश देशके राजे-महाराजे अपनी अपनी अप्सरा-कन्याओंके लिए कोशिशें कर रहे थे। और कोई न जानता था कि फ़रऊनकी दया-दृष्टि पानीकी किस बूँदको मोती और रेतके किस कणको सूरज बना देगी! मगर उन्हें इतना विश्वास था कि फ़रऊन किसी बहुत बड़े बादशाहकी बेटीके सिवाय किसी दूसरी औरतको अपने साथ राज-सिंहासनपर बैठानेके लिए पसन्द न करेगा।

इसलिए लोगोंके उस आश्चर्यका अनुमान करो जो उनको एक दिन यह जानकर हुआ कि फ़रऊनने हब्शी सुलतान शमलार्ककी शहज़ादीको मिस्रकी मलिका-महारानी बनानेका निश्चय कर लिया है! लोगोंने यह ख़बर सुनी तो उन्हें विश्वास न हुआ कि फ़रऊनकी पसन्द इतना नीचे भी जा सकती है।

मगर वह फ़रऊन था, और जो चाहे कर सकता था, और उसकी मरज़ीके सामने किसीमें सिर उठानेकी हिम्मत न थी। साँझके समय जब सीबाकी सारी प्रजा राज-महलके सामने खड़ी थी, मिस्रका सबसे बड़ा पुरोहित राजमहलकी दीवारपर आया और उसने उस ख़बरसे, जिसपर लोग अबतक विश्वास न करते थे या विश्वास करना न चाहते थे, सनसनी फैला दी।

मिस्रके पुरोहितने कहा—चाँद, सूरज, बादल और बिजलियोंके देवता फ़रऊन अमनसने हब्शी सुलतान शमलार्कर्की राजकुमारीसे ब्याह करने और उसे अपनी मलिका-महारानी बनानेका निश्चय कर लिया है और आज्ञा दी है कि उन दोनोंके मंगलके लिए नीली छतवाले और बड़े घरवाले भगवानसे पूरा एक सप्ताह मन्दिरोंमें प्रार्थनाएँ की जाएँ।

मगर प्रेम और प्रारब्धके देवता फ़रऊनके लिए एक दूसरी सुन्दरीका चुनाव कर चुके थे जिसे देखनेका फ़रऊनको अभी तक अवसर न मिला था।

और दूसरी रातको जब चाँद अपनी चाँदनीका प्रकाश लेकर आसमानपर आया तो शामलार्ककी शहजादीने सात नदियोंके पानीसे स्नान किया और चाँदनी रातमें बैठकर वह मिस्री सुन्दरियोंका नाग-नाच देखने लगी। इस समय वह खुश थी और अपने आनन्द-पूर्ण भविष्यका विचार कर करके मुस्करा रही थी। 'मिस्रकी मलिका महारानी',—कैसे सुन्दर शब्द थे जिनकी कल्पना उनके अस्तित्वसे भी कहीं ज़्यादा सुन्दर थी! सोचती थी, जब मैं फ़रऊनके साथ फ़रऊनके महलकी खिड़कीमें लोगोंके सामने खड़ी हूँगी, उस समय मेरी क्या शोभा होगी! होंठ

खुशीसे काँप रहे होंगे, गाल भावुकतासे तमतमा रहे होंगे, और आँखें गर्वसे मुस्करा रही होंगीं ! ज़मीनवालोंका यह सौभाग्य आसमानवालोंको भी कम नसीब होता है। शमलार्ककी राजकुमारी आनन्दपूर्ण विचारोंमें लीन थी कि उसकी एक दासीने आकर कहा—शहज़ादी, भगवान तेरे जीवनको जीवनकी सारी बहारोंसे भरपूर रखे, और तेरी दुनियामें दुःख और दर्दकी छाया तक न पड़ने दे। त्यूनस नीलके किनारे तेरे लिए पानी लेने गई थी, मगर वहाँ एक मिस्री सिपाहीसे प्यार-मुहब्बतकी बातें कर रही है। और उसे इस बातका कोई भय नहीं है कि तू यहाँ उसका रास्ता देख रही है।

शहज़ादी, जिसके लिए इससे पहले इस बातकी कोई सम्भावना न थी कि कोई उसकी आज्ञाका इस तरह अपमान कर सकता है, चौंक पड़ी और उसका राजसी दबदबा इस ख़बरसे ऐसा घायल हुआ कि उसकी आँखोंसे आगकी चिंगारियाँ बरसने लगीं। उसने अपने एक हथियारबन्द सिपाहीको बुलाया और उससे कहा—तू अभी जा और उस गुस्ताख़ गुलाम लड़कीके बाल पकड़कर उसे घसीटता हुआ मेरे सामने ला। उसने मेरा अपमान किया है।

और वहाँ नीलके किनारे त्यूनस (यही उस गुलाम लड़कीका नाम था) रेतपर बैठी थी और चाँदकी दूधिया रोशनीमें एक मिस्री नौजवानसे बातें कर रही थी। शहज़ादीका हथियारबन्द सिपाही हब्शी था, और काव्य और कलाका उसने कभी नाम भी न सुना था; फिर भी, उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे मिस्रकी नशीली रातमें मिस्रके दो चाँद मिस्रकी रेतपर बैठे प्रेम और यौवनकी पहेलियाँ सुलझानेकी चेष्टा कर रहे हैं। उसकी आँखें इस सुपनेके-से मीठे दृश्यको

देखना और देखते रहना चाहती थीं। मगर वह हब्शी था और गुलाम था, और उसकी शहज़ादीने उसे त्यूनसको बालोंसे घसीटकर अपने सामने लानेकी आज्ञा दी थी। इसलिए, उसने इस दृश्यकी शोभाको अपनी आँखोंमें स्याह कर लिया और मनकी कोमल अभिलाषाको अपने भारी पाँव तले मसलता हुआ आगे बढ़ा।

त्यूनस घबरा गई और उसकी आँखोंमें अपनी मौत फिर गई। मगर मिस्री नौजवान हँस रहा था; और उसे गुलाम लड़कीकी घबराहट और गुलाम सिपाहीके क्रोध, दोनोंकी परवाह न थी।

हब्शी सिपाहीने आगे बढ़कर कहा—तू कौन है जो मेरे बादशाहकी लौंडीको उसके कामसे रोक रहा है?

मिस्री नौजवानने पहले सिपाहीकी तरफ़ देखा, फिर निडरतासे अपने दोनों हाथ अपने सीनेपर रखे और मुस्कराकर कहा—मैं मिस्रका एक छोटा-सा बेटा हूँ, मगर पवित्र नीलके पवित्र पानीकी सौगन्ध, मुझे तेरे हब्शी बादशाहकी इतनी भी परवाह नहीं जितनी नीलके इस अथाह पानीको रेतके एक कणकी हो सकती है।

यह कहकर मिस्री नौजवान मुड़ा और इधर उधर टहलने लगा। और अपने पाँवसे रेतके साथ खेलने लगा।

गुलामने अपने मालिककी शानमें अपमानके ऐसे शब्द आज तक न सुने थे। उसने तीर कमानपर चढ़ाया मगर मिस्री नौजवानने आगे बढ़कर उसके हाथसे तीर और कमान दोनों छीन लिए, उन्हें नीलके गहरे पानीमें फेंक दिया और उसकी बहादुरीपर बेपरवाहीसे हँसने लगा।

इसके बाद दोनोंमें लड़ाई हुई। अजीब दृश्य था। काला गुलाम

और गोरा मिस्री लड़ते थे, और उनकी लड़ाई ऐसी थी जस एक काला और एक सफ़ेद बादल आपसमें टकरा रह हों। गुलाम समझता था : यह लौंडा मेरे सामने क्या ठहरेगा ? मगर उसे बहुत जल्द मालूम हो गया कि यह मेरी भूल थी। यह मोटा ताज़ा नहीं है, मगर कमज़ोर भी नहीं है। इसके हाथ-पाँव तो लोहेसे भी कड़े ह; दबाना चाहता हूँ दबते नहीं हैं, मोड़ना चाहता हूँ मुड़ते नहीं हैं। हमला करने चला था, अपने आपको बचाना भी मुश्किल हो गया। पहले जानता तो यह मूर्खता न करता। न आगे बढ़ता, न हेटी होती। मिस्री नवयुवक उसके साथ लड़ता न था, खेलता था और उसकी ज़ोर-आज़माईपर हँसता था। और उसे इस बातकी ज़रा भी चिन्ता न थी कि यह आदमी मुझे हानि भी पहुँचा सकता है। मगर समय बीत रहा था और त्यूनस घबरा रही थी।

पूरे दो घंटे बीत गए, और हब्शी शहज़ादीका क्रोध किसी तरह शान्त न हुआ। सहसा उसने बीस घुड़सवारोंको अपने साथ आनेका आदेश दिया और नीलकी तरफ चली। और वहाँ जाकर उसने वह देखा जो वह ठंड दिलसे न देख सकती थी। उसका आज्ञाकारी सिपाही रेतपर औंधे-मुँह मरा पड़ा था। त्यूनस पानीका घड़ा सिरपर रखे आनेका यत्न कर रही थी और मिस्री नवयुवक उसके सामने घुटनोंके बल बैठा उसे रोकनेके लिए मिन्नतें कर रहा था।

शहज़ादीने यह दृश्य देखा और उसे इसमें अपना और अपने राज्यका अपमान दिखाई दिया। एकाएक उसने हाथ उठाया। त्यूनस घबरा गई। इस घबराहटमें उसका घड़ा सिरसे गिरकर टूट गया और उसका पानी प्यासी रेतमें समा गया। अब रेतपर केवल कुछ

बुलबुले बाकी थे।—आशा मिट गई थी, अब सिर्फ़ लालसा रह गई थी। मगर इस लालसाका जीवन भी कितनी घड़ियाँ हैं?

हब्शियोंमें ब्याहके इस घड़ेका टूटना ऐसा अशुभ समझा जाता था जिसके सामने वह हर तरहका संकट सहनेको तैयार हो जाते थे। उनके कान इसमें यह भविष्यवाणी सुनते थे कि अब यह विवाह-संबंध न हो सकेगा और दुलिहनके पिताके प्रारब्धमें अपमान और तिरस्कार लिखा है। शहजादी दाँत पीस रही थी, त्यूनसका बदन काँप रहा था, बीस हाथियारबन्द सवार अपनी शहज़ादीके इशारेका इंतज़ार कर रहे थे और मिस्री युवक कभी इधर देखता था कभी उधर और स्थितिको समझनेका यत्न कर रहा था, मगर कुछ समझता न था।

भूमिपर नीलका अथाह पानी बह रहा था, आकाशपर स्वर्गके अनगिनत दिए जल रहे थे, दूर फ़ासिलेपर सीबा नगरीके गगन-चुम्बी भवनोंका प्रकाश अपने अंदरके भोग-विलास और यौवन-क्रीड़ाकी चुगलियाँ कर रहा था, मगर नील-किनारेकी इस दुनियाको इन बातोंका ज़रा ख़्याल न था। हब्शियोंकी शहज़ादी, उसकी आधी बाला आधी युवा दासी और मिस्री युवक अपने अपने दिलके अपने अपने विचारोंमें विलीन थे और तीनोंके विचार अलग अलग थे।

एकाएक शहज़ादीने ठंडी साँस भरी और अपने घुड़-सवारोंकी तरफ देखा। त्यूनस और भी घबरा गई और उसकी आँखें मिस्री युवककी आँखोंसे मिलीं। इन आँखोंमें एक संदेसा था जिसने मिस्री युवकके सामने युवतीका दिल खोल दिया। अब उसने वह सब कुछ समझ

लिया जो इस समय तक समझना चाहता था मगर समझ न सकता था। देखते देखते वह अपनी जगहसे उछला और त्यूनसको गोदमें उठाकर नीलमें पड़ी हुई नावमें कूद पड़ा। घुड़-सवार आगे बढ़े, मगर उनकी शहज़ादीने उन्हें रोक दिया और ऊँची आवाज़में कहा—मिस्रके बहादुर बेटे! अपनी जानका दुश्मन न बन। इस कमीनी लड़कीने जो अपराध किया है वह मामूली नहीं। तू इसे मेरे आदमियोंके हवाले कर दे। मैं इसे आगमें जलाकर भस्म कर दूँगी, और हर वह आदमी जो इसकी सहायताको हाथ उठायगा, अपनी मौतको अपने मुँहसे बुलाएगा।

मगर मिस्री वीरने नावका रस्सा खोल दिया और पतवार हाथमें लेकर नावको खेने लगा। शहज़ादीने अपने गलेकी पूरी शक्तिसे चीखकर अपने सवारोंसे कहा—दोनोंको अपने तीरोंसे बेध डालो!

सवारोंने अपने तरकश ख़ाली कर दिए मगर मिस्री युवक और त्यूनसको, जो नावमें लेट गए थे, कोई तीर न लगा, और नाव गहरे पानीमें चली गई। शहज़ादी हाथ मलती थी, दाँत पीसती थी और अपने आदमियोंपर बिगड़ती थी।

३

यह युवक फ़रऊन अमनसके अर्थ-मंत्री तलअतका एकलौता बेटा रेमफ़स था। वह जवान था, वीर था और सुन्दर था। उसकी तलवार पुरुषोंके और मुस्कराहट स्त्रियोंके दिलोंमें हलचल मचा देती थी। वह जिधरसे निकल जाता था, लोग उसे देखते रह जाते थे।

रेमफ़स और त्यूनस एक दूसरेको चाहते थे, और अब जब कि उनको विधाताने एक-दूसरेके प्रेम-पाशमें फेंक दिया था तो उनकी

खुशीका ठिकाना न था। बुड्ढा तलअत भी उन्हें देखता था और खुश होता था, मगर जब उसे ख़्याल आता था कि त्यूनस शमलार्ककी लौंडी है और शमलार्कके कहनेपर फ़रऊनके आदमी शहरके कोने-कोनेमें उसकी तलाश करेंगे तो उसकी खुशी किरकिरी हो जाती थी। और उसकी आशंकाएँ निर्मूल न थीं। शमलार्क हब्शियोंकी तरह क्रोधसे होंठ चबाता हुआ फ़रऊनके पास पहुँचा और बोला—तेरे एक आदमीने मेरी लौंडी चुरा ली है, और मैं तेरे पास फ़रियाद लाया हूँ।

फ़रऊन उसी समय अपना सोनेका डंडा लेकर खड़ा हो गया और बोला—मिस्र देशका चप्पा चप्पा छान डाला जाए और त्यूनसको ढूँढ़कर शमलार्कके हवाले किया जाए।

मगर त्यूनस कहाँ थी?—कोष-भवनके बाहर तलअतके मकानमें, जहाँ किसी जासूसको संदेह भी न हो सकता था कि इस जगह त्यूनस छिपी होगी।

रातका समय था। आकाशपर चाँद-तारोंकी सभा सजी हुई थी। त्यूनस, जो मिस्रकी सबसे बड़ी सुन्दरीसे भी सुन्दर थी, रेमफ़सके साथ बाग़में बैठी थी और फूलोंकी पँखुड़ियोंके साथ खेल रही थी। रेमफ़स कभी फूलोंको देखता था, कभी त्यूनसको और फिर सिर झुकाकर किसी गहरे विचारमें निमग्न हो जाता था। शायद सोचता था कि फूल ज़्यादा सुन्दर हैं या त्यूनस? पता नहीं, कितनी देर वह इस फूल-सुन्दरीकी समस्यापर विचार करता रहा। एकाएक त्यूनसने यौवनके मद-भरे स्वरमें कहा—रेमफ़स!

रेमफ़सने प्रेमकी इस पुकारको प्रेमके कानोंसे सुना और झूमने लगा। और उसे अपने सवालका जवाब मिल गया : फूल रंग और सुगंधका नाम है, मगर त्यूनस रंग, सुगंध और संगीतका संग्रह है।

त्यूनस फ़ूलसे बढ़ गई।

रेमफ़सने त्यूनसकी तरफ़ देखा और उन आँखोंसे देखा जिनमें प्रेमकी प्यास थी, लालसा थी, जलन थी। स्त्रीकी आँख पुरुषके भावको जितनी जल्दी पहचानती है, उतनी जल्दी कोई दूसरा कम पहचानता है। त्यूनस उठकर खड़ी हो गई और फूलोंकी क्यारियों-पर अपने नंगे पाँव रखती हुई, जो सफ़ेद कबूतरोंसे भी खूबसूरत और प्यारे थे, रेमफ़ससे दूर चली गई। रेमफ़सने अपनी हृदय-रानीकी चालमें ऐसा जादू-भरा और कला-पूर्ण नृत्य देखा जो मिस्रकी सबसे बड़ी नर्तकीके पाँवको भी नसीब न था। रेमफ़सको अपने सवालका एक बार फिर जवाब मिला : फूल रंग और सुगंधका नाम है, मगर त्यूनस रंग, सुगंध, संगीत और नृत्य, इन चार चीज़ोंका संग्रह है।

त्यूनस फूलसे और भी बढ़ गई।

जब किसीकी हृदयेश्वरी चाँदकी चाँदनीमें फूलोंके पेड़ोंतले खड़ी हो और अपने प्रेमीकी तरफ़ देख देख कर मुस्करा रही हो, कोई पराया पास न हो और चारों तरफ़ सन्नाटा हो : ऐसे बहार और बिहारके समयमें उसके दिलमें क्या कुछ होता है, इसे कोई प्रेमी ही समझ सकता है।

रेमफ़स आगे बढ़ा। वह त्यूनसको अपने बाहु-पाशमें कस लेनेके लिए अधीर हो रहा था। मगर त्यूनसने रेमफ़सका दिल रेमफ़सकी आँखोंमें पढ़ा, और हिरणीके बच्चेकी-सी शोख़ीसे उछलकर कोष-भवनकी दीवारपर चढ़ गई।

रेमफ़सका लहू सूख गया। एक पग और आगे और फिर त्यूनसको मौतके पंजेसे बचाना मानव-शक्तिसे बाहर हो जाएगा। उसने अपना दम सीनेमें रोक लिया और धीरेसे कहा—त्यूनस, खुदाके लिए नीचे उतर आ! तू नहीं जानती, तू कहाँ जा चढ़ी है! और उस तरफ़ कूद जानेका क्या मतलब है! मेरी सुन! त्यूनस, तिरिया-हठ न कर। तेरी यह नासमझी मेरे और तेरे दोनोंके जीवनको संकटमें डाल देगी।

मगर त्यूनसने रेमफ़सकी इस बातकी परवा न की और कोष-भवनके अंदर कूद पड़ी।

रेमफ़सने वह देखा जो वह देखना न चाहता था। उसने एक क्षणमें स्थितिपर विचार कर लिया और फिर यह सोचकर, कि मरने और जीनेका आनंद तभी है जब मनका मीत साथ हो, पागलोंके समान दौड़कर आप भी दीवारपर चढ़ गया और मौतके मुँहमें कूद पड़ा।

४

त्यूनस, जिसे अबतक मालूम न था कि उसने क्या कर दिया है, दीवारके नीचे छिपी रेमफ़सके आनेकी राह देख रही थी और हँस रही थी। उस अबोध बालककी तरह जो नागके साथ खेलता है, मगर नहीं जानता कि वह क्या कर रहा है, त्यूनस भी मौतकी गोदमें बैठी मुस्करा रही थी। इतनेमें रेमफ़स उसके पास पहुँचा और उसने अपने मुँहपर अँगुली रखकर उसे चुप रहनेका इशारा किया। इस समय रेमफ़सका चेहरा ऐसा सहमा हुआ था और वह इस तरह डर डरकर और सावधानीसे चल रहा था कि सुन्दरी

त्यूनस काँपकर रह गई, और समझ गई कि मुझसे कोई बड़ी भारी भूल हो गई है।

मगर अभी रेमफ़स उसे कुछ समझाने और वह कुछ समझने न पाई थी कि एक पहरेदार एक हाथमें मशाल और दूसरे हाथमें बिगुल लिए सामने आया। उसने उन दोनोंको देखा, और बिना कुछ सोचे समझे बिगुल बजा दिया। इसके साथ ही पाँच सौ आदमियोंने अपना अपना बिगुल बजाकर एक दूसरेको सूचना दे दी कि कोई बाहरका आदमी कोष-भवनमें आ गया है। रेमफ़स त्यूनसको लेकर भागा और एक वृक्षतले जा छिपा। मगर पाँच सौ बिगुल बजे, और पाँच सौ मशालें उसे खोजने लगीं। रेमफ़स अपनी त्यूनसको लिए अँधेरा ढूँढ़ता फिरता था, मगर इस चाँदनी और मशालोंकी रातमें उसे अँधेरा कहीं मिलता न था। इस समय अँधेरा उसके जीवनका प्रकाश बन जाता। मगर अँधेरा कहाँ था? फ़रऊनके गुलामोंने उनको देखा, और गिरफ़्तार कर लिया।

फ़रऊन अपने राज-महलकी बड़ी दीवारपरसे यह सब कुछ देख रहा था और क्रोधसे काँप रहा था। जब उसके सामने कोष-भवनके अपराधी पेश किए गए और उसने उनमेंसे एक रेमफ़सको पाया तो उसने कड़क कर कहा—तलअतका बेटा! और इस अपराधमें! क्या तू कह सकता है कि तूने हमारी मनादी न सुनी थी?

रेमफ़सने बेपरवाईसे जवाब दिया—मिस्रका बादशाह जानता है कि मैं झूठ नहीं बोलता, और मैं इस समय भी झूठ नहीं बोलूँगा। मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूँ और मरनेसे नहीं डरता। मगर मैं मिस्रके बादशाहसे एक बात कहनेकी आज्ञा माँगता हूँ और मुझे

आशा है कि उसे एक मरनेवालेकी अंतिम प्रार्थना समझकर स्वीकार किया जायगा।

फ़रऊनने अपनी अग्निपूर्ण आँखें रेमफ़सके चेहरेपर गाड़कर पूछा—तू क्या कहना चाहता है? कह, हम सुनेंगे।

रेमफ़स—मैं मिस्रका बेटा हूँ, मैंने मनादी सुनी थी। मैं जानता था : जो कोष-भवनके अंदर पाँव रखेगा उसे मौतका दण्ड मिलेगा। इसलिए, मैं हर तरहकी मौतकी हर तरहकी यंत्रणाके लिए तैयार हूँ। मगर यह लड़की निर्दोष है।

फ़रऊन—यह फ़ैसला करना हमारा काम है।

रेमफ़स—मगर यह मिस्रकी रहनेवाली नहीं। न इसने वह मनादी सुनी, न यह जान-बूझकर कोष-भवनके अंदर गई।

फ़रऊन—(रेमफ़सकी तरफ देखते हुए) यह कौन है?

रेमफ़स—गुलाम जातिकी एक लड़की : जिससे मिस्रके लोग ईंटें बनवानेका काम लेते हैं।

फ़रऊनने कुछ देर सोचा और रेमफ़सकी बेपरवाईको अपने शाही दबदबेका अपमान समझकर कहा—हमारा फ़ैसला यह है कि रेमफ़सको मिस्रके सबसे बड़े पत्थर तले दबाकर मार डाला जाए और उसकी लाश मछलियोंकी खुराक बननेके लिए नीलमें फेंक दी जाए। और इस गुलाम लड़कीको—

अब त्यूनस चुप न रह सकी। एकाएक वह आगे बढ़ी और फ़रऊनके पाँवमें गिर पड़ी। फ़रऊनने ज़रा परवा न की कि उसके पाँवमें कौन गिरा है और किस तरह गिरा है। उसने त्यूनसकी तरफ़ देखे बिना अपने आदमियोंसे कहा—इसे हमारे पाँवसे उठा लो।

त्यूनस खड़ी हो गई और उसने अपने नारी-सौन्दर्य्य और बाले जोबनकी पूरी शक्तिसे फ़रऊनके हृदय-गढ़पर आक्रमण किया। फ़रऊनने अब उसे देखा और वह एक ही बार सैकड़ों संसार देख गया। उसने लाखों स्त्रियाँ देखी थीं, हज़ारों स्त्रियोंके रूपसे खेला था, मगर उसके दिलका, दिमाग़का और आँखोंकी पलकोंका जो हाल आज हुआ, आजसे पहले कभी न हुआ था। आज उसे अपना बल बिखरता हुआ और अपना राज्य सिकुड़ता हुआ मालूम हुआ। उसकी आँखें त्यूनसके मुँहपर जम गईं, और पाँव ज़मीनमें गड़ गए। वह त्यूनसको प्यासी आँखोंसे देखने लगा।—और ऊपर नीले आसमानसे एक अबोध अंधा बालक फूलोंका तीर-कमान हाथमें लिए एक शिकारपर तीर बरसा रहा था।

त्यूनसने अपने रूपसे फ़रऊनको बसमें कर लिया था, मगर वह यह बात जानती न थी। न उस ग़रीबको कभी यह ख़्याल भी आ सकता था कि मेरे रूपमें इतनी मोहिनी है। उसने समझा, फ़रऊनपर मेरी बेगुनाहीका असर हो गया है और वह हैरान हो रहा है कि यह लड़की इस संकटमें क्यों फँस गई? तब उसने दूसरी बार फिर अपने आपको फ़रऊनके पाँवमें गिराया और कहा—ऐ बादलों और बिजलियोंके देवता! यह मिस्री युवक निर्दोष है। दोष सिर्फ़ मेरा है। यह मुझे बचाने और मुझे तेरा हुक्म सुनानेके लिए मेरे पीछे पीछे चला आया था। इसलिए, अपराध इसका नहीं, मेरा है; और दंड इसे नहीं, मुझे मिलना चाहिए।

रेमफ़स—यह झूठ बोल रही है।

त्यूनस—नहीं बादशाह सलामत! मैं सच कह रही हूँ। यह

मुझे बचाना चाहता है, इसलिए झूठ बोल रहा है। मैं ग़रीब हूँ, मगर मुझे जीवनका इतना लोभ नहीं है कि अपनी जगह किसी दूसरेको मरने दूँ। जिसका अपराध है, उसीको मरना चाहिए।

रेमफ़स, जो अपने लिए मौतका दंड सुनकर ज़रा भी विचलित न हुआ था, त्यूनसकी बातोंसे बिलकुल सहम गया और उसके माथेपर मौतका पसीना आ गया। उसके दिलके प्यारने भगवानसे प्रार्थना की कि फ़रऊन मुझे ही सच्चा समझे, और मुझे ही दंड दे।

फ़रऊनने त्यूनसकी सुकुमार देहको लोभकी आँखोंसे देखा और अपने आदमियोंसे कहा—इस समय इसे क़ैदखानेमें ले जाओ। हम फिर फ़ैसला करेंगे।

त्यूनस और रेमफ़सको फ़रऊनके गुलामोंने पकड़ लिया और वह बाहर आकर एकको पूरबकी दूसरेको पच्छमकी तरफ़ ले चले। मगर वह दोनों एक दूसरेकी तरफ मुड़-मुड़कर देखते थे और उनके दिल अपनी विवशतापर कुढ़ते थे। मगर कुढ़नेसे कुछ बनता न था।

फ़रऊनने अपने राजमहलकी दीवारपरसे त्यूनसको बन्दी-घरमें दाख़िल होते देखा तो उसका दिल दुःखसे भारी हो गया और कलेजेमें कोई चीज़ चुभने लगी। वह अपने दल, बल, पराक्रम: सबको भूलकर भूमिपर गिर पड़ा और उसकी आँखोंमें आँसू भर आए। उसने प्रेमका नाम लाखों बार सुना था, पर प्रेमका मर्म उसे आज मालूम हुआ। उसका दिल इस तरह कभी व्याकुल न हुआ था, न उसके दिमाग़में किसी ख़यालने इस तरह करवटें बदली थीं। वह त्यूनसको बन्दी-घरके दरवाज़े तक जाते देखता रहा। मगर जब वह अन्दर चली गई तो वह घबरा गया और उसका दम अपने खुले

महलकी छतपर घुटने लगा। गोया त्यूनस दुनियाकी सारी हवाको अपने साथ ले गई थी और अब फ़रऊनके लिए दुनियामें कुछ बाकी नहीं रह गया था। जब वह अपने महलके मोतियों और हीरोंसे जड़े हुए फर्शवाले कमरेमें पहुँचा तब भी उसे यही ख़्याल हुआ कि वहाँकी कोई चीज़ गुम हो गई है। वह अशांतिसे उठकर टहलने लगा और उसकी आँखें चारों तरफ किसी चीज़की खोज करने लगीं। मगर वह दिल-पसन्द चीज़ उसे कहीं दिखाई न देती थी। यहाँ तक कि आधी रात बीत गई और फ़रऊन बिना कुछ खाए-पिए और बिना लिबास बदले अपने बिस्तरेपर लेट गया।

६

जब रातके तीन पहर बीत गए तो फ़रऊनने धीरेसे दरवाज़ा खोला, और वह अपना सोनेका डंडा उठाकर महलसे बाहर आ गया। द्वारपाल हैरान रह गए, मगर फ़रऊनके पास उनकी हैरानी देखनेके लिए समय न था। वह जल्दीसे आगे बढ़ा। चारों तरफ़ सन्नाटा था, कहीं कोई आवाज़ सुनाई न देती थी। यह विश्रामका वह समय था, जब नदियोंकी लहरें भी ऊँघ जाती हैं और ज़मीनकी सड़कें भी सो जाती हैं। सिर्फ़ ऊँचा आसमान जागता है और पहरा देता है। फ़रऊनने बन्दी-घरकी मशालें देखीं और संतोषकी साँस ली। यहाँ उसके दिलका चैन और आँखोंकी नींद चुरानेवाली लड़की बन्द थी।

ऐसे आराम और विश्रामके समय फ़रऊनको, इस हालमें कि वह पागल-सा मालूम होता था, बन्दी-घरके दरवाज़ेपर देखकर पहरेदारोंके प्राण सूख गए और वे भयसे ज़मीनपर गिर पड़े। फ़रऊनने उनमेंसे एकको उठाया और धीरेसे कहा—आज रात यहाँ जो गुलाम लड़की आई है, हमें उसकी कोठड़ीमें पहुँचा दे।

पहरेदारने फ़रऊनको उस कोठड़ीमें पहुँचा दिया जहाँ त्यूनस बन्द थी, मशाल जलाकर एक कोनेमें रख दी, आप बाहर निकल गया और अपने पीछे दरवाज़ा बन्द करता गया। थोड़ी देर बाद बन्दी-घरके सारे कर्मचारी जाग रहे थे और भयसे थर थर काँप रहे थे। और भगवानसे प्रार्थनाएँ कर रहे थे। मगर किसीकी ज़बानसे आवाज़ न निकलती थी।

फ़रऊनने कुछ घंटोंके बाद, जो उसके लिए कई शताब्दियोंसे भी बड़े थे, त्यूनसको अपने सामने देखा तो उसके मनका चैन लौट आया। त्यूनस ज़मीनके कच्चे फ़र्शपर बेसुध पड़ी सो रही थी। उसके सिरके बाल बिखर गए थे और मुँह खुल जानेके कारण सफ़ेद दाँत गहरे समुद्रके सच्चे मोतियोंकी तरह चमक रहे थे। उसे सुध न थी कि उसकी देह नंगी हो रही है, और जोबनकी दो लोभी आँखें उसे देख रही हैं। उसे यह भी सुध न थी कि उसकी जुल्फ़ें उसके मुँहपर फैल गई हैं और इससे उसकी शोभा दुगुनी तिगुनी हो गई है।

फ़रऊनने इससे पहले जब उसको रातके पहले पहरमें देखा था तो वह मनमोहनी ज़रूर थी, पर सोई हुई न थी। लेकिन उसे क्या मालूम था कि रूप जब सो जाता है, तो और भी नशीला हो जाता है, और जुल्फ़ें जब बिखर जाती हैं तो उनकी शान-शोभा और भी बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त उसे यह भी मालूम न था कि स्त्रीको रातके पहले पहर और पिछले पहरमें देखनेमें बहुत अंतर है। रात ज्यों ज्यों गुज़रती जाती है, और दुनिया ज्यों ज्यों सोती जाती है, नारीका यौवन और उस यौवनका चमत्कार जागता जाता है।

फ़रऊन कुछ देर चकित खड़ा परी-मुँह त्यूनसको देखता रहा,

इसके बाद कमरेमें टहलने लगा। फिर उस कुरसीको, जो पहरेदारने उसके लिए वहाँ लाकर रख दी थी, घसीटकर त्यूनसके निकट खींच लिया और उसपर बैठ गया। और त्यूनसकी फूल-देहको उठाकर अपने पाँवपर रख लिया।

त्यूनसकी आँखें खुल गईं और सबसे पहली चीज़ जो उसने देखी, वह फ़रऊनकी आँखें थीं। पहले तो वह समझ ही न सकी कि वह कहाँ है, और फ़रऊन उसके पास कैसे पहुँच गया है। मगर जब उसपरसे नींदका नशा उतर गया तो उसे साँझकी सारी बातें याद आ गईं, और उसकी नारी-बुद्धि सब कुछ समझ गई। अब त्यूनस डर रही थी, घबरा रही थी, काँप रही थी।

यह देखकर फ़रऊनने त्यूनसके कंधेपर अपने हाथसे हलकी-सी थपकी दी और धीरेसे कहा—चिन्ता न कर,—तू फ़रऊनकी मलिका-महारानी बनेगी।

त्यूनसने वह सुना जो सुननेके लिए मिस्रकी हज़ारों सुन्दरियाँ तड़प रही थीं। मगर इससे उसे खुशी न हुई, उलटा भय और भी बढ़ गया। वह काँपती हुई खड़ी हो गई और फिर ज़मीनपर गिर कर बोली—ऐ मिस्रके ज़मीन-आसमानके बादशाह! मुझपर कृपा कर। मैं इस पदवीके योग्य नहीं, न मुझमें तेरे प्रेम-दानका बोझा उठानेकी शक्ति है। तू बादशाह है, तेरा नाम सुनकर दुनियाके दूसरे बादशाह अपने महलोंमें काँपने लगते हैं, और मैं एक गुलाम लड़की हूँ, जो यह भी नहीं जानती कि बादशाहोंके सामने किस तरह बात की जाती है। मैं अपनी कमज़ोरियाँ जानती हूँ। तेरा दिल मुझसे खुश न होगा। तेरे साथ ब्याह करके स्वर्गकी अप्सराएँ भी अपने

सौभाग्यपर फूली न समाएँगी। मगर मैं,—ऐ मेरे बादशाह! मेरे मा-बाप तुझपर कुर्बान हों, मुझपर कृपा कर, मैं इस राज-सम्मानके योग्य नहीं।

फ़रऊनने त्यूनसका ज़नाना हाथ अपने हाथमें पकड़ लिया और त्यूनसके इस हाथपर अपना दूसरा मर्दाना हाथ फेरते हुए जवाब दिया—मैं फ़रऊन हूँ। मुझसे लोग काँपते हैं। जब मैं अपनी शक्ति और शोभा लेकर सीधा खड़ा होता हूँ तो दुनिया मेरे सामने ज़मीन-पर झुक जाती है। लोग मन्दिरके देवताओंकी तरफ़ देख सकते हैं, मगर मेरी तरफ़ आँख उठाकर देखनेके लिए उनके पास साहस नहीं। आज तक मैंने किसी चीज़के लिए इच्छा नहीं की, मेरी हरएक ज़रूरत अपने आप पूरी हो जाती रही है। कल रात जब मैंने तुझे देखा उस समय मुझे पहली बार मालूम हुआ कि जब आदमीका मन किसी चीज़के लिए अधीर होता है, तो क्या होता है। मुझे रात-भर नींद नहीं आई। रात-भर तेरी शक्ल-सूरत मेरी आँखोंमें फिरती रही है। मैं रात-भर सोचता रहा हूँ कि इस समय तक मैं तेरे बिना कैसे जीता रहा। आसमानके देवता जानते हैं कि तू मेरे शरीर, मेरे प्राण, मेरे जीवनका एक भाग है। मेरे महलकी चलने, फिरने, बोलनेवाली तसवीरें जो अपने आपको स्त्रियाँ कहती हैं, जब मेरे निकट आती हैं, या दूसरे शब्दोंमें जब मैं उन्हें अपने निकट आनेकी आज्ञा देता हूँ, तो मुझपर उतना भी असर नहीं होता जितना पत्थरकी इस दीवारपर। मगर तुझे, हाँ, ऐ गुलाम जातिकी सुन्दरी, तुझे देखकर मुझे यह मालूम हुआ है कि मैं भी मर्द हूँ, और मेरे शरीरमें भी एक दिल और उस दिलमें किसीके लिए जगह है जो

तूने पूरी कर दी है। दुनिया मुझे देवता समझती है और पूजती है। कल तक मेरी अपनी भी यही धारणा थी कि दुनियाके मर जानेवाले लोगोंमें और मुझमें बहुत अंतर है। मैंने कई देशोंपर हमले किए हैं और वहाँकी ख़ूबसूरतसे ख़ूबसूरत स्त्रियाँ चुन चुनकर लाया हूँ। मगर चार ही दिनोंमें मेरा दिल उन खिलौनोंसे भर गया और फिर मेरी आँखोंने उनमें कोई मोहिनी नहीं देखी। मैं प्रेमका नाम सुनता था, और हँसता था। और समझ न सकता था कि लोग इस जालमें फँसकर क्यों बावले हो जाते हैं। मगर तुझको देखकर मेरे दिलमें प्रेम और उस प्रेममें तू बैठ गई है, और अब मुझे पता लगा है कि मैं भी इस दुनियाका जीव हूँ, और मेरे सीनेमें भी एक साधारण दिल है, जो तड़पता भी है, अधीर भी होता है। इस लिए ख़ुश हो कि तूने एक बेदिलके आदमीकी आँखें खोल दी हैं, और उसे अपनी मरज़ीके सामने कमज़ोर कर दिया है। त्यूनस, मैं दुनियाके लिए शक्ति हूँ, सम्राट् हूँ, देवता हूँ, मगर तेरे लिए प्रेम-पुजारीके सिवाय और कुछ भी नहीं हूँ। उठ, मेरे महलमें चल, मुझपर शासन कर, मुझे अपनी मरज़ीका गुलाम बना,—आज तक मैं शक्ति और शोभामें जीता था, अब मैं प्यार और पूजामें जीना चाहता हूँ।

फ़रऊन, जिसने आजसे पहले कभी किसीसे इतनी लम्बी बात-चीत न की थी, इस समय साधारण आदमियोंकी तरह बोला और उसके मनकी दशा उसकी आँखोंसे प्रकट हुई।

त्यूनस स्त्री थी, और हर स्त्री अपने रूपकी विजयपर ख़ुश होती कि उसने अपने युगके सबसे बड़े आदमीको अपने पाँवमें झुका

दिया ह मगर वह इससे पहले प्यार कर चुकी थी और प्यारकी बाज़ीमें अपना मन और मनकी मरज़ी हार चुकी थी। इसलिए नारी-जगतकी इस अनुपम जीतपर उसे ज़रा भी ख़ुशी न हुई, और उसने बन्दी-वरके खुरदरे फर्शपर घुटने टेककर कहा—ऐ मिस्रके सबसे बड़े बादशाह! तुझे दुनियाकी अच्छीसे अच्छी लड़कियाँ मिल सकती हैं, फिर तू मेरी तरफ अपना हाथ क्यों बढ़ाता है? मुझमें तो कोई भी ऐसा गुण नहीं। लोग तेरे चुनावपर क्या कहेंगे?

फ़रऊनने धीरेसे मगर दृढ़ स्वरमें जवाब दिया—फ़रऊन जो कुछ करता है, वह दुनियाके लिए आदर्श बन जाता है।

त्यूनस—ऐ बादशाह! फिर सोच, तू एक गुलाम लड़कीके लिए इतना कुछ क्यों कर रहा है?

फ़रऊन—फ़रऊन उसे मिस्रकी मलिका बना देगा।

त्यूनस—और अगर उसके दिलमें फ़रऊनके लिए प्यार न हो तो—

फ़रऊन—फ़रऊनका प्यार उसे सब कुछ सिखा लेगा।

त्यूनसने ज़रा साहससे कहा—और अगर उस अभागीको किसी दूसरेसे प्यार हो तो—

फ़रऊनने इस जवाबको अपना अपमान समझा। देखते देखते उसके मुँहका रँग बदल गया। वह कुरसीसे उठकर खड़ा हो गया, और अपना पाँव ज़मीनपर पटककर बोला—फ़रऊन उस आदमीको मिस्रके सबसे बड़े पत्थर तले दबाकर मार डालेगा।

त्यूनस अवाक् रह गई। उसने फ़रऊनके, हाँ उसी फ़रऊनके, जिससे उसका मन घृणा करता था, पाँव पकड़ लिए, और अपनी जलपूर्ण आँखोंसे उसकी ओर देखते हुए कहा—दया कर, ऐ संसारके

सबसे बड़ बादशाह ! दया कर। तू देवता है, तेरा दिल स्वर्गके जल-वायुसे बना है। तेरा काम दुनियाके बेटोंपर दया करना है। तुझे ऐसा कठोर नहीं होना चाहिए, तू ऐसा कठोर नहीं हो सकता, तू ऐसा कठोर नहीं होगा !

फ़रऊन फिर कुरसीपर बैठ गया और ज़रा नरमीसे बोला—अगर तू कठोर नहीं होगी, तो फ़रऊन भी कठोर नहीं होगा।

त्यूनसने धड़कते हुए दिलको सँभालनेका यत्न करते हुए कहा—स्त्री सब कुछ कर सकती है, मगर अपनी इच्छाके विरुद्ध प्रेम नहीं कर सकती।

फ़रऊनने तड़से जवाब दिया—फ़रऊनकी मरज़ी यह भी करवा सकती है, और करवाकर रहेगी। अगर तू अंतिम समय भी उस मिस्री युवककी जान बचाना चाहे, ता पहरेदारसे कह देना। मुझे माल्म हो जाएगा।

यह कहकर फ़रऊनने अपना भारी डंडा उठाया और बाहर निकल गया।

त्यूनस फ़रऊनकी धमकीका मतलब समझना चाहती थी, मगर समझती न थी। हाँ, इतना जानती थी, और हर स्त्री जान सकती है कि फ़रऊन जो पहले ही आग है, क्रोधसे शोला बनकर भड़क उठेगा और रेमफ़सको कड़ेसे कड़ा दंड देकर मारनेका हुक्म देगा। इस ख़यालसे उसका दिल हिल गया और वह रेमफ़सके लिए प्यारके आँसू बहाने लगी।

जब दिन चढ़ा और आकाशमें सूरज निकल आया, तो साथके कमरेमें आदमियोंके चलने-फिरनेकी आवाज़ सुनाई देने लगी और यह आवाज़ प्रतिक्षण बढ़ती गई। त्यूनसके कमरे और इस कमरेके

बीचमें एक खिड़की थी और इस खिड़कीमें लोहेकी सलाखें लगी थीं। त्यूनसने यह देखनेके लिए कि और कौन अभागा फ़रऊनके बन्दी-घरमें आया है, वह खिड़की खोली और उस कमरेमें झाँककर देखा। और उसने जो कुछ देखा वह इतना भयानक था कि उसे अपनी रगोंमें लहूकी गति रुकती हुई और अपने कंधे टूटते हुए मालूम हुए।

रेमफ़स जमीनपर एक खुरदरे पत्थरके साथ ज़ंजीरोंसे बधा हुआ था और उसके ऊपर छतके साथ हज़ारों मन भारी एक पत्थर, जो उस कमरेसे ज़रा कम लम्बा-चौड़ा था, मोटी मोटी ज़ंजीरोंके सहारे लटक रहा था। यह जंजीरें एक बहुत बड़ी फिरकीके ऊपरसे गुज़र कर एक पहियेपर लिपटी हुई थीं जिसे खोलने और लपेटनेके लिए फ़रऊनके कैदी बैलोंकी जगह काम करते थे। त्यूनसने देखा, रेमफ़सका मुँह पीला है और उसकी आँखोंमें जीवनकी चमक धीरे धीरे मर रही है। कानोंसे सुनने और आँखोंसे देखनेमें बहुत बड़ा अंतर है। अगर त्यूनससे कहा जाता कि तुम्हारे रेमफ़सकी इस तरह हत्या की जायगी तो शायद वह इतनी भयभीत न होती और अपनी सर्वोत्तम वस्तु नारी-प्रेमकी बलि चढ़ानेके लिए तैयार न होती। और सचमुच, जब उसने यह बात खुद फ़रऊनकी ज़बानसे सुनी थी तो उसके मनपर इतना प्रभाव न हुआ था। मगर उसी धमकीको कार्यरूपमें पूरा होते देखना उसकी शक्तिसे बाहर था। वह सिसक सिसककर रोने लगी और उसके आँसू उसके गालोंपर बहने लगे।

विवेक कहता है कि फ़रऊनका फ़रमान होगा कि दंड उस समय तक शुरू न किया जाए जब तक त्यूनस खिड़कीमें आकर देखने

न लग जाए। क्योंकि ज्यों ही वह खिड़कीमें आकर खड़ी हुई और जेलके दारोगाने उसे देखा, उन आदमियोंकी पीठपर कोड़े बरसने लगे जो उस हत्यारी कलका ख़ूनी पहिया घुमानेके लिए बैलोंकी जगह जोते गए थे।

त्यूनस खिड़कीमें घायल पंछीके समान तड़पने लगी। वह सब कुछ देख रही थी; वह सब कुछ समझ रही थी; यह सब कुछ उसकी आँखोंके सामने हो रहा था। कैदियोंने कोड़े खाकर शरीरके सारे बलसे पहियेको घुमाना शुरू किया और उसके साथ ही वह पहाड़,—मौतसे भी भयानक, हर वस्तुको पीसकर सुरमा बना देनेवाला पत्थर धीरे धीरे नीचे उतरने लगा। त्यूनसको ऐसा दिखाई दिया जैसे यह बेजान पत्थर नहीं जीता-जागता अजगर है, जो मुँह खोले रेमफ़सकी तरफ़ बढ़ रहा है और थोड़ी देरमें....

त्यूनस इससे आगे न सोच सकी, और सहमकर पीछे हट गई। इस समय उसकी आँखोंमें पानी न था। वह यंत्रणाकी उस सीमा पर पहुँच चुकी थी जहाँ आँखोंके आँसू सूख जाते हैं। उसका हृदय काँप रहा था, सिर चक्कर खा रहा था और जीभ तालूसे चिमट रही थी।

धीरे धीरे वह फिर खिड़कीके पास गई, और उसने वह दृश्य फिर दूसरी बार देखा जिसे वह एक बार भी न देखना चाहती थी: अब वह हत्यारा पहाड़ छत और जमीनके अधबीचमें पहुँच चुका था। त्यूनसकी सारी देह काँप उठी। क्या यह हो जाएगा? क्या यह पत्थर रेमफ़सके जीवनका अन्त कर देगा? नहीं, त्यूनसने कहा, नहीं। मैं उसे न मरने दूँगी, मैं उसे बचा लूँगी।—फ़रऊन

मेरे मुँहसे प्यारका एक शब्द सुननेको अधीर हो रहा है। मैं उसे आज्ञा दूँगी, और वह सिर झुकाकर उसका पालन करेगा।—एकाएक दूसरा विचार आया।—इसका मतलब क्या होगा? वह बच जाएगा, मगर मेरे और उसके बीचमें एक समुद्र आ खड़ा होगा। एक किनारे मैं, एक किनारे वह। दोनों जिएँगे, दोनों तड़पेंगे। मर मर कर जीना भी कोई जीना है? इससे तो अच्छा है कि प्रेमके मार्गमें दोनों मर जाएँ, और दोनों अमर हो जाएँ।

एक बार फिर उसने दूसरे कमरेमें झाँककर देखा और उसे हज़ारों लाखों बिच्छुओंने एक साथ काट खाया। पत्थर रेमफ़ससे केवल एक आध इंच ऊँचा रह गया था,—दो चार क्षण और,—और फिर रेमफ़सका जीवन सदा सदाके लिए समाप्त हो जाएगा। सहसा त्यूनसने एक चीख़ मारी और खिड़कीसे हटकर दरवाज़ेकी तरफ दौड़ी। दरवाज़ा बाहरसे बन्द था। त्यूनसने अपने दोनों हाथ उसपर मारे। दरवाज़ा खुल गया और पहरेदारने अपनी संगीनका सिरा ज़मीनपर रखकर सिर झुका दिया

दौड़ो!—त्यूनसने चिल्लाकर कहा—और अपने बादशाहसे कहो, मैंने उसकी शर्त स्वीकार कर ली है।

आख़िर वह स्त्री थी, और अबला थी, और उसके मनमें रेमफ़सका प्यार था!

और वहाँसे हटकर जब वह खिड़कीमें आई तो उसे यह देखकर कितनी खुशी हुई कि हत्यारी मशीनके पापी पहिये उलटे चल रहे हैं, और जो पत्थर पहले धीरे धीरे नीचे जा रहा था, वह अब ऊपर आ रहा है! रेमफ़स आश्चर्य्यसे इधर उधर देख रहा था, और कैदखानेके आदमी उसकी ज़ंजीरें खोल रहे थे।

त्यूनसके मनको संतोष हुआ और वह पीछे मुड़ी। इतनेमें दरवाज़ा खुला और फ़रऊन मुस्कराता हुआ कमरेमें आया। त्यूनसने पूछा—वह बच गया ?

फ़रऊनने उसकी तरफ़ लोभपूर्ण आँखोंसे देखा और धीरेसे जवाब दिया—हाँ, अब उसे केवल पाँच सालके लिए पत्थर काटनेका काम करना पड़ेगा।

६

दूसरे दिन ब्याह हो गया।

और जब फ़रऊन त्यूनसको शाही लिबासमें अपने महलकी बड़ी दीवारपर ले गया और लोगोंने देखा कि उनकी महारानी कितनी रूपवती है, और उसकी शक्ल-सूरतमें कितना लावण्य है तो उनके आश्चर्य और आनन्दकी सीमा न रही—वह भूमिपर गिरे हुए थे और फ़रऊनके चुनावकी प्रशँसा कर रहे थे और अपने अपने मनमें यह सोचकर खुश हो रहे थे कि त्यूनस जैसी सुन्दरी सारे देशमें न होगी। और त्यूनस भी आज कलकी त्यूनस मालूम न होती थी। कल वह गुलाम लड़की थी, आज मिस्रकी रानी थी। कल कुँवारी थी, आज दुलहिन थी। कल वह फटे-पुराने चीथड़े पहने थी, आज एक साम्राज्यके सर्वोत्तम और अनमोल हीरे-मोती उसकी देहपर निछावर हो रहे थे। आजकी इस त्यूनस और कलकी उस त्यूनसमें आकाश-पातालका अंतर था। आज उसे उसकी मा देखती तो वह भी न पहचान सकती। आज वह मिस्रकी सबसे सौभाग्यवती सुन्दरी थी, आज उसे फ़रऊनने अपनी जीवन-संगिनी चुना था।

मगर क्या वह खुश थी ?

नहीं, उसे राज्यकी इस मंगल-शोभा और ऐश्वर्यके सिंहासनपर बैठकर भी अपना ग़रीब रेमफ़स याद आता था जो किसी अजानी जगहमें पत्थर काट रहा था और जिसका दोष केवल यह था कि उसने उससे प्यार किया था। त्यूनस उसे याद करती थी और उसकी यादमें दिन-रात ठंडी आहें भरती थी। और उसका ठंडी आहें भरना कभी समाप्त न होता था। फ़रऊन यह सब कुछ देखता था, और उसे पाषाण-हृदय मूर्ति समझकर उसके निकट न जाता था। वह उस शुभ घड़ीकी प्रतीक्षा कर रहा था जब रेमफ़सकी याद त्यूनसके मनसे धुएँकी तरह ग़ायब हो जाएगी और वह उसकी शाही मेहरबानियाँ देखकर अपनी प्यारकी भुजाएँ उसके लिए फैला देगी। वह राजा था और अपने राज्यमें किसी दूसरेका प्रभुत्व उसे स्वीकार न था, चाहे राज्य प्रेमका राज्य हो और चाहे वह प्रभुत्व केवल कल्पनाहीका प्रभुत्व हो।

त्यूनसकी त्रिया-हठको देखकर फ़रऊन यह तो समझ गया था कि उसे त्यूनसके प्यारकी बहुत दिनों प्रतीक्षा करनी होगी, मगर वह यह न समझता था कि उसका अधीर हृदय इतनी लम्बी प्रतीक्षा कैसे कर सकेगा ? मगर भगवानको उसकी बेबसीपर दया आई और ब्याहके बाद अभी एक सप्ताह भी न गुज़रने पाया था कि हब्शी सुलतान शमलार्कने अपनी बेटीके अपमानका बदला लेनेके लिए मिस्रपर धावा कर दिया।

फरऊन आराम-पसंद था, निर्दय था, स्वार्थी था। उसने अपना कोष भरनेके लिए हजारों-लाखों गरीबोंके जीवन मिटा दिए थे। मगर वह कायर न था। इसलिए जब उसने सुना कि सुलतान शमलार्कने

चढ़ाई कर दी ह, तो उसने ज़रा परवाह न की और सेनाको तैयार होनेकी आज्ञा दी।

रातका समय था। फ़रऊनने लोह-कवच पहना और त्यूनससे बिदा माँगनेके लिए उसके मोर-महलमें गया।

त्यूनस समझ गई कि फ़रऊन युद्धमें जा रहा है। फ़रऊनने उसके पास जाकर कहा—त्यूनस, शमलार्कने मिस्रपर चढ़ाई की है।

त्यूनसने रुक रुक कर पूछा—क्यों ?

आर वह जानती थी कि फ़रऊन क्या जवाब देगा। मगर फ़रऊनने वह जवाब न दिया, और कहा—यह मैं नहीं जानता।

त्यूनसने धीरेसे कहा—मगर मैं जानती हूँ।

फ़रऊन पहले चाका, फिर शान्त हो गया, फिर मुस्करा कर बोला—तुम क्या जानती हो ?

त्यूनस—वह मुझे माँगता ह। अगर मुझे उसके हवाले कर दिया जाय, तो उसकी क्रोधाग्नि आज बुझ जाए।

फरऊन—मगर तुम्हारे लहूसे।

त्यूनस—मिस्रके हज़ारों बेटे बच जाएँगे। आप मेरा ख़्याल न कर। देशके सामने मैं कोई चीज़ नहीं। अगर मेरी मौतसे युद्ध रुक सके, तो मैं ऐसी मौतका सिर-आँखोंसे स्वागत करनेको तैयार हूँ।—आख़िर मैं एक गुलाम लड़की हूँ।

यह कहते कहते त्यूनसकी बड़ी बड़ी आँखोंमें आँसू लहराने लगे। यह आँसू न थे, त्यूनसकी अभिलाषाओंकी पिघली हुई आग थी जिसे फ़रऊनने भी समझ लिया। उसने त्यूनसके कंधेपर अपना प्रेम-पूर्ण हाथ रखा और भावुकताके भार-तले काँपती हुई आवाज़में कहा—त्यूनस, तू फ़रऊनकी मलिका-महारानी है।

और यह कहकर उसने वह कपड़ा, जो उसके कंधोंसे नीचे गिर गया था, उठाकर उसके कंधोंपर ठीक तरह रखा और उसके मनोहर मुखड़ेको, जिसे राजसी ठाठने और भी मनोहर बना दिया था, वह लोभकी आँखोंसे देखने लगा। इसके बाद उसने फिर त्यूनसके कंधेपर हाथ धरा, और बोला—त्यूनस, तू मेरी मलिका है। मैंने तेरे सिरपर ताज रखा है। तुझे मुझसे प्यार हो या न हो, मगर दुनिया और देवताओंकी आँखोंमें तू मेरी स्त्री है, मैं तेरा पति हूँ, और तेरे मनकी गहराइयोंका प्यार मेरा अधिकार है, जिससे तू मुझे परे नहीं रख सकती। मगर मैं तुझे चाहता हूँ, और मेरा मन नहीं मानता कि तेरी आँखमें दुःखके आँसू देखूँ। इसलिए मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि तू मुझसे प्यार करना सीख लेगी, और मेरा प्यार तेरे मनमें मेरी जगह बना देगा। लेकिन आसमानके देवताओंकी क्या मरज़ी है, यह उनके सिवाय और कोई नहीं जानता। मैं युद्ध-भूमिमें जा रहा हूँ, और नहीं कह सकता कि वहाँसे जीता लौटूँगा या वहीं मर जाऊँगा। इसलिए मैं युद्ध-भूमिको जानेसे पहले तेरे मुँहसे केवल एक बात सुनना चाहता हूँ।

त्यूनसने इस लम्बी बात-चीतका जवाब केवल एक शब्दमें दिया—क्या?

फ़रऊन हताश नहीं हुआ, बोला—मुझसे कह, तुझे मुझसे प्यार है। ये शब्द युद्ध-भूमिमें मेरी भुजाओंका बल और मेरे मनकी शक्ति बन जाएँगे। मैं हिम्मतसे लड़ूँगा। मेरे सामने आनेका किसीको साहस न होगा।

त्यूनसने मुँहसे कोई जवाब न दिया। न वह जवाब दे सकती थी।

फ़रऊनने ब्याहके बाद उससे कोई बात ऐसी न की थी जिसकी त्यूनस शिकायत कर सकती। ऐसे प्यार और सम्मानसे दुनियाका कोई पति अपनी स्त्रीसे कम पेश आया होगा। त्यूनस उसका दिल न दुखाना चाहती थी। वह चाहती थी, मैं जो कुछ इसके लिए कर सकती हूँ, करूँ। मगर वह कितनी बेबस थी! उसकी धारणा थी कि फ़रऊनसे प्यारकी एक बात करनेका अर्थ रेमफ़सके साथ दग़ा करना है, और यह वह बात थी जो त्यूनस तीन लोक और तीन कालमें करनेको तैयार न थी। त्यूनसने मुँहसे कोई जवाब न दिया, मगर उसके मुँहके रंगने और सजल आँखोंने सब कुछ कह दिया। अभागे फ़रऊनके आत्म-सम्मानको इससे इतना धक्का लगा, और उसकी आशाओंपर ऐसा कुठाराघात हुआ कि उसका मुँह उतर गया और वह अपनी भीगी हुई पलकें पोंछने लगा। कदाचित् इस समय कोई चित्रकार फ़रऊनके दिलको देख सकता तो उसे दुर्भाग्यकी ऐसी तस्वीर मिलती जो संसारके किसी चित्रकारको आज तक न मिली होगी।

त्यूनस चाहती थी, फ़रऊन उसपर क्रोध करे, उसे सज़ा दे, उसे अपना पाशविक बल दिखाए। मगर फ़रऊनने उससे एक शब्द भी न कहा और मिस्रके नियमानुसार वह त्यूनसका हाथ चूमकर चुपचाप बाहर चला गया। फ़रऊनके इस शील और विनयको देखकर, जो उसकी देव-पदवी और पशु-प्रकृति दोनोंके विरुद्ध था, त्यूनसका दिल टुकड़े टुकड़े हो गया और वह पलंगपर लेटकर रोने लगी।

उन दिनोंके मिस्रका रिवाज था कि बादशाह युद्ध-क्षेत्रमें जानेसे पहले आग, लोहे और प्रारब्धके देवताओंको पूजता था, और इसके

बाद अपनी मलिकाकी कोई एक इच्छा पूरी करता था। इसलिए जब आधी रात गुज़र गई और फ़रऊन पूजा कर चुका तो त्यूनसके मोर-महलमें आया और बोला—मुझसे अपनी कोई इच्छा बयान कर, ताकि मैं उसे पूरा करूँ, और युद्धमें जाऊँ।

त्यूनसने अपनी फूल-देह फ़रऊनके पाँवमें फेंक दी और सिसकियाँ भर भर कर रोने लगी। कदाचित् उसे रेमफ़सके साथ प्यार न होता, या फरऊन उसके साथ ऐसा सद्व्यवहार न करता!

फ़रऊनने त्यूनसको अपने पाँवसे उठाकर अपने साथ चौकीपर बिठा लिया, और प्यार-भरे शब्दोंमें कहा—कोई इच्छा?

त्यूनसने सिर ऊपर उठाए बिना जवाब दिया—कोई नहीं।

फ़रऊन—फिर भी कुछ तो कहो, कुछ तो बोलो। कुछ मँगवा दूँ, कुछ बनवा दूँ? तुझे अपनी कोई माँग मुझसे बयान करना होगी।

त्यूनस—मेरे मनमें इस समय कोई माँग नहीं है।

फ़रऊन—कोई इच्छा?

त्यूनस—कोई नहीं।

फ़रऊन—त्यूनस! कुछ माँग, कुछ कह।

त्यूनस—(सजल आँखोंसे फरऊनकी ओर देखकर) क्या माँगूँ? क्या बोलूँ?

फ़रऊन—(आग्रहसे) क्या ऐसी कोई बात नहीं जिसे मैं पूरा कर सकूँ?

त्यूनसने सोचा, कहूँ या न कहूँ?

फ़रऊन—क्या सोच रही है?

त्यूनसके मनमें आया, कह दूँ।

फ़रऊन—कह त्यूनस !

त्यूनसके मनमें आया, न कहूँ ।

फ़रऊन अपनी जगहसे उठकर खड़ा हो गया और इधर उधर टहलते हुए बोला—आज युद्ध-यात्राकी रात है । मैं बादशाह हूँ, तू मलिका है । आज तुझे मुझसे कुछ माँगना होगा, यह तेरा अधिकार है । आज मुझे तेरी इच्छाको पूरा करना होगा, यह मेरा धर्म्म है । तू जो कुछ कहेगी, वह हो जाएगा। अब कह, क्या तेरी कोई इच्छा नहीं है ?

त्यूनसको आशा सामने दिखाई दी ।

फ़रऊन—कोई इच्छा जिसे राजा और पति पूरा कर सके ।

त्यूनसको आशाके साथ निराशा भी दिखाई दी ।

फ़रऊन टहलते टहलते रुक गया ।

त्यूनसने धीरेसे कहा—मेरी एक इच्छा है, मगर....

फ़रऊन—वह मै पूरी न कर सकूँगा, क्या तेरा यह ख़्याल है ?

त्यूनस—मेरा मतलब था, मैं कहना नहीं चाहती ।

फ़रऊनने उसकी तरफ मुस्करा कर देखा, और कहा—मेरी भोली रानी ! तूने सब कुछ कह दिया है । और जो कुछ तूने कहा है, उसे मैं हँसते हुए करूँगा । यह कहकर फ़रऊनने उसी समय और उसी जगह चमड़ेका एक टुकड़ा मँगवाया और उसपर कुछ लिखकर, और उसपर शाही मुहर लगवाकर त्यूनससे कहा—खुश हो, कि मैंने तेरे मनकी बात पूरी कर दी है !

और त्यूनस खुश हो रही थी, और उसकी खुशी, उसके चेहरेसे, उसकी आँखोंसे, उसकी भाव-भंगीसे प्रकट हो रही थी ।

फ़रऊनने पहरेदारको बुलाया और उसे वह चमड़ेका टुकड़ा देकर कहा—यह शाही फ़रमान है, इसे पत्थरोंके दारोग़ाके पास भेज दो।

पहरेदारने चमड़ेका टुकड़ा लिया और बादशाहको सलाम करके बाहर चला गया।

फ़रऊनने कमरेमें चारों तरफ़ देखा और धीरेसे कहा—रेमफ़स एक घंटेके अन्दर अन्दर छूट जायगा।

इस समय उसके शब्दोंमें ज़रा भी क्रोध, ज़रा भी रोष न था। और त्यूनस सिर झुकाए, आँखें ज़मीनपर गाड़े सोच रही थी, क्या यह वही फ़रऊन है जिसके क्रोध और क्रूरताकी कहानियाँ सुनकर लोग अपने बन्द घरोंके अन्दर काँप उठते हैं? इस समय वह कितना सहृदय, कितना सरल, कितना साधु है! त्यूनसकी आँखोंमें पानी छलकने लगा।

फ़रऊन बाहर निकला।

रातका समय था। एक पहरेदार दीवारके साथ पीठ लगाए खड़ा था। शायद वह कुछ सोच रहा था, शायद वह थक गया था, शायद वह ज़रा ऊँघ गया था। फ़रऊनने उसे सोते देखा तो उसका पशु-स्वभाव जाग उठा। शराबीने शराब छोड़ दी थी, शराबख़ानेके सामने पहुँचकर फिर ललचा उठा। अब उसे शराब पीनेमें कितनी देर लग सकती थी, और ऐसी अवस्थामें जब कि कोई रोकनेवाला निकट न था? फ़रऊनने अपना सोनेका डंडा उठाया, और यह सोचे बिना कि इसका परिणाम क्या होगा और किस तरह होगा, उसे पहरेदारके सिरपर पूरे ज़ोरसे दे मारा। पहरेदारकी नींद ज़रा देरके

लिए खुली और ज़मीनपर तड़पकर मौतके गले मिल गई । अब वह फिर वह वही फ़रऊन था; वही आगभरा स्वभाव, वही पत्थर और लोहेका दिल, वही हिंसा-प्रिय वृत्ति । त्यूनसका महल प्यारकी नगरी थी जहाँ जाकर उसकी प्रकृति बदल जाती थी । और उसकी प्रकृति सदाके लिए बदल जाती अगर त्यूनस उसके प्यारका जवाब प्यारसे देती । मगर चूँकि ऐसा न होता था, इसलिए वह इसका बदला बाहर आकर अपनी प्रजासे लेता था और प्रेमकी आगको पापकी ज्वालासे बुझाना चाहता था ।

७

निराशा और बेबसीकी यह भारी रात फ़रऊनने अपने महलके आँगनमें टहल टहल कर काटी । इस समय उसका चेहरा ऐसा उदास और आँखें ऐसी भारी थीं, मानों उसपर संसारका सबसे बड़ा संकट टूट पड़ा हो । इस दयनीय दशामें उसे जो देखता, वही उसपर दया करता । मगर इस समय उसे देखनेवाला सिवाय आकाशके तारोंके और कोई भी न था ।

जब दिन चढ़ा तो फ़रऊनकी आँखोंमें रत-जगेकी लालिमा और थकानकी अँगड़ाइयाँ थीं, मगर उसने अपने जीवनकी इस हारको किसीपर प्रकट न होने दिया । और जब उसकी सतरंगी सेना सुलतान शमलार्ककी सेनासे लड़नेको चली तो उसने अपने चेहरेपर ऐसा संतोष-आनन्द दिखाया, और अपने सिपाहियोंसे वीरताके ऐसे उत्साह-जनक शब्द कहे कि किसीको संदेह तक न हो सका कि उसके मनमें कोई चिन्ता भी है । कबूतरको जब शिकारीका तीर लग जाता है और घावसे लहू बहने लगता है तो वह अपने परोंको

सँवार लेता है, और घातकके घावको छिपा लेता है। मगर क्या इससे लहू बहना भी बन्द हो जाता है?

आख़िर फ़रऊनके जानेका समय आया। और उसने निराशाकी आँखोंसे उस महलकी तरफ़ देखा जहाँ उसके मनकी मलिका थी। इसके बाद उसने एक ठंडी आह भरी और उचककर जंगी रथपर सवार हो गया।

घोड़ोंकी पीठपर ताबड़तोड़ कोड़े बरसे और घोड़े अपने पाँवोंकी सारी शक्तिसे दौड़े। रथके पहिये सड़कके पत्थरोंसे टकरा रहे थे और उनकी आवाज़से दूर दूर तक लोगोंको मालूम हो रहा था कि फ़रऊन अमनस दुश्मनसे लड़ने जा रहा है।

मगर आठ दिन बीत गए और युद्धका कोई फैसला न हुआ। दोनों तरफ़के आदमी सारा दिन लड़ते थे और साँझको जो बचते थे अपने अपने ख़ैमोंमें चले जाते थे। हर सिपाही अपने आपको मौतके मुँहमें समझता था और सबेरे कोई न कह सकता था कि वह साँझको जीता लौटेगा या युद्ध-भूमिमें सदाकी नींद सो चुका होगा। इसपर भी उनको अपनी परवाह न थी। यह व्यक्तियोंके मरने-जीनेका सवाल न था, दो देशोंकी मान-मर्यादा और हार-जीतका सवाल था। सिपाही लड़ते थे, बादशाह लड़ते थे, नेज़े और भाले लड़ते थे। इसी तरह आठ दिन बीत गए और कोई फ़ैसला न हुआ।

नवें दिन जब नरसिंघा फूँका गया और युद्ध छिड़ने लगा, तो शमलार्कके एक आदमीने आगे बढ़कर ऊँची आवाज़से कहा—सब कोई सुनो और सब कोई जानो! हमारा सुलतान मिस्रसे नहीं लड़ता, न उसे मिस्र-निवासियोंसे बैर है। इस रक्त-पातका कारण एक गुलाम लड़की है। उसे हमारे सुपुर्द कर दो, हम इसी समय युद्ध बन्द किए देते हैं।

फ़रऊनने अपने घोड़ेके अगले दोनों पाँव हवामें खड़े करके जवाब दिया—फ़रऊन अमनस इस माँगको अपने युगका सबसे बड़ा अपमान समझता है और उस असभ्य और अनपढ़ सरदारके साहसपर हैरान है जो कल तक उसके फेंके हुए टुकड़ोंपर संतुष्ट था और आज सिर्फ़ इसलिए नाराज़ है कि उसकी बेटीसे ब्याह क्यों नहीं किया गया ? लेकिन अगर उसकी बेटीको उस अप्सराके सामने खड़ा किया जाए, जिसे वह अभीतक वही गुलाम लड़की समझ रहा है, तो स्वर्गके देवता स्वर्गकी सौगंध खाकर कह देंगे कि त्यूनसका-सा रूप स्वर्गमें भी नहीं है, और त्यूनसको उस हब्शिनके सामने खड़ा करना सौन्दर्य-संसारका सबसे बड़ा अन्याय है ।

यह जवाब सुनकर दोनों तरफ़के सिपाही एक दूसरेका मुँह तकने लगे । सहसा शमलार्कने अपना घोड़ा आगे बढ़ाया और अपना नेज़ा हवामें ऊँचा करके कहा—तो निर्दोष सेनाको कटवानेसे क्या लाभ है ? आओ, हम-तुम दोनों लड़कर फ़ैसला कर लें । झगड़ा हमारा है, हानि दूसरोंकी क्यों हो ?

फ़रऊन सूरमा था । उसने मुँहसे कुछ न कहा, मगर घोड़ेको एड़ लगाकर आगे बढ़ा, और अपनी सेनाको पीछे रुके रहनेका इशारा किया । शमलार्क भी आगे बढ़ा । इस समय इन दोनोंकी आँखोंमें क्रोधकी आग जलती थी और नथनोंसे शोले निकलते थे । छेड़े हुए साँपोंकी जो दशा होती है वही दशा इस समय इनकी थी । दोनोंके वीर सिपाही आस-पास खड़े थे और चुप-चाप हार-जीतकी प्रतीक्षा कर रहे थे । अजीब तमाशा था ! बादशाह लड़ते थे, सिपाही देखते थे । आज यह वीर-घटनाएँ पुराने युगकी कहानियाँ बन कर रह गई ह जिनपर कोई विश्वास करता है, कोई नहीं करता ।

जब दोपहर हो गई और सूरज आसमानमें ठीक सिरपर पहुँच गया तो फ़रऊनने अपना नेज़ा और ढाल ज़मीनपर फेंक दी, अपने घोड़ेको शमलार्कके साथ मिला दिया और बिजलीकी-सी गतिसे उसके कमरबन्दमें हाथ डालकर उसे हवामें उठा लिया। एक तरफ हर्ष-ध्वनि थी, दूसरी तरफ़ भयका चीत्कार। एक तरफ़ जीतके लक्षण थे, दूसरी ओर हारकी आशंका। फ़रऊनने थोड़ी देर अपने दुश्मनको हाथपर उठाए रखा, इसके बाद पूरे ज़ोरसे ज़मीनपर पटक दिया;—इस समय वह चाहता तो उसे कत्ल भी कर सकता था।

शमलार्ककी हब्शी सेनाने कौल-करारको भूलकर फ़रऊनपर आक्रमण कर दिया। मगर फ़रऊनने अब भी हिम्मत न हारी और जब क्रोधसे उनपर अपना शेर घोड़ा छोड़ा तो सब तितर-बितर हो गए, और जो भी सामने आया, पीछे हट गया। फ़रऊनके सिपाही दुश्मनके इस कपट-व्यवहारपर हैरान थे और अभी अपने बादशाहकी सहायताको आगे न बढ़ने पाए थे कि वह एक हब्शीकी तलवारसे घायल हो गया। फ़रऊनका घोड़ा अपनी आन्तरिक बुद्धिसे स्थितिको समझ गया और अपने मालिकको युद्ध-भूमिसे ले उड़ा। थोड़ी देर बाद फ़रऊनका बेसुध शरीर दूर फासिलेपर नील नदीके किनारे पड़ा था। मगर इस हालमें भी उसका स्वामि-भक्त घोड़ा उसके पास खड़ा था और उसके फिर उठनेकी प्रतीक्षा कर रहा था।

उधर शमलार्ककी देहका बन्द बन्द दुखता था, मगर वह फिर भी उठकर घोड़ेकी पीठपर चढ़ बैठा और युद्ध होने लगा। लेकिन मिस्रके सिपाही फ़रऊनके न होनेसे मन हार बैठे थे। उनका साहस

मर चुका था और उनकी भुजाओंकी शक्ति ठंडी हो चुकी थी। यहाँ तक कि जब रातका अंधकार आकर दोनों तरफ़के सिपाहियोंके बीचमें खड़ा हो गया, तो मिस्रके सिपाही मैदान छोड़कर भाग आए और उन्होंने शहरका दरवाज़ा बन्द कर लिया।

८

दूसरे दिन शमलार्कके सिपाही, अपने देशके रिवाजके अनुसार, जलती हुई अँगीठियाँ अपने सिरोंपर रखे सीबाके दरवाज़ेपर पहुँचे। इसका मतलब यह था कि वह सन्धिकी शत लेकर आए हैं। नगर-रक्षकने अपनी तसल्ली करके दरवाज़ा खोला और उन्हें अन्दर आनेकी आज्ञा दी।

मोर-महलके द्वारपर फ़रऊनके प्रधान-मंत्री और पुरोहितने शमलार्कके दूतोंका स्वागत किया। सामने खुले मैदानमें लोगोंकी भीड़ खड़ी थी और सुनना चाहती थी कि हब्शी बादशाहने क्या शत भेजी हैं।

सबसे पहले मिस्रका और इसके बाद हब्शियोंका राष्ट्र-गीत गाया गया और जो वीर मारे गए थे, उनके माता-पिताओंको बधाई दी गई। इसके बाद शमलार्कके प्रधान दूतने खड़े होकर अपनी अँगीठीका धुआँ अपने मुँहपर मला और ऊँची आवाज़से कहा—फ़रऊन अमनस मर गया है, अब मिस्रके निवासियोंसे हमारी कोई लड़ाई नहीं। मगर युद्धका मूल कारण अभी मिस्रमें है और जब तक उसे हमारे हवाले न कर दिया जायगा, लड़ाई बंद न होगी। इस लड़ाईका मूल कारण एक गुलाम लड़की है, और वह त्यूनस है। हमारा बहादुर बादशाह चाहता है कि आप लोग उसे हमारे हवाले कर दें। लड़ाई इसी समय बन्द हो जायगी।

प्रधान दूत यह कहकर बैठ गया। जवाबमें कुछ देर सन्नाटा रहा, इसके बाद प्रधान मंत्री, युद्ध-सचिव और राज-पुरोहितने आपसमें परामर्श किया और राज-पुरोहित महलके अंदर चला गया। लोगोंके दम रुक गए। वे सोचने लगे, देखें अब क्या होता है! क्या राज-पुरोहित त्यूनसको बुलाने गया है? क्या उन्होंने देश-हितके लिए त्यूनसको हब्शियोंके सुपुर्द करना स्वीकार कर लिया है?

राज-पुरोहित बाहर आया। प्रधान-मंत्रीने खड़े होकर कहा—इसका निश्चय मिस्रकी मलिका आप करेंगीं।

और अभी यह शब्द हवामें गूँज ही रहे थे कि महलका दरवाज़ा फिर खुला, और त्यूनस अपनी सर्वोत्तम पोशाक पहने बाहर निकली। इस समय उसका चेहरा फूलके समान खिला हुआ था, और उसपर वसन्तकी शोभा खेल रही थी। लोगोंका ख़्याल था, वह उदास होगी, उनका यह ख़्याल ग़लत निकला।

त्यूनस बाहर आई। ऐसे जैसे अँधेरी रातमें चाँद आता है, जैसे कविकी कल्पनामें अलंकार आता है, जैसे पत-झड़में वसन्त आता है। हब्शी बादशाहके हब्शी दूतोंने इस हृदयग्राही रूप और यौवनकी छटाको देखा तो उनके दिल धड़कने लगे, और युद्ध-सचिव और प्रधान-मंत्रीको अपना काम मुशकिल मालूम होने लगा।

मगर लोगोंकी भीड़पर त्यूनसके रूपका कोई असर न हुआ। लम्बे-चौड़े मैदानके अँधेरेको एक दीपक दूर नहीं कर सकता। उन्होंने अपनी देह और आत्माकी सम्पूर्ण शक्तियोंसे चिल्लाकर कहा—मलिका! हमारे बाल-बच्चोंका ख़्याल कर!

कुछ आदमियोंने कहा—अपने लिए सारे देशको संकटमें न डाल!

कुछ बोले—जो कुछ कह, सोचकर कह!

एक आध आवाज़ आई—जहाँसे आई है, वहीं चली जा।

युद्ध-सचिवने खड़े होकर हाथ उठाया और लोगोंको शांत होनेका इशारा किया। इस बीचमें त्यूनस आगे बढ़ चुकी थी, और प्रधान-मंत्रीसे धीरे धीरे सलाह कर रही थी। जब लोग चुप हुए, और एक नाज़ुक महिलाके लिए अपनी आवाज़ भीड़ तक पहुँचनेकी संभावना दिखाई दी, तो त्यूनसने अपनी जवान गरदन उठाई और अपनी जादूगर आँखोंसे लोगोंको देखकर कहा—मैं नहीं चाहती थी कि यह युद्ध हो। मगर फ़रऊनने मेरा कहा न सुना, और युद्ध शुरू कर दिया। और मैं अब भी नहीं चाहती कि युद्ध होता रहे। और चूँकि अब इसका फ़ैसला करनेवाला फ़रऊन नहीं, मैं हूँ, इसलिए मैं फैसला करती हूँ कि यह युद्ध नहीं होगा और देशका अमन-अमान देशको वापस मिल जायगा।

लोगोंने चिल्लाकर कहा—त्यूनस देवी है। त्यूनस जीती रहे! त्यूनसने हमें बचा लिया।

प्रधान मंत्रीने फिर हाथसे इशारा किया और लोग चुप होकर सुनने लगे।

त्यूनसने कहा—मैं अपने आपको शमलार्क़के सुपुर्द करनेको तैयार हूँ। मगर मैं चाहती हूँ कि मिस्रके बेटे उस प्रेम और श्रद्धाका अनुभव करें जो मेरे मनमें मिस्रके लिए है, और जिससे प्रेरित होकर मैं मौतके मुँहमें जा रही हूँ।

यह कहते कहते त्यूनसकी आँखोंमें नशा-सा छा गया और उसके शब्द उसके होठोंपर जम गए। इसके बाद उसने सिर उठाया

और धीरे धीरे पीछे मुड़कर शमलार्कके दूतोंके सामने अकड़ कर खड़ी हो गई।

युद्ध-सचिव पुरोहित और प्रधान मंत्री तीनोंकी आँखें सजल हो गईं; और वह उस सज़ाका ख़्याल करके काँप गए, जो शाह शमलार्कके कैद-खानेमें त्यूनसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

इतनेमें एक आदमी भीड़को चीरता हुआ आगे बढ़ा और वहाँ आकर खड़ा हो गया, जहाँ त्यूनस शमलार्कके दूतोंके सामने खड़ी थी। इस समय उस आदमीका दम फूला हुआ था और उसकी आँखोंसे आगकी चिन्गारियाँ निकल रही थीं। यह वीर रेमफ़स था जो युद्धमें जी-जानसे लड़ता रहा था, और जिसकी भुजाओंने दुश्मनके छक्के छुड़ा दिए थे। सारे लोग उसकी ओर देखने लगे। प्रधान मंत्री और राज-पुरोहितको अंधकारमें आशाकी किरण दिखाई दी। त्यूनसकी दृढ़ता उसे निर्बल होती मालूम हुई।

रेमफ़सने अपने गलेकी पूरी शक्तिसे कहा—मिस्रके रहनेवालो! ज़रा सोचो, यह क्या हो रहा है, और यह तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम्हें इस बातका भय नहीं कि तुम्हारी भावी संतान तुम्हें क्या कहेगी और तुम्हारे क्या क्या नाम रखेगी? यह स्त्री कलतक चाहे गुलाम लड़की रही हो, मगर आज तुम्हारी मलिका है और तुम्हारे बादशाहकी बीवी है। इसका अपमान तुम्हारे देशका अपमान और इसकी बे-इज्ज़ती तुम्हारे बादशाहकी बे-इज्ज़ती है। मेरा सिर शर्मसे झुका जाता है, जब मैं देखता हूँ कि यह अपमान तुम्हारा दरवाज़ा खटखटाता है, और तुम चुप-चाप खड़े मुस्कराते हो। वीर मा-बापके कायर बच्चो! अगर तुम्हारे दिलमें शर्म-हयाका एक परमाणु भी बाक़ी

है, तो इस स्त्रीके सम्मानको अपनी माका सम्मान समझो, इसे अपनी मलिका मानो, और जंगली बादशाहके जंगली दूतोंसे कह दो, कि जाओ, हम तुम्हारी बातका जवाब युद्ध-भूमिमें तलवारसे देंगे। इनसे कह दो कि तुम्हारे अपवित्र हाथ हमारी मलिकाकी पवित्र चादरको उस दिन छू सकेंगे, जिस दिन मिस्रकी भूमिपर कोई आदमी जीता जागता न होगा। उठो! अमन-अमान और आराम-विश्रामकी आशाको आग लगा दो, अपने लहूकी गरमीको ज़िन्दा करो, और अपने अस्त्र-शस्त्र लेकर इन असभ्य जंगलियोंको मिस्रकी सीमासे दूर भगा दो। दुनियाका इतिहास तुम्हारे साहसकी प्रशंसा करेगा।

लोगोंमें शोर मच गया। यह वक्तृता न थी, एक बिजली थी, जो एक एक देहमें आग लगा गई। कोई आँख न थी, जो क्रोधपूर्ण न हो, कोई दिल न था जो व्याकुल न हो। अभी अभी लोग त्यूनसके विरुद्ध थे, अभी उसके पक्षमें हो गए। उन्होंने चिल्ला चिल्लाकर कहा—हमारी मलिका हमारी मा है। जब तक हमारी रगोंमें लहू है, उसका अपमान कोई नहीं कर सकता।

प्रधान मंत्रीने उठकर लोगोंको शांत किया और ऊँची आवाज़में पूछा—मिस्रके बेटे क्या चाहते हैं?

जवाब मिला—अपनी मलिकाका सम्मान।

प्रधान-मंत्रीने फिर पूछा—कोई यह भी चाहता है, कि मलिका शमलार्कके हवाले कर दी जाए?

जवाब मिला—कोई नहीं।

रेमफ़सने ज़ोरसे कहा—मिस्रकी जय हो!

लोगोंने सुरमें सुर मिलाया—मिस्रकी जय हो!—मिस्रकी जय हो!!

राज-पुरोहित त्यूनसको महलके अंदर ले गया। हब्शी दूत अपनी अपनी अँगीठियोंकी आग बुझाकर वापस चले गए, जिसका अर्थ यह था कि सुलह-सफ़ाईकी बात-चीत रह गई है।

दूसरे दिन फिर युद्ध हुआ और पूरे ज़ोरसे हुआ। शमलार्कके सिपाही जानपर खेल रहे थे। उनके पास भुजाओंका बल और हृदयका साहस था, मगर रेमफ़सकी ओजमय वक्तृताका मुकाबिला करनेवाली चीज़ उनके पास न थी। वह आज नंगी कटार बना हुआ था। जिधर झुकता था, परेके परे साफ़ कर जाता था और फिर कहीं टिकता न था। अभी यहाँ, अभी वहाँ। वह गिरतोंको सँभालता था, उभारता था, ललकारता था। आज वह हाड़-मांसका आदमी नहीं था, जीती-जागती बिजली बना हुआ था। आज वह चलता-फिरता जादू बना हुआ था जो जिधर जाता है जोश और जीवन छिड़कता जाता है देखते देखते बाज़ीका पाँसा पलट गया। हारे हुए जीत गए, जीते हुए हार गए। और केवल हारे ही नहीं, भाग गए। और साँझके समय जब सीबाके सिपाही शहरको लौटे तो उनके चेहेरे विजयकी खुशीसे लाल थे, और उनके आगे आगे वीर रेमफ़सका रथ चला आता था।

अब त्यूनस मिस्रकी मलिका-महारानी थी, और चूँकि फ़रऊन अमनस मर चुका था, इसलिए उसे अख़्तियार था कि राज-सिंहासनके लिए एक फ़रऊन और अपने लिए एक पति पसन्द करे। जो कल तक लौंडियोंकी लौंडी थी, वह आज मिस्रका बादशाह चुन सकती थी।

सौ दरवाज़ोंकी प्राचीन नगरी सीबाके अमीर-वज़ीर राज-महलकी सीढ़ियोंपर जमा हुए। उनके लिए चौकियोंका प्रबंध था। मगर

जन-साधारणके लिए ऐसा प्रबन्ध होना असंभव था। इसलिए वह महलके सामनेके मैदानमें बैठ गए। वह देखना चाहते थे कि आज किसकी किसमत जागती है और मलिका त्यूनस किसको मिस्रका फ़रऊन चुनती है।

आख़िर धीरे धीरे महलका दरवाज़ा खुला, और रूपवती त्यूनस एक सौ पाँच कुँवारी सुन्दरियोंके साथ, जो ब्याहका मनको मोह लेनेवाला सुहाग-गीत गा रही थीं, बाहर आई। हज़ारों आँखोंने उसे प्यासी दृष्टिसे देखा, और हज़ारों ज़बानोंने ज़ोरसे चिल्लाकर कहा—आसमानके महान् देवता हमारी सौभाग्यवती मलिकाको सलामत रखें।

राज-पुरोहितने त्यूनसको सिंहासनके आधे हिस्सेपर बैठनेका इशारा किया और कहा—मलिकाकी जय हो!

त्यूनस सिंहासनके आधे हिस्सेपर संकोचसे बैठ गई।

राज-पुरोहितने मिस्रके रिवाजके अनुसार पहले देवताओंसे प्रार्थना की, फिर मिस्रका राष्ट्र-गीत गाया गया, और फिर स्वर्गीय फ़रऊन अमनसका फ़ैसला होने लगा।

९

पुरोहितने कहा—नए फ़रऊनका चुनाव करनेसे पहले मिस्रका रिवाज है कि हम पुराने फ़रऊनके शासन-कालकी आलोचना करें, और जिस सिंहासनपर बैठकर वह हमारे मुकदमें सुनता रहा है, उसी सिंहासनके सामने बैठकर हम उसका मुकदमा सुनें। क्या किसीको स्वर्गीय फ़रऊनके न्यायके विरुद्ध कोई शिकायत है? म मिस्रका राज-पुरोहित उसे फ़रऊनके सिंहासनके सामने पुकारता हूँ और मिस्रके स्वतंत्र सिपाहियोंका यह दरबार उसके प्राणोंका रक्षक है।

सैंकड़ों स्त्रियाँ आगे बढ़ीं। उनकी आँखोंमें आँसू थे, और चेहरे दरिद्रताका खुला हुआ नमूना थे। उनमेंसे एकने कहा—हम वह अभागी स्त्रियाँ हैं जिनके पतियोंने फ़रऊनका कोष-भवन बनाया था, और जिन्हें फ़रऊनने नीलके गहरे पानीमें डुबाकर मार दिया था। और उनका दोष केवल यह था, कि उन्होंने कोष-भवन बनाया था।

यह कहते कहते वह विधवा रोने लगी और उसके साथ ही दूसरी विधवाएँ भी रोने लगीं।

पुरोहितने उन्हें पीछे हटनेकी आज्ञा दी, और कहा—कोई और—

लोगोंमें फिर हलचल हुई और कई बच्चे सीढ़ियोंपर चढ़ आए। उनके साथ एक बूढ़ा भी था, जिसके पाँव मुशकिलसे उठते थे, और जिससे अपने हाथकी लाठी भी न सँभलती थी। उसने कहा—यह बच्चे उन अमीरोंके हैं, जिनके सिर काटकर फ़रऊनने अपने कोषकी पूर्ति की थी। और उनका दोष केवल यह था कि वह अमीर थे।

पुरोहितने उन्हें भी पीछे हटनेका इशारा किया और कहा—कोई और,—

अबके एक बुढ़िया आगे बढ़ी। उसे आँखोंसे दिखाई भी न देता था। उसने कहा—मैं उस चार सालके अभागे बच्चेकी मा हूँ जिसे फ़रऊनने अपने महलकी छतसे नीचे फेंक दिया था। उसका दोष केवल यह था कि वह अबोध बालक भूलसे फ़रऊनके महलके अंदर चला गया था।

लोग सिसकियाँ भरने लगे। जो दिलके ज़्यादा नर्म थे, वह फूट फूटकर रोने लगे। खुद त्यूनस भी रो रही थी।

और दीन-दुखी आते गए, और फ़रऊनकी निष्ठुरताकी कहानियाँ सुनाते गए, और लोग रोते गए।

आख़िर पुरोहितने अपना लकड़ीके समान ख़ुश्क बुड्ढा हाथ उठाया और कहा—बस!

इसके साथ ही उसने कहा—फ़रऊन अमनसके अत्याचारोंकी पाप-सूची बहुत बड़ी है। हम बहुत कुछ सुन चुके, और जो बाक़ी है, उसे सुननेके लिए न हमारे पास समय है, न उसे सुननेका कुछ लाभ है। अब हम यह देखना चाहते हैं, कि क्या कोई ऐसा व्यक्ति भी है, जिसके साथ फ़रऊनने भलाई की हो?

चारों तरफ़ सन्नाटा था। लोग एक दूसरेकी तरफ़ देख रहे थे। दो-चार-दस क्षण गुज़र गए। मगर कोई आदमी आगे न बढ़ा। यहाँ तक कि राज-पुरोहित, युद्ध-सचिव, प्रधान मंत्री और फ़रऊनके निजी सलाहकारोंमेंसे भी किसीने उसके पक्षमें दो शब्द न कहे। फ़रऊनने दुश्मन हज़ारों बनाए थे, मित्र एक भी न बनाया था। त्यूनसको फ़रऊनपर बे-अख़्तियार दया आई। वह सारी दुनियाके लिए हिंस्र पशु था, मगर उसके लिए कितना दयालु, कितना सहृदय, कितना विनयशील था! वह अपनी चौकीसे उठना चाहती थी कि पुरोहितने उसका अभिप्राय समझ लिया, और उसे यह कहकर फिरसे चौकीपर बिठा दिया—यहाँ मलिकाकी गवाही नहीं चलेगी।

त्यूनसके मनकी बात मनहीमें रह गई। सोचती थी, मेरे साथ जिसने इतनी नेकी की, मैं उसके लिए प्रंशसाके दो शब्द भी न कह सकी।

पुरोहितने फिर कहा—क्या इस भरी सभामें एक भी आदमी ऐसा नहीं है, जिसके साथ फ़रऊनने भलाई की हो?

जवाबमें फिर वही सन्नाटा, वही चुप्पी। अबके भी कोई आदमी आगे न बढ़ा। पुरोहितने कहा—फ़रऊन अमनस नर-पिशाच था। उसने देवताओंकी मरज़ीका निरादर किया और उनके कोपको ठोकर मारकर जगाया। फलस्वरूप उसे गुमनामकी मौत नसीब हुई। उसकी प्रजाने उसके सिंहासनके सामने उसके अत्याचारोंकी बातें सुनाईं, और उन बातोंका किसीने विरोध न किया। इसलिए म मिस्रका राज-पुरोहित मिस्रकी प्रजाके सामने कहता हूँ कि फ़रऊन अमनसके नामको मिस्रके सुनहरे इतिहासमें जगह न दी जाएगी, न उसकी यादगार बनाई जाएगी, न मिस्रके निवासी उसे कभी याद करेंगे। मूँगे और मोती और कमलके फूलोंके स्वर्गमें उसे स्थान न मिलेगा, और वह सदाके लिए आत्माके इन पदार्थोंके लिए तरसता रहेगा।

पुरोहितका यह फ़रमान सुनकर सभी लोग खुश हुए। केवल त्यूनसका आत्मा दुःखी हुआ, और उसकी आँखोंसे शोकका पानी बह निकला।

अब पुरोहितने त्यूनसकी तरफ़ देखा और अपना सूखा हुआ हाथ हवामें फैलाते हुए कहा—मिस्रकी मलिका! देवताओंने तुझपर कृपा की है कि तू मिस्रकी मलिका है और तुझे इस योग्य समझा है कि फ़रऊनके चुनावका काम तेरी दया और दानाईपर छोड़ा जाए। मगर खुदाके लिए उन आँसुओंको न भूल, जो फ़रऊन अमनसने बेकसूर गालोंपर बहाए हैं, और उन आहोंकी तरफ़से आँखें बन्द न कर, जिनका जवाब फ़रऊन अमनसके पास भी नहीं है। मिस्रकी भलाईको अपनी भलाई समझ, मिस्रके नादान बच्चोंका ख़याल कर और मिस्रके भविष्यको साधारण बात न जान। आसमानके अमर देवता तेरे दिल और दिमाग़को प्रकाश दें, मिस्रके लोगोंके लिए मिस्रके सबसे वीर बेटेको फ़रऊन चुन।

पुरोहित यह कहकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद परी-मुँह त्यूनस अपनी चौकीसे उठी और बोली—मिस्रके रहनेवालो! मुझे बताओ, यह लड़ाई तुम्हारे लिए किसने जीती है? जब तुम हारकर शहरके अंदर आ छुपे थे, और जब तुम्हारे अपमानमें कोई कसर बाक़ी न रह गई थी, उस समय तुम्हें तुम्हारा भूला हुआ धर्म किसने याद कराया? जब तुम्हारी मलिका अपने आपको हब्शी बादशाहके हवाले करनेको तैयार हो गई थी, तो उसको इस अपमानकी मौतसे किसने बचाया?

लोगोंने एक-सुर होकर जवाब दिया—रेमफ़सने।

तुम्हारे देशमें सबसे नेक, सबसे सहनशील, सबसे वीर कौन है? वह कौन है, जिसने मिस्रकी किसी औरतको पापकी आँखोंसे नहीं देखा? वह कौन है जिसकी तलवार दीन-दुःखियोंकी सहायताके लिए सदा उठती रही है? मुझे बताओ, वह कौन है?

लोगोंने फिर चिल्लाकर कहा—रेमफ़स।

तो फिर क्या तुम खुश न होगे, अगर मैं उसे तुम्हारा फ़रऊन चुनकर तुम्हारे सामने पेश करूँ?

लोगोंकी खुशीका ठिकाना न था। उन्होंने कहा—त्यूनस, स्वर्गके देवता तुझे सलामत रखें, तूने मिस्रको मिस्रका सबसे बड़ा आदमी दिया है।

शहनाइयाँ बज रही थीं। मिस्रके नए बादशाहकी जयके नारे लग रहे थे, और राज-पुरोहित रेमफ़सके सिरपर ताज रख रहा था। त्यूनस कनखियोंसे रेमफ़सको देखती थी और मुस्कराती थी, औ लोग खुशीसे पागल हो रहे थे। सोचते थे, आख़िर हमें फ़रऊन-

अमनसके ख़ूनी पंजेसे छुटकारा मिला। अब वह संकट न होंगे, दुःख न होंगे, अत्याचार न होंगे।

१०

एक सौ एक दिनके बाद सीबामें एक ख़ास खुशियोंकी रात आई और अपने साथ इतने दीपक और बत्तियाँ लेकर आई कि सीबाके आसमानने कम देखीं होंगीं। सारे शहरमें दिये जल रहे थे, सारे शहरमें प्रकाश हो रहा था। अगर उस दिन कोई सीबाको प्रकाशपुरी कह देता, तो ज़रा भी अत्युक्ति न होती। उस दिन उस प्रकाशपुरीका हर एक घर आनंद-सागर बना हुआ था, जिसकी लहरोंमें लोग तैरते फिरते थे। कहीं आतिशबाज़ीके तमाशे होते थे, कहीं नाच-रंगके जलसे, कहीं साहित्यिकोंकी सभाएँ,—यह रेमफ़सके राज्याभिषेककी रात थी, और रेमफ़सने राजकोषका मुँह खोल दिया था ताकि वह रात इतिहासमें यादगार-रातका नाम पा जाए।

ऐसी शान-शोभाकी रात थी। रेमफ़स और त्यूनस राजमहलके झरोखेसे बाहरकी दुनियाकी खुशियाँ देख रहे थे और अपने सुन्दर भविष्यको अपने सामने पाकर खुश हो रहे थे कि महलकी डयोढ़ीमें, जहाँ सैंकड़ों भिखमंगे नए बादशाहका ब्याह-भोज खानेको जमा थे, एक और भिखमंगा आया। उसके हाथ-पाँव काँप रहे थे, कपड़े फटे हुए थे और सिरके बाल मिट्टी पड़ने और पड़ते रहनेसे आपसमें इस तरह चिकट गए थे कि उन्हें अलग करना कठिन था। यह भिखमंगा दूसरे हर एक भिखमंगेको आश्चर्यसे देखता था, और गिरता पड़ता अंदर बढ़ा चला जाता था। दूसरे भिखमंगे उसकी तरफ़ न देखते थे, न देखनेकी परवाह करते थे और खाने-पीनेमें लीन थे। यहाँ तक कि वह आगंतुक आँगनके दरवाज़ेपर ज पहुँच

पहरेदारने उसे रोका और कहा—बस ! आगे जानेकी मनाही है ।

उस आदमीने पहरेदारको बड़े ध्यानसे देखा, और फिर उन भिखमंगोंकी तरफ़ मुड़कर जो वहाँ जमा हो गए थे, कहा—मुझे किसकी मनाही है ? मैं फ़रऊन अमनस हूँ ।

भिखमंगे ज़ोरसे क़हकहा लगाकर हँसे, और देर तक हँसते रहे । और इसके बाद उस आदमीके आसपास जमा हो गए, जो अपने आपको फ़रऊन-अमनस समझता, कहता और बताता था ।

भिखमंगोंने उसे छेड़ना और तंग करना शुरू किया, मगर वह फिर भी बारबार कहता था—मैं फ़रऊन अमनस हूँ ।

एक भिखमंगेने उसके कंधेपर लाठी मारकर कहा—मगर यार ! तेरा वह ताज कहाँ है ?

इसके जवाबमें उस आगंतुकने उस भिखमंगेको करुणा-दृष्टिसे देखा, और कुछ न कहकर अपनी आँखें ऊपर उठा दीं । एक दूसरे भिखमंगेने अपना प्याला लेकर उसके सिरपर उलट दिया, और कहा—यह लो ! इसका ताज भी देख लो ।

एक दूसरा भिखमंगा बोला—जैसा मुँह, वैसा तमाचा ।

तीसरेने आवाज़ा कसा—जैसा राजा वैसा ताज ।

भिखमंगे हँस रहे थे, वह आगंतुक अपने सिरपर रखे हुए प्यालेको हाथसे छू छूकर देख रहा था, प्यालेका शोरबा उसके गालोंपर बह रहा था । और पहरेदार यह विनोदपूर्ण दृश्य देखता था, और मुस्कराता था ।

इतनेमें महलका दरवाज़ा खुला और अन्दरसे पुरोहित निकला । उसे देखकर अजनबी भिखमंगा खड़ा हो गया, और उसकी तरफ़

बढ़ा। पुरोहितने भी उसे देखा, और शोक, आश्चर्य, खुशी, क्रोधके मिले जुले भावसे चिल्ला उठा—फ़रऊन अमनस !

हाँ ! यह अभागा सचमुच फ़रऊन-अमनस था, जो नीलके किनारे गिरा था, मगर मरा न था। उसने अपनी बाँहें पुरोहितके गलेमें डाल दीं, और पागलोंके समान हँसकर कहा—तुमने मुझे पहचान लिया, मगर यह फ़कीर न पहचानते थे।

फ़कीरोंने वह देखा, जो देखनेकी उन्हें सुपनेमें भी आशा न थी। वह चीख़ मारकर उठे, और अपने पैरोंकी सम्पूर्ण शक्तिसे बाहर भाग गए।

पुरोहितने फ़रऊनकी तरफ़ देखा, और उसकी पहली शान और इस दशाका ख़्याल करके अवाक् रह गया। काल-चक्रकी हज़ारों कहानियाँ मशहूर हैं, मगर ऐसी कसक-कहानी किसीने आजतक न सुनी होगी—जो कलतक देवता था, बादशाह था, लाखों आदमियोंका भाग्य-विधाता था, वह आज भिखमंगोंके कपड़ोंमें भिखमंगा बना खड़ा था।

पुरोहितने अफ़सोसकी ठंडी आह भरी, और कहा—फ़रऊन ! तेरे दिन गुज़र गए। मिस्रकी प्रजाने तुझे पातकी घोषित कर दिया है। अब तू बादशाह नहीं बन सकता।

फ़रऊनने पुरोहितका खुश्क हाथ जो हवामें फैला हुआ था, अपने हाथमें ले लिया, और कहा—मगर त्यूनस—मेरी स्त्री ? मैं उसे चाहता हूँ। मुझे बादशाही नहीं चाहिए।

पुरोहितने सोचकर जवाब दिया—हाँ, त्यूनस तेरी चीज़ है। तू उसे माँग सकता है। वह तेरी ब्याहता स्त्री है, तू उसका पति है, और अभी जीता है।

फ़रऊन खुशीसे नाचने लगा—तो मुझे और किसी चीज़की ज़रूरत नहीं, मुझे मेरी त्यूनस दिला दो।

पुरोहितने फिर एक ठंडी आह भरी, और कहा—आ!

दोनों महलके अंदर गए, और वहाँ जा पहुँचे, जहाँ त्यूनस और रेमफ़स बैठे प्यार-महब्बतकी रंगीन बातें कर रहे थे।

११

एकाएक दरवाज़ा खुला, और गुलाम लड़कीने सिर झुकाकर कहा—राजपुरोहित और फ़रऊन-अमनस आए हैं।

—फ़रऊन-अमनस!

रेमफ़स और त्यूनस दोनोंके सिर घूम गए। क्या यह हो सकता है? मगर अभी उनकी हैरानी दूर न हुई थी, कि गुलाम लड़की सलाम करके बाहर चली गई, और पुरोहित फ़रऊनको साथ लिये अंदर दाख़िल हुआ।

त्यूनस देखते ही फ़रऊनको पहचान गई, और चीख़ मारकर रेमफ़सकी बाँहसे चिमट गई। इस समय उसे ऐसा संदेह हुआ जैसे शहरकी सारी रोशनियाँ बुझ गई हैं, और शहरका सारा संगीत बन्द हो गया है!

और यह उसके मनका वहम न था। शहरके लोगोंको जब मालूम हुआ, कि फ़रऊन-अमनस लौट आया है तो उन्होंने सारी खुशियाँ बन्द कर दी थीं।

रेमफ़सने फ़रऊनकी तरफ़ देखा।

—मेरी स्त्री मुझे दे दो, मैं और कुछ नहीं चाहता। फ़रऊनने रेमफ़ससे कहा।

रेमफ़सने ज़ोरसे क़हकहा लगाया और जवाब दिया—तुम्हारी स्त्री अब तुम्हारी स्त्री नहीं है।

मगर पुरोहितने अपना हाथ हवामें फैलाया और रेमफ़ससे कहा—फ़रऊन रेमफ़स! देवताओंके नियमोंका निरादर न कर। यह ठीक है, कि अब यह मिस्रका बादशाह नहीं है, मगर त्यूनस इसकी स्त्री है, और मिस्रका रिवाज और मिस्रका धर्म इसके पक्षमें हैं।

रेमफ़सका लहू सूख गया। अगर उड़ते हुए पंछीको गोली मारी जाए, तो उसके पंख खुलेके खुले रह जाते हैं। उसी तरह रेमफ़सका क़हकहा अधबीचहीमें टूट गया। मनोहर आनन्दोत्सवमें किसीने मंत्र पढ़ा और दुनिया भरकी शोभा काली हो गई। त्यूनस मूर्तिकी तरह चुप थी, और फ़रऊन-अमनस खुशीसे दीवाना हो रहा था।

धीरे धीरे रेमफ़सको स्थितिका ज्ञान हुआ। उधर यह हृदय-बेधक समाचार पाकर लोग महलके सामने मैदानमें जमा हो रहे थे। रेमफ़सने आगे बढ़कर फ़रऊनके सामने घुटने टेक दिए और कहा—मुझसे तख़्त-ताज ले लो, मगर मेरे सीनेसे मेरा दिल जुदा न करो।

यह कहकर उसने अपना ताज उतारा, और फ़रऊनके हाथमें देकर कहा—लो अपना ताज।

मगर फ़रऊनने ताज लौटाकर और सिर हिलाकर जवाब दिया—बादशाही बहुत कर चुका, अब प्यारकी चाह है। ताज तुम रखो। मिस्र और मिस्रके लोग तुम्हें पसन्द करते हैं। मुझे मेरी त्यूनस दे दो। मैं और कुछ नहीं चाहता।

यह कहते कहते उसने त्यूनसका हाथ पकड़ लिया। त्यूनसकी सारी देह काँप गई। इस तरह कोई पंछी कसाईकी छुरी तले भी कम तड़पा होगा।

रेमफ़सने फिर कहा—फ़रऊन, तख़्त-ताज ले ले। तुझे त्यूनस जैसी हज़ारों मिल जाएँगी, मगर मुझसे मेरा संसार न छीन। हम एक दूसरेके बिना जीते न बचेंगे।

और जाने किस ख़्यालसे फ़रऊनने ताज ले लिया, और शाही पलंगपर बैठ गया। शायद सोचता होगा : मिस्र मुझे बादशाह नहीं बना सकता, मगर रेमफ़स मुझे बादशाह बना सकता है क्यों कि वह बादशाह है, और जो चाहे कर सकता है, और उसकी मरज़ीको पुरोहित भी नहीं टाल सकता। और जब वह फ़रऊन बन जाएगा, तो उसके लिए त्यूनसको छीन लेना ज्यादा मुश्किल न होगा।

मगर यह उसकी भूल थी। क्योंकि रेमफ़स एक बार फ़रऊन बन चुका था, और त्यूनस उसकी स्त्री थी, और एक फ़रऊनकी स्त्रीको उसके जीतेजी दूसरा फ़रऊन भी नहीं छीन सकता : यह मिस्रका राज्य-नियम था।

अगर मानव-हृदयका अध्ययन चेहरेसे किया जा सकता है, तो त्यूनस और रेमफ़स ताज-तख़्त देते समय भी उतने ही खुश थे जितने लेते समय। रेमफ़सने त्यूनसका हाथ अपनी बगलमें दबा लिया, और उसे खींचता हुआ महलसे बाहर ले गया।

वहाँ राज-महलकी सीढ़ियोंके सामने खुले मैदानमें हज़ारों लोग जमा थे, और यह सुननेको अधीर हो रहे थे कि फ़रऊनका पुनरागमन क्या गुल खिलाता है? जब उन्होंने रेमफ़स और त्यूनसको देखा, और देखा कि उनके मुँहपर खुशी है, तो उन्हें विश्वास हो गया कि फ़रऊन अमनसकी बातको पुरोहितने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने गगन-भेदी स्वरसे कहा—आसमानके देवता फ़रऊन रेमफ़स और मलिका त्यूनसको सलामत रखें।

रेमफ़स यह सुनकर मुस्कराया और ऊँची आवाज़से बोला—अब मैं फ़रऊन नहीं हूँ, फ़रऊन वही तुम्हारा पहला फ़रऊन अमनस है। देवताओंके नियमने मेरी त्यूनस मुझसे छीनकर उसको दिला दी थी, मगर मैंने तख़्त-ताज बेचकर उससे मलिका ख़रीद ली है। अब मैं फिर आपका वही रेमफ़स हूँ।

लोगोंकी आखोंसे आग बरसने लगी। क्या उनका भाग्य-विधाता फिर वही निष्ठुर, अन्यायी, पाषाण-हृदय फ़रऊन अमनस है? और यह सब कुछ करनेवाला रेमफ़स है? अगर वह चाहता तो मिस्रके बेटे इस आततायीके अत्याचारोंसे बच सकते थे: मगर रेमफ़सने अपना ख़्याल किया, अपने देशका ख़्याल न किया; यद्यपि उसका धर्म था, कि देशकी ख़ातिर अपने प्रेमका बलिदान कर देता। जनतासे आवाज़ आई—

तुमने अपनी परवाह की, मगर मिस्रका क्या बनेगा?

तुम देश-द्रोही हो!

तुम मिस्रके दुश्मन हो!

तुम पापी हो!

तुम हत्यारे हो!

तुमने हमसे दग़ा किया है!

और रेमफ़स और त्यूनस बफरी हुई जनताके सामने बेबस अपराधियोंके समान खड़े थे। वह आग-भरे लोगोंको देखते थे और थर थर काँपते थे, और नहीं जानते थे कि अब क्या होगा। इतनेमें एक आदमीने आगे बढ़कर कहा—यह देशका दुश्मन है, इसे पत्थर मारकर मार डालो!

दूसरे आदमीने कहा—इसने जिस त्यूनसके लिए सब कुछ किया है उसे भी समाप्त करो।

इस बातने लोगोंपर वह असर किया जो चिनगारी बारूदके ढेरपर करती है। लोग क्रोधसे अंधे हो रहे थे। उनकी बुद्धि उनके बसमें न थी। वह नहीं जानते थे, क्या करें, और उस आदमीको कैसे दंड दें जिसने उनके भविष्यको अपने प्यारपर निछावर कर दिया था। इस प्रस्तावने उनको रास्ता सुझा दिया। वह अपने अपने पैरोंपर झुक गए, और ज़मीनके पत्थर उखाड़ने लगे। वीर रेमफ़स काँपता था, मगर यह कँपकँपी अपने लिए नहीं, अपनी त्यूनसके लिए थी; और त्यूनस अबोध बालकके समान उसकी छातीसे चिमटी हुई थी। रेमफ़स बचनेके लिए चारों तरफ देखता था, मगर उसे कोई स्थान दिखाई न देता था। यहाँ तक कि महलका दरवाज़ा भी पुरोहितकी आज्ञासे बन्द कर दिया गया था।

रेमफ़सने कुछ कहना चाहा, मगर कौन सुनता था? 'मारो मारो'की आवाजोंमें उसकी आवाज़ किसीने न सुनी, और—पत्थर बरसने लगे। रेमफ़सने अपने हाथ फैलाकर त्यूनसकी फूल-देहको बचानेकी चेष्टा की, मगर इतने आदमियोंके सामने अकेला आदमी क्या कर सकता है? देखते देखते उसका सिर, छाती, कंधे सब घायल हो गए, और त्यूनसको बचाते बचाते वह आप भी सीढ़ियोंपर गिरकर बेहोश हो गया। यही सीढ़ियाँ थीं जिनपर कुछ दिन पहले इन्हीं लोगोंने घुटनोंके बल झुक झुककर इसी जोड़ेकी सलामतीके लिए नीले आसमानके अमर देवताओंसे प्रार्थनाएँ की थीं। और आज—दोनों बेसुध होकर गिरे, मगर लोगोंके मनकी आग शांत

न हुई, और पत्थर बरसते रहे। यहाँ तक कि उनके शरीर पत्थरों-तले दब गए, और वहाँ मनों पत्थर जमा हो गए।

मगर पत्थर बरसते रहे।

१२

ऐसे आवेश और विनाशके समय महलका दरवाज़ा खुला, और फ़रऊन बाहर निकला। लोगोंके हाथ जहाँ तक उठ चुके थे वहीं तक रह गए; और उनके गलेसे क्रोध और क्रूरताके जो शब्द निकल रहे थे वह उनके होठोंपर जम गए। लोग अब उसपर हाथ न उठा सकते थे। वह फ़रऊन था, और उसके पास सिपाही थे, और उसकी आँखके इशारेमें मिस्रकी ईंटसे ईंट बजा देनेकी हत्यारी शक्ति थी।

उसने आगे बढ़कर अपने हाथोंसे पत्थर हटाए और प्रेमके अभागे जोड़ेको सुधमें लानेकी पूरी पूरी चेष्टा की। मगर उनको सुध न आई। यह देखकर फ़रउनको इतना दुःख हुआ कि उसका दिल टूट गया, और वह अपनी पदवी और अपना रोआब भूलकर सबके सामने फूट फूट कर रोया। इसके बाद उसने अपने आपको सँभाला, और आँसुओंसे सनी हुई और भावुकतासे भरी हुई आवाज़में कहा—मिस्रके लोगो! तुम इतने निष्ठुर, इतने हृदय-हीन हो कि जो तुम्हारे लिए प्राण देनेको तैयार हो, उसे मारते हो, और इतने कायर और भीरु हो कि जो तुमपर दिन-रात अत्याचार करता है, उसके हाथ चूमते हो। तुम तो इस योग्य हो कि तुम्हें पकड़कर जलती हुई आगमें फेंक दिया जाए, और तुम्हारी चीखें सुनकर कहकहा लगाया जाए। अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारा यह महा अपराध

क्षमा कर दिया जाए, तो एक और पत्थर उठाओ, और मेरा सिर भी चूर चूर कर दो।

यह कहते कहते उसने अपना सिर झुका दिया, मगर मिस्रके किसी आदमीमें फ़रऊनपर हाथ उठानेकी हिम्मत न थी।

तब फ़रऊनने निराश होकर स्वयं एक बड़ा-सा पत्थर उठाया और उसे हवामें उछालकर अपना सिर उसके नीचे रख दिया। और चूँकि उसे पातकी घोषित किया जा चुका था, और दूसरी बार उसका राज्याभिषेक न होने पाया था, इसलिए उसका मृतक-संस्कार न किया गया। और उसकी लाशको नीलके गहरे पानियोंमें पानीके जानवरोंकी खुराक बननेके लिए फेंक दिया गया।

मगर आसमानके अमर देवताओंको यह पसन्द न था कि वीर रेमफ़स और सुन्दरी त्यूनस इस तरहकी नामुराद मौत मरें। इस लिए जब रात तीन पहर बीत चुकी तो मिस्रके राज-वैद्योंकी संजीवनी दवाओंने अपना चमत्कार दिखाया, और प्रधान मंत्रीने यह मुनादी कराके सारे शहरको खुशीसे हिला दिया कि रेमफ़स और त्यूनस बच गए हैं।

और दूसरी रात सौ दरवाज़ोंकी प्राचीन नगरी सीबामें फिर दीपमाला हुई, और रेमफ़स और त्यूनस महलके झरोखेमें खड़े अपनी प्रजाका आनंदोत्सव देखते थे, और खुश होते थे। और अब उनको फ़रऊन अमनसके लौट आनेका ज़रा भी भय न था।

एक विदेशी चित्रद्वारा प्रेरित

सदासुख

९

काँगड़ेकी सुन्दर और सुशीतल घाटियोंमें बैजनाथ एक छोटी-सी बस्ती है जहाँ हिन्दुओंका एक बहुत बड़ा तीर्थ है। यहाँ एक दिन प्रातःकाल लोगोंने देखा कि बाज़ारमें एक बूढ़ा परदेसी खड़ा है। यही सदासुख था।

सदासुख कौन था, यह कोई न जानता था। मगर वह कैसा था, यह सबको पहले ही दिन मालूम हो गया। उसकी शक्ल-सूरत भयानक थी, देखकर दिल दहल जाता था, मगर स्वभाव ऐसा सुकोमल और विशुद्ध था कि जी चाहता घंटों पास बैठे रहें। नारियल ऊपरसे कठोर और खुरदरा होता है, परन्तु उसके अन्दरका पानी कितना मधुर और कितना गुणकारी होता है! वैसे देखनेको शायद उसका रंग इतना साफ़ न हो, पर उसमें जो मिठास है, वह चश्मेके पानीमें भी नहीं पाई जाती।

उस दिनके बाद बैजनाथमें एक नये युगका प्रारंभ हो गया। सदासुख अनाथोंका बाप था, रोगियोंका वैद्य, गरीबोंका आश्रय। चायके बाग़ीचोंमें काम करनेवाली असहाय स्त्रियोंको एक सहारा मिल

गया। अब उनकी तरफ़ बुरी आँखसे देखनेका साहस किसीमें न था। किसीने उसकी तरफ़ ताका और सदासुखने उसकी गरदन दबा ली। पहले मुसाफ़िरोंके लिए वहाँ कोई अच्छी जगह न थी, अब आबादीसे ज़रा परे हटकर सदासुखका झोंपड़ा हर एकके लिए खुला था, जैसे किसी वियोगीकी आँख हो जो रातको भी बन्द नहीं होती। यह जगह पहाड़ी लोगोंके स्वभावके समान सादा थी, मगर मुसाफ़िरोंकी जो आव-भगत यहाँ होती थी, उसका बखान नहीं हो सकता। और इस सेवाकी तहमें अपना कोई स्वार्थ, कीर्तिकी इच्छा, संसारके यशकी अभिलाषा न थी। यह वह चन्दा न था जो दिनके समय हज़ारोंकी हाज़िरीमें दिया जाता है, यह वह सहायता थी जो छुपकर रातके अँधेरेमें की जाती है। यह वह सेवा न थी, जिसका उद्देश्य लोगोंसे वाह वाह लेना होता है। यह वह नेकी थी जो दरियामें डाल दी जाती है, आर जिसे कोई नहीं देखता।

यह महात्मा बहुत अमीर न थे। उन्हें हर महीने दो सौ रुपएका मनीऑर्डर आ जाता था। मगर उनका दिल बादशाह था। उनके झोंपड़ेसे कोई ख़ाली हाथ न लौटता था। ग़रीब मज़दूर, मुसाफ़िर, अबला स्त्रियाँ: जो कोई उनके पास जाता वह दिल खोलकर उसकी सहायता करते लोग कहते थे, यह आदमी नहीं देवता है, चाहे तो मिट्टीसे सोना बना ले। बैजनाथके मन्दिरके देवता पुराने हो गए हैं, भगवानने नया देवता भेज दिया है। उनकी तरह इस देवताकी शक्ल-सूरत भी काली और कठोर है, मगर मन-मन्दिरमें भगवानकी जोत जलती है। फ़र्क केवल इतना है कि वह देवता हमारी आँखोंके आँसू देखते हैं और फिर भी चुप रहते हैं, शायद कलियुगके प्रभावने उनके दिलसे दया-

भाव छीन लिया है, मगर इस जीते जागते देवताका दिल प्रेम और दयाका सागर है। यह दूसरोंकी आँखमें पानी देखता है तो आप भी रोने लग जाता है। दूसरोंको बीमार देखता है तो आप भी बीमार हो जाता है। वह आसमानके देवता हैं, यह ज़मीनका फ़रिश्ता है। वह हमारे सामने रहते हुए भी हमसे दूर, हमारी दशासे बेसुध हैं। मगर यह देवता हमारे कितना निकट, कितना पास है!

२

एक दिन संध्याके समय बैजनाथके ऐतिहासिक मन्दिरका पुजारी अपनी पूजा समाप्त कर चुका था कि इतनेमे द्वारपर एक मोटर-लारी आकर रुकी और उसमेंसे दो स्त्रियाँ उतरकर मन्दिरमें दाखिल हुईं। पुजारीने पूछा—माई, कहाँसे आई हो?

बड़ी स्त्रीने जो दूसरीकी मा मालूम होती थी, अपनी गठरी ज़मीनपर रखते हुए जवाब दिया—महाराज, बड़ी दूरसे।

पुजारी—तुम्हारे साथ कोई मर्द नहीं है क्या?

स्त्री—मर्द भगवानने अपने पास बुला लिए।

यह कहकर स्त्रीने दुःख और सन्तापकी गहरी साँस ली और सिर झुका लिया।

पुजारी—यह लड़की कौन है?

स्त्री—मेरी बेटी है महाराज!

पुजारी—तीर्थ-यात्रा करने निकली हो?

स्त्री—हाँ महाराज, सोचा, आदमीका क्या भरोसा है। कौन जाने किस समय यमराज बुला भेजें। देवताओंके दर्शन तो कर लें।

पुजारी—माई, सच है। पर आजकल तो दुनिया अन्धी हो गई है, परलोककी किसीको चिन्ता ही नहीं। तुमपर परमेश्वरकी कृपा हो गई।

स्त्रीने इसका कोई जवाब न दिया। बातचीतका प्रसंग बदलकर बोली—महाराज, कोई कमरा मिल जाए तो रातको पड़ रहें।

पुजारी—बरांडेमें लेट रहो।

स्त्री—कोई भय तो नहीं?

पुजारी—देवताके घरमें भय काहेका? निश्चिन्त होकर सो रहो। पुजारीके चले जानेपर दोनों स्त्रियाँ कुछ देर वहीं बैठी रहीं। इसके बाद उठकर बरांडेमें चली गईं और कपड़ा बिछाकर लेट रहीं।

दूसरे दिन पुजारी आया तो वहाँ केवल लड़की थी, मा न थी। पुजारी चौंक पड़ा। अँधेरेमें बिजली चमक गई। उसने सोचा, मा अपनी बेटीको इस तरह नहीं छोड़ जाती। वह उसे इतनी प्यारी होती है जितनी अपनी जान बल्कि उससे भी ज़्यादा। मा प्रेम है और प्रेम संकटके समय साथ नहीं छोड़ता। इसने ज़रूर कोई कुकर्म किया होगा। ज़रूर कोई महापाप किया होगा, जिसे माका हृदय भी क्षमा न कर सका। ऐसी ही दशामें जननीका हृदय पत्थर बन सकता है, अन्यथा नहीं। लड़की रो रही थी, और उसका हृदय-बेधक रुदन सुनकर पहाड़के बेजान पत्थरोंमें भी सूराख़ हुए जाते थे। वह सोचती थी, अब क्या करूँगी? इस परदेसमें मेरा कौन है? मुझे यहाँ किसका सहारा है? ग़रीब चारों तरफ़ देखती थी। सब बेगाना थे, अपना कोई भी न था। किसीमें इतनी भी दया-उदारता न थी कि आगे बढ़कर उसे सांत्वना ही दे। उनके पास इस अभागिनीके लिए सहानुभूतिके दो शब्द भी न थे।

इतनेमें सदासुख आते दिखाई दिए। लोगोंने रास्ता छोड़ दिया। वह आकर खड़े हो गए और लड़कीकी तरफ़ देख कर बोले—क्यों इसे क्या हुआ है?

पुजारीने सदासुखकी तरफ़ अर्थ-पूर्ण दृष्टिसे देखा और कहा—इसकी मा इसे यहाँ छोड़कर चली गई है। अब बेचारी रो रही है कि क्या करे और किधर जाए।

सदासुखकी आँखें सजल हो गईं, ठंडी आह भरकर बोले—वह मा न होगी डायन होगी। मा होती तो जवान लड़कीको यों न छोड़ जाती।

एक आदमीने धीरेसे कहा—मगर महात्मा, शायद यह बेटी ही बेटी न हो। माका कलेजा ऐसे ही पत्थर नहीं बन जाता। ज़रूर कोई बात होगी।

पहाड़के लोग सीधे-साधे होते हैं, मगर आचार-अनाचारकी बातोंको वह भी खूब समझते हैं। इस बातका अर्थ सब समझ गए और एक दूसरेकी ओर देखने लगे। आँखों ही आँखोंमें पूछते थे, यह कलंक कहाँसे आया? छोटा-सा गाँव है, यहाँ यह पाप एक दिन भी न छिपेगा। मगर सदासुखका यह ख़्याल न था। वे सोचते थे, यह कहते क्या हैं? अब अगर किसीसे एक बार भूल हो जाय, तो क्या उसे सुधारका अवसर ही न देना चाहिए? यह भी हो सकता है, भूल इसकी न हो, किसी दूसरेहीकी हो। और फिर यह लोग आप कहाँके देवता हैं। हम दूसरोंके दोष बहुत जल्दी देख लेते हैं, अपनी तरफ़ हमारा ध्यान ही नहीं जाता। सदासुखने उन सबकी तरफ़ देखा, और कहा—भाइयो! यह समय ऐसी बातोंका नहीं। जलते हुए घरकी आग बुझा नहीं सकते, तो कमसे कम उसपर तेल भी तो न छिड़को। बल्कि मैं तो कहता हूँ, यह आग बुझाओ। यह दुखिया है, इसकी सहायता करो, इसे सहारा दो, इसका हाथ थामो। बोलो, कौन आगे बढ़ेगा?

लोग एक दूसरेका मुँह तकने लगे। वे हैरान थे कि सदा-सुखको हो क्या गया है, जो हमें एक दुराचारिणीको अपने घरमें रखनेको कहता है। यही शब्द अगर किसी दूसरेके मुँहसे निकलते तो वे पंजे झाड़कर उसके पीछे पड़ जाते। परन्तु ये सदासुख थे, जिनके सामने किसीको सिर उठानेकी भी हिम्मत न थी। सब चुप-चाप खड़े थे। टुकर टुकर तकते थे, मगर बोलते न थे।

सदासुखने एक एक करके सबके चेहरोंकी तरफ़ देखा, कोई भी तैयार न था। तब उन्होंने बेबसीकी लम्बी आह खींची और कहा—चल बेटी, मेरा झोंपड़ा तेरे लिए खुला है। मुद्दत हुई मेरी भी एक बेटी थी। आज उसकी हड्डियाँ भी गंगा-जलमें घुल चुकी होंगी। मैं समझूँगा मेरी वही बेटी फिर लौट आई। चल!

रोती हुई लड़कीके आँसू थम गए। उसने आश्चर्यसे सदासुखकी तरफ़ देखा और सहम गई। वह समझ न सकी कि यह व्यक्ति दैत्य है या देवता। शक्ल सूरत दैत्यकी-सी थी, आवाज़ देवताओंकी-सी। उसने रुँधे हुए कंठसे कहा—आप जाइए, मेरे डूबनेके लिए नालेका पानी बहुत है।

सदासुखने फिर उसी तरह नरमीसे कहा—बेटी, डूबनेकी क्या ज़रूरत है! जबतक मैं जीता हूँ, तुझे ज़रा भी कष्ट न होगा। चलकर अपना घर सँभाल। आजसे तू मेरी बेटी है।

निःस्वार्थ दिलको मोह लेता है। लड़कीके हृदयमें हलचल मच गई। यह आवाज़ पापकी आवाज़ न थी, न इसमें बनावट और दिखावेकी मिलावट थी। यह एक सत्यवक्ताके सच्चे भाव थे, जो दिल-से निकलते हैं, दिलमें जा बैठते हैं। लड़कीको अपना मरा हुआ बाप

याद आ गया। वह भी इसी तरह बोलता था। उसकी आवाज़में भी यही माधुरी, यही कोमलता थी। वह इनकार न कर सकी।

थोड़ी देर बाद लोगोंने देखा, सदासुख एक गठड़ी उठाए अपने झोंपड़ेको जा रहे हैं, और उनके पीछे पीछे वह लड़की है।

३

इस लड़कीका नाम भगवती था। बहुत खूबसूरत न थी, मगर बदसूरत भी न थी। गोरा रंग था, बड़ी बड़ी आँखें, गोल चेहरा, आयु उन्नीस बीस वर्षके लगभग होगी। सदासुखके झोंपड़ेमें उसे कोई तकलीफ़ न हुई। मगर वह फिर भी सदा उदास रहती थी। वियोगकी उस आगको कौन बुझाता, जो उसके दिलमें जला करती थी। बैठे बैठे रोने लगती थी। सदासुख पूछते, तुझे क्या चिन्ता है? मगर भगवती अपनी बड़ी बड़ी आश्चर्यचकित आँखोंसे उनकी तरफ़ देखती और आह भरकर चुप हो रहती।

इसी तरह दो महीने गुज़र गए, भगवतीके लड़का पैदा हुआ। अब सदासुखकी हर जगह निन्दा होने लगी। लोग कहते—देखा, बड़े महात्मा बने फिरते थे, सारी पोल खुल गई। कोई भला आदमी ऐसी स्त्रीका मुँह भी न देखता। आखिर मा यों ही थोड़े छोड़ गई है। इन महात्माने यह भी न सोचा कि दुनिया क्या कहेगी? मगर सदासुखको इन बातोंकी बिलकुल परवा न थी। वे सिर्फ़ यह सोचते थे—यह अनाथ लड़की है, इसके मा-बाप नहीं हैं। इसके साथ किसीने बेवफ़ाई की है। इसके दिलको ठेस न पहुँचे। बैजनाथके लोग उनकी छायासे भी परे भागते थे। न कोई उनसे मिलने आता, न हँसकर बात करता। ऐसी घृणा कोई चोरों और डाकुओंसे भी न करता

होगा। हाँ, आते जाते मुसाफ़िर अब भी वहीं ठहरते थे। उनकी आव-भगत अब भी उसी उत्साह, उसी श्रद्धा, उसी भक्तिसे होती थी। फ़र्क केवल यह था कि पहले यह काम सदासुख करते थे, अब भगवती करती थी। सदासुख सारे सारे दिन लड़केको खिलाया करते थे। यहाँतक कि रातको भी अपने साथ सुलाते। उसको देखकर उनका मुँह चमकने लगता था। उसकी भोली-भाली शरारतोंपर उन्हें ज़रा भी गुस्सा न आता था। क्या मजाल जो उसकी कोई बात टल जाए। जो चाहता वही होता, जो माँगता वही लेता। भगवती कहती—आप इसे सिरपर चढ़ा रहे हैं, बड़ा होकर तंग करेगा। सदासुख जवाब देते—भई! मुझसे इसकी आँखमें आँसू नहीं देखे जाते। यह रोना-सा मुँह बनाता है तो मेरे दिलमें कुछ कुछ होने लगता है। तुम मानों या न मानों, मगर यह अपने मनमें ज़रूर कहता होगा, जब तुम छोटे थे, तुम भी इसी तरह करते थे। आज बड़े हो गए तो बच्चोंकी प्रकृति ही भूल गए। न भई! मुझसे तो यह न होगा। आज हम इसका मन रखते हैं, कल यह हमारा मन रखेगा। भगवती कहती—बिगाड़ लीजिए, आपहीको तंग करेगा। सदासुख रामूको उठाकर गलेसे लगा लेते और उसका मुँह चूमकर पूछते—क्यों बेटा, तू हमें तंग करेगा? रामू सिर हिलाकर कहता—हाँ कलूँदा। सदासुख खाना खाते, रामू उनकी गोदमें बैठा उनकी दाढ़ीसे खेलता। कभी कहता, बाबा कादगका जहाज बना दे। देर हो जाती तो कहता—बाबा बतान, हूती काता है, ताम नहीं तलता। (बाबा! शैतान गोदी लगा है, काम नहीं करता।) भगवती टेढ़ी आँखोंसे देखती, तो कहता—तू भी बतान। भगवती कहती—

तू पाजी। रामू झट जवाब देता—हम लाजा, बाबा पादी, बाबा बतान, और यह कहते कहते सदासुखके पीछे जाकर छुप जाता, और उनके कंधेसे छोटा-सा सिर निकाल कर कहता—अब कीते मालेदी हम बाबादीके पास। (अब किसे मारेगी, हम बाबाजीके पास।)

सदासुखके लिए रामूकी यह बाल-लीलाएँ ऐसी मोहिनी थीं, जैसे यौवन-कालमें प्रेम और सौन्दर्यकी रस-भरी कहानियाँ भी न होंगी। वे इनमें खोएसे जाते थे। उनको अपना आप भूल जाता था। उनको इतना भी ख़्याल न रहता था कि अब मैं बूढ़ा हूँ, कोई देखेगा तो क्या कहेगा। कभी रामूको पीठपर सवार कराकर घोड़ा बनते, कभी भालूकी भाँति नाचकर उसका जी बहलाते। कभी उसकी ज़िदसे अपने सिरपर कागज़की टोपी पहनते, कभी बिल्लीकी तरह मियायूँ मियायूँ करते। निष्काम प्रेमके यह अमृतमय दृश्य देख देखकर वियोगिनी भगवतीका मन नाचने लग जाता था। सोचती, अगर यह देवता न होता तो मेरा क्या बनता? बच्चेको इस तरह आँखकी पुतली बनाकर कौन रखता? कभी सोचती, इनको कुछ हो जाए तो मेरा कौन है? मारी मारी फिरूँ कोई सीधे मुँह बात भी न करे। इस ख़्यालके आते ही भगवतीको चारों तरफ़ अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देने लगता था। इस ख़्याली भयसे भगवती रोने लगती। इसके बाद वह अपना सिर घुटनोंपर रख लेती और सच्चे दिलसे बुड्ढे सदासुखकी सलामतीके लिए परमात्मासे प्रार्थना करती।

४

इसी तरह छः वर्षका सुदीर्घ समय गुज़र गया। मगर सदासुखके लिए यह छः साल न थे छः दिन थे। अभी कलहीकी बात है,

भगवती कुटियामें आई है। सदासुखको बुढ़ापेमें बेटीका प्रेम नहीं मिला था, उसकी उजड़ी हुई हृदय-वाटिकामें बहार लौट आई थी, उसकी आत्मारूपी सूखी नदीमें बाढ़ आ गई थी।

एक दिन रामूने हठ की—हम तो बन्दूक ही लेंगे। बाज़ारमें किसीके पास देख आया था, घर आकर सदासुखसे लड़ने लगा। सदासुखने लाख समझाया, मगर बचपनके पास वह कान कहाँ जो बुढ़ापेका उपदेश सुनें! रामू रोता था और कहता था हम तो बन्दूक ही लेंगे, उठो चलकर लाओ, वरना हम खाना नहीं खाएँगे। कभी कहता—हम तुमसे बोलना ही बन्द कर देंगे। कभी कहता—हम रातको तुम्हारे साथ नहीं सोएँगे, कहानियाँ किसे सुनाओगे? कभी कहता, —हम तुम्हारा बेटा नहीं बनेंगे, प्यार किससे करोगे? क्या मज़ेसे कहते हैं—रामू हमारा राजा बेटा है। सदासुख और भगवती हँसीसे लोटे जाते थे और कहते थे, देखो तो क्या क्या धमकियाँ देता है; मानो राज ही छीन लेगा। इतनेमें रामू पीछेसे आकर सदासुखकी पीठपर गिर पड़ा और सिसक सिसककर रोने लगा। यह उसका अन्तिम शस्त्र था, अब सदासुखसे न रहा गया। बोले— बेटी! यह तो आँखें ख़राब कर लेगा, कहो तो काँगड़े चला जाऊँ। शामतक लौट आऊँगा। बालक है, दो रुपएकी बन्दूक पाकर नाचता फिरेगा।

भगवतीने सदासुखकी ओर प्रेमपूर्ण दृष्टिसे देखकर कहा—बाबा, बच्चोंको इतना भी सिरपर न चढ़ाना चाहिए। अब ज़रा-सी बातके लिए इतनी दूर जाओगे।

सदासुख—लारीमें चला जाऊँगा। कौन छप्पन टके खर्च हो जाएँगे!

भगवती—मगर इसकी ज़रूरत ही क्या है ?

सदासुख—रोता रहेगा, सारा दिन चुप न होगा।

भगवती—रोता रहेगा, तो रोता रहे। यह भी कोई बात है कि हम इसकी हरएक बात पूरी करें। आज बन्दूकके लिए रोता है, कल जहाज़के लिए रोएगा।

सदासुख—यह रोता है तो मुझसे देखा नहीं जाता।

भगवती—आपकी इन्हीं बातोंने तो इसको चौपट कर दिया है। पहले मुझसे डरता था, अब मुझसे भी नहीं डरता। कल कहता था—यह घर मेरा और मेरे बाबाका है, अगर बहुत बोली तो बाहर निकाल दूँगा!

सदासुख—(हँसकर) अरे ! मासे ऐसी बातें ?

मगर रामू तो दूसरी बात सुनता ही न था। सदासुखके ऊपर गिरकर बोला—उठो भी ! जाकर बन्दूक लाओ।

सदासुखको और शह मिल गई, धीरेसे बोले—बेटी, अब जाने ही दो, यह बन्दूक लिए बिना कभी न मानेगा।

यह कहते कहते सदासुख खड़े हो गए और सन्दूकसे कुछ रुपए लेकर काँगड़े चले गए। भगवती वहाँ उसी दशामें बैठी रही। वह सोचती थी, इन्हें मुझसे कितना स्नेह है। पिछले जन्ममें ज़रूर मेरे बाप रहे होंगे।

सायंकाल सदासुख लौटे तो बहुत खुश थे। वह केवल रामूके लिए बन्दूक ही न लाए थे, भगवतीके लिए धोती जोड़ा, स्लीपर और एक लोई भी ख़रीद लाए थे। बाप शहर गया था, बेटीके लिए कुछ ख़रीदे बिना कैसे आ जाता ? यह चीज़ें साधारण थीं, साधारण दशामें इनकी कीमत

भी साधारण थी, मगर इनको जिस स्नेह, और चावसे सदासुखने खरीदा था वह इस स्वार्थ-पूर्ण, स्नेह-हीन, कपटी दुनियामें कहाँ है ? सोचते थे, रामू बन्दूक लेकर कैसा खुश होगा ! आँखें चमकने लगेंगी। आकर गलेसे लिपट जाएगा। इसीकी बातें करेगा। ताज्जुब नहीं रातको भी साथ लेकर सोए। भगवतीको हाथ भी न लगाने देगा। फिर सोचते, भगवती अपनी चीज़ें देखकर कहेगी, बाबा ! यह क्या ख़रीद लाए ? अब तुम बहुत फ़ज़ूलख़र्च होते जाते हो। परन्तु उसके दिलमें जो आनन्दमय अभिमान होगा, उसे संसारका सर्वश्रेष्ठ कवि भी बयान नहीं कर सकता।

संध्याका समय था। रातका अन्धकार पहाड़की सूनी सड़कों और बिखरे हुए झोंपड़ोंको अपनी गोदमें लेनेके लिए भागा चला आ रहा था कि इतनेमें सदासुख अपने झोंपड़ेके सामने जा पहुँचे। उनको आशा थी, भगवती और रामू दोनों दरवाज़ेपर खड़े मेरा रास्ता देख रहे होंगे। लेकिन वहाँ कोई भी न था। सदासुखका दिल धड़कने लगा। लपके हुए अन्दर चले गए। मगर वहाँ उन्होंने जो कुछ देखा उसपर उन्हें विश्वास न हुआ।

चारपाईपर कोई पुरुष लेटा था, और उसके पास ही पाइँतीकी तरफ़ बैठी हुई भगवती उसकी तरफ़ प्रेमकी दृष्टिसे देख रही थी। सदासुखके पैर वहीं रुक गए। वे साँस रोककर वहीं खड़े हो गए। इतनेमें पुरुषने भगवतीका हाथ अपने हाथमें लेकर ठण्डी साँस भरी और कहा—यह सब कुछ ठीक है, परन्तु तुम्हें मेरा कहा करना ही होगा। नहीं, मैं नालेमें डूब मरूँगा।

६

सदासुखकी आँखोंसे चिन्गारियाँ निकलने लगीं। उन्होंने, जो चीज़ें ख़रीदकर लाए थे, ज़मीनपर रख दीं, अपने हाथकी पहाड़ी लकड़ी अपने हाथमें और ज़ोरसे पकड़ ली। फिर एक पग आगे बढ़े और क्रोधसे बोले—तू कौन है ?

भगवतीने चौंककर मुँहपर कपड़ा खींच लिया। पुरुष उठकर ज़मीनपर खड़ा हो गया। मगर उसके चेहरेपर भय और चिन्ताके कोई चिह्न न थे। उसने श्रद्धासे दोनों हाथ बाँधे और सदासुखको प्रणाम करके जवाब दिया—मेरा नाम कैलासनाथ है।

सदासुख—कौन कैलासनाथ ? तुम्हारा घर कहाँ है ?

कैलासनाथ—ग़रीबख़ाना लखनऊमें है। (थोड़ी देर बाद) आपकी बड़ी तारीफ़ सुनी थी, आज दर्शन भी हो गए। सचमुच आप आदमी नहीं, देवता हैं।

सदासुखने एक बार भगवतीकी ओर देखा और बोले—मगर तुम मुझे ग़लत समझ रहे हो। मैं रुपया पैसा लुटाता हूँ, इज़्ज़त नहीं लुटाता। मेरे लिए रुपया कुछ भी नहीं। इज़्ज़त सब कुछ है।

कैलासनाथ चुपचाप खड़े रहे।

सदासुख—यह एक शरीफ बूढ़ेका झोंपड़ा है, किसी भड़वेका मकान नहीं। बोलो, तुम यहाँ कैसे आए ? इस लड़कीको फुसलानेके लिए ? अवसर ढूँढ़ रहे होगे ? आज मैदान खाली पाया, चले आए। क्यों ?

भगवती रोते रोते अन्दर चली गई।

कैलासनाथने सिर झुकाकर उत्तर दिया—किस मुँहसे कहूँ, मैं

वही पापी हूँ, जिसके कारण यह अबला इस दुर्दशाको पहुँची है। मगर मेरा इसमें ज़रा भी दोष नहीं। मैंने माता पितासे बहुत कुछ कहा, पर उन्होंने एक न सुनी। अब उनका शरीरान्त हो गया है, तो पता लेकर हाज़िर हो गया हूँ। आप यह सुनकर खुश होंगे कि मैंने अबतक ब्याह नहीं किया। माता पिताने लाख कहा, परन्तु मैंने साफ़ जवाब दे दिया कि मेरा ब्याह हो चुका है। संस्कार न हुआ तो क्या, दिल तो मिल चुके हैं। मैं इसे ही ब्याह समझता हूँ।

सदासुखने कुछ सोचकर पूछा—तुम मुझे चकमा तो नहीं दे रहे?

कैलासनाथ—भगवतीसे पूछ लीजिए।

सदासुखने भगवतीको बुलाकर पूछा—ये जो कुछ कहते हैं, वह ठीक है क्या?

भगवतीने सिर हिलाकर कहा—ठीक, कहते हैं।

कैलासनाथ—अपने मुँहसे क्या कहूँ, मेरे पास खाने पीनेकी कमी नहीं, चाहूँ तो चार ब्याह कर लूँ। भगवानका दिया सब कुछ है, चार पाँच सौकी आमदनी है। फिर भी दौड़ा आया हूँ। आख़िर कुछ तो मुझे इसका ख़्याल होगा ही।

सदासुख—छः साल बाद तुम्हें इसकी सुध आई है। पहले कहाँ सोते थे?

कैलास०—पिताजी कहते थे, तुमने उसका नाम भी लिया तो घरसे निकाल दूँगा।

सदसुख—और पत्र लिखनेमें क्या रुकावट थी?

कैलास०—मुझे इनका पता ही मालूम न था।

सदासुखने लकड़ी हाथसे रख दी और ठण्डी साँस लेकर कहा—जानते हो इस सतीने कितने कष्ट सहे हैं?

कैलास०—परमात्माने ज़िन्दा रखा, तो अब इन्हें गर्म हवा भी न लगेगी।

सदासुख—दिन रात रोती रहती थी।

कैलास०—यह तो चेहरा ही कह रहा है।

सदासुख—पहलेसे आधी भी नहीं रही। जिस दिन मैंने इसे पहले देखा था, उस दिन इसका रंग ही और था।

कैलास०—आप रंग रूपकी कहते हैं, मैं कहता हूँ, बच गई है यही बहुत है।

सदासुख—तो आप इसे लेने आए हैं। मगर आपकी बिरादरी इसे स्वीकार कर लेगी क्या? अगर किसीने एक कड़ा शब्द भी कह दिया तो इससे सहन न होगा।

कैलास०—मैंने सबसे कह दिया है। घरके सब लोग तो मान भी गए हैं। जो न मानेगा, मैं उससे सम्बन्ध ही न रखूँगा। मुझे पहले यह है बादमें कोई और है। आप ज़रा भी चिन्ता न करें।

सदासुख कुछ सोचने लगे। कैलासनाथ बोले—आप भी चलिए। वह कहती है बाबा न जाएँगे तो मैं भी न जाऊँगी।

सदासुखकी आँखोंमें पानी आ गया। बोले—बेटा, इसकी बातें न सुनो, यह तो पगली है। तुम खुद सोचो, मेरा वहाँ जाना क्या ठीक है?

कैलास०—एक बार नहीं, हज़ार बार ठीक है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, वहाँ आपको ज़रा भी कष्ट न होगा।

इतनेमें रामू आ गया। उसके हाथमें कैलासनाथके दिए हुए खिलौने थे। रामू सदासुखको एक एक खिलौना दिखाता था और झूमता था, मानो कहता था, देखा! हमारे पास कैसी कैसी चीज़ें

हैं-! सदासुख कहता था, वाह भाई ! यह खिलौने तो बहुत सुन्दर हैं-। ऐसे यहाँ किसीके पास भी न होंगे । कहाँसे आए हैं ?

रामू—(मुँह फुलाकर) दिल्लीसे ।

सदासुख—जभी ऐसे बढ़िया हैं ।

रामू—(खुश होकर) हाँ! यह भालू भी दिल्लीसे आया है, यह पालकी भी दिल्लीसे आई है

सदासुख—अच्छा बेटा ! एक बात बता । यह पालकी किसके लिए है ?

रामू—माके लिए ।

सदा०—और भालू ?

रामू—(सोचकर) तुम्हारे लिए ।

सब क़हक़हा मारकर हँस पड़े । सदासुखने कहा—भई ! तेरे खिलौने बड़े अच्छे हैं । और क्यों न हों, दिल्लीसे आए हैं ।

रामू—(एकाएक बाबाकी तरफ़ देखकर) बाबा ! तुम कहाँसे आए हो ?

कैलासनाथ खिलखिलाकर हँस पड़े । सदासुखने उत्तर दिया—हम काँगड़ेसे आए हैं । काँगड़ेका नाम सुनते ही रामूको अपनी बन्दूक याद आ गई । सदासुखकी गोदमें बैठकर बोला—हमारी बन्दूक कहाँ है ? लाओ ।

सदासुख—अब बन्दूक लेकर क्या करोगे ? रहने दो । अब तुम्हें भालू मिल गया है ।

रामू—(सोचकर) हम बन्दूकसे इस भालूको मारेंगे । लाओ ।

यह कहते कहते रामूने सहमी हुई आँखोंसे अपने पिताकी ओर

देखा, कि भालू इनका है, उसे मारनेसे यह नाराज़ तो न हो जाएँगे। मगर वहाँ क्रोध न था, वे मुस्करा रहे थे। रामू शेर हो गया। दूसरे क्षणमें उसने सदासुखसे बन्दूक ले ली, और भालूका शिकार खेलने लगा। कैलासनाथ अपने वीर पुत्रका तमाशा देखते थे और फूले न समाते थे। उनके हृदयमें पितृ-स्नेह चाँदनी रातके समुद्रकी तरह लहरें मारता था। मगर सदासुखके मनमें अमावसका अँधेरा छाया हुआ था। वे सोचते थे, क्या सचमुच ये चले जाएँगे? यह प्यार, यह सादगी, यह बाल्यावस्थाके मनको मोह लेनेवाले दृश्य, सब स्वप्न हो जाएँगे? रातको कोई बात करनेवाला भी न होगा। सूखा हुआ बाग़ पानी पाकर लहलहा उठा था, क्या अब वह फिर उसी तरह सूख जाएगा? खुश्क नदी वर्षाकी बाढ़ आ जानेसे ठाठें मारने लगी थी, क्या अब वह फिर उसी तरह खुश्क हो जाएगी? सदासुखकी आँखोंसे गरम पानीकी दो बूँदें टपक पड़ीं।

जब चार पाँच दिनके बाद उनके जानेका दिन आया, तो सदासुखके चेहरेपर ज़रा भी उदासी न थी। मगर भगवतीकी आँखें सूज गई थीं। वह सारी रात रोती रही थी। वह बारबार कहती थी—बाबा, मुझे न भेजो, वहाँ मेरा जी न लगेगा। यह झोंपड़ा मुझे राजमहलोंसे बढ़कर है; किसी समय तो ऐसा मालूम होता है, जैसे यह तीर्थराज है। यहाँ आकर मैं दुनिया-भरके दुःखोंसे छूट गई। ऐसी शान्ति, ऐसी निश्चिन्ता मुझे और कहीं भी न प्राप्त होगी। मोटरमें बैठते समय भी उसकी आँखोंसे आँसू बह रहे थे। उधर रामू रोता था, और कहता था—बाबा! तुम भी हमारे साथ चलो। कैलासनाथने कहा—अब चले आइए। हम आपको ज़रा भी तकलीफ़ न होने देंगे। क्या आपको हमपर विश्वास नहीं है?

सदासुख—विश्वास तो है। मगर मैंने भगवतीको बेटी कहा है। बेटीके घर कैसे चला जाऊँ? दुनिया जीने न देगी।

कैलास०—आप दुनियाकी परवा ही क्यों करें? बकने दें।

सदासुख०—पर अपना दिल भी तो नहीं मानता।

कैलास०—देखिए, दोनों रो रहे हैं।

सदासुख—तुम समझा देना। आख़िर बेटीको अपने घर जाना ही पड़ता है। मुझे तो आज बड़ी खुशी है। परमात्मा करे इसे कोई कष्ट न हो। बेटा! यह लड़की हीरा है। इसके दिलमें छल कपट नहीं; न इसे बनावट आती है। मेरी तुमसे यही प्रार्थना है कि इसका दिल न दुखाना और क्या कहूँ?

कैलासनाथने कहा—इस बातकी आप ज़रा भी चिन्ता न करें। और हाँ, चिट्ठी लिखते रहना।

सदासुख—और तुम गर्मियोंमें ज़रूर यहाँ चले आना। लखनऊमें ऐसी ठण्डी हवा कहाँ मिलेगी?

भगवतीने धोतीके आँचलसे मुँह पोंछकर कहा—ज़रूर आएँगे। आप न कहें, तब भी आएँगे।

सदासुख—तुम्हारा अपना घर है बेटी!

मोटर चला और देखते देखते दूर निकल गया। अब सदासुखका दिल उनके वशमें न रहा। वहीं खड़े खड़े रोने लगे, यहाँतक कि मोटर पहाड़के ऊबड़-खाबड़ रास्तोंमें गुम हो गया। मगर उनके कानोंमें अभीतक रामूके रोनेकी आवाज़ आ रही थी। उस रात सदासुख बहुत उदास थे। दो साधु आ गए थे, सदासुखने उनको खाना बनाकर खिला दिया, आप भूखे ही लेट रहे। मगर आधी राततक

नींद न आई। सोए, तो झटपट किसीने जगा दिया। मालूम हुआ, नम्बरदारके मकानको डाकू लूट रहे हैं। सदासुख लाठी लेकर वहाँ जा पहुँचे। दस डाकू थे, जिनके सामने घरके लोग हाथ बाँधे खड़े थे। पड़ोसी अपने घरोंमें दबके बैठे थे। समझते थे, हम बोले, और इन्होंने गरदन उतार ली। मगर सदासुखको ज़रा भी भय न था, आते ही ललकार कर बोले—अगर प्राणोंका मोह न हो तो चुपचाप चले जाओ, वरना एक एकसे समझूँगा। कमज़ोर देखकर चले आए हो, मगर जबतक यह बुड्ढा जीता है, किसकी मजाल है, जो इस गाँवमें किसीका बाल भी बाँका कर जाए।

डाकू अवाक् रह गए। यह कौन है, जो पराई आगमें कूदता है? ज़रूर कोई असाधारण आदमी होगा। साधारण आदमियोंमें ऐसा साहस कहाँ? डाकुओंके सरदारने आगे बढ़कर पूछा—तुम कौन हो?

सदासुखने लाठी भूमिपर टेककर उत्तर दिया—मैं सदासुख हूँ। इस नामने डाकुओंपर जादूका काम किया। सरदार बोला—हम आपसे नहीं लड़ सकते। आप हमें मार दें, तो भी हाथ न उठाएँ, गिरफ़्तार कर लें, तो भी न बोलें। फिर अपने आदमियोंसे कहा—सब कुछ रख दो। एक पैसेकी भी चीज़ न लो। यह बैजनाथके देवता हैं, इनकी आज्ञा शिरोधार्य है।

६

दूसरे दिन गाँवके सब लोगोंने आकर सदासुखके पाँव पकड़ लिए। नम्बरदारने कहा—हम आपसे वचन लेने आए हैं, कि आप इस गाँवसे कभी न जाएँगे। एक दो और आदमी बोले—चले कैसे जाएँगे? हम राह रोक लेंगे, राहमें लेट जाएँगे। आख़िर श्रद्धा भी

कोई चिज़ है, उसे कुचल कर कैसे चले जाएँगे ?

एक और आदमीने कहा—जब तक हीरेको कंकड़ समझते थे, तब तक परवा न थी। परन्तु अब आँखें खुल गई हैं, अब तो यह चरण कभी न छोड़ेंगे।

सदासुखका हृदय प्रेमका सोता था, यह बातें सुनकर उनकी आँखें सजल हो गईं, बोले—तुम मुझे वृथा ही लज्जित करते हो। मैं तो तुम्हारे ही जैसा साधारण आदमी हूँ। मुझमें असाधारण बात कोई भी नहीं। हाँ सेवाका व्रत लिया है उसे पूरा करूँगा। और कहीं नहीं यहीं सही। यहाँ भी वही भगवान् है। यहाँ भी उसीका प्रकाश है, उसीकी सृष्टि है। कहीं और जाकर क्या बना लूँगा ?

अब सदासुख फिर वही सदासुख थे, जिन्हें बैजनाथके निवासी सिर आँखोंपर बैठाते थे। उनके दिलोंमें सदासुखका वही सम्मान था जो आजसे छः साल पूर्व था। घृणा चार दिनकी बीमारीके समान आई, चली गई, कहते—इसमें इनका क्या दोष था? इनके पास कोई चला आए, ये उसीकी सेवा करेंगे। भला हो या बुरा, ये इसका ख़्याल ही नहीं करते। कष्टमें देखा, अपने पास रख लिया; उसका आदमी आया, हँसकर साथ भेज दिया। कमलका फूल पानीमें रहता है, मगर भीगता नहीं।

मगर सदासुख खुश न थे, न उनके दिलको वह पहली शान्ति प्राप्त थी। प्रायः खोएसे रहते थे। अब बाहर चले जाते हैं, तो कोई उनकी प्रतीक्षा नहीं करता; रातको घरसे निकलते हैं, तो कोई जल्दी आनेका आग्रह नहीं करता, न पास बैठकर कोई तोतली बातें करता है, न कोई लड़ता झगड़ता है, न शिकायतें करता है।

सदासुखका जी क्यों कर लगता ? झोंपड़ा उन्हें काटनेको दौड़ता था। कभी यही स्थान उनके लिए घर था, उस समय इसमें प्रेम, पवित्रता और प्रकाश भरा हुआ था। अब इसमें कुछ भी न था। पहले झोंपड़ा घर बना था, अब घर डेरा बन गया। संसार ही बदल गया।

इधर लखनऊसे पत्र आते थे कि भगवती उदास रहती है। रामू भी पहलेके समान नहीं चहकता, हाँ आपका पत्र आता है तो दोनोंके चेहरे खिल जाते हैं। सदासुख लिखते, मैं ज़रा भी उदास नहीं हूँ, न मुझे कोई चिन्ता है। भगवती लिखती—आपको खानेकी बहुत तक़लीफ़ होगी। सदासुख जवाब देते—ऐसा स्वाद आता है कि तुमसे क्या बयान करूँ। शायद तुम विश्वास न करोगी, मेरी भूख बढ़ गई है। भगवती पूछती, आपका स्वास्थ्य कैसा है ? सदासुख उत्तर देते—बहुत अच्छा। पहले तुम्हारी चिन्तामें घुला जाता था; जबसे भगवानने तुम्हारी सुनी है, मैं मोटा होने लगा हूँ। कुछ दिन भगवतीके पत्र आते रहे, इसके बाद बन्द हो गए। सदासुखने कई पत्र लिखे। मगर किसीका भी उत्तर न मिला। यहाँ तक कि रजिस्ट्री ख़त भी भेजे परन्तु उनका भी जवाब न मिला। सदासुख पहले झुँझलाए, फिर उदास हुए और इसके बाद बेपरवा हो गए। ख़याल आया, मैं भी कैसा मूर्ख हूँ, घरसे सेवा करने चला था, यहाँ प्रेमके जालमें फँस गया। वह विद्यार्थी कितना मूर्ख है, जो स्कूल जाते जाते राहमें किसी मदारीका तमाशा देखे, और वहीं रुक जाए।

अब फिर वही दिन थे, वही झोंपड़ा था, वही यात्री थे। वही सदासुख थे, वही उनका सेवा-व्रत था, वही निश्चिन्तताकी नींद थी। इसी तरह एक वर्ष बीत गया, फिर सरदीके दिन आ गए;

पहाड़ोंकी रौनक़ घटने लगी। इन दिनों सदासुखके झोंपड़ेमें यात्री कम आते थे। कभी कभी कोई भी न होता। सदासुख दिन दिन-भर बैठे रामायण और गीताका पाठ किया करते थे। सन्ध्या समय बैजनाथके श्रद्धालु लोग उनके पास चले आते और आगके निकट बैठकर वेद-शास्त्रोंकी बातें सुनते। ज्ञान-ध्यानकी यह सभा, प्रेम-भक्तिकी यह अमृत-वर्षा कई कई घंटे जारी रहती थी और लोग अपने भाग्यपर फूले न समाते थे।

अचानक एक दिन सदासुखने कहा—हम कल लखनऊ जाएँगे।

लोग घबरा गए और हाथ बाँधकर खड़े हो गए। उनको शंका थी कि शायद यह फिर न आएँ; मगर सदासुखने कहा—हम एक सप्ताहके अन्दर अन्दर लौट आएँगे।

७

तीसरे दिन दोपहरको वे लखनऊमें थे। इस समय उनके दिलमें चावकी तरंगें और प्रेमकी अभिलाषाएँ थीं। आज वे अपनी बेटीसे मिलेंगे। आज उनका रामू उनके गलेसे लिपटेगा। पूरा एक साल बीत गया। देखकर चौंक उठेगा। शायद एकाएक पहचान भी न सके। मगर जो खुशी भगवतीको होगी, उसका अनुभव कौन कर सकता है? कैलासनाथसे सीधे मुँह बात भी न करूँगा। ऐसा निर्मोही आदमी भी किस कामका जो पत्रका उत्तर तक न दे। अचानक अमीनाबाद बाज़ारमें उन्होंने बहुतसे लड़कोंकी भीड़ देखी, जो किसी व्यक्तिको घेरे खड़े थे, और उसे तंग कर रहे थे। दूसरे ही क्षणमें मालूम हुआ बीचमें कोई पगली है, और आसपास लड़के हैं। लड़के छेड़ते थे, पगली गालियाँ देती थी। सदासुखने अच्छी तरह देखा और

चौंक पड़े। यह शोहदोंसे घिरी हुई फटे पुराने कपड़ोंवाली स्त्री भगवती थी, जिसे अपने शरीरकी भी सुध न थी, न देश-कालका ज्ञान था। हाय शोक! क्या देखने आए थे, क्या देखना पड़ा। सदासुखका सिर घूम गया। उनकी आँखोंमें बाज़ारकी सारी दूकानें हवामें तैरने लगीं। ज़मीन आसमान चक्कर खाने लगे।

उन्होंने इक्केवालेको किराया दिया और भगवतीकी तरफ़ बढ़े। इस समय उनका दिल टुकड़े टुकड़े हो रहा था। उनके पाँव काँप रहे थे। यह चार पगका फ़ासला काले कोसोंका सफ़र बन गया। उन्होंने डाँट डपट कर लड़कोंको परे हटाया और स्वयं भगवतीके सामने जाकर खड़े हो गए। भगवतीने उनको पागलोंकी तरह देखा और इसके बाद क़हक़हा लगाकर हँस पड़ी।

सदासुखने रुँधे हुए कण्ठसे पुकारा—भगवती।

भगवतीने बिना किसी तरहका भाव प्रकट किए सदासुखकी ओर देखा और कहा—अबे! क्या तू भी इन लौंडोंका साथी है?

सदासुख—नहीं भगवती! मैं बैजनाथसे आया हूँ। तू मुझे पहचानती है या नहीं?

भगवती चुपचाप सदासुखको देखती रही। इसके बाद सहसा बड़े ज़ोरसे चिल्लाकर बोली—यह बूढ़ा पागल है। यह बूढ़ा पागल है।

लड़के हँसने लगे। एक बोला—लो बाबा! और दिखाओ सहानुभूति।

दूसरा बोला—पगली है।

भगवतीने चौंककर कहा—मुझे पगली कौन कहता है? जीभ काट लूँगी।

यह कहकर वह भूमिपर बड़े ज़ोर ज़ोरसे पाँव पटकती हुई एक

कोनेकी ओर चली गई और वहाँ घुटनोंपर सिर रखकर बैठ गई। इसके बाद वहीं लेटकर धीरे धीरे गाने लगी—

मैं प्रेम-नगरकी रानी।
प्रेम-नगरका राजा मुझसे बोले मीठी बानी।
मैं प्रेम-नगरकी रानी।

यह हृदय-वेधक दृश्य देखकर सदासुखका दिल भर आया, और आँखें सजल हो गईं; एक दूकानदारके पास जाकर पूछा—यह स्त्री इस दशामें कबसे है?

दूकानदारने सदासुखको सिरसे पाँवतक देखा और कहा—अजी जनाब! एक अरसेसे। आप परदेसी है क्या?

सदासुख—जी हाँ। (थोड़ी देरके बाद) तो क्या कैलासनाथने इसे घरसे निकाल दिया?

दूकानदार—जनाब तो सब कुछ जानते हैं?

सदासुख—जी नहीं, बहुत कम जानता हूँ।

दूकानदार—क्या अर्ज़ करूँ! इस ग़रीबकी दुर्दशा देखकर रोना आता है। भले घरकी बेटी है। पहले मांने आत्महत्या की थी, अब आप पागल हो गई। एक लड़का था। मगर जनाब! लड़का क्या था, गुलाबका फूल था। वह भी मर गया।

सदासुखपर बिजली-सी गिर पड़ी, कई मिनट पत्थरकी भाँति खड़े रहे, इसके बाद आँखोंसे आँसू बहने लगे। दूकानदारने पूछा—आपसे कुछ रिश्तेदारी है क्या?

सदासुख—(ठंडी आह भरकर) रिश्ता ही समझिए। मेरी मुँह-बोली बेटी है।

दूकानदारने चौंककर सदासुखकी ओर देखा और कहा—जनाब बैजनाथसे तो नहीं आ रहे हैं ?

सदासुख—वहींसे आ रहा हूँ ।

दूकानदार—माफ़ कीजिएगा । कैसी हिमाक़त हुई जो बैठनेको चौकी भी न दी । आइए । आरामसे बैठिए और मुझे अपना ख़ादिम समझिए ।

सदासुख चौकीपर जा बैठे ।

दूकानदार—कैलासनाथसे आपकी बे-हद तारीफ़ सुनी है । कहते थे, ऐसा आदमी मैंने दूसरा नहीं देखा ।

सदासुख—(सुनी अनसुनी करके) आश्चर्य है कि मुझे मालूम भी न हुआ, और यहाँ सब किस्सा ख़त्म भी हो गया ।

दूकानदार—बिरादरीके सब लोग कैलासके विरुद्ध थे । एक मैं और एक और, दो आदमी थे जो उसके साथ थे । बाकी सब विरुद्ध थे । यहाँ तक कि उनके चचा साहब भी विरोधियोंमें थे । कैलासनाथ चार महीने डटे रहे, इसके बाद उनमें दम न रहा ।

सदासुख—मैंने तो पहले ही कह दिया था कि तुम निर्बल हो, बिरादरीके सामने न ठहर सकोगे । उस समय कहते थे, बिरादरी मेरा क्या बिगाड़ लेगी ? और सच भी है, उनका क्या बिगड़ा, जीवन तो लड़कीका ख़राब हुआ । (भगवतीकी तरफ़ देखते हुए)—यह हाल कबसे है ?

दूकानदार—कोई छः महिनेसे ग़रीब-परवर ! पहले जाने कहाँ चली गई थी । एकाएक एक दिन बाज़ारमें आ निकली, और इस दशामें कि अपने तन-बदनकी सुध न थी । देखकर कलेजा फटता है, जनाब !

सदासुख—और, कैलासनाथ तो खूब मज़ेमें होंगे। इसे इस हालतमें देखकर उनको लाज तो आती न होगी।

दूकानदार—पहले तो कहते थे, यह औरत नहीं, देवी ह। इसका-सा प्रेम, त्याग, स्वच्छ हृदय दुनियामें और कहीं न होगा। परन्तु अब उनकी राय बदल गई है। कहते हैं—आवारा है। बाल-कालहीमें ताँक-झाँकका चस्का था, वर्ना अपने साथ दूसरोंको भी न ले डूबती। कोई इसका ज़िक्र भी कर दे, तो बुरा मानते हैं। अपनी आँखोंसे इसकी यह दशा देखते हैं, और मुँह फेरकर चले जाते हैं।

सदासुखने लम्बी साँस छोड़कर कहा—आदमी इतना भी गिर सकता है!

दूकानदार—आदमी! अजी मैं उसे आदमी नहीं समझता। दोष लड़कीका नहीं, उसी ज़ालिमका है। अब चले हैं धर्मात्मा बनने। एक दिन बाज़ारमें मिल गए थे, मैंने वह खरी-खरी सुनाई कि ज़री-सा मुँह निकल आया, ज़बान बन्द हो गई। हवाईयाँ उड़ने लगीं।

सदासुख—अगर हिम्मत न थी तो बैजनाथसे क्यों लाया था? ग़रीब वहीं पड़ी रहती। वहाँ अगर कोई सुख न था, तो दुःख भी न था।

दूकानदार—जनाब! वहाँ तो वह स्वर्गमें थी। आपका नाम सुनकर उसकी आँखें चमकने लगती थीं। मैंने सुना है, आपको वह बापसे भी बढ़कर चाहती थी। और आपका चेहरा कहे देता है, आप हैं इसी क़ाबिल। बन्दापरवर, हम तो मुँह देखकर दिलका हाल बता दें।

सदासुख फिर रोने लगे।

दूकानदार—और, सच तो यह है कि जो आपने किया, उससे ज़्यादा बाप भी न करता। सारा गाँव एक तरफ़, और आप अकेले एक तरफ़, और फिर एक पराई लड़कीके लिए। यह मामूली बात

नहीं। कैलासनाथ विरोधका मुक़ाबिला छः महीने भी न कर सके, आपने छः वर्ष किया। वह विषयकी प्यास थी, यह आत्माकी बेलाग मुहब्बत थी। वह आपकी बराबरी क्या करेगा, आपके जूतोंकी बराबरी भी नहीं कर सकता।

सदासुख—आपकी रायमें मुझे अब क्या करना चाहिए? मेरा कैलासनाथसे मिलनेको तो जी नहीं चाहता। लाभ कुछ न होगा, उलटा दिल और भी खट्टा हो जाएगा। कहिए तो लड़कीको अपने साथ ले जाऊँ। और न होगा, आँखोंके सामने तो रहेगी।

दूकानदार—लाख रुपयेकी बात कही आपने! मगर पगली है।

सदासुख—शायद दवासे ठीक हो जाए। रोग भयानक है, परन्तु असाध्य नहीं।

दूकानदार—तो भगवानका नाम लेकर ले जाइए। यहाँ कौन बैठा है, जिसे इसकी चिन्ता हो। वहाँ आप तो होंगे, वहाँ जनाब, इसे ज़री तकलीफ़ न होगी।

सदासुख—अरे भई! यहाँ तो लड़के चंगे भलेका सिर फेर दें। कभी पत्थर मारते हैं, कभी मुँह चिढ़ाते हैं, और वह ग़रीब खूनका घूँट पीकर रह जाती है।

दूकानदार—यह लौंडे पूरे शैतान हैं।

सदासुख—तो यही निश्चय हुआ, शामको साथ ले जाऊँगा। कहीं चली तो न जाएगी?

दूकानदार—जाएगी कहाँ?

मगर सन्ध्या-समय भगवती वहाँ न थी। सदासुखने सारा शहर छान डाला, सब बाज़ारोंमें तलाश किया; पर भगवती कहीं भी न थी। दूसरे दिन गोमतीसे लाश निकली। सदासुखने सिर पीट लिया। मगर कैलासनाथकी आँखोंमें पानी न था। उस दिन उनके

यहाँ मित्रोंका निमंत्रण था। चार बजेके लगभग उधर भगवतीकी लाश जल रही थी, इधर कैलासनाथ अपनी मित्र-मंडलीके साथ बैठे मुस्करा मुस्कराकर चाय पी रहे थे।

८

मगर परमेश्वरके यहाँ देर होती है; अंधेर नहीं होता। इस घटनाको अभी दो ही महीने गुज़रे होंगे कि कैलासनाथके भाग्यका पाँसा पलट गया। रुपया-पैसा, मकान-दूकान, कारबार, सब सट्टेकी भेंट हो गया। कल सब कुछ था, आज कुछ भी न था। वह शान, वह अमीरी, वह धन-दौलत सब जाता रहा। कैलाशनाथ परमात्माकी यह लीला देखते थे, और मन मसोसकर रह जाते थे। वही लखनऊ था, जहाँ कभी ऐंठकर चलते थे। अब उनमें इतना भी साहस न था, कि बाज़ारके बीचमेंसे निकल जाएँ। वही लखनऊके लोग थे, जो कभी उन्हें सिर आँखोंपर बैठाते थे, अब उन्हें पहचानते भी न थे। यहाँ तक कि उनके सम्बन्धी भी उनको देखकर मुँह फेर लेते थे। वह डरते थे, कि कहीं कुछ माँग ही न बैठे। ऐश्वर्यका साथ सभी देते हैं, बुरे दिनोंमें कोई पास भी नहीं फटकता। कैलासनाथ एक दिन गोमतीके किनारे जाकर बहुत देर तक रोते रहे। सोचते रहे, इस विशाल संसारमें मेरे लिए कोई आश्रय नहीं। परायोंकी इस दुनियामें उनका अपना कोई भी न था, जिससे वे सहायता माँगते। इस समय उनको अभागिनी भगवती याद आई। अगर आज वह जीती होती तो क्या वह भी उनको इस तरह अकेला छोड़ देती? कभी नहीं। यह उसके लिए असम्भव था। वह ऐसा नहीं कर सकती थी। यह उसके स्वभावके विपरीत था। वह जब मरी थी, उस दिन कैलासनाथकी आँखोंने आँसूकी एक बूँद भी न बहाई थी, आज उसकी स्मृतिने उनको लड़के आँसू रुला दिया। आज उनको अपने

आत्माकी गहराईमें उस अभावका अनुभव हुआ, जिसे संसारके सारे कोष भी पूर्ण करनेमें असमर्थ थे। दुर्भाग्यकी इस अँधेरी रातमें गोमतीके शून्य तीरपर बैठकर रोते हुए कैलासनाथको बहुत दूर फ़ासलेपर आशाका दिया जलता हुआ नज़र आया। उनपर भावुकताकी मस्ती छा गई। वे उठकर खड़े हो गए और उस प्रकाशकी ओर लपक कर चले।

कोई दो महीने बाद वे बैजनाथमें सदासुखकी झोंपड़ीके सामने खड़े थे।

रातका समय था। झोंपड़ीमें एक कुप्पी जल रही थी। अन्दर जाकर उनकी थकान, उदासी, निराशाका अन्त हो जाता, मगर उनमें अन्दर जानेका साहस न था। मुसाफ़िरने सैकड़ों कोसका सफ़र पैदल तय किया, और हिम्मत न हारी; मगर इस समय उसमें चार पग चलनेका भी बल न था। झोंपड़ीका दीपक जल रहा था, मगर आशाका दीपक न जाने कहाँ छिप गया? वे आशाकी नींदमें यहाँ तक चले आए थे मगर यहाँ पहुँचकर उनकी नींद खुल गई और आशाका सुपना समाप्त हो गया। अब फिर वही अँधेरा था, वही घोर निराशा। कैलासनाथ सोचने लगे—मं भी कैसा मूर्ख हूँ, जो बिना सोचे समझे यहाँ चला आया। इतना भी न सोचा कि सदासुखके सामने यह काला मुँह लेकर कैसे जा सकूँगा। वे लाख भले हों, परन्तु मुझे देखकर अवश्य ही मुँह फेर लेंगे, सीधे मुँह बात भी न करेंगे। शायद धक्के देकर निकाल दें; कहें—मेरे यहाँ तुझ जैसे पाषाण-हृदय आदमीके लिए स्थान नहीं। हाय अफ़सोस! मैं यहाँ क्यों आया?

घरसे दूर आधी रातके भयानक अँधेरेमें कैलासनाथने चारों

तरफ़ आँखें फाड़फाड़कर देखा, मगर कोई आश्रयका स्थान दिखाई न दिया। सवा साल पहले भी वे यहाँ आए थे, मगर उस आनेमें और इस आनेमें आकाश-पातालका अन्तर था। उस समय यहाँ उनके प्राण बसते थे; यहाँ भगवतीको देखकर उनका हृदय खिल उठा था। कदाचित् वे उसे लेकर यहाँ चले आते और दुनियाके कोलाहलसे दूर, बिरादरीके झगड़ोंसे बाहर एक शान्ति-कुटीर बना लेते, तो उनके पवित्र आनन्दमय जीवनको देवता भी लोभ-भरी दृष्टिसे देखते। मगर अब....

उनकी सोनेकी लङ्का जल चुकी थी। उनको बोध हुआ, मगर कब? जब तीर कमानसे निकल चुका था, जब उनके वशमें कुछ न रह गया था। कैलासनाथका दिल बैठ गया। सहसा उनके पाँव काँपने लगे, और उनका शारीरिक बल जवाब देने लगा। उनको अपनी देह गिरती-सी मालूम हुई। वे लड़खड़ाते हुए दरवाज़ेकी तरफ़ बढ़े, मगर वहाँतक पहुँचने भी न पाए थे कि अचेत होकर गिर पड़े।

और उनके चारों ओर आधी रातका अँधेरा था, और पहाड़की सरदी थी, और परदेसकी बेगानगी थी।

जब उनको होश आया, तो उनके सामने सदासुख बैठे थे। कैलासनाथने उनकी तरफ़ देखा और हैरान रह गए। यह आदमी कितना शुद्धात्मा, कितना उदार हृदय, कितना शान्त स्वभाव है। कैलासनाथने देखा—उनकी आँखोंमें ज़रा भी रोष नहीं, मुँहपर ज़रा भी मैल नहीं। सदासुख उनकी तरफ़ प्यारसे देख रहे थे, और यह वह व्यक्ति था, जिसने उनकी बेटीकी हत्या की थी। उफ़! किस दर्जेकी क्षमा है। मगर शायद इन्होंने मुझे पहचाना ही न हो। ज़रूर यही बात है। मेरी शक्ल सूरत कुछ ऐसी बदल गई है कि मेरी मा देखे, तो वह भी न पहचान सके, इन्होंने तो केवल

एक ही बार देखा है। कैलासनाथने आँखें बन्द कर लीं, और परिस्थितिपर विचार करने लगे। बहुत समय बाद खुशी आई थी, एक झलक दिखाकर फिर गायब हो गई।

सदासुखने कैलासनाथके सिरपर हाथ फेरा, और कहा—अब जी कैसा है?

अरे! यह तो वही प्यारकी आवाज़ है, वही मीठे शब्द, मनको मोह लेनेवाली वही आवाज़, ज़रा भी रुखाई नहीं, ज़रा भी क्रोध नहीं। कैलासनाथको पहले सन्देह था, अब विश्वास हो गया, ज़रूर नहीं पहचाना, वरना मेरे समान पापीके भाग्यमें ये शब्द कहाँ? कैलासनाथ तिलमिलाकर उठ बैठे और पागलोंकी तरह बोले—आपने मुझे अभीतक नहीं पहचाना।

सदासुखने उन्हें कन्धोंसे पकड़कर चारपाईपर लिटा दिया, और मुस्कराकर कहा—आरामसे लेटे रहो। मेरी आँखें ऐसी नहीं कि किसीको एक बार देखकर भूल जाएँ।

कैलासनाथका कलेजा धकधक करने लगा; बोले—मैं कैलासनाथ हू।

सदासुख—मैंने देखत ही पहचान लिया था।

कैलासनाथ—फिर भी आपने मुझे उठाया, मेरी सेवा की, मुझे दवा दी। आपने मुझे बाहर क्यों न फेंक दिया? पड़ा पड़ा मर जाता।

सदासुख—भगवानका नाम लो। जीवन ऐसी तुच्छ चीज़ नहीं।

कैलासनाथ—अब जीकर क्या करूँगा? जब दिलमें कोई आशा नहीं तो जीवन किस कामका? अब तो भगवान् मौत दे दें तो जी जाऊँ।

सदासुख थोड़ी देरके लिए चुप हो गए, इसके बाद बोले—इतनी निराशा क्यों?

उत्तरमें कैलासनाथके मुँहसे एक भी शब्द न निकला। हाँ, आँखोंसे आँसू बहने लगे और इतना ही नहीं, मनस्तापके कारण उनकी सारी देहसे पसीना छूटने लगा।

रो रोकर उनको नींद आ गई। सदासुखने शान्तिकी साँस ली। एक आदमीने, जो उनके पास ही बैठा था, धीरेसे पूछा—यह भगवतीका पति तो नहीं?

सदासुख—वही है। तुमने खूब पहचाना।

उस आदमीने आश्चर्यसे सदासुखकी तरफ़ देखा और कहा—और, आप इसकी सेवा-शुश्रूषा कर रहे हैं! आपकी जगह मैं होता, तो इसे जूते मार कर बाहर निकाल देता। अन्धेर ·····। ऐसा बदचलन—

सदासुख—यह देखना मेरा काम नहीं। मेरा कर्त्तव्य सेवा करना है। जो मेरे द्वारपर आ गया, मैं उसका सेवक हूँ। चाहे वह कैसा भी बुरा क्यों न हो। हाँ, मेरे झोंपड़ेमें उसे पाप-कर्मकी आज्ञा न होगी।

उस आदमीने देखा कि वह किसी देवताके सम्मुख खड़ा है। वह देवता इस पतित, गिरी हुई, पापमें फँसी हुई दुनियासे बहुत ऊँचा ह। उसका आदर्श उज्ज्वल, पवित्र, अनुपम है। उसके दिलमें श्रद्धाके भाव लहरें मारने लगे, उसकी आँखोंमें पानी भर आया।

सदासुखका झोंपड़ा बैजनाथमें आज भी खड़ा है। उसके पास ही उनकी समाधि है। उनके एक श्रद्धालुने वहाँ सदाव्रत खुलवा दिया है। वहाँ ग़रीबोंको आज भी भोजन मिलता है। मगर जो बात सदासुखके जीवन-कालमें थी, वह अब कहाँ? उस समय इस झोंपड़ेकी शोभा ही कुछ और थी।